# पूजा-प्रार्थना-आरती-गीताञ्जली

## (आगम-आध्यात्म-विज्ञान-मनोविज्ञान... दृष्टि से)

-आचार्य कनकनन्दी

### पुण्य स्मरण

सीपुर समता तीर्थ धाम, अतिशय क्षेत्र सीपुर में वर्ष 2016 का यशस्वी चातुर्मास व दीर्घ प्रवास (प्रायः 11½ महीना) के उपलक्ष्य में

### स्वैच्छिक अर्थ सौजन्य (ज्ञानदानी)

प्रस्तुत कृति की रचना व प्रकाशन गुरुभक्त, ऊर्जावन्त, उदारभावी नितिन जैन (सीपुर) की स्व-प्रेरित भावना से

ग्रथांक-279 प्रतियाँ-500

संस्करण-2017 मूल्य-सदुपयोग/पूजन...


### प्राप्ति स्थान एवं सम्पर्क सूत्र

आचार्य श्री कनकनन्दी जी गुरुदेव द्वारा आशीर्वाद प्राप्त

(1) धर्म-दर्शन सेवा संस्थान

द्वारा-श्री छोटूलाल जी चित्तौड़ा

चन्द्रप्रभ दि. जैन मन्दिर, आयड़, आयड़ बस स्टॉप के पास,

उदयपुर (राज.)-313001/मो. 097832-16418

(2) डॉ. नारायणलाल कछारा

सचिव-धर्म-दर्शन सेवा संस्थान

55, रवीन्द्रनगर, उदयपुर (राज.)-313001

फोन नं. 0294-2491422/मो. 092144-60622

E-mail:nlkachhara@yahoo.com

# वंदनीय पंचगुरु

## सूरी-पाठक-प्रवर्तक-गणी-स्थविर दीक्षा में बड़े साधु से भी वंदनीय

**(चाल : छोटी-छोटी गैया.....)**

पंचगुरु की वंदना करूँ, सूरी-पाठक-प्रवर्तक-गणी-स्थविर।
मन वचन काय कृत कारित व अनुमोदना से बारम्बार।। (1)

मुनिसंघ नायक-पोषक-रक्षक-अनुग्रह-निग्रहकर्त्ता।
प्राज्ञ-गंभीर-प्रशमशील-अपरश्रावि आचार्य वर्य।। (2)

स्व-मत पर-मत ज्ञाता उपाध्याय, तात्कालीन ज्ञान-विज्ञान ज्ञाता।
जिनके समीप आकर साधुगण, पाते हैं ज्ञान की शिक्षा।। (3)

आचार आदि में मुनिसंघ को, प्रवृत्ति कराने वाले प्रवर्तक मुनि।
गण के रक्षक जो साधु होते, वे होते हैं गणधर मुनि।। (4)

मर्यादाकारक मुनिसंघ के, जो होते हैं वे स्थविर मुनि।
ऐसे जो होते हैं पंचगुरु, उन्हें वंदना करते अन्य सब मुनि।। (5)

पंचगुरु भले दीक्षा व तप में, होते हैं अन्य मुनि से न्यून।
तथापि दीक्षा व तप से ज्येष्ठ, मुनि करते हैं उन्हें प्रणाम।। (6)

सम्यग्दर्शन व ज्ञान से होते हैं, पंचगुरु अन्य मुनि से श्रेष्ठ।
अतएव अन्य मुनि इन्हें पहले, वंदना करते प्राप्त हेतु उनके गुण।। (7)

आगम की आज्ञा जो न पालन करते, वे होते हैं दोषी के भागी।
केवल दीर्घकाल ही नहीं वंदनीय, वंदनीय होते श्रेष्ठ गुणधारी।। (8)

अहंकार व मायाचार छोड़कर, गुणग्रहण करे सभी साधु।
इस हेतु ही आगम में ऐसी, व्यवस्था/(मर्यादा) की गई साधु हेतु।। (9)

मूलाचार व आचारसार आदि में, इसका वर्णन है प्राचीन काल से।
सूरी 'कनकनन्दी' ने भी इसका उल्लेख, किया है 'श्रमण संघ संहिता' में।। (10)

# आध्यात्मिक गुण स्वरूप होते हैं पंचपरमेष्ठी

## (पूज्य-पूजा-पूजक-पूजाफल)

**(चाल : आत्मशक्ति.....)**

आध्यात्मिक गुणस्वरूप, होते हैं पंचपरमेष्ठी।
रत्नत्रय के क्रम विकास से, बनते हैं पंचपरमेष्ठी।। (1)

सम्यक्दर्शन ज्ञान चारित्र के, एकदेश व समग्रता सहित।
पंचपरमेष्ठी होते हैं, एकदेशधारी (होते) साधु पाठक आचार्य।। (2)

समग्र रत्नत्रय सहित होते, अरिहंत-सिद्ध परमेष्ठी।
अरिहंत-सिद्ध बनने हेतु, बनते साधु-पाठक-सूरी।। (3)

निश्चय परिचय परमेष्ठियों का, रत्नत्रय स्वरूप होता।
तन-मन-इन्द्रिय-नाम-ग्राम, जाति-भाषा से परे होता।। (4)

रत्नत्रय है आत्म स्वभाव, जो मोक्ष तक रहते।
तन-मन आदि अशुद्ध रूप, जो सिद्ध अवस्था में न रहते।। (5)

तन-मन आदि कर्मज रूप, कर्म तो भौतिक रूप।
इससे परे (हैं) आत्मस्वरूप, जो चिन्मय अमूर्तिक रूप।। (6)

मार्गणा गुणस्थान आदि तो, संसारी जीवों के होते।
गुणस्थान आरोहण (के) द्वारा, सिद्ध स्वरूप (को) प्राप्त करते।। (7)

षष्टम गुणस्थान से लेकर, चौदहवें गुणस्थान में।
होते हैं साधु पाठक सूरी, अरिहंत तक अवस्था में।। (8)

गुणस्थान है आध्यात्मिक सोपान, जिससे होता आत्मोत्थान।
अरिहंत अवस्था (है) भाव मोक्ष स्वरूप, सिद्ध होते गुणस्थान परे।। (9)

रत्नत्रय बिन कोई भी जीव, नहीं बन सकते परमेष्ठी।
देव नारकी मनुष्य तिर्यंच, राजा-रंक-साहूकार-चक्रवर्ती।। (10)

अनंत चक्रवर्ती व देव-मनुष्य, से भी श्रेष्ठ होते हैं परमेष्ठी।
रत्नत्रय रिक्त चक्रवर्ती आदि से, पूज्य होते हैं परमेष्ठी।। (11)

रत्नत्रय ही है यथार्थ से पूज्य, अतः परमेष्ठी पूजनीय।
रत्नत्रय प्राप्ति हेतु अतः, पंचपरमेष्ठी की पूजा विधेय।। (12)

केवल बाह्य वैभव हेतु, बाह्य वैभव ही न पूजनीय।
बाह्य वैभव तो अनात्मा स्वरूप, जिससे परे होता मोक्ष।। (13)

पंचपरमेष्ठी की आध्यात्मिक, गुण स्तुति है यथार्थ पूजा।
पूज्य गुण स्मरण कीर्तन, अनुकरण है यथार्थ पूजा।। (14)

यथायोग्य श्रावक-श्रमण, स्व-भूमिकानुसार करते पूजा।
मन-वचन-काय-कृत-कारित, अनुमोदना से करते पूजा।। (15)

भाव सहित द्रव्य पूजा से, मिलता है स्वर्ग व मोक्ष।
पंचपरमेष्ठी की आराधना से, 'कनकनन्दी' चाहते मोक्ष।। (16)

सीपुर, दिनांक 19.01.2017, प्रातः 10.00

# देवदर्शन से मैं पाया.....!?

**-आचार्य कनकनन्दी**

**(चाल : आत्मशक्ति....., सायोनारा.....)**

देवदर्शन से मैं यह पाया...आत्मस्वरूप का मुझे भान हुआ...
श्रद्धा-प्रज्ञा से जाना मैं जीवद्रव्य...देव सम बनने का है स्वभाव...

मेरी भावी पर्याय है देव सम...देव की भूत पर्याय है मम सम...
द्रव्य दृष्टि से दोनों एक सम/(जीद्रव्य)...मेरे गुण सुप्त देव के प्रकट...

गुण प्रकट हेतु करूँ पुरुषार्थ...रत्नत्रय की साधना से करूँ प्रकट...
इस हेतु करूँ मैं ज्ञान-ध्यान...तप-त्याग स्वाध्याय व मनन...

देवसम बनूँ मैं शांत-सौम्य...स्व-नासाग्र दृष्टि से आत्म अवलोकन...

अंतरंग-बहिरंग परिग्रह त्यागी नग्न...शत्रुता हीन से अस्त्र-शस्त्र शून्य...
अनंत ज्ञान दर्शन सुखवीर्यमय...तो भी स्व-स्वभाव लीन भगवान्...
आत्मजयी से बने वे विश्वजयी...मैं भी आत्मजयी से बनूँ विश्वजयी...

राग द्वेष मोह व ईर्ष्या तृष्णा...काम क्रोध मान माया लोभ शून्य...
अंतरंग शत्रु नाश से शत्रु शून्य...आत्मजयी से विश्वजयी भगवान्...

दोष-गुण जानते (हैं) सभी जीवों के...तो न निंदा करते हैं कभी किसी के...
राग द्वेष न करते कभी किसी से...भक्त-अभक्त निंदक शत्रु-मित्र से...

भक्त को मिलते (हैं) उसके सुफल...अभक्त-निंदक-शत्रु को कुफल...
आप न देते किसी को कोई फल...स्व-स्वभावानुसार पाते वे फल...

आप साम्य भावी स्व-ज्ञाता दृष्टा...स्व-अनंत वैभव के स्वयं भोक्ता...
देवदर्शन से मैं यह सब जाना...तव सम बनने का 'कनक' सूत्र पाया...

## अरिहंत-सिद्ध सम करूँ स्व-विकास

### (दोषी की न निन्दा-गुणी से न घृणा, स्वगुण वृद्धि से विकास)

**-आचार्य कनकनन्दी**

**(चाल : मन रे! तू काहे न धीर....., सायोनारा.....)**

जिया रे! स्व-उपलब्धियों का (सद्) उपयोग करऽऽ
दीन-हीन व अहं त्यागकर, सतत विकास तू करऽऽ (ध्रुव)

तेरा आदर्श तो अरिहंत-सिद्ध, उस रूप बनना है तुम्हारा लक्ष्यऽऽ
उनके अनुसर करो तू भाव, यथायोग्य अनुकरणऽऽ
अन्य सभी संकल्प/(विकल्प) त्यागऽऽ...जिया रे...(1)

अन्य कोई क्या करता क्या जानता, क्या है भाव व क्या मानताऽऽ
उनसे तू रहो अप्रभावी सदा, मैत्री प्रमोद कारुण्य माध्यस्थ सदाऽऽ
सद्गुण/(शिक्षा) लहो सदा सर्वदाऽऽ...जिया रे...(2)

अयोग्य की भी तू न करो (है) निन्दा, उनके कारण स्वयं को न मानो ऊँचाऽऽ
योग्य से भी तू न करो है घृणा, उनके कारण स्व को न मानो नीचाऽऽ
दोनों से भी सही ले लो शिक्षाऽऽ...जिया रे...(3)

स्वगुणों से ही तू सच्चा-अच्छा बनोगे, परनिन्दा-घृणा से न उच्च बनोगेऽऽ
स्व-रेखा को तू सदा बढ़ाता जाओ, स्व-दीपक तू सदा जलाता जाओऽऽ
पर-रेखा-दीप को न मिटाओऽऽ...जिया रे...(4)

पर-रेखा-दीप को मिटाने हेतु, जो भाव काम होवे वे पतन हेतुऽऽ
स्व-विकास-विनाश स्वयं से होते, प्रयत्न करो अतः स्व-विकास हेतुऽऽ
स्वयं में ही निहित तेरे विकास हेतुऽऽ...जिया रे...(5)

अरिहंत-सिद्ध भी ऐसे ही बने, स्व-विकास से अनंत गुणी (वे) बनेऽऽ
(तो भी) किसी से न करते वे राग द्वेष घृणा, परनिंदा अपमान व हानि-हिंसाऽऽ
ऐसा ही 'कनक' बनो तू सदा सर्वथाऽऽ...जिया रे...(6)

## पूजा का हृदय

प्रत्येक आत्मा का स्वाभाविक स्वभाव सुखमय होने के कारण प्रत्येक जीव सुख को अति शीघ्रता से प्राप्त करना चाहता है। वह सुख को अविच्छिन्न रूप से भोगना चाहता है। परन्तु वह सुख सांसारिक इन्द्रिय जनित, भौतिक सुख नहीं हो सकता है, क्योंकि भौतिक सुख-दुःख उत्पादक, अल्प, क्षण भंगुर है। अतएव शाश्वतिक सुख आध्यात्मिक है जो कि मुक्तात्मा को ही प्राप्त हो सकता है। इसीलिये सुख के लिये मुक्त होना अनिवार्य है। मुक्त होने के लिये सम्यक् चारित्र भी आवश्यक है और वह चारित्र सम्यक् बोध एवं सम्यक् श्रद्धान होने पर ही संभव है। यह बोध एवं श्रद्धान जिनवाणी से संभव है। जिनवाणी जिनेन्द्र भगवान् से प्राप्त होती है। अतएव जिनवाणी के लिये जिनेन्द्र भगवान् की भक्ति ! सेवा ! आराधना ! पूजा ! संस्तुति की आवश्यकता

है। इससे सिद्ध होता है कि सुखेच्छु-मुमुक्षु को सुख प्राप्ति के मूलभूत कारण जिनेन्द्र भगवान् की श्रद्धा-पूजा करना सर्वप्रथम एवं प्रधान कारण है।

उपर्युक्त सिद्धांत से यह सिद्ध होता है कि भक्त, भगवान् बनने के लिए भगवान् की पूजा, सत् विश्वास सत् विवेक एवं सच्चारित्र से युक्त होकर के करता है। यह ही पूजा का रहस्य, उद्देश्य, विधान एवं फल है। इसके अतिरिक्त और कोई न पूजा हो सकती है, न विधान हो सकता है, न फलादि हो सकते हैं। आगम में जो विविध पूजा विधान है, इसका ही विस्तार है या इसके ही अंतर्गत है।

आ. समंतभद्र स्वामी ने पूजा की महिमा का वर्णन निम्न प्रकार से किया है-

**देवाधिदेव चरणे परिचरणं सर्वदुःखनिर्हरणम्।**
**कामदुहिकामदाहिनि परिचिनुयादादृतो नित्यम्।।**

(पृष्ठ 216, अधि. 4, श्लो. 29)

श्रावक को आदर से युक्त होकर प्रतिदिन मनोरथों को पूर्ण करने वाले और काम को भस्म करने वाले अरहंत भगवान् के चरणों में समस्त दुःखों को दूर करने वाली पूजा करना चाहिए।

पूज्यपाद स्वामी ने कहा भी है-

**एकापि समर्थेयं जिनभक्तिर्दुर्गतिं निवारयितुम्।**
**पुण्यानि च पूरयितुं दातुं मुक्तिश्रियं कृतिनः।।**

एक ही जिनेन्द्र-भक्ति दुर्गति को नाश करने में, पुण्य को पूर्ण करने में एवं मुक्ति श्री देने में समर्थ है।

नामादि पूजा अनेक होते हुए भी भाव पूजा सब पूजा का प्राण है क्योंकि भाव पूजा के बिना अन्य पूजा अकिंचित्कर है। यहाँ तक कि पंच परमेष्ठी के गुण स्मरण के अतिरिक्त केवल उनके शरीर, वर्ण, माता-पिता, बाह्य समोवशरण आदि विभूति का स्मरण करने से, उनकी पूजा करने पर यथार्थ पूजा नहीं हो

सकती है। जिस प्रकार प्राण से रहित शरीर को हिलाने-डुलाने, खिलाने, पिलाने से स्वस्थ हष्ट-पुष्ट सजीव नहीं हो सकता है। कहा भी है-

**तस्यात्मजस्तस्य पितेति देव, त्वां येऽवगायन्ति कुलं प्रकाश्य।**
**तेऽद्यापि नन्वाश्मनमित्यवश्यं, पाणौ कृतं हेम पुनस्त्यजन्ति।। (23)**

(विषापहार स्तोत्र पृ. 25)

हे नाथ ! जो मनुष्य आप उसके पुत्र हो और उसके पिता हो इस प्रकार कुल का वर्णन कर आपका अपमान करते हैं, वे अब भी हाथ में आये हुए सुवर्ण को पत्थर से पैदा हुआ है इस हेतु से फिर अवश्य ही छोड़ देते हैं।

पंच परमेष्ठी यथायोग्य राग-द्वेष से रहित होने के कारण, न पूजक के प्रति राग करके उसका कोई उपकार करते हैं या द्वेष करके शत्रु को अनिष्ट पहुँचाते हैं। तथापि भक्त अपनी भक्ति भावना से पाप का संवर एवं निर्जरा करता है, पुण्य का संचय करता है, जिससे वह भौतिक सुख प्राप्त करके परंपरा से मोक्ष भी प्राप्त करता है। इसलिये जो पंचपरमेष्ठी को कर्त्ता-हर्त्ता-धर्त्ता मानते हैं उनका अभिप्राय मिथ्या है। यदि पंचपरमेष्ठी की आराधना से भी कथंचित् कष्ट नहीं मिटता है तो यह जानना चाहिए कि उसकी अपनी गलती उसमें छिपी हुई है चाहे वह पूर्वकृत हो या वर्तमानकृत हो। यदि कोई पूजक, पूजा के माध्यम से मेरा दुःख दूर नहीं होता है ऐसा भाव करके पूजा करना छोड़ देगा, तो यह उसका मिथ्याभाव है क्योंकि जीव सुख या दुःख अपने परिणाम से ही प्राप्त करता है, उसके लिए चाहे बाह्य निमित्त कुछ भी हो। भक्ति से पाप नष्ट होता है ऐसा मानतुंगाचार्य ने कहा है यथा-

**त्वत्संस्तवेन भवसन्तति सन्निबद्धं,**
**पापं क्षणात्क्षयमुपैति शरीरभाजाम्।**
**आक्रांत लोकमलिनीलमशेषमाशु,**
**सूर्यांशु भिन्नमिव शार्वरमंधकारम्।। (7)** भक्ता.

भगवन् ! आपकी स्तुति से प्राणियों के अनेक भवों के बँधे हुए पाप कर्म

संपूर्ण लोक में फैले हुए भौरों के समान काले, सूर्य की किरणों से खंडित रात्रि संबंधी समस्त अंधकार की तरह क्षणभर में शीघ्र ही विनाश को प्राप्त हो जाते हैं।

कुछ लोग पंचपरमेष्ठी की पूजा से दुःख संकट दूर नहीं होता है, इस प्रकार मानकर मिथ्या देव-देवियों की पूजा करते हैं। विभिन्न मिथ्या अवलंबनों का सहारा लेते हैं, परंतु पंचपरमेष्ठी की भक्ति से केवल लौकिक या इहलोक संबंधी दुःख नहीं नष्ट होता वरन् समस्त शारीरिक, मानसिक रोग दूर हो जाते हैं। परंतु अज्ञानी लोग भ्रम से अनेक कुप्रवृत्ति करते रहते हैं। यथा कहा भी है-

**विषापहारं मणिमौषधानि, मंत्र समुद्दिश्य रसायनं च।**
**भाम्यन्त्यहो न त्वमिति स्मरन्ति, पर्यायनामानि तवैव तानि।। (14)**

(विषापहार पृ. 17)

आश्चर्य हैं कि लोग विष का दूर करने वाले मणि को, औषधियों को, मंत्र को, रसायन को उद्देश्य कर यहाँ-वहाँ घूमते हैं, किन्तु आप ही मणि हैं, औषधि हैं, मंत्र हैं और रसायन हैं ऐसा विचार नहीं करते। क्योंकि वे मणि आदि आपके ही पर्यायवाची शब्द हैं।

जो पूजादि करके उसके फलस्वरूप धन, वैभव, पूजादि की कामना करते हैं वो मानो राख के लिए चंदन की लकड़ी को जलाते हैं, धागे के लिए रत्नों का हार तोड़ धागा निकालते हैं, चिंतामणि प्राप्त करके कौआ उड़ाने में फेंक देते है, चक्रवर्ती बनकर भिक्षा माँगते है, अमृत को त्यागकर विषपान करते हैं क्योंकि लौकिक कामना करना निदान है। इस निदान से सम्यग्दर्शन ही नष्ट हो जाता है। सम्यग्दर्शन नष्ट होने से वह धार्मिक ही नहीं रहता, उसकी पूजा यथार्थ नहीं होती। पूजा यथार्थ न होने से सातिशय पुण्य बंध नहीं होता, जो पुण्य भी बंधता है वह थोड़ा होता है और वह पापानुबंधी पुण्य होता है। उस पुण्य के उदय से जो कुछ थोड़ा धन वैभव मिलता है उसमें भोगासक्त हो जाता है, मदांध हो जाता है इसलिये वह पुण्य उसके लिए पतन का कारण बन

जाता है, संसार का कारण बन जाता है। निष्काम कर्म करने से मानसिक शांति मिलती है, सातिशय पुण्यानुबंधी पुण्य बंधता है। उस पुण्य के उदय से उत्तम शरीर, उत्तम गति, वैभव प्राप्त करता हुआ भी उसमें भोगासक्त नहीं होता है जिसके कारण वह आगे जाकर मुनि बनकर मोक्ष प्राप्त कर लेता है। इसीलिये धर्म करता हुआ लौकिक कामना, लौकिक माँग नहीं करना चाहिए। एक कवि ने कहा है-

**माँगन मरण समान है, मत माँगों कोई भीख।**
**माँगन से मरना भला यह सद्गुरु की सीख।**
**बिन माँगे मोती मिले माँगे मिले न भीख।**
**बिन माँगे दूध बराबर माँगे मिले तो पानी।**
**कबीर वह है खून बराबर जामे खेंचातानी।।**

याचना करने वाला दीन, हीन भिखारी होता है या माँगने से वह दीन-हीन भिखारी बन जाता है परंतु जो कर्त्तव्य करता हुआ नहीं माँगता है वह महान् प्रभु बन जाता है क्योंकि उसका कर्त्तव्य ही उसे समुचित फल दे देता है, जिस प्रकार दूर से वृक्ष की पूजा करने से वृक्ष की छाया नहीं मिल सकती है किन्तु वृक्ष के नीचे छाया में बैठने से छाया मिल जाती है। कहा भी है-

**इति स्तुति देव! विधाय दैन्याद्वरं न याचे त्वमुपेक्षकोऽसि।**
**छायातरुं संश्रयतः स्वतः स्यात्कश्छायया याचितयात्मलाभः।। (38)**

(विषापहार पृ. 44)

हे देव! इस प्रकार स्तुति करके मैं दीन भाव से वरदान नहीं माँगता; क्योंकि आप उपेक्षक हैं राग-द्वेष से रहित है अथवा वृक्ष का आश्रय करने वाले पुरुष को छाया स्वयं प्राप्त हो जाती है। छाया की याचना से क्या लाभ है?

**देहीति वचनं श्रुत्वा देहस्थाः पंचदेवताः।**
**मुखान्निर्गत्य गच्छन्ति श्री-ह्री-धी-धृति कीर्तयः।।**

अर्थात् देहि इस वचन को सुनकर शोभा, लज्जा, बुद्धि, धैर्य और कीर्ति

से शरीर रूप भवन में रहने वाले पाँच देवता देहि इस वचन के साथ ही मुख से निकलकर चले जाते हैं। अतएव ऐसी याचना का परित्याग करना ही योग्य है।

**परमाणोः परं नाल्पं नभसो न महत्परम्।**
**इति ब्रुवन् किमद्राक्षीन्नेमौ दीनाभिमानिनौ।। (152)**

(आत्मानुशासनम् पृ. 144)

परमाणु से दूसरा कोई छोटा नहीं है और आकाश से दूसरा कोई बड़ा नहीं है, ऐसा कहलाने वाले क्या इन दीन और अभिमानी मनुष्यों को नहीं देखा है?

**याचितुगौरवं दार्तुमन्ये संक्रान्तमन्यथा।**
**तदवस्थौ कथं स्यातामेतौ गुरुलघू तदा।। (153)**

याचक पुरुष का गौरव दाता के पास चला जाता है, ऐसा मैं मानता हूँ। यदि ऐसा न होता तो फिर उस समय देने रूप अवस्था से संयुक्त दाता तो गुरु और ग्रहण करने रूप अवस्था से संयुक्त याचक लघु (क्षुद्र) कैसे दिखता? अर्थात् ऐसे नहीं दिखने चाहिए थे।

**अधो जिघृक्षवो यान्ति यान्त्यूर्ध्वमजिघृक्षवः।**
**इति स्पष्टं वदन्तौ वा नामोन्नामौ तुलान्तयोः।। (154)**

तराजू के दोनों ओर क्रम से होने वाला नीचापन और ऊँचापन स्पष्टतया यह प्रगट करता है कि लेने की इच्छा करने वाले प्राणी नीचे और न लेने की इच्छा करने वाले प्राणी ऊपर जाते हैं।

परंतु वर्तमान में देखने में आता है कि विधान, पंचकल्याण को धन कमाने का एक साधन बना लिया है। इस पूजादि करने के लिए जितना खर्च होगा उस खर्च को पहले चंदा माँग-माँगकर इकट्ठा करते है और लक्ष्य यह बनाकर चलते है कि जितना खर्च/व्यय होगा उससे अधिक लाभ/आय होनी चाहिए। इसलिये पंचकल्याणादि में भीड़ इकट्ठी करने के लिए बाह्य आडम्बर

बाजा, संगीत-पार्टी की प्रधानता रहती है, क्योंकि इससे भीड़ अधिक इकट्ठी होगी जिससे बोली में अधिक धन इकट्ठा होगा। इसमें भाव की पवित्रता, पूजा की पद्धति, अंतरंग-क्रियाओं को एकदम गौण कर देते हैं तथा साधु-संत को इसीलिए बुलाते हैं कि उनके भक्तगण अधिक आयेंगे, भीड़ एकत्र होगी और बोली अधिक से अधिक रुपयों में जायेगी। बोली में तो घंटों लगायेंगे परंतु साधुओं के पापहारी अमृतमय उपदेश नहीं करवायेंगे। जो धन्नासेठ, नेतादि सप्तव्यसनी, भ्रष्टाचारी, आतंकवादी और जो असामाजिक तत्त्व होते है उनका फोटो, नाम पत्रिका में छपवायेंगे, उनको माला पहनायेंगे, अच्छी व्यवस्था करेंगे, उनका अतिथि सम्मान अधिक करेंगे परंतु धार्मिक श्रावक, त्यागियों की, साधु-संतों की उचित व्यवस्था तक नहीं करेंगे। जिस जैन धर्म में संपूर्ण धार्मिक क्रियाएँ कामनाओं को नष्ट करने के लिए हैं वहीं जैन धर्म में आज धर्म के नाम पर कामना का पोषण अधिक करते हैं, धन का अधिक संचय करते हैं, आडम्बर, दिखावा अधिक करते हैं। दान तो स्व-पर उपकार के लिए स्वेच्छा से दिया जाता है, भले कोई देखे या न देखे परंतु आज दान, धन का प्रदर्शन करने के लिए, वाह-वाह लूटने के लिए, नाम लिखवाने के लिए करते हैं। जो हर कार्य में आगम की दुहाई देते है उन्हें भी मैं प्रश्न करता हूँ कि प्राचीन जैन आगम में जैन आचार्यकृत शास्त्रों में कहाँ पर बोली का विधान है? जिस प्रकार मंडी में वस्तु की बोली करते है उसी प्रकार धर्म की बोली करके धर्म को भिखारियों की एक वृत्ति बना दिया गया है। जिस कार्यक्रम में अधिक से अधिक बोली जाती है उस कार्यक्रम को ही सफल मान लिया जाता है और उसे ही प्रभावना भी मान लिया जाता है। प्रभावना का अर्थ रुपया इकट्ठा करना नहीं है, भीड़ इकट्ठा करना नहीं है। प्रभावना का अर्थ है (प्र+भावना) अर्थात् प्रकृष्टा/उत्तम/प्रशस्त/उदात्त निर्मल भावना ही प्रभावना हैं। जिस कार्यक्रम में भावना की निर्मलता नहीं है, भावना का प्रमार्जन नहीं है उसे प्रभावना नहीं कहते हैं। जिस प्रकार बाजार में भीड़ लगती है, नेताओं की सभाओं में भीड़

लगती है क्या उसे प्रभावना कहेंगे? कदापि नहीं। जिस जैन धर्म में परिग्रह को सबसे बड़ा पाप कहा गया है आज उस जैन धर्म में धर्म के नाम पर भी परिग्रह का संचय हो रहा है। यह अति विचारणीय, परिवर्तनीय कार्य है, नहीं तो धर्म में केवल धन्ना सेठों का ही अनैतिक प्रवेश एवं अधिकार हो जाएगा तथा धार्मिक व्यक्तियों का बहिष्कार हो जाएगा। मेरा यह अभिप्राय नहीं कि धर्म में दान नहीं दे, पंचकल्याण नहीं करें, पूजा न करें, धार्मिक व्यक्तियों का सम्मान न करे परंतु यह मेरी अवश्य सत्यग्राहिता एवं सत्य-पक्षपातिता है कि जैन धर्म की जो पवित्रता है, जो स्वस्थ आगमयुक्त प्रणाली है उसका उल्लंघन न हो, सब कोई स्वेच्छा से अपना कर्त्तव्य करते हुए जैन धर्म की प्रभावना करें। दान भी बोली से न देकर स्वेच्छा से यथाशक्ति, यथाभक्ति दें।

मूर्ति एवं मंदिर धर्माराधना के निमित्त प्राथमिक व्यक्तियों के लिए आवलंबनभूत है। जैन धर्म की सभ्यता, संस्कृति एवं परंपरा को जीवंत रखने के लिए आधारभूत भी है। वीरसेन स्वामी ने धवला में कहा है कि जिस प्रकार वज्रपात से पहाड़ विध्वंस हो जाता है उसी प्रकार जिनेन्द्र भगवान् की मूर्ति के दर्शन से निधत्ति निकाचित कर्म रूपी पहाड़ भी विध्वंस हो जाता है, सम्यक्दर्शन की उत्पत्ति होती है और सम्यक्दर्शन की निर्मलता होती है क्योंकि जिनेन्द्र भगवान् की प्रतिमा के दर्शन से भगवान् का ध्यान होता है, ज्ञान होता है, भान होता है, जिससे भाव की निर्मलता होती है, सम्यक्दर्शन की उत्पत्ति होती है, पापकर्म की निर्जरा होती है, पुण्यबंध होता है, जिससे परंपरा से मुक्ति मिलती है। इसलिये जो मंदिर बनवता है, मूर्ति की स्थपना करता है उसकी भी भावना पवित्र होने से उसको भी महान् धर्म का लाभ होता है। कहा भी है-

**विम्बादामोन्नतियवोन्नतिमेव भक्त्या,**
**ये कारयंति जिनसद्म जिनाकृति च।**
**पुण्यं तदीयमिह वागपि नैव शक्ता,**
**वक्तुं परस्य किमु कारयितुं द्वयस्य।।** (बोधप्राभृतम् पृ. 155)

जो मनुष्य भक्तिपूर्वक (अधिक नहीं तो कम से कम) बिम्बादल कुन्दरू के पत्र के समान ऊँचे जिनमंदिर और जौ के बराबर ऊँची जैन प्रतिमा को बनवाता है उसके पुण्य का कथन करने के लिए सरस्वती भी समर्थ नहीं है फिर जो अधिक ऊँचे जिनमंदिर और जिनप्रतिमा को बनवाता है उसके पुण्य का कहना ही क्या है।

परंतु जो धन का प्रदर्शन करने के लिए, केवल अहंकार की पुष्टि के लिए, वाद-विवाद को, पंथवाद को, फूट को बढ़ाने के लिए, धन कमाने के लिए मंदिर बनाता है, मूर्ति बनवाता है तो वह यथार्थ से धर्म का भागी नहीं होता है क्योंकि धर्म का स्वरूप उसका फल आत्मा की निर्मलता है, आध्यात्मिक प्रगति है। परंतु कुछ अज्ञानी मिथ्यादृष्टि जीव धर्म के नाम पर अधर्म ही करते हैं। पूर्वाचार्यों ने कहा भी हैं-

**धर्मः शब्द मात्रेण बहुशः प्राणिनोऽधमाः।**
**अधर्ममेव सेवन्ते विचारजड़चेतसा।।**

अर्थात् बहुशः अधम प्राणी विचार जड़ चित्त से अधर्म को ही सेवन करता है।

पूजक पूजा करते हुए स्व-पर तथा विश्व-कल्याण की भावना को भाता है। वह संकीर्ण भावना से ऊपर उठकर विश्व मैत्री, विश्व कल्याण, विश्व शंति की भावना भाता है कि-

**संपूजकानां प्रतिपालकानां यतीन्द्र सामान्य तपोधनानाम्।**
**देशस्य राष्ट्रस्य पुरस्य राज्ञः करोतु शान्तिं भगवाज्जिनेन्द्रः।। (6)**

(ज्ञानपीठ पुष्पांजलि-पृष्ठ 85)

पूजा करने वालों को, प्रजा के रक्षकों को, मुनीन्द्रों को और सामान्य तपस्वियों को देश, राष्ट्र, नगर और राजा को भगवान् जिनेन्द्र शांति प्रदान करें।

**क्षेमं सर्वप्रजानां प्रभवतु बलवान्धार्मिको भूमिपालः,**

**काले काले च सम्यग् वितरतु मघवा व्याधयो यान्तु नाशम्।**
**दुर्भिक्षं चौर मारी क्षणमपि जगतां मास्म भूज्जीवलोके,**
**जैनेन्द्रं धर्मचक्रं प्रभवतु सततं सर्व-सौख्य-प्रदायि।। (7)**

सब प्रजा का कल्याण हो। राजा बलवान् और धार्मिक हो। मेघ समय-समय पर अच्छी वृष्टि करें। सब रोगों का नाश हो (जगत् में प्राणियों को दुर्भिक्ष, चोरों का उपद्रव तथा मारी (प्लेग) क्षणभर के लिए भी न हो और सब सुखों का देने वाला जैन धर्म सदा फैला रहे।)

**प्रध्वस्त-घाति-कर्माणः केवलज्ञान-भास्कराः।**
**कुर्वन्तु जगतां शान्तिं वृषभाद्या जिनेश्वराः।। (8)**

घातिया कर्मों का नाश करने वाले और केवलज्ञान रूपी सूर्य ऋषभदेव आदि तीर्थंकर जगत् में शांति करें।

सम्यक्दृष्टि भक्त का अंतिम लक्ष्य केवल मोक्ष होता है। पूजा से पुण्य बंध होते हुए भी पुण्य को भी वह अंतिम लक्ष्य नहीं मानता है पूजा के माध्यम से जो पुण्यबंध होता है और पुण्य के माध्यम से जो बाह्य शरीर आदि मिलता है उस शरीर आदि को भी आत्मकल्याण में लगाता है अर्थात् पुण्य का हवन भी मोक्ष रूपी यज्ञ में कर लेता है। यथा-

**अर्हन् पुराणपुरुषोत्तम पावनानि,**
**वस्तून्यनूनमखिलान्ययमेक एव।**
**अस्मिन् ज्वलद्विमल केवल बोधवह्नौ,**
**पुण्यं समग्रमहमेकमना जुहोमि।। (12)**

हे अर्हन्! हे पुराणपुरुषोत्तम्। यह असहाय मैं इन पवित्र समस्त जलादि द्रव्यों का आलंबन लेकर अपने समस्त पुण्य को इस दैदीप्यमान निर्मल केवलज्ञान रूपी अग्नि में एकाग्रचित्त होकर हवन करता हूँ।

उपर्युक्त आगम प्रमाण से पाठक हो यह ज्ञात हो गया होगा कि वर्तमान में कुछ लोग किस प्रकार पूजा की पवित्र भावना एवं उद्देश्य से नष्ट/भ्रष्ट एवं

पदच्च्युत हैं।

भक्त अपनी भावना के माध्यम से मूर्ति को भी साक्षात् भगवान् मानकर पूजता है तथापि वह जानता है कि भगवान् तो चैतन्य स्वरूप अखण्ड पिण्ड है। उसके एक भी आत्मप्रदेश इस मूर्ति में नहीं आ सकते हैं। यह तो स्थापना निक्षेप से मूर्ति को भावना के माध्यम से भगवान् की कल्पना की जाती है। हरिभद्र सूरी ने कहा भी है-

**मुक्त्यादौ तत्त्वेन प्रतिष्ठिताया न देवतापास्तु।**
**स्थाप्येन च मुख्येन तदधिष्ठानाद्य भावेनः।**
**भवति च खलु प्रतिष्ठा निजभावस्यैव देवतो देशात्।।**

मुक्त होकर लोकांत में जा विराजे हुए देवता स्थापत्य (मूर्ति) में नहीं आ सकते अतः मुख्य सक्षात् देव की स्थापना तो नहीं है। परन्तु उपचार से, देवता के उद्देश्य से निज भावों की ही मूर्ति में प्रतिष्ठा होती है।

जिस प्रकार भारत का नक्शा यथार्थ से भारत नहीं है किन्तु उस नक्शे के माध्यम से भारत का परिज्ञान होता है उसी प्रकार मूर्ति निश्चय नय से भगवान् नहीं है तथापि मूर्ति के माध्यम से भगवान् का परिज्ञान होता है। भारत का राष्ट्रीय-ध्वज तिरंगा है। प्रत्येक भारतीय नागरिकों का कर्त्तव्य उसका सम्मान करना है, उसको गौरव देना है। परन्तु यथार्थ से भारत तिरंगा नहीं है। यदि कोई केवल तिरंगे को गौरव देता है परन्तु भारतीय स्वस्थ परंपरा को न गौरव देता है, न भारतीयों के प्रति सम्मान का भाव है तो उसका तिरंगे को गौरव देना व्यर्थ है, ढोंग है, रूढ़ि है, इसी प्रकार कोई यदि जिन मूर्ति को महत्व देता है परन्तु जैन परंपरा, जैन संस्कृति, जैन सिद्धांत को यथार्थ से स्वीकार नहीं करता है तो उसकी यह मूर्ति पूजा व्यर्थ है। कुछ व्यक्ति तो अंध-श्रद्धा रूप में मूर्ति को मानते हैं परन्तु जिनेन्द्र भगवान् द्वारा प्रतिपादित सिद्धांत को नहीं मानते हैं वरन् उसके विपरीत भी चलते हैं। मूर्ति के लिए मंदिर बनायेंगे पंचकल्याण करेंगे परन्तु साक्षात् जीवन्त रत्नत्रय के धारी साधु की सेवा नहीं करेंगे, उन्हें आहार

नहीं देंगे, यहाँ तक कि कुछ व्यक्ति दिगम्बर साधुओं के लिए दर्शन के निमित्त मंदिर तक नहीं खोलेंगे। यदि कोई साधु स्वच्छता से, भक्ति से मूर्ति के चरण स्पर्श करेंगे तो कुछ व्यक्ति साधुओं का विरोध करेंगे, उन्हें अपशब्द बोलेंगे, झगड़ा-कलह करेंगे। ऐसे व्यक्ति तो वैसे हैं जो ''जिन्दा बाप से लट्ठम लट्ठा, मरे हुए को पहुँचाये गंगा'' अर्थात् जीवित पिता की सेवा नहीं करेंगे, उन्हें अपमानित करेंगे मारेंगे-पीटेंगे परन्तु उनकी मृत्यु के बाद उसके शव को गंगा पहुँचायेंगे, चंदन की लकड़ी एवं घी से शवदाह करेंगे, उसके नाम पर श्राद्ध करेंगे, दान देंगे, लाण बाटेंगे (मृत्यु के उपलक्ष्य में उपहार) संस्था खोलेंगे और पिता की मूर्ति की स्थापना करेंगे। किसी ने कहा भी हैं-

**दुखिया को तपन देते हैं लोग।**
**खिलती कलियों को कुचल देते हैं लोग।**
**जीते जी भले तन पर न हो कपड़ा।**
**मरने पर कफन देते हैं लोग।**

उन्हें ये ज्ञात नहीं कि साधु ही पंचपरमेष्ठी है, नवदेवता है और जीवन्त धर्म है। ऐसे व्यक्ति तो वस्तुतः जड़ पूजक है। ऐसे व्यक्ति न अपना कल्याण कर सकते हैं, न धर्म का प्रचार कर सकते हैं परन्तु इसके विपरीत वे स्वघात के साथ-साथ धर्म का भी घात कर लेते हैं।

प्राथमिक साधक भावात्मक दृष्टि से एवं ज्ञान की दृष्टि से अधिक दृढ़ एवं परिपक्क नहीं होने के कारण वह बाह्य मूर्ति आदि का आवलंबन लेता है। जिस प्रकार असमर्थ शिशु चलने के लिए दीवाल, माँ-बाप की अँगुली का अवलंबन लेकर चलता है और वही जब समर्थ हो जाता है तो उन अवलंबनों का त्याग कर देता है। इसी प्रकार प्राथमिक पूजक भगवान् की पूजा के लिए भाव पूजा के साथ-साथ द्रव्यों का भी आवलंबन लेता है। कहा भी है-

**द्रव्यस्य शुद्धिमधिगम्य यथानुरूपं,**
**भावस्य शुद्धिमधिकामधिगन्तु कामः।**

**आलम्बनानि विविधान्यवलम्ब्य वल्गन्,**

**भूतार्थ-यज्ञ-पुरुषस्य करोमि यज्ञम्। (11)** (ज्ञानपीठ पूजांजलि पृ. 31)

अपने भावों की परम शुद्धता को पाने का अभिलाषी मैं आगमानुकूल जल, चंदनादि द्रव्यों की शुद्धता को पाकर जिनस्तवन, जिनबिंब दर्शन आदि अनेक आवलंबनों का आश्रय लेकर भूतार्थ रूप पूज्य अरहंतादि का पूजन करता हूँ।

जिस प्रकार बच्चे खेलने के लिए गेंद, खिलौने आदि का अवलंबन लेते हैं और उसके माध्यम से अंगोपांग को संचालन करके मनोरंजन के साथ-साथ शरीर को स्वस्थ सबल बनाते हैं तथापि मनोरंजन या खेल उस गेंद में या खिलौने में नहीं है, वह तो केवल बाह्य अवलंबन है। यदि कोई बच्चा खिलौने को लेकर दुःखी होगा, रोगी होगा, दुर्बल होगा, तो इसमें खिलौनों का कोई दोष नहीं है परन्तु स्वयं का ही दोष है। इसी प्रकार कुछ लोग पूजा का साध्य भूलकर साधन (पूजा द्रव्य) में इतने भटकते हैं, इतने दूषित भाव करते हैं कि उनकी पूजा उनके लिए, आत्मकल्याण के लिए कारण नहीं बनती है परन्तु आत्मपतन के लिए भी कारण बन जाती है। जिस प्रकार एक नगर में पहुँचने के लिए एक रास्ता माध्यम है, उस रास्ते में लक्ष्य की ओर बढ़ने से हम नगर को प्राप्त कर सकते हैं, परन्तु उस रास्ते को लेकर कलह करते रहेंगे और आगे नहीं बढ़ेंगे तो इच्छित नगर को प्राप्त नहीं कर सकते हैं। इसी प्रकार अष्ट-द्रव्य अवलंबन है, प्रतीक है। जिस प्रकार जल पवित्रता का, शीतलता का प्रतीक है। उसको चढ़ाते हुए भक्त भावना भाता है कि हे भगवन्, जिस प्रकार आपने जन्म-जरा-मृत्यु-विनाश करके शाश्वत् सुख को प्राप्त किया है, उसी प्रकार मैं भी जन्म, जरा, मृत्यु का विनाश करके शाश्वत् सुख को प्राप्त करूँ-शीतलता को प्राप्त करूँ। परन्तु यदि कोई व्यक्ति जल चढ़ाते हुए यह विचार करता है कि यह जल भगवान् को प्राप्त होता है और भगवान् इसको पीकर अपनी प्यास बुझाते है तो यह उसकी मिथ्या-धारणा है। इसी प्रकार कोई यदि जल चढ़ाते

हुए भौतिक सुख की कामना करता है या क्रोध आदि कषायों से प्रेरित होकर कुछ खोटा विचार करता है या खोटा कार्य करता है तो यह भी पूजा के नाम पर कलंक है। जल पवित्रता का प्रतीक है तो चंदन शीतलता का प्रतीक है, अक्षत-(चाल) अक्षय सुख का प्रतीक है, पुष्प काम बाण नाश करके आध्यात्मिक सुख प्राप्त करने का प्रतीक है।

नैवेद्य क्षुधा रोग नाश का प्रतीक है, दीप अज्ञान रूपी अंधकार का नाश करने का प्रतीक है, धूप अष्ट कर्म को दहन करने का प्रतीक है, फल मोक्ष सुख प्राप्त करने का प्रतीक है। अर्घ अनर्घ पद प्राप्त करने का प्रतीक है।

उपर्युक्त गुणों को प्राप्त करने के लिए ही उपर्युक्त प्रतीकात्मक द्रव्य चढ़ाये जाते हैं, न कि भगवान् को खिलाने के लिए, खुशामद करने के लिए, उनको संतुष्ट करने के लिए या उनसे वर प्राप्त करने के लिए। हिन्दू धर्म में भी कहा है-

**अहिंसा प्रथमं पुष्पं, द्वितीयं करण ग्रहः।**
**तृतीयकं भूत दया, चतुर्थं क्ष्यान्तिरेव च।।**
**शमस्तु पंचम पुष्पं, दम षष्ठं च सप्तकम्।**
**ध्यानं सत्यं चाष्टमं च ह्येतैस्तुष्यति केशवः।।**

अहिंसा प्रथम पुष्प है, इन्द्रिय दमन द्वितीय पुष्प है, जीव दया तृतीय पुष्प, क्षमा चतुर्थ पुष्प है, कषायों का दमन रूप शम भाव को पंचम पुष्प कहते हैं, मन एवं इन्द्रियों का दमन करना षष्ठ पुष्प है, ध्यान सप्तम पुष्प है, सत्य अष्टम पुष्प है। इसके द्वारा पूजा करने से भगवान् (विष्णु) प्रसन्न होते हैं।

आज जैन धर्म में देखने में आने वाले अधिकांश पंथवाद, झगड़ा, फूट, वैमनस्य है वह सब पूजा द्रव्य को लेकर है। रोग शमन के लिए औषध सेवन किया जाता है परन्तु अयोग्य औषध सेवन से रोग शमन नहीं होता है वरन् रोग बढ़ता है। इसी प्रकार पूजा से पाप का संवर होता है पुण्य का बंध होता है और परंपरा से मोक्ष भी मिलता है। परंतु अयोग्य प्रणाली से, दूषित भाव से पूजा

करने से पाप भी बंध होता है।

मैंने अभी तक जो जैनागम के विभिन्न ग्रंथों का अध्ययन किया उसमें जो पूजा, पूजक, पूज्य, पूजा फल का वर्णन है उसका प्रायः अभाव भावात्मक तथा आचरणात्मक रूप में वर्तमान में पूजकों में तथाकथित धर्मात्माजनों में पाया जाता है। इसलिये मैंने 1990 में धवला, श्रावकाचार, पुराण, सैद्धांतिक, दार्शनिक आदि ग्रंथों के आधार पर 'जिनार्चना' नामक कृति का संकलन एवं लेखन किया था। उसमें मैने आगमानुसार जिनअर्चना-पूजन का सविस्तृत वर्णन किया है। वह दो भागों में छपी थी। जिसकी माँग अधिक होने के कारण उसका प्रकाशन द्वितीय बार 1995 में हुआ। पूजा संबंधी कुछ महत्वपूर्ण विषय उसमें नहीं होने के कारण एवं उसकी महती आवश्यकता के कारण इस कृति का संकलन एवं लेखन किया गया। इस कृति में मैंने पूर्वाचार्य के ग्रंथों के माध्यम से कुछ मेरी क्रांतिकारी, तीक्ष्ण विचारधारा का भी सम्मिश्रण किया है। भले यह विचारधारा कुछ रूढ़िवादियों को कटु लग सकती है परन्तु यह यथार्थ-सत्य है एवं हितकारी है। कभी-कभी सत्य कटु भी होता है। जिस प्रकार हितकारी औषधि कटु भी होती है। परन्तु मेरी भावना कटु नहीं है अपितु पवित्र है। जिस प्रकार रोगी अबोध बालक कटुक औषधि नहीं पीने पर दयालु विवेकवान् माता उस बच्चे को कटुक औषधि भी जबरदस्ती पिला देती है जिससे उस बच्चे का रोग दूर होता ह। उसी प्रकार सच्चे गुरु का कठोर वचन भी भव्यरूपी कमल को विकसित कर देता है। कहा भी है आत्मानुशासन में-

**विकाशयन्ति भव्यस्य मनोमुकुलमंशवः।**
**रवेरिवारविन्दस्य कठोराश्च गुरुक्तयः।। (142)**

कठोर भी गुरु के वचन भव्य जीव के मन को इस प्रकार से प्रफुल्लित (आनंदित) करते हैं जिस प्रकार की सूर्य की कठोर (संतापजनक) किरणें कमल की कली को प्रफुल्लित किया करती हैं। किसी कवि ने कहा भी हैं-

**गुरु कुम्हार कुम्भ शिष्य है, गढ़-गढ़ काढ़े खोट।**

**अन्दर हाथ पसार कर ऊपर मारे चोट।।**

कुछ उपदेशक 'गंगा गए गंगा दास, यमुना गए यमुना दास' के समान जहाँ अपनी स्वार्थसिद्धि होती है वहाँ पर सत्य को भी नकार देते हैं। श्रोता के अनुसार (मतानुकूल) कुछ-कुछ (अन्यथा) बकते जाते हैं परन्तु जो यथार्थवादी, सत्य का पूजक निर्भयी, निःस्वार्थी, पापभीरु, निष्पक्ष होते हैं, वे अंतरंग से दया से द्रवित होकर दूसरों के उपकार के लिए कठोर वचन भी कभी-कभी प्रयोग कर लेते हैं।

**जना घनाश्च वाचालाः सुलभाः स्युर्वृथोत्थिताः।**
**दुर्लभा ह्यन्तरार्द्रास्ते जयदभ्युज्जिहीर्षवः।। (4)** आत्मानुशासन

जिसका उत्थान (उत्पत्ति और प्रयत्न) व्यर्थ है ऐसे वाचाल मनुष्य और मेघ दोनों ही सरलता से प्राप्त होते हैं। किन्तु जो भीतर से आर्द्र (दयालु और जल से पूर्ण) होकर जगत् का उद्धार करना चाहते हैं ऐसे वे मनुष्य और मेघ दोनों ही दुर्लभ हैं।

**निन्दन्तु नीतिनिपुणा। यदि वा स्तुवन्तु**
**लक्ष्मीः समाविशतु गच्छतु वा यथेष्टम्।**
**अद्यैव वा मरणमस्तु युगान्तरे वा**
**न्याय्यात्पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः। (84)** पृ. 113 नीतिशतक

नीति निपुण विद्वान् निंदा करे अथवा स्तुति, लक्ष्मी प्राप्त हो अथवा पास की भी चली जाय, आज ही मृत्यु हो अथवा एक युग बाद, परन्तु गंभीर पुरुष न्याय मार्ग से च्युत नहीं होते।

मैंने इस शास्त्र में आगम के अविरुद्ध स्व-पर उपकार के लिए धर्म विरुद्ध कार्यों के परिशोधन के लिए जो कुछ लिखा है उसमें मेरी किसी प्रकार की दूषित भावना नहीं है, पक्षपात नहीं है, कटुता नहीं है, द्वेषता नहीं है तथापि यदि कोई अपनी स्वदूषित भावना से कुछ अयथार्थ विचार करे या कार्य करे उसके लिए मैं उत्तरदायी नहीं हूँ। जिस प्रकार सूर्य उदय होने पर भी उल्लू

को नहीं दिखाई देता है तो इसमें सूर्य का दोष नहीं परन्तु उल्लू का ही दोष है। मैंने तो पवित्र भावना से यह कार्य किया है जो भव्य है वह तो इससे लाभ ही लेगा परन्तु जो अभव्य है या जिसका संसार अभी बहुत दूर है वह इसका दुरुपयोग भी कर सकता है। उसके लिए भी मैं उत्तरदायी नहीं हूँ क्योंकि अभी तक जो अनंत तीर्थंकर हो गये हैं आगे भी जो अनंत तीर्थंकर होंगे वे भी संपूर्ण अभव्यों का उद्धार नहीं कर सकते हैं। मैं तो एक जिनवाणी का अकिंचित्कर सेवक हूँ। जिनवाणी का एवं सत्य का सेवन करना एवं उसका प्रचार-प्रसार करना मेरा कर्त्तव्य है। मैं किसी का ना कर्त्ता हूँ ना धर्त्ता हूँ। यदि आगम विरुद्ध मुझसे कुछ गलती इसमें हो गई हो तो आगम निष्ठ सत्यग्राही सज्जन यदि उस गलती का परिज्ञान मुझे करायेंगे मैं उसका यथायोग्य संशोधन भी करूँगा क्योंकि छद्मस्थ से गलती होना स्वाभाविक है। दूसरों के कोप भाजन के भय से यदि कोई सत्य को स्वीकार नहीं करता है तो वह महान् कायर है, दीन-हीन है, पापी है, मिथ्यादृष्टि है। इसलिये सम्यक्‌दृष्टि को अहंकारी नहीं बनना चाहिए अपितु सत्य के लिए अचल होना चाहिए, अहिंसक बनना चाहिए परन्तु कायर नहीं, सरल बनना चाहिए परन्तु भोंदू नहीं, अनेकांतवादी बनना चाहिए परन्तु लुढ़क-पंथी नहीं क्योंकि सत्यग्राही, निर्भयता आदि आत्मा के गुण है, आत्मकल्याण के लिए प्रेरक तत्त्व है।

# समता तीर्थ धाम, अतिशय क्षेत्र सीपुर के परिवेश की अतिशयकारी विशेषताएँ

## (वैश्विक संत वैज्ञानिक श्रमणाचार्य श्री कनकनन्दी गुरुदेव श्रीसंघ के दीर्घ चातुर्मास-प्रवास से श्रीक्षेत्र का अद्भुत विकास)

**शुभभावक-श्रमण मुनि सुविज्ञसागर**

**(चाल : जहाँ डाल-डाल पर सोने की.....)**

भारतवर्ष की पुण्यधरा में...अतिशय क्षेत्र है आला...

सीपुर ग्राम अति प्यारा...समता तीर्थधाम निराला...2
जहाँ देव शास्त्र गुरु जिनालय है...सारे जग में न्यारा...
देशी-विदेशियों ने जाना...समता तीर्थ धाम निराला...(ध्रुव)

**...(विश्वविद्यालय...संत भवन...वन-उपवन...)...**

गोमती नदी के तीर ग्राम...एकांत शांत सुरम्य...
कृषक गोपालक ग्रामीणजन...दुग्ध उत्पादक जन...2
मूलेश्वर-समता तीर्थधाम का...समन्वय है प्यारा...सीपुर...(1)...

जंगल खेत प्रदूषण रहित...स्वास्थ्य शांतिदायी...
पशु-पक्षी विचरण करे...स्वतंत्र आनंददायी...2
पैंथर नीलगाय (रोजड़े) लोमड़ी सियार...सदा ही करते बसेरा...सीपुर...(2)...

इस क्षेत्र में सन् दो हजार दस (2010) में...चातुर्मास हुआ था...
कनकनन्दी गुरु श्रीसंघ का...यहाँ पुण्य प्रताप बड़ा था...2
उपलब्धियाँ अनेक हुई...जन-गण-मन था हर्षाया...समता...(3)...

अमेरिका के इंजीनियर...नरेन्द्र प्रद्युम्न वैज्ञानिक...
गुरुदेव की ज्ञान प्रभावना से...अत्यंत हुए प्रभावित...2
व्यापक गतिशील योजना सत्र...चला सात दिन प्यारा...समता...(4)...

गीताञ्जलियों की अजस्त्र धारा...झर-झर बहती जाये...
दो हजार ग्यारह (2011) से प्रारंभ...अब तक हो रही प्रवाहित...2
कनक गुरु की कविताओं ने...कर दिया ज्ञान उजियारा...समता...(5)...

इस क्षेत्र के रक्षक मानभद्र जी...नितिन को प्रेरणा देते...
आध्यात्मिक गुरु के चातुर्मास...आजीवन करने हेतु...2
प्रमुदितमना नितिन जैन...महान् भावना भाया...समता...(6)...

श्रमण-श्रावक की सुव्यवस्था...हर पल क्षेत्र पे होवे...

समता-शांति की अनुभूति से...जन-गण हर्षित होवे...2
'सुविज्ञ' श्रमण की शुभ भावना...सब जीव पावे साता...समता...(7)...

सीपुर, दिनांक 06.04.2017, मध्याह्न 2.00

# सीपुर क्षेत्र की विशेषताएँ

**-मुनि आध्यात्मनंदी**

**(चाल : क्या मिलिये ऐसे लोगों से.....)**

भारत देश के राजस्थान प्रांत का सीपुर ग्राम अति सुखकारी।
जीर्ण-शीर्ण प्राचीन जिनालय में कचरे में गड़े मिले श्रेयांस प्रभु।।

अति रमणीक मन भावन छवि देख समतासागर प्रमुदित हुए।
नितिन जैन के भी भाव तत्क्षण क्षेत्र उद्धार के प्रकट हुए।।

सीपुर समता तीर्थधाम यह जो विकसित हो वृहत् रूप लिये।
इस क्षेत्र के बहुत अतिशय उनमें से कुछ का मैं करूँ वर्णन।।

दो हजार पाँच (2005) से दो हजार सत्रह (2017) तक में दस हुए चातुर्मास।
जहाँ एक भी घर श्रावक का नहीं तो भी ऐसा होना है अतिशय।।

आचार्य कनकनन्दी जी ससंघ का दो हजार दस (2010) का हुआ चातुर्मास।
उस समय एक सौ आठ किलो घी से श्रेयांस प्रभु का हुआ अभिषेक।।

पच्चीस सौ सैतीस किलो का लड्डू चढ़ा (2537वाँ) महावीर निर्वाणोत्सव मनाये।
सीपुर क्षेत्र से ही कनकनन्दी (गुरु) का, (2011) कवित्व गुण प्रकट हुआ।।

तब से गीताञ्जली अजस्त्र धारा, प्रायः सड़सठ (67) तक पहुँच गयी।
नितिन भाई के प्रयत्न से पुनः गुरुदेव ससंघ (2016) चातुर्मास हुआ।।

आहार निवास की उचित व्यवस्था से संघस्थ साधु सभी स्वस्थ्य रहे।
ध्यान-अध्ययन साहित्य लेखन से ज्ञान-भाव में विकास हुआ।।

देव-शास्त्र-गुरु नूतन जिनालय संप्रति में निर्माण हुआ।

एक दिवसीय जिनालय प्रतिष्ठा सह द्वय क्षुल्लिका दीक्षा सम्पन्न हुई।।
प्रायः दस हजार भक्त जनों ने दृश्य देख बहु पुण्यार्जन किया।
प्रायः पचास वृद्ध रुग्ण साधु की आजीवन संपूर्ण व्यवस्था चलती रहे।।
ऐसी भावना नितिन भैया की गुरुदेव आशीर्वाद से शीघ्र सफल होवे।
जिनेन्द्रा दीदी की निःस्वार्थ सेवा से इस क्षेत्र का विकास होता रहे।
''आध्यात्मनंदी'' का सभी को शुभाशीष, सर्वांगीण विकास होता रहे।।

सीपुर, दिनांक 12.04.2017, प्रातः प्रायः 9.30

## अग्रणी आर्ष-आगम मार्ग प्रभावक आ. कनकनन्दी गुरुदेव

**-आर्यिका सुवत्सलमती**

**(चाल : ये तो सच है के.....)**
भारतवर्ष में श्रमण (संघ) है, श्रावक दर्शन कर पा रहेऽऽऽ
संप्रति काल में 'कनक' गुरु, आगमज्ञाता व अनुभवी है।। (ध्रुव)
सीपुर धाम में नित्य प्रति ही तो, समवसरण सम आगम वाणी खीरे।
जिनवाणी माता का अमृत झरे, शिष्यवृंद सभी प्रमुदित हो रहे।
कनक के रूप में है प्रभु, उनको समझना न आसान है।।...संप्रति...(1)
धर्म तीर्थ क्षेत्र पर (2017) ज्ञानमती माता का, गुप्तिनंदी श्रीसंघ से मिलना हुआ।
हस्तिनापुर की पूर्व संस्मृतियाँ, याद करके माता प्रमुदित हुयी।
कनकनन्दी सूरी/(गुरु) ज्ञानी हैं, आर्षमार्ग प्रभावक हैं।।...संप्रति...(2)
हस्तिनापुर क्षेत्र पर आगमन हेतु, आरा (बिहार) में श्रीसंघ को निवेदन किया।
(प्रायः 35) कुंथुसागर सूरी श्रीसंघ सह विराग-सुधर्मसगर भी श्रीसंघ सह (3+2)
प्रायः पंचदश त्रिंशत (350), विद्वानों (पंडितों) ने लाभ लिया।।...संप्रति...(3)
ज्ञानमती माता की समयसार टीका से, कनक गुरु ने ही रहस्य उद्घाटित किया।
सभी मंत्रमुग्ध हो श्रवण करते रहे, ज्ञान पिपासु सभी तृप्त होते रहे।

समयसार मय गुरु हैं स्व-अनुभव के आगार हैं।।...संप्रति...(4)

विमलसगर गुरु की आज्ञा हुयी, ज्ञानमती माता ने अनुमोदना की।
तब जिनार्चनाद्वय की रचना हुयी, पूजा-पाठ संबंधी भ्रांतियाँ दूर हुयी।
गुण-गण के भंडार हैं, वत्सलता की ये मूरत हैं।।...संप्रति...(5)

सीपुर, दिनांक 28.03.2017, रात्रि 9.15

## सीपुर अतिशय क्षेत्र की महिमा

**-आर्यिका सुवत्सलमती**

**(चाल : बुंदेलखण्डी आल्हा.....)**

राजस्थान (उद.) के ग्रामांचल में, सीपुर अतिशय क्षेत्र महान्।
'समतासूरी' व 'नितिन भैया' ने, वाको कर दओ जिर्णोद्धार।। (ध्रुव)

अतिशयकारी श्रेयांसनाथ जी, भूगर्भ में थे विराजमान।
दो हजार पाँच (2005) में समतासागर जी, नितिन भैया यहाँ पर आय।
मंदिर की अवस्था को देखकर2, दोनों का मन भर आय।। राज...

तीन वर्ष की अथक तपस्या, गुरु शिष्य से खूब कराय।
दो हजार दस (2010) में कनकनन्दी, गुरुवर का चौमासा कराय।
(2537) पच्चीस सौ सैतीस किलों का2, महावीर निर्वाण चढ़ाय।। राज...

बारह वर्ष में ग्यारह चौमासा, प्रभावना सह है कराय।
'मानभद्र' है क्षेत्र रक्षक, पूनम को मेला लग जाय।
अनेक प्रांत से भक्त आवे2, अपनो मनोरथ पूर्ण कर जाय।। राज...

साधु संघ की सेवा करन को, नितिन भैया को व्रत बन जाय।
'जीना' दीदी भी इनके संग में, निःस्वार्थ सहयोगी बन जाय।
जुग-जुग जीये सभी सहयोगी, सुवत्सल यही भावना भाय।। राज...

आहार निहार (विहार) निवास की, मनभावन व्यवस्था दी बनाय।

साधु संघ यहाँ साधना करे, यही भावना भैया भाय।
'रामनवमी' की अपर रात्रि में, सीपुर आह्ला दिया बनाय।। राज...

सीपुर, दिनांक 06.04.2017, ब्रह्म मुहूर्त 4.50

# सीपुर समतातीर्थ की पवित्रता, आचार्यश्री कनकनन्दी गुरुवर्य की निस्पृहता एवं नितिन भैया आदि की सेवा तत्परता

**-क्षु. सुवीक्षमती**

प्रकृति के अंक में स्थित समतातीर्थ सीपुर की इस पुण्य धरा पर आगमन करके मुझे अपूर्व आनंद प्राप्त हुआ है। यहाँ का प्रदूषण मुक्त परिवेश मनोरम एवं शांति प्रदायी है।

सूरीप्रवर श्री समतासागर जी गुरुदेव की प्रेरणा, मार्गदर्शन एवं आशीर्वाद से गुरुभक्त नितिन भैया ने तन-मन-धन एवं समय लगाकर अथक परिश्रम द्वारा सीपुर तीर्थ को स्वर्ग-सा रूप दे दिया है। जो भी व्यक्ति इस तीर्थ पर आता है वह स्वयं को सौभाग्यशाली समझता है। यहाँ स्थित देवागमगुरु जिनालय के दर्शन करके आनंदातिरेक से गद्गद् हो जाता है। अष्ट प्रातिहार्य एवं परिकर सहित त्रैलोक्य स्वामी श्री श्रेयांसनाथ विभु की दिव्य मूर्ति लखकर प्रशंसा किये बिना नहीं रहता है। माँ भारती की अप्रतिम प्रतिमा को वंदन करके धन्यता का अनुभव करता है। वात्सल्य रत्नाकर श्री विमलसागर जी सूरीश्वर की जीवन्त-सी मूर्ति के दर्श से गुरु के साक्षात् वात्सल्य की अनुभूति करता है और देवशास्त्र गुरु की निःस्वार्थ सेवा एवं भक्ति से शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक वेदना को विस्मृत करके निरोगता का अनुभव करता है।

सीपुर ग्राम स्थित श्री शांतिनाथ एवं श्रेयांसनाथ जिनेन्द्र भवन की तो महिमा ही अद्भुत है। जो भी यहाँ अपने दुःख-दर्द लेकर आता है वह उनसे

मुक्ति पाकर सम्यक्त्व को विशुद्ध करता है। क्षेत्ररक्षक श्री मानभद्र बाबा नितिन भैया के माध्यम से जिनशासन का माहात्म्य प्रदर्शित कर रहे है।

नितिन भैया की गुरुभक्ति अद्वितीय एवं प्रेरणास्पद है। वे साधु सेवा में सदा संलग्न रहते है। उनकी भावना है कि संयतों को लेशमात्र भी असुविधा न हो। अतः उन्होंने क्षेत्र पर तपोधनों के आहार, विहार, निहार एवं निवास की अनुपम व्यवस्था की है। जिस प्रकार से माँ गर्भस्थ शिशु की सुरक्षा करती है वैसे ही यहाँ साधुओं की व्यवस्थाएँ हैं। आगन्तुक जन क्षेत्र की व्यवस्था की भूरि-भूरि श्लाघा एवं अनुमोदना करते हैं। नितिन भैया अस्वस्थ होते हुए भी सदा ऊर्जान्वित एवं प्रफुल्लित रहते है। जो भी उनके संपर्क में आता है वह भी प्रसन्नचित्त हो जाता है।

आत्माकांक्षी आचार्यवर्य श्री कनकनन्दी जी गुरुदेव की समता, निस्पृहता एवं आध्यात्मिकता से नितिन भैया अति प्रभावित है। उनकी पवित्र भावना है कि गुरुदेव आजीवन इसी क्षेत्र पर रहकर आत्माराधना करें। यदि ज्ञान प्रसार हेतु अन्यत्र चातुर्मास भी करे तो चातुर्मास के कुछ समय पूर्व यहाँ से विहार करे एवं चातुर्मास समाप्त होते ही पुनः यहाँ पधार जाये। विहार आदि की संपूर्ण व्यवस्था मैं करूँगा। उनकी महती भावना है कि गुरुदेव के समय व शक्ति का अपव्यय न हो। गाँवों में दूर-दूर चौके लगने से गुरुदेव के अमूल्य समय व शक्ति का अपव्यय होता है। गुरुदेव को हाइपर एसीडीटी समस्या होने से ग्रीष्मकाल में उष्णता वृद्धि के कारण से स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। अतः गुरुदेव इस क्षेत्र पर दीर्घकाल तक रहकर निर्विकल्प आत्म-साधना करें।

नितिन भैया की भावना, भक्ति एवं सेवा से श्रीसंघ अत्यंत प्रभावित है। भैया की गुरुभक्ति एवं दृढ़ आत्मविश्वासी व्यक्तित्व की गुरुदेव बहुत सराहना करते हैं। ब्र. जिनेन्द्रा (जिना) दीदी का क्षेत्र के प्रति निःस्वार्थ समर्पण एवं व्यवस्था संयोजन प्रशंसनीय एवं अनुकरणीय है। वह भी साधुओं

की अनुकूलता हेतु तत्पर रहती है तथा आगन्तुकों की भी यथायोग्य समुचित व्यवस्था करती है। ब्र. रमीला दीदी भी आत्मसाधना करते हुए क्षेत्र के प्रति समर्पित है। दोनों ब्र. दीदियों ने आजीवन इस पुनीत तीर्थ पर रहकर इसके संरक्षण एवं संवर्द्धन हेतु गुरुदेव के समक्ष प्रण लिया है। संपूर्ण सीपुर परिवार क्षेत्र की संवृद्धि हेतु प्रयत्नरत है।

इस पवित्र तीर्थ के प्रभाव एवं गुरुदेव के आशीर्वाद से मेरे शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक स्वास्थ्य में वृद्धि हुई है। मुझे इस पुण्य धाम में आध्यात्मिक जीवन में उपयोगी अनेक अनुभव प्राप्त हुए है जो भविष्य में मेरी आत्म-उन्नति में साधक बनेंगे।

जिनेन्द्रा दीदी, रमीला दीदी, नितिन भैया एवं सकल सीपुर परिवार हेतु मेरी बहुत-बहुत शुभकामनाएँ हैं।

## सीपुर समता धाम नहीं शिवपुर धाम बना-मेरे लिये

**-क्षु. शांतिश्री**

अनेक वर्षों से मैं (क्षुल्लिका शांतिश्री) इस अतिशय क्षेत्र पर आती थी परन्तु 2010 में जब श्री कनकनन्दी जी गुरुदेव का चातुर्मास यहाँ हुआ तब मैं नितिन भैया से विशेष रूप से जुड़ी। चातुर्मास अनंतर जब इस संत निवास का शिलान्यास हुआ तब नींव की ईंट रखने का सौभाग्य भी मुझे मिला, इतना ही नहीं अभी दीक्षा के पूर्व नूतन निर्माणाधीन 'आर्यिका-भवन' में एक कक्ष के निर्माण के लिए अपनी चंचल लक्ष्मी का सदुपयोग हो, इस हेतु आर्थिक सहयोग दिया है।

वैसे तो सन् 1996 से (प्रायः 20 वर्ष पूर्व) मेरे दीक्षा लेने के भाव थे किन्तु योग्य समय नहीं आया था व प.पू. श्री कनकनन्दी जी गुरुदेव से मेरे जीवन का उद्धार होना था, सो दीक्षा नहीं हो पायी।

सन् 2016 के चातुर्मास में मैं संत-समागम व आहारदान का पुण्य

संपादन करने क्षेत्र पर आई थी। मेरा भाग्योदय हुआ, नितिन भैया की सत्प्रेरणा, गुरुदेव का शुभाशीष व संघस्थ सभी साधुवृंदों का स्नेह/वात्सल्य व जिना (जिनेंद्रा) दीदी, ब्र. रमीला दीदी की अनुमोदना व सस्नेह सहयोग से मेरे दीक्षा के भाव बनें।

आचार्यश्री विनम्रसागर जी ससंघ के सम्मेदशिखर यात्रा के समय भी मैं, जिना, रमीला दीदी, शकुन आदि साथ में रहे, प्रायः 5½ महीना मैं संघ के साथ रही हूँ।

मैं शिवपथ की अनुगामी बनकर बहुत प्रसन्न हूँ। गुरुदेव जब स्वाध्याय कराते है तब मुझे ऐसे अप्रतिम आनंद की अनुभूति होती है जैसे मैं साक्षात् समवसरण में आर्यिका के कोठे में बैठकर जिनवाणी श्रवण कर रही हूँ। अब ना काहू से दोस्ती, ना काहू से बैर वाली मेरी मनःस्थिति बनी है। बस अंतिम भावना है, गुरुचरणें में रहकर समता से साधना करूँ व निर्विकल्प समाधि-मरण करूँ।

अतिशय क्षेत्र सीपुर में नितिन भैया के अथक प्रयास से व जिना के निःस्वार्थ सहयोग से साधुसंघ की व अनेक प्रांतों से आने वाले भक्त/श्रावकगणों की उत्तम-आहार-निहार-निवास व भोजन की व्यवस्था हो रही है। क्षेत्र उत्तरोत्तर विकास करे व इस नूतन देवशास्त्र एवं मूल मंदिर की यशकीर्ति दिग्दिगंत में फैले, यही शुभभावना व शुभाशीष!

नोट-(भाव मेरे है (क्षु. शांतिश्री), शब्दांकन आ. श्री सुवत्सलमती जी ने किया है।)

सीपुर, दिनांक 07.04.2017, प्रातः 5.30

## 'सीपुर समता धाम (तीर्थ) प्रति मेरे मनोभाव'

**उद्गार-क्षु. श्रेयांसश्री**

प.पू. स्वाध्याय तपस्वी आचार्य भगवंत श्री कनकनन्दी जी गुरुदेव का

चातुर्मास ससंघ सीपुर समता तीर्थ धाम में हो रहा था। अतः मैं यहाँ पर आहारदान, साधु-संगति व स्वाध्याय का लाभ लेने यहाँ आई थी। मेरे महान् पुण्य का उदय आया, जो घड़ी अनेक वर्षों से टल रही थी, उसका लाभ इस अतिशय क्षेत्र पर मिला।

द्रव्य (मैं स्वयं), क्षेत्र (अतिशय क्षेत्र सीपुर), काल (2016 का चातुर्मास) व नितिन भैया की सत्प्रेरणा, गुरुदेव का शुभाशीर्वाद व संघस्थ साधुओं के वात्सल्यपूर्ण व्यवहार से मेरे दीक्षा लेने के भाव बने।

यह सीपुर नहीं शिवपुर है, ऐसा गुरुदेव ने कहा था, सो सत्य प्रमाणित हुआ क्योंकि मैं शिवपथ पर अग्रसर हुई। क्षेत्र पर आहार, निहार, निवास व अतिथि सत्कार की जो उत्कृष्ट व्यवस्था है, ऐसी अन्यत्र मिलना दुर्लभ है।

भारतवर्ष के इस प्रथम अद्वितीय देव-शास्त्र-गुरु जिनालय में जब गुरुदेव स्वाध्याय कराते हैं, तो मुझे ऐसा लगता है मानो समवसरण लगा हो। अरिहंत के रूप में गुरुदेव विराजमान है व दिव्य ध्वनि खिर रही हो। ऐसा अनूठा समागम मुझे परम सौभाग्य से प्राप्त हुआ है।

यह क्षेत्र उत्तरोत्तर विकास करे व नितिन भैया व उनकी निःस्वार्थ सहयोगी जिना (जिनेन्द्रा) दीदी आदि सभी स्वस्थ व दीर्घायु हो, यह मेरी शुभकामना व शुभाशीर्वाद।

मेरी समतापूर्वक साधना हो व अंत में निर्विकल्प मेरी समाधि हो, यही गुरु श्रीचरणों में प्रार्थना व सविनय सनम्र नमोऽस्तु, नमोऽस्तु, नमोऽस्तु !

भाव मेरे (क्षुल्लिका श्रेयांसश्री) हैं। शब्दांकन आर्यिकाश्री सुवत्सलमती जी ने किया।

सीपुर, दिनांक 07.04.2017, प्रातः 5.10

# मेरे आराध्य देव आचार्यश्री कनकनन्दी जी गुरुदेव एवं समता तीर्थ धाम सीपुर एक समन्वय

-ब्र. सोहनलाल

मैं अपने आप को महान् भाग्यशाली एवं पुण्यशाली मानता हूँ। जो मुझे ऐसे महान् उपकारी, जन-जन के प्रिय ज्ञान के भंडार, स्वाध्यायप्रेमी गुरु का चरण सान्निध्य मिला।

गुरुदेव महान् उदारभावी, अनुशासनप्रिय, सत्यान्वेषी उच्च लक्ष्य के धारक, हित-मित-स्पष्ट उपदेशी, नवीन-नवीन कल्पनावान्, सत्य-समता-शांति के उपासक, गंभीर, शांत, सौम्य मूर्ति, प्रज्ञाशाली, धैर्यवान्, शीलवंत, पर्यावरणप्रेमी, बाल्यकाल से प्रखर बुद्धि, प्रतिभा के धनी, ज्ञान के पुंज, अनेक गुणों के भंडार, सब जीवों के प्रति दया, करुणा, परोपकार, वात्सल्य, सेवा की भावना से ओतप्रोत, ख्याति, पूजा, लाभ, प्रसिद्धि, ढोंग, पाखण्ड, निंदा, ईर्ष्या, घृणा, तृष्णा, बाह्य आडंबर, उपेक्षा, अपेक्षा प्रतीक्षा आदि से दूर अपने ध्यान-अध्ययन में लीन रहने वाले ऐसे गुरुदेव जिन्होंने अभी तक अनेक विषयों जैसे धर्म, दर्शन, विज्ञान, गणित, आयुर्वेद, राजनीति, इतिहास, भूगोल, खगोल, व्यसन मुक्ति, पर्यावरण, विश्व शांति, नैतिक शिक्षा पर 275 ग्रंथों (210 गद्य ग्रंथ + 65 पद्य ग्रंथ) की रचना कर विश्व का महान् उपकार किया है।

समता तीर्थ धाम सीपुर क्षेत्र के लिए समर्पित ऊर्जावान् परम गुरुभक्त श्री नितिन भैया के अनेक बार अनुरोध एवं निवेदन पर जब आचार्यश्री कनकनन्दी जी ससंघ का सन् 2010 का चातुर्मास सीपुर क्षेत्र पर हुआ उस समय श्रमणों के निवास, चौका, आहार की व्यवस्था किराये के भवन में होती थी। यहाँ पर जैन समाज का एक भी घर-परिवार नहीं है। नितिन भैया ने आचार्य कनकनन्दी गुरुदेव ससंघ आशीर्वाद प्राप्त कर संत भवन के लिए भूमि खरीदी, उस पर विशाल संत भवन का शिलान्यास संघ सान्निध्य में हुआ।

उसी भूमि पर वर्तमान जिनशासन नायक भगवान् महावीर का 2537वाँ निर्वाण महोत्सव 2537 किलोग्राम का लड्डू चढ़ाकर मनाया। चातुर्मास अवधि में भैया जी प्रतिदिन आचार्य श्रीसंघ को श्रीफल भेंटकर 21 इक्कीस चातुर्मास करने का निवेदन करते रहे और अभी आजीवन क्षेत्र पर रहने के लिए निवेदन कर रहे हैं। दीर्घ अवधि के पश्चात् वर्ष 2016 के चातुर्मास का लाभ भैया जी को मिला, इस अवधि में देव-शास्त्र-गुरु जिनालय का एक दिवसीय पंच कल्याणक महोत्सव एवं दो क्षुल्लिका दीक्षा हुई जिसमें भैया जी ने अपनी भावना व्यक्त करते हुए कहा कि अभी मुझे इस क्षेत्र का बहुत विकास करना है, मेरी भावना है कि मैं सन् 2021 में आ. कनकनन्दी गुरुदेव के स्व-संघस्थ सान्निध्य में आचार्य कुंथुसागर के 150 साधुओं का एक विशाल सम्मेलन रखना चाहता हूँ, साथ ही वृद्ध, रोगी (अस्वस्थ) साधुओं के लिए स्थायी निवास के हेतु एक विशाल भवन बनाना चाहता हूँ। क्षेत्र पर लगातार 12 वर्षों से संतों के चातुर्मास हो रहे है। ऐसी उत्कृष्ट भावना एवं व्यवस्था करने वाले ऊर्जावान् गुरुभक्त नितिन भैया के लिए परम पूज्य गुरुदेव का शुभ आशीर्वाद एवं मेरी शुभकामना के साथ भावना भाता हूँ कि आपकी देव-शास्त्र-गुरु के प्रति जो भक्ति है उसमें उत्तरोत्तर वृद्धि हो एवं आप शतायु हो। इस मंगल कार्य में तन, मन, धन समय शक्ति से क्षेत्र पर आजीवन अपनी निःस्वार्थ सेवा देने की भावना व्यक्त कर आचार्यश्री से आशीर्वाद प्राप्त करने वाली ब्र. रमीला दीदी व ब्र. जीना दीदी जो वर्तमान में साधुओं की वैयावृत्य में संलग्न है, उनकी इस उत्तम भावना की मैं नवकोटि से अनुमोदना करता हूँ। इसी मंगल भावना के साथ।

**–ब्र. सोहनलाल जैन (संघस्थ आ. कनकनन्दी जी गुरुदेव)**

दिनांक : 08.04.2017

# महान् तीर्थ समता-धाम सीपुर में दिव्य 'देव-शास्त्र-गुरु जिनालय'

## ''विश्व गुरु आचार्यश्री कनकनंदी जी साहित्य शोध-बोध-ज्ञान केन्द्र सीपुर''

**अनुभव-ब्र. अजय**

**(चाल : इक लड़की को देखा.....)**

होऽऽऽ ग्राम सीपुर को देखा तो ऐसा लगा...
जैसे सुंदर समता-धाम, जैसे महान् तीर्थ-धाम...
जैसे सौमनस वन, जैसे मधुबन सी शान...
जिसमें विराजे साक्षात्, श्री श्रेयांस भगवान्...होऽऽऽ...(ध्रुव)...

यहाँ खेत खलियान, सुंदर सुरभित उद्यान...
बहती सुगंधित बयार, देखो हरियाली का वास...
पौष्टिक आहार-विहार, जलवायु सदाबहार...होऽऽऽ...(1)...

सुरम्य जंगल पर्वत, जिसमें तेंदुआ नीलगाय...
लोमड़ी आदि पशु भरे, कुलाँचे हजार...
पशु-पक्षियों का कलरव, छेड़े सुमुधर तान...होऽऽऽ...(2)...

देवशास्त्र गुरु मंदिर, भारत का अकेला दिव्य-धाम...
जिसमें श्रेयांस-विमल गुरु-जिनवाणी मूर्ति विशाल...
अतिशयकारी 'काले बाबा' करे सबका जीवन निहाल...होऽऽऽ...(3)...

'नितिन भाई' कर्णधार, करते साधु सेवा अपार...
रहे प्रमुदित सदा, करते सबको खुशहाल...
पूजा भक्ति में अद्भुत, अनूठा उनका ठाठ...होऽऽऽ...(4)...

कनक गुरु-संघ-सेवा की, सतत एक साल...
आजीवन सेवा की भावना, सदा करते विशाल...
उदार भक्तों सहित, करते वैयावृत्ति महान्...होऽऽऽ...(5)...

समता-सूरी संग लेकर, किया श्री-क्षेत्र जीर्णोद्धार...
जंगल में सुमंगल करके, कर दिया कमाल...
ऐसे नितिनश्री का अभिनंदन सब करे लखबार...होऽऽऽ...(6)...

कनक-गुरु-समवसरण महान्, नित ज्ञान-सेवा-सत्कार...
मानभद्र जी देते प्रेरणा, सद् धर्म-कर्म प्रकाश...
नितिन भैया से कराये, जन-सेवा परोपकार/(वैयावृत्ति परोपकार)...होऽऽऽ...(7)...

यहीं गीताञ्जली श्रीगणेश, वृद्धिंगत अभी सतत विशेष...
विश्व ज्ञान-विज्ञान प्रसार, सबका आध्यात्मिक विकास...
साहित्य-कक्ष-शोध-बोध-केंद्र करे प्रभावना विशाल...होऽऽऽ...(8)...

देश-विदेशों से आते यहाँ, शोधार्थी महानुभाव...
भव्य जन भी लेते, श्री गुरु संघ स्वानुभव...
विश्वगुरु 'कनक' से पाते, आशीष महान्/(विशाल)...

...होऽऽऽ ग्राम सीपुर को देखा तो ऐसा लगा...
जैसे जीवंत-धाम, जैसे शिवपुर निवास...
जैसे विश्व में ना होगा, ऐसा अनूठा अकेला श्री-निवास...होऽऽऽ...(9)...

सीपुर, दिनांक 06.04.2017, अपराह्ल 9.33 (रात्रि)

## समता तीर्थधाम, अतिशय क्षेत्र सीपुर में मेरा आनंददायी अनुभव

### आचार्य भगवन्त श्री 'कनकनंदी' जी गुरुवर के श्रीचरणों में समर्पित

**-ब्र. संगीता**

**(चाल : आने से उसके आये.....)**

सीपुर आने से आयी बहार...जीवन में आये अनेक सुधार...
बड़ा मन भावन है...समता तीर्थधाम...
शांति सुखदायक है...अतिशय का धाम...(ध्रुव)...

प्रकृति के मध्य स्थित है...देव-शास्त्र-गुरु का जिनालय...
सीपुर ग्राम मध्ये...श्रेयांस-शांति प्रभु विराजे...
मानभद्र क्षेत्ररक्षक...भक्तों के प्यारे हैं...समता तीर्थधाम...(1)...

प्रकृति की गोद में...बालक जैसा आनंद मिला है...
बचपन लौटा है...मन मयूर हर्षित हुआ है...
पक्षियों के स्वर सुनकर...मन पुलकित होता है...समता तीर्थधाम...(2)...

अस्वस्थ होके आयी थी...सोचा था अंतिम क्षण है जीवन का...
'कनक गुरु' शरण में...सुख शांति व ज्ञान मिला (है)...
नवजीवन प्राप्त हुआ...गुरु अनुकंपा से...समता तीर्थधाम...(3)...

यहाँ के जंगल व खेत...सुंदर दृश्य प्रदूषण रहित...
चीता, नील गाय, मोर...सियार, नेवला, साँप सहित...
पशु-पक्षी को देखकर...मन हर्षावे है...समता तीर्थधाम...(4)...

अलौकिक अद्वितीय 'कनक'...गुरु है इस धरा की शान...
दार्शनिक-वैज्ञानिक...गणितज्ञ ज्ञान के भंडारी...
ऐसे गुरु का सान्निध्य पाकर...नितिन भैया भाग्यशाली हैं...समता तीर्थधाम...(5)...

नितिन भैया करते हैं...सतत वैयावृत्ति साधु जनों की...
सहयोगी जिना दीदी...क्षेत्र व्यवस्था संभालती (हैं)...
ऐसे पुण्यवान् जीवों को...शाश्वत शांति मिले...समता तीर्थधाम...(6)...

सीपुर, दिनांक 06.04.2017, रात्रि 8.22

## मेरी आध्यात्मिक यात्रा स्थली सीपुर की महिमा

**-बा.ब्र. पल्लवी**

**(राग : चाँद सी मेहबूबा.....)**

सीपुर समता धाम से प्रारंभ हुआ मेरा आध्यात्मिक जीवन।

'कनक' गुरु के सुआश्रय लेके धन्य हुआ मेरा तन और मन।।

प्रकृति माँ के मध्य स्थित है देव-शास्त्र-गुरु समता धाम।

अष्ट प्रातिहार्य युक्त 'श्रेयांस प्रभु' का, जिनबिंब सबका मनभावन।

पार्श्व भाग में 'जिनवाणी माँ' है श्वेत वर्ण से सहित प्रसन्न।

'विमल गुरु' की जागृत प्रतिमा सब भक्तों के दुःख निवारक।। (1)

श्रेयांश प्रभु के प्रतिरूप है आध्यात्म योगी कनक गुरु।

हर पल स्व का अनुभव करके शोध-बोध में लीन गुरु।

'कनक' गुरु की दिव्य देशना, सारी वसुधा में अलौकिक।

हम सब शिष्यों के महा उपकारी गुरु का ज्ञान-दान महान्।। (2)

'कनक' गुरु की ग्यारह माह का सीपुर क्षेत्र में दीर्घ सान्निध्य।

श्री नितिन भैय्या के अद्भुत सेवा, स्वर्ग मोक्ष का सोपान।

'सेवा दान जीवन्त धर्म' गुरुवर कहते है बारम्बार।

ऐसे सेवा कर्त्ता नितिन भैय्या को, करते बारम्बार अभिनंदन।। (3)

सीपुर क्षेत्र का कण-कण पावन हुआ है अनेक साधु-संतों से।

जैन वसति के बिना ही दश चातुर्मास विशेष हुए।

ऐसे उत्कृष्ट पुण्य के श्रेयधारी को मेरी अनुमोदना अनंत बार।

हमेशा ऐसे ही कार्य करते हुए जीओ हजारों सालों तक।। (4)

सीपुर, दिनांक 06.04.2017, मध्याह्न 1.45

# सीपुर संबंधी मेरे अनुभव

**-ब्र. जिनेन्द्रा जैन**

सन् 2010 में मैं (जिनेन्द्रा) आ. विनम्रसागर जी गुरुदेव के संघ के साथ सराड़ा ग्राम में गई थी। संयोग से नितिन भैयाजी भी वहाँ दर्शनार्थ आये थे। मेरा उनसे परिचय हुआ, मेरा स्वास्थ्य ठीक नहीं था सो संघस्थ दीदीयों के

साथ सीपुर अतिशय क्षेत्र पर आयी। भैयाजी ने उपचार किया।

सन् 2010 में सीपुर समता धाम में आचार्यश्री कनकनंदी जी गुरुदेव का चातुर्मास चल रहा था मैं दर्शनार्थ आयी श्रीसंघ को आहारदान देकर बहुत अच्छा लगा। क्षेत्र का वातावरण शांति मेरे मन को भ गई। उसी समय आचार्यश्री विनम्रसागर जी का चातुर्मास पारसोला में हो रहा था तभी भैयाजी वहाँ दर्शनार्थ आये थे उन्होंने आचार्यश्री से अनुरोध किया कि जीना को सीपुर आहार देने के हेतु रहने हेतु आप अनुमति दीजिये। आचार्यश्री की उदारता, उन्होंने सहर्ष स्वीकृति दी।

मैंने 13.09.2009 जन्मदिन पर आचार्यश्री से आजीवन ब्र. व्रत लिया सीपुर क्षेत्र पर रहते हुए भी द्रव्य-क्षेत्र-काल उत्तम होने पर भी भाव में स्थिरता नहीं थी फिर भी पूर्वोपार्जित कर्म व्यक्ति को नाच नचाते है सो प्रायः 10 बार यहाँ से जाने का प्रयास किया परन्तु होनहार अच्छे हो तो वैसे निमित्त भी मिलते है। भैयाजी मेरे पिता के रूप में मेरे जीवन में आये है। उन्होंने मुझे प्रत्येक समय संबोधन किया। उन्होंने जो माता-पिता दोनों का स्नेह दिया।

उस स्नेह के बंधन से मैं जाकर फिर वापस आ गई। 2010 में आ. कनकनंदी गुरुदेव के सान्निध्य में, जहाँ 2537वाँ वीर निर्वाण महोत्सव का 2537 किग्रा का महानिर्वाण लड्डू चढ़ा। उस भूमि पर संत निवास का शिलान्यास हुआ। 11 महीने तक दिन-रात भवन निर्माण का कार्य चला। उसमें मुझे भैयाजी का सहयोग करने का सौभाग्य मिला। 2005 से 2016 तक (2013 को छोड़कर) प्रायः ग्यारह चातुर्मास हुए है। इसी श्रृंखला में सिद्धांतमति माताजी (2) दो वर्ष यहाँ रहे। माताजी से जुड़ाव हुआ।

आ. विनम्रसागर जी गुरुदेव मात्र 3 दिन के लिए क्षेत्र पर श्रेयांसनाथ भगवान् के दर्शनार्थ आये थे परन्तु उन्हें क्षेत्र का वातावरण इतना अच्छा लगा कि वे 30 दिन तक यहाँ रहे। पश्चात् सन् 2012 का ससंघ चातुर्मास क्षेत्र पर हुआ।

सन् 2013 में आ. संघ को सम्मेदशिखर जी यात्रा कराने का भैयाजी ने संकल्प किया। उस यात्रा में रमिला दीदी, भूरी मासी (क्षु. शांतिश्री) शकुन अम्मा हम साथ में रहकर उस यात्रा का अवर्णनीय आनंद लिया। 6 महीने सतत साथ में रही। शिखर जी चातुर्मास में जब 1008 वंदना हेतु श्रीसंघ की वंदना चल रही थी तब मैं 9 महीने में आती-जाती रही व पुनः विहार में लगभग 5½ महीने लगातार संघ के साथ में रहकर पंच तीर्थ की वंदना कर इटावा संघ को छोड़कर वापस सीपुर समता धाम पर आ गयी।

यहाँ क्षेत्र पर प्रायः 7 वर्षों में अनेक खट्टे-मिठे अनुभव आये है। मेरे आँखों देखे दृश्य/प्रसंग है कि कई दुःखी लोग रोते-रोते क्षेत्र पर आते है व अतिशयकारी श्रेयांसनाथ भगवान् व मानभद्र बाबा की कृपा से हँसते-हँसते जाते है। करुणावंत भैयाजी के परोपकार के कार्य में स्वशक्ति अनुसार यथायोग्य सहयोग करूँ यही भगवान् से वे गुरुदेव से आशीर्वाद चाहती हूँ।

भैयाजी का स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहता फिर भी वे गुरु सेवा व सामान्य जनों की सेवा, क्षेत्र विकास के महान् कार्य में सतत संलग्न रहते है। उनसे मुझे भी सत् प्रेरणा मिलती है कि मैं भी उनके कार्य में साधु संघ/आगन्तुक यात्री जन अतिथियों के स्वागत-सत्कार में सहयोग कर पुण्यार्जन करूँ।

**आ. कनकनंदी गुरुदेव भी मुझे बहुत वात्सल्य देते हैं। उनका शुभाशीष व श्रीसंघ के स्नेह दुलार से मैं अभिभूत हूँ।**

पूर्व में मैंने महत पुण्य किया होगा जिससे मुझ जैसे मार्ग से भटके हुए पथिक को भैयाजी जैसे पिता तुल्य का सान्निध्य, मार्गदर्शन, वात्सल्य मिला व मैं स्थिर हो गई हूँ। मुझे अभयदान मिला है। पहले मुझे बोलना भी नहीं आता था। भूतकाल में मैंने आर्थिक संकट भी झेले परन्तु भैयाजी ने मुझे रक्षाबंधन पर नियम दिलाया की मैं पार्लर का काम नहीं करूँगी सोचती हूँ भैयाजी मेरे जीवन में नहीं आते तो आज मैं स्वार्थी संसार के थपेड़े खाते कहाँ भटक रही होती। खैर जीवन कथा लंबी है।

श्रेयांसनाथ भगवान् को नमन/वंदन। पुनः गुरुदेव के श्रीचरणों में नवकोटि से कोटिशः नमन/श्रीसंघ को नमन-वंदन, वंदामि, इच्छामि।

मेरे पिता तुल्य भैयाजी स्वस्थ रहे दीर्घायु हो यही जिनेन्द्रा की शुभकामना। जय जिनेन्द्र। सभी साधर्मी बहनों को भी जय जिनेन्द्र।

भूल-चूक माफ करना।

**शुभाकांक्षी-ब्र. जिनेन्द्रा जैन**

# सीपुर संबंधी मेरा अनुभव

**ब्र. रमीला दीदी**

प.पू. स्वाध्याय तपस्वी गुरुदेव कहते हैं कि मनुष्य के मन की अच्छी भावना कभी मरती नहीं है, कभी न कभी फलीभूत होती है। मैं एक लक्ष्य लेकर घर छोड़कर आयी हूँ। मुझे विश्वास है आज मैं उस लक्ष्य से दूर हूँ ऐसी मन में दुःखद (अहसास) अनुभूति होती है परन्तु वह मुझे जरूर प्राप्त होगा। खैर, पुरुषार्थ करना मेरा कर्त्तव्य है।

मैं 2009 में जब सीपुर समता धाम में मुनिश्री निरंजनसागर जी का चातुर्मास हो रहा था तब दर्शनार्थ प्रथम बार आयी थी। परम पूज्य आचार्यश्री विनम्रसागर महाराज का चातुर्मास 2012 में 8 दिन के लिए सीपुर आयी तब आर्यिका सकलमति माताजी भी यहाँ चातुर्मासरत में थी, जब में माताजी से परिचित थी। इसीलिये माताजी ने अपने ही पास रखा था। माताजी के साथ आचार्यश्री की क्लास में, आहारचर्या में, प्रतिक्रमण, स्वाध्याय आदि दैनिक सभी क्रियाओं में भाग लेती थी। भाग्योदय हुआ था, मुनिश्री विज्ञसागर जी की अनुमोदनार्थ से 29.08.2012 को आचार्यश्री विनम्रसागर जी गुरुदेव के कर-कमलों से दो प्रतिमा के व्रत ग्रहण किये। 2013 में जब नितिन भैया ने श्रीसंघ को सम्मेदशिखर जी यात्रा कराने का संकल्प किया था तब तलवाड़ा में मुझसे भी कहा था कि दीदी आपको भी यात्रा में चलना है व मैंने सहर्ष स्वीकृति दे

दी। आचार्यश्री संघ के सान्निध्य में मैंने परतापुर में सिद्धचक्र महामण्डल विधान महती प्रभावना के साथ किया। उसी समय मैंने संघ में रहने का संकल्प किया। वह दिन 26.06.2013 का था। आचार्यश्री ने कहा आप जब चाहो तब संघ में आ सकती हो। यात्रा में बहुत आनंद आया। ऐसी यात्रा न भूतो न भविष्यति।

जब 2016 में आचार्य कनकनन्दी जी गुरुदेव का चातुर्मास क्षेत्र पर हो रहा था तब मात्र दो दिन के लिए दर्शन की अभिलाषा से सीपुर क्षेत्र पर आयी थी। परन्तु गुरुदेव के मुखारविंद से स्वाध्याय में आगम के रहस्यों को सुना तो मन आनंदित हुआ। अनिर्वचनीय आनंद की अनुभूति हुई। एक दिन मैं घर जाने लगी तो जीना दीदी ने कहा घर जाकर क्या करोगी? यही रहकर धर्म लाभ लो। मैं अपना आवश्यक सामान लेने घर गई तो 2-3 दिन में जीना व भूरी मासी (क्षु. शांतिश्री) का बार-बार फोन आने लगा कि क्या हुआ? वापस कब आ रही हो। मैं उनके स्नेह के बंधन से बंधकर पुनः सीपुर आ गई। प्रतिदिन श्रीसंघ के दैनिक कार्यक्रमों में भाग लेने लगी। आहारदान में मन प्रसन्न हो जाता है।

बड़ी माताजी का केशलोंच हो रहा था तो गुरुदेव ने मुझसे भी कहा कि तुम भी केशलोंच करना सीखो। यह सुनकर मैं भाव-विभोर हो गयी। गुरुदेव की अलौकिक वृत्ति है। वे सभी को ज्ञान-दान देते है। वे चाहते है सभी ज्ञानी बने।

जब भूरी मासी व अजब बाई की दीक्षा होनी थी तब मुझे अजब बाई (क्षु. श्रेयांसश्री) का केशलोंच करने का सौभाग्य मिला। तब मुझे विश्वास हुआ कि मैं भी केशलोंच कर सकती हूँ। दीक्षा व पंचकल्याण महोत्सव में अनेक सुखद अनुभव आये। भैया का वात्सल्य व जीना दीदी का स्नेह पाकर मैंने निश्चय कर लिया कि अब मैं सीपुर क्षेत्र पर रहकर भैया की निःस्वार्थ सेवा में सहयोगी बनूँगी।

इस सीपुर क्षेत्र में श्रेयांसनाथ भगवान् का अतिशय है जो भक्ति-भाव से यहाँ आता है वह यहाँ का होकर रह जाता है।

प्रतिक्रमण, स्वाध्याय में ग्रंथ वाचन, अपने भाव अभिव्यक्त करने का सुअवसर गुरुदेव के सान्निध्य में ही मिला है। अपनी गलती का अहसास व सुधार का अवसर भी मिलता है। गुरुदेव के स्वाध्याय से ही मैं कौन हूँ? विनय, वैयावृत्ति, अपने भाव कैसे प्रकट करना? देव-शास्त्र-गुरु के अवर्णवाद से घातियाँ कर्म (70 कोड़ा-कोड़ी) बंधता है, इन सभी विषयों का परिज्ञान मुझे हुआ। गुरुदेव शिष्य की योग्यतानुसार ही ज्ञान देते हैं। अनावश्यक टोका-टाकी व जो उनके अधिकार क्षेत्र नहीं है, जो उनके अनुशासन में नहीं है उसको कुछ भी नहीं कहते। गुरुदेव का असीम वात्सल्य व शुभाशीष मुझे प्राप्त हुआ है। ब्र. सोहन दादा से पिता का स्नेह मिल रहा है। संघस्थ सभी साधुगण व ब्र. एवं ब्रह्मचारणियों का व जीना दीदी सभी से स्नेह व सहयोग मिल रहा है। प्रेम वात्सल्य की नित सरिता समता धाम में अविरल बह रही है। नितिन भैया के सतत पुरुषार्थ से यह सब मुझे प्राप्त हो रहा है। मैं सभी के स्नेह, वात्सल्य व सहयोग की ऋणी हूँ। मेरा अंतिम लक्ष्य मुझे प्राप्त हो इसी भावना के साथ आ. कनकनंदी गुरुदेव ससंघ को मेरा यथायोग्य नमन वंदन, नमोस्तु, वंदामि, इच्छामि, सस्नेह जय जिनेन्द्र क्षेत्र उत्तरोत्तर विकासोन्मुख हो यही महती शुभ भावना।

**स्नेहाकांक्षी–ब्र. रमीला दीदी**

## आचार्यश्री कनकनन्दी सद्‌गुरवे नमः

# काँच से कनक तक की यात्रा

**प्रस्तुति-गुरुचरण चञ्चरीक नितिन जैन**

भारतवर्ष की पुण्य धरा, राजस्थान के अरावली पर्वतमालाओं में स्थित, मेवाड़ के ग्रामाञ्चल अतिशय क्षेत्र सीपुर के जिनालय जो कि अनेक वर्षों से उपेक्षित था, ऐसी परिस्थिति में पू. मुनिश्री समतासागर जी के साथ मैं (नितिन) यहाँ दर्शनार्थ आया। चूँकि यह जिनालय जीर्णोद्धार हेतु प्रतीक्षारत था। जब हमने जिनालय के प्रथम दर्शन किये तो यहाँ अहाते में लगभग 1000 चमगादड़, बिच्छू, दीमक आदि थे अर्थात् अत्यंत दयनीय अवस्था में यह मंदिर प्राप्त हुआ। वह 5 जुलाई, 2005 का दिन था।

उल्लेखनीय यह है कि यहाँ पर एक भी घर जैन समाज का नहीं है। लगभग 7-8 दिन के अथक प्रयास से मंदिर को कचरे से मुक्त करने के उपरांत मंदिर परिसर के पिछले भाग के छोटे से कक्ष में भगवान् श्रेयांसनाथ की प्राचीन मूर्ति प्राप्त हुई। मूर्ति का मार्जन/प्रक्षालन कर दिनांक 16 जुलाई, 2005 को मूर्ति मंदिर की गंधकूटी में विराजमान कर शोभायात्रा निकाली। भगवान् के अतिशय से ग्राम के आबाल-वृद्धों ने उस गंधकुटी को कंधा दिया। सभी जैनेतर बंधुजन थे, मात्र मैं एक जैन था। महती प्रभावना सह इस जिनालय के गर्भगृह की वेदी पर भगवान् श्रेयांसनाथ को भक्तिपूर्वक विराजमान किया। उस समय जिनालय के एक भी द्वार के पट नहीं थे, संपूर्ण रोड बड़े-बड़े पत्थर युक्त टूटी-फूटी अवस्था में थे।

दिनांक 24.07.2005 को श्रमण मुनि समतासागर जी ने चातुर्मास हेतु कलश स्थापना की। भगवान् व मुनिश्री के आशीर्वाद व मेरे पुण्योदय से तात्कालीन गृहमंत्री गुलाबचंद जी कटारिया ने मेरे एक फोन पर क्षेत्र पर आने की स्वीकृति प्रदान की। मार्ग पूर्णतः क्षतिग्रस्त था, फिर भी वे यहाँ पधारे। क्षेत्र पर जल की व्यवस्था नहीं थी। देव-गुरु के आशीर्वाद से जल समस्या भी दूर

हुई। आगे सुखद आश्चर्य यह हुआ कि मुनिश्री ने कलश स्थापना के समय ही आगामी तीन चातुर्मास (वर्ष 2005, 2006, 2007) की घोषणा कर दी।

वर्ष 2007 के चातुर्मास में 16 दिवसीय शांति विधान हुआ। उस विधान में प्रसिद्ध संगीतकार रवीन्द्र जैन पधारे। दिनांक 18.07.2008 में क्षेत्र रक्षक अधिष्ठाता, अतिशयकारी क्षेत्रपाल मानभद्र जी की अतदाकार प्रतिमा की स्थापना गुरु पूर्णिमा के दिन हुई।

सन् 2009 में मुनिश्री निरञ्जनसागर जी का चातुर्मास हुआ। उस चातुर्मास में भगवान् का 1008 लीटर दूध से महामस्तकाभिषेक किया। **अनेक वर्षों के अनुरोध के पश्चात् सन् 2010 में आचार्य भगवान् श्री कनकनन्दी जी गुरुवर ससंघ का प्रभावनाकारी चातुर्मास हुआ।** उसी अवधि में बागीदौरा के मंदिर के तलघर में रखी कुछ उपेक्षित मूर्तियाँ स्थानीय समाज से पूछकर वे मूर्तियाँ सीपुर लाकर वेदी पर विराजमान की है। आचार्यश्री के सान्निध्य में रक्षाबंधन पर्व में श्रेयांसनाथ प्रभु के निर्वाण महोत्सव निमित्त 108 किलो घृत (घी) से अभिषेक प्रारंभ किया, वह परंपरा संप्रति काल तक अनवरत रूप से चल रही है। वर्ष 2010 से 2011 तक प्रतिदिन 11 लीटर दूध से भगवान् का दुग्धाभिषेक होता रहा।

इस 2010 के चातुर्मास में अनेक अतिशय प्रभावना पूर्ण कार्य व आयोजन हुए। (1) 108 किलो घी से अभिषेक, (2) चौबीस तीर्थंकरों के निर्वाण कल्याणक निमित्त 108 किलो के निर्वाण लाडू चढ़ाये गये, (3) भगवान् महावीर के 2537वें निर्वाण महोत्सव निमित्त भारतवर्ष में प्रथम बार 2537 किलो का वृहत् निर्वाण लाडू चढ़ाया गया। जैन का एक घर न होते हुए भी इस महोत्सव में प्रायः 10 हजार श्रद्धालुओं ने भाग लेकर विशेष पुण्यार्जन किया। भगवान् व प.पू. निस्पृह आध्यात्मिक संत प्रवर आचार्यश्री कनकनन्दी जी गुरुदेव के उदात्त शुभाशीष से जिस आयोजन भूमि में यह महोत्सव संपन्न हुआ वह भूमि संत निवास हेतु हमें प्राप्त हुई। यह उपलब्धि भविष्य की

स्वर्णिम संभावनाओं के द्वार खोलने वाली सिद्ध हुई।

दिनांक 01.03.2011 की शुभ तिथि में भगवान् मुनि सुव्रतनाथ जी के निर्वाण कल्याणक के निमित्त इस दिन आचार्यश्री कनकनन्दी जी गुरुवर ससंघ सान्निध्य में संत भवन हेतु उपरोक्त भूमि पर शिलान्यास हुआ। इस अवसर पर आचार्य अभिनंदनसागर जी ससंघ, उपाध्याय ऊर्जयंतसागर जी व मुनिश्री निरञ्जनसागर जी का भी सान्निध्य प्राप्त हुआ। वर्ष 2011 में मुनिश्री निरञ्जनसागर जी का चातुर्मास हुआ। प्रभु के अतिशय व गुरु भगवंतों के आशीर्वाद से मात्र 11 महीने में संत भवन का निर्माण कार्य पूर्ण हुआ। इस कार्य में क्षेत्र के कार्यकर्त्ताओं विशेष रूप से जिनेन्द्रा व रक्षा बहन खुशपाल जी जैन, भँवरलाल जी व अन्य सभी कर्मठ जनों के सहयोग से यह ऐतिहासिक कार्य संभव हुआ। इस संत भवन में प्रथम चातुर्मास आचार्यश्री विनम्रसागर जी ससंघ का हुआ। सन् 2012 में आचार्य विनम्रसागर जी ससंघ मात्र 1 महीने तक इस मनोरम क्षेत्र में प्रवासरत रहे। क्षेत्र के प्राकृतिक वातावरण से प्रभावित होकर श्रीसंघ का वर्ष 2012 का चातुर्मास हुआ। चातुर्मास में 48 दिवसीय भक्तामर विधान हुआ। आचार्य विनम्रसागर जी ससंघ मुनि आर्जवनंदी जी व आर्यिका सकलमती माताजी आदि 10 साधुओं का चातुर्मास प्रभावना सह संपन्न हुआ। 2013 में ही आचार्य अभिनंदनसागर जी ससंघ (22 पिच्छी) सान्निध्य में महावीर जयंती मनाई गई।

वर्ष 2013 के अंतिम माह यानी दिनांक 10.12.2013 को आचार्य विनम्रसागर जी ससंघ के पावन सान्निध्य में वात्सल्य रत्नाकर आचार्य भगवन् विमलसागर जी गुरुदेव की श्वेत पाषाण की मूर्ति की स्थापना की गई। दिनांक 11.12.2013 को आचार्यश्री विनम्रसागर ससंघ का विहार 13 साधु-साध्वी सह प्रारंभ हुआ, समता तीर्थधाम, अतिशय क्षेत्र सीपुर के तत्त्वावधान में वात्सल्य एकता यात्रा का सम्मेदशिखर तीर्थ वंदना हेतु गमन हुआ। 11.05.2014 को तीर्थराज सम्मेदशिखर की पावन धरा पर श्रीसंघ का मंगल

प्रवेश हुआ। जो भी साधु-साध्वी, श्रावक-श्राविकागण इस यात्रा में साथ रहे, उन सभी ने इस निर्विघ्न आनंददायी यात्रा व्यवस्था की मुक्त कंठ से प्रशंसा करते हुए एक ही भावना दर्शायी कि ऐसी यात्रा 'न भूतो न भविष्यति।' मुझे भी नहीं ज्ञात हुआ कि सब कैसे संभव हो पाया। मैं तो इसे साधु-संतों के सातिशय पुण्य का चमत्कार ही मानता हूँ।

वर्ष 2014 में पुनः आचार्य समतासागर जी का सीपुर क्षेत्र पर एवं आचार्य विनम्रसागर जी ससंघ का चातुर्मास सम्मेदशिखर जी में निर्विघ्न संपन्न हुआ। चातुर्मास उपरान्त 24 साधुओं ने सम्मेदशिखर के डाक बंगले में 30 दिन निवास कर 1515 वंदना का कीर्तिमान बनाया। पर्वतराज पर भी आहार-निवास की उत्तम व्यवस्था की थी। मेरा भाव सदा यही रहता है कि साधु-संतों को कोई कष्ट न हो एवं वे अपनी आध्यात्मिक साधना में निर्विकल्प संलग्न रहें।

समता तीर्थधाम, सीपुर के इतिहास में प्रथम बार जैनेश्वरी दीक्षा हुई। आचार्य समतासागर जी के गृहस्थ अवस्था के पिताश्री रतनलाल जी दोशी, बागीदौरा वाले दीक्षित होकर मुनि सीपुरसागर बने। आपने मात्र एक माह तीन दिन (प्रायः 33 दिन) की साधना कर समाधि में लीन हुए। क्षेत्र पर यह प्रथम समाधि हुई।

फरवरी, 2015 में आचार्य विनम्रसागर जी सम्मेदशिखर जी से विहार कर पञ्च तीर्थ की यात्रा कर इटावा (उ.प्र.) तक लाकर छोड़ा अर्थात् अतिशय क्षेत्र सीपुर (राज.) से इटावा तक प्रायः 3500 कि.मी. की यात्रा मई, 2015 तक रही।

वर्ष 2015 में ही सलूम्बर के निकट अतिशय क्षेत्र बस्सी है। यह क्षेत्र सलूम्बर समाज द्वारा लिखित रूप से मुझे प्राप्त हुआ। वर्ष 2015 का चातुर्मास आचार्य समतासागर जी ने इसी बस्सी अतिशय पर स्थापित किया एवं समता तीर्थधाम सीपुर में आर्यिका प्रज्ञामती माताजी ससंघ (6 साधु) का चातुर्मास हुआ। आचार्य समतासागर जी ने ऐतिहासिक 48 अखण्ड उपवास बस्सी क्षेत्र

में करते हुए पारणा किये।

दिनांक 01.07.2016 को आचार्य वैराग्यनंदी जी ससंघ सीपुर क्षेत्र पर दर्शनार्थ पधारे। दिनांक 02.07.2016 को संघस्थ आर्यिका सरलश्री माताजी (आचार्यश्री की पूर्वाश्रम की माताश्री) की समाधि हो गई। क्षेत्र पर मुनि सीपुरसागर जी व आर्यिका सरल श्री माताजी की छतरी बनाई गई है।

अतिशय क्षेत्र सीपुर में आने वाले दर्शनार्थी यात्रियों के सर्व आधि-व्याधि की समस्याएँ दूर होकर वे भक्त सेवाभावी जो देव-शास्त्र-गुरु की सच्चे मन से आराधना सेवा वैयावृत्ति-दान आदि प्रशस्त भाव से करते हैं वे सब समता तीर्थधाम अतिशय क्षेत्र सीपुर के पुण्य प्रभाव से सुख-संपत्ति-संतान-आरोग्य का सहज ही लाभ प्राप्त कर आनंदित होते है, ऐसा इस क्षेत्र का अतिशयकारी महात्म्य है।

वर्ष 2016 जो कि इस अतिशय क्षेत्र सीपुर के लिए विशिष्ट उपलब्धियों का महायोग लेकर प्रकट हुआ। **वैश्विक आध्यात्मिक निस्पृही संत प्रवर आचार्य भगवंतश्री कनकनन्दी जी गुरुवर ससंघ का द्वितीय चातुर्मास प्रवास करने हेतु दिनांक 15.07.2016 को मंगल प्रवेश होकर प्रायः 11½ माह के दीर्घ प्रवास से यहाँ अनेकों ज्ञान-विज्ञान-साहित्य आदि की महान् उपलब्धि के साथ यहाँ के अद्वितीय देव-आगम-गुरु जिनालय की एक दिवसीय पञ्चकल्याणक प्रतिष्ठा के साथ-साथ द्वय क्षुल्लिका दीक्षा संपन्न हुई। इस महामहोत्सव में प्रायः 10-12 हजार श्रद्धालुओं की उपस्थिति ने सीपुर परिवार का अत्यंत उत्साहवर्द्धन किया।** इस कार्यक्रम में आचार्यश्री के पोता शिष्य आचार्य वैराग्यनंदी जी ससंघ की उपस्थिति से ज्ञानार्जन पुण्यार्जन आदि के अनेकों आयाम से चतुर्विध संघ हर्षित व पुलकित हुआ। यह संत भवन अब एक साथ देव-शास्त्र-गुरु जिनालय, विश्वविद्यालय, आचार्यश्री कनकनन्दी जी साहित्य कक्ष केन्द्र, फार्म हाउस आदि विशेषताओं के साथ जन-गण-मन के आकर्षण का केन्द्र बन चुका है

जिसमें पधारकर देश-विदेश के यात्रीगण शारीरिक-मानसिक व आध्यात्मिक शांति सुख समृद्धि का अद्वितीय आनंद प्राप्त कर अलौकिक आह्लाद अनुभव करते हैं।

आचार्य श्रीसंघ के दीर्घ प्रवास अवधि में भी यहाँ पर अनेक साधु-संघों का वात्सल्य मिलन हुआ।

इस क्षेत्र पर अब तक जिन साधु-संघों का आगमन हुआ है, उनमें आचार्य अभिनंदनसागर जी ससंघ, आचार्य चैत्यसागर जी ससंघ, आचार्य गुप्तिनंदी जी ससंघ, आचार्य सुकुमालनंदी जी ससंघ, आचार्य पद्मनंदी जी ससंघ, आचार्य कल्याणसागर जी, आचार्य उदारसागर जी ससंघ, आचार्य विमदसागर जी ससंघ, उपाध्याय सुरदेवसागर जी ससंघ, आचार्य तीर्थनंदी जी, मुनि प्रसन्नसागर जी, चिन्मयानंद जी, दयाऋषि जी, सिद्धांतसागर जी, आज्ञासागर जी, सहजसागर जी, प्रबलसागर जी।

आर्यिका सुप्रकाशमती माताजी ससंघ, भरतेश्वरी माताजी, मुक्तिश्री, सौहार्द्रमति आदि अनेक साधु-साध्वियों, व्रती, ब्रह्मचारी साधकों का श्रीक्षेत्र पर दर्शनार्थे आगमन हो चुका है।

अन्य भी साधु वृंद यहाँ पधारे ऐसी भावना करता हूँ। देश-विदेश के सभी भक्त-श्रद्धालु हिताकांक्षीजन आकर इस समता तीर्थधाम में धर्म लाभ लेकर सुखी शांत व प्रगतिशील बनकर अपने मानव जीवन का कल्याण करें ऐसी शुभ भावना रखता हूँ।

इस क्षेत्र के विकास व उत्थान में जिन महानुभावों का तन-मन-धन-श्रम-समय से स्वैच्छिक सहयोग व सहायता प्राप्त हो रही है एवं भविष्य में भी मिलने वाली है उन सभी भक्त श्रद्धालु नर-नारी-आबाल-वृद्धजनों के प्रति मैं व सीपुर परिवार हार्दिक कृतज्ञता व धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ।

विशेष रूप से मैं सलूम्बर निवासी श्री भगवानलाल जी रायकिया का जीवनभर आभारी व कृतज्ञ रहूँगा जिन्होंने मुझे सर्वप्रथम इस क्षेत्र के विषय में

मेरा ध्यान आकर्षित कराकर मुझे प्रेरित किया।

सर्वेभवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चित दुःखभाग भवेत्।।

दिनांक 03.05.2017

**देवशास्त्र गुरु आराधक**
**नितिन जैन,**
**समता तीर्थधाम, अतिशय क्षेत्र सीपुर,**
**तह.-सराड़ा, जिला-उदयपुर (राज.)**

# निस्पृही साधक आचार्य भगवंत श्री कनकनन्दी गुरुवर ससंघ के आजीवन चातुर्मास-प्रवास कराने की मेरी उत्कट भावना...

**(इस हेतु मैं (नितिन) अब तक प्रायः 300 बार से अधिक श्रीफल चढ़ाकर हार्दिक निवेदन कर चुका हूँ।)**

मैंने अपने संपूर्ण जीवन के दीर्घकालिक अनुभवों के आधार पर इस निष्कर्ष पर पहुँचा हूँ कि साधु निस्पृह निराडम्बर रहते हुए अपनी आगमोक्त ज्ञान-ध्यान तपोरक्त साधना करें व भक्त शिष्य श्रावक उनकी योग्य आहार-विहार निवास व्यवस्था कर उनकी साधना में बिना अर्थलाभ व नाम ख्याति की कामना से निःस्वार्थ भाव से सहायक व अनुमोदक बनें।

**इस दृष्टिकोण से मैं आचार्यश्री कनकनन्दी जी गुरुवर श्रीसंघ को उपरोक्त गुणों से महिमायुक्त अनुभव करता हूँ, समर्थन व अनुमोदना करता हूँ एवं बिना अर्थलाभ व ख्याति से निःस्वार्थ सेवा व्यवस्था करते हुए पुण्यार्जन व भाव विशुद्धि करता रहूँ, ऐसी भावना भाता हूँ।**

मेरी भावना है कि आचार्य श्रीसंघ ज्ञान-विज्ञान-ध्यान-धर्म प्रभावनार्थे अन्यत्र भी चातुर्मास करते है तो वे चातुर्मास पूर्ण होते ही समता तीर्थधाम

सीपुर पधारकर आगामी चातुर्मास तक यहाँ ही 8 माह प्रवास कर शांति समता आरोग्य लाभ प्राप्ति हेतु साधना करे यानि चातुर्मास में प्रायः 11½ माह सीपुर में ही प्रवासरत रहे एवं श्रीसंघ जब भी गमन व आगमन करे तो श्रीसंघ को लाने-ले-जाने की व्यवस्था भी मैं ही करूँगा।

**आचार्यश्री के व्यापक वैश्विक ज्ञान समन्वय व अनुभव का लाभ लेने की दृष्टि से मेरी अंतरंग शुभ भावना है कि सर्वत्र धर्म, समाज व राष्ट्र में आई विकृतियों व विसंगतियों के परिशोधनार्थे वर्ष 2021 में आचार्य भगवंत श्री कनकनन्दी जी गुरुदेव के कुशल व समर्थ नेतृत्व व मार्गदर्शन में गणाधिपति गणधराचार्य श्री कुंथुसागर जी गुरुदेव के शिष्य व प्रशिष्य वर्ग का वात्सल्यमय प्रभावनापूर्ण चातुर्मास, श्रमण सम्मेलन व युग प्रतिक्रमण हो, ऐसी उदात्त भावना है।**

## सीपुर समता तीर्थ की प्रस्तावित योजनाएँ

1. कलश मंदिर
2. मोक्ष स्थल
3. गौशाला
4. प्रवचन हॉल
5. पशु चिकित्सालय
6. कैंसर हॉस्पिटल
7. भोजनशाला
8. अतिथि गृह
9. स्वाध्याय भवन
10. भूमि क्रय (जमीन लेना)
11. संत निवास (आर्यिका निवास)
12. बाल अनाथ आश्रम
13. प्रौढ़ आश्रम
14. औषधालय
15. वाहन सुविधा
16. जैन विद्यालय
17. जैन महाविद्यालय
18. जैन पुस्तकालय (वाचनालय)

# प्रस्तावित कलश मंदिर की योजनाएँ

मुख्य चतुर्मुख वेदी

बीस वेदियाँ

मुख्य चतुर्मुखी श्रीजी (रत्नमयी)

68 श्रीजी (रत्नमयी)

बीस कलश वेदियों पर (रत्नजड़ित)

बीस ध्वजा वेदियों पर (रत्नजड़ित)

मुख्य चतुर्मुखी वेदी पर कलश (रत्नजड़ित)

मुख्य चतुर्मुखी वेदी पर ध्वजा (रत्नजड़ित)

प्रत्येक वेदी पर अष्ट प्रातिहार्य (रत्नजड़ित)

भामण्डल रत्नजड़ित 72 श्रीजी

72 यक्ष प्रतिमाएँ (रत्नमयी)

72 यक्षिणी प्रतिमाएँ (रत्नमयी)

मंदिर जी चार मुख्य दरवाजे

मंदिर जी के अंदर का फर्श

मंदिर के बाहर का फर्श

मंदिर जी के बाहर मुख्य भव्य द्वार

# विषयानुक्रमणिका


| अ.क्र. | विषय | पृ.सं. |
|---|---|---|
| 1. | वंदनीय पंचगुरु | 2 |
| 2. | आध्यात्मिक गुण स्वरूप होते हैं पंचपरमेष्ठी | 3 |
| 3. | देवदर्शन से मैं पाया..... !? | 4 |
| 4. | अरिहंत-सिद्ध सम करूँ स्व-विकास | 5 |
| 5. | समता तीर्थधाम, अतिशय क्षेत्र सीपुर के परिवेश की अतिशयकारी विशेषताएँ | 22 |
| 6. | सीपुर क्षेत्र की विशेषताएँ | 24 |
| 7. | अग्रणी आर्ष-आगम मार्ग प्रभावक आ. कनकनन्दी गुरुदेव | 25 |
| 8. | सीपुर अतिशय क्षेत्र की महिमा | 26 |
| 9. | सीपुर समता तीर्थ की पवित्रता, आचार्यश्री कनकनन्दी गुरुवर्य की निस्पृहता एवं नितिन भैया आदि की सेवा तत्परता | 27 |
| 10. | सीपुर समता धाम नहीं शिवपुर धाम बना मेरे लिए | 29 |
| 11. | 'सीपुर समता धाम (तीर्थ) प्रति मेरे मनोभाव' | 30 |
| 12. | मेरे आराध्य देव आचार्यश्री कनकनन्दी जी गुरुदेव एवं समता तीर्थधाम सीपुर एक समन्वय | 32 |
| 13. | महान् तीर्थ समता-धाम सीपुर में दिव्य 'देव-शास्त्र-गुरु जिनालय' 'विश्वगुरु आचार्यश्री कनकनन्दी जी साहित्य शोध-बोध-ज्ञान केंद्र सीपुर'' | 34 |
| 14. | समता तीर्थधाम, अतिशय क्षेत्र सीपुर में मेरा आनंददायी अनुभव | 35 |

15. मेरी आध्यात्मिक यात्रा स्थली सीपुर की महिमा 36
16. सीपुर संबंधी मेरे अनुभव 37
17. सीपुर संबंधी मेरा अनुभव 40
18. काँच से कनक तक की यात्रा 43

## पूजा-संग्रह

1. मंगलाष्टकम् 57
2. मंगल स्मरण 58
3. विश्व शांति हेतु प्रार्थना 59
4. साधु-उपाध्याय-आचार्य भी आंशिक भगवान् 60
5. प्रतिक्रमण 62
6. देव-दर्शन विधि (पूर्व व परे) 64
7. साम्य भाव वंदन 65
8. पंचामृत अभिषेक पाठ 66
9. लघु शांतिधारा 75
10. विनय पाठ ''वन्दे तद्गुण-लब्धये'' 80
11. ''जिन दर्शन : निज दर्शन'' 81
12. देव दर्शन से स्व-आत्म दर्शन 82
13. स्व-उपलब्धि की भावना 84
14. समता/(शांति) आती है धीरे-धीरे 84
15. 'साम्यावस्था प्राप्ति हेतु प्रार्थना-प्रयास' 85
16. तीर्थंकरों से मुझे प्राप्त शिक्षाएँ 86

| | | |
|---|---|---|
| 17. | आत्मिक-सुख-स्वरूप व सुख प्राप्ति के उपाय : धर्म | 87 |
| 18. | भक्ति से बनूँ भगवान् | 88 |
| 19. | पूजनीय-पूजा के प्रतीक एवं फल | 91 |
| 20. | मंगल पाठ | 93 |
| 21. | पूजा प्रारंभ | 93 |
| 22. | मंगल विधान | 94 |
| 23. | देव-शास्त्र-गुरु धर्म की पूजा | 99 |
| 24. | तत्त्वार्थसूत्र (मोक्षशास्त्र) की पूजा | 103 |
| 25. | श्री चारित्र शुद्धि व्रत समुच्चय पूजन | 107 |
| 26. | सिद्ध परमेष्ठी की पूजा | 111 |
| 27. | तीर्थंकर पूजा | 115 |
| 28. | माँ-जिनवाणी सरस्वती की पूजा | 127 |
| 29. | आद्य धर्म प्रवर्तक आदिनाथ तीर्थंकर पूजन | 131 |
| 30. | अजितनाथ भगवान् की पूजा | 137 |
| 31. | संभवनाथ भगवान् की पूजा | 142 |
| 32. | अभिनंदननाथ भगवान् की पूजा | 147 |
| 33. | सुमतिनाथ जिनेन्द्र की पूजा | 152 |
| 34. | पद्मप्रभ जिनेन्द्र की पूजा | 157 |
| 35. | सुपार्श्वनाथ भगवान् की पूजा | 162 |
| 36. | चन्द्रप्रभ जिनेन्द्र की पूजा | 167 |
| 37. | श्री सुविधिनाथ (पुष्पदंत) भगवान् की पूजा | 172 |

| | | |
|---|---|---|
| 38. | श्री शीतलनाथ भगवान् की पूजा | 177 |
| 39. | श्रेयांसनाथ भगवान् की पूजा | 182 |
| 40. | वासुपूज्य भगवान् की पूजा | 188 |
| 41. | भगवान् विमलनाथ पूजन | 193 |
| 42. | श्री अनंतनाथ भगवान् की पूजा | 199 |
| 43. | श्री धर्मनाथ भगवान् की पूजा | 204 |
| 44. | शांतिनाथ भगवान् की पूजा | 209 |
| 45. | श्री कुंथुनाथ भगवान् की पूजा | 215 |
| 46. | श्री अरहनाथ भगवान् की पूजा | 220 |
| 47. | श्री मल्लिनाथ भगवान् की पूजा | 225 |
| 48. | श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान् की पूजा | 229 |
| 49. | श्री नमिनाथ भगवान् की पूजा | 234 |
| 50. | नेमीनाथ भगवान् की पूजा | 239 |
| 51. | पार्श्वनाथ तीर्थंकर की पूजा | 244 |
| 52. | भगवान् महावीर की पूजा | 250 |
| 53. | आचार्य विमलसागर गुरुदेव की पूजा | 256 |
| 54. | समुच्चय महार्घं | 259 |
| 55. | शांतिपाठ | 261 |
| 56. | अर्घ्यावली | 262 |
| 57. | आचार्य कनकनन्दी जी गुरुदेव पूजन | 263 |

| | | |
|---|---|---|
| 58. | स्वाध्याय तपस्वी आचार्यश्री कनकनन्दी गुरुदेव पूजन 1, 2 | 268 |
| 59. | अर्घ्य-श्री कनकनन्दी जी गुरुदेव | 275 |
| | **आरती संग्रह** | |
| 1. | आरती सिद्ध प्रभु की | 277 |
| 2. | आरती जैन धर्म की | 277 |
| 3. | आरती मोक्षमार्ग-मोक्षमार्गी-मोक्ष | 278 |
| 4. | सीपुर वासिनी-जिनवाणी-सरस्वती की स्तुति | 279 |
| 5. | सरस्वती वंदना | 280 |
| 6. | आरती दश धर्म की | 280 |
| 7. | उत्तम क्षमादि दशों धर्म की आरती | 281 |
| 8. | महावीर स्तुति | 281 |
| 9. | विसर्जन | 282 |
| 10. | आरती देव-शास्त्र-गुरु-धर्म-भाव भी | 283 |
| 11. | सिद्ध परमेष्ठी (शुद्ध परमात्मा) की आरती | 284 |
| 12. | जिनवाणी सरस्वती आरती | 284 |
| 13. | देव-शास्त्र-गुरु एवं धर्म की आरती | 285 |
| 14. | आरती श्री कनकनन्दी जी की | 286 |
| 15. | कनकनन्दी गुरु ऐसा वर दो | 287 |
| 16. | नवकोटि से पाप करने वाले सच्चे धार्मिक से घृणा करते | 287 |
| 17. | भ. महावीर विश्वगुरु क्यों? कैसे? क्या किया? | 301 |

# पूजा-संग्रह

## मंगलाष्टकम्

अर्हन्तो भगवंत इन्द्र-महिताः सिद्धाश्च सिद्धीश्वराः।
आचार्या जिनशासनोन्नतिकराः पूज्या उपाध्यायकाः।।
श्रीसिद्धान्त-सुपाठकाः मुनिवरा रत्नत्र्याराधकाः।
पंचैते परमेष्ठिनः प्रतिदिनं कुर्वन्तु नो मंगलम्।।

श्रीमन्नम्र-सुरासुरेन्द्र-मुकुट-प्रद्योत-रत्नप्रभा-
भास्वत्पाद-नखेन्दवः प्रवचनाम्भोधीन्दवः स्थायिनः।
ये सर्वे जिन-सिद्ध-सूर्यनुगतास्ते पाठकाः साधवः,
स्तुत्या योगिजनैश्च पञ्चगुरवः कुर्वन्तु नो मंगलम।।1।।

सम्यग्दर्शन-बोध-वृत्तममलं रत्नत्रयं पावनं,
मुक्ति-श्री-नगराधिनाथ-जिनपत्युक्तोऽपवर्गप्रदः।
धर्मः सूक्तिसुधा च चैत्यमखिलं चैत्यालयं श्रय्यालयं,
प्रोक्तं च त्रिविधं चतुर्विधममी कुर्वन्तु ते मंगलम्।।2।।

नाभेयादि-जिनाधिपास्त्रि-भुवनख्याताश्चतुर्विंशतिस्,
श्रीमन्तो भरतेश्वर प्रभृतयो ये चक्रिणो द्वादश।
ये विष्णु-प्रति विष्णु-लांगलधराः सप्तोत्तरा विंशतिस्-
त्रैकाल्ये प्रथितास्त्रि षष्टि पुरुषाः, कुर्वन्तु नो मंगलम्।।3।।

देव्योऽष्टौ च जयादिका द्विगुणिता विद्यादिका देवता,
श्री तीर्थंकर मातृकाश्च जनका, यक्षाश्च यक्ष्यस्तथा।
द्वात्रिंशत् त्रिदशाधिपास्थितिसुरा दिक्कन्यकाश्चाष्टधा,
दिक्पाला दश चैत्यमी सुरगणाः कुर्वन्तु नो मंगलम।।4।।

ये सर्वोषधि ऋद्धयः सुतपसो वृद्धिंगताः पञ्च ये,
ये चाष्टांग-महानिमित्त-कुशला, येऽष्टौ विधाश्चारणाः।

पञ्चज्ञानधरास्त्रयोऽपि बलिनो, ये बुद्धि ऋद्धीश्वराः,
सप्तैते सकलार्चिता गणभृतः, कुर्वन्तु नो मंगलम्।।5।।

कैलाशे वृषभस्य निर्वृतिमही, वीरस्य पावापुरे,
चम्पायां वसुपूज्य सज्जिनपतेः सम्मेद शैलेऽर्हताम्।
शेषाणामपि चोर्जयन्त शिखरे, नेमीश्वरस्यार्हतो,
निर्वाणावनयः प्रसिद्ध विभवाः, कुर्वन्तु नो मंगलम।।6।।

ज्योतिर्व्यन्तर-भावनामरगृहे मेरौ-कुलाद्रौस्तथा,
जम्बू-शाल्मलि-चैत्यशाखिषु तथा, वक्षार-रूप्याद्रिषु।
इष्वाकारगिरौ च कुण्डलनगे, द्वीपे च नन्दीश्वरे,
शैले ये मनुजोत्तरे जिनगृहाः कुर्वन्तु नो मंगलम्।।7।।

यो गर्भावतरोत्सवो भगवतां, जन्माभिषेकोत्सवो,
यो जातः परिनिष्क्रमेण विभवो, यः केवलज्ञानभाक्।
यः कैवल्यपुर प्रवेश महिमा संपादितः स्वर्गिभिः,
कल्याणानि च तानि पञ्च सततं, कुर्वन्तु नो मंगलम्।।8।।

इत्थं श्रीजिनमंगलाष्टकमिदं सौभाग्य-संपत्प्रदं,
कल्याणेषु महोत्सवेषु सुधियस्तीर्थंकराणामुषात्।
ये श्रृण्वन्ति पठन्ति तैश्च, सुजनै-धर्मार्थ-कामान्विता,
लक्ष्मीराश्रयते व्यपाय रहिता निर्वाण लक्ष्मीरपि।।9।।

## मंगल स्मरण

**-आचार्य कनकनन्दी**

### (मंगल-कीर्तन)

सत्य धर्म मंगलम्, आत्म धर्म मंगलम्।
जीव धर्म मंगलम्, विश्व धर्म मंगलम्।।

वस्तु तत्त्व मंगलम्, मोक्षमार्ग मंगलम्।
रत्नत्रय मंगलम्, सत्य श्रद्धा मंगलम्।।
सम्यग्ज्ञान मंगलम्, सदाचार मंगलम्।
सुध्यान मंगलम्, दशधर्म मंगलम्।।
कर्मक्षय मंगलम्, मोक्षतत्त्व मंगलम्।
अरिहंत मंगलम्, सिद्धप्रभु मंगलम्।।
सूरीवर मंगलम्, उपाध्याय मंगलम्।
सर्वसाधु मंगलम्, जिनवाणी मंगलम्।।
आत्मशान्ति मंगलम्, विश्वशान्ति मंगलम्।
दयाधर्म मंगलम्, साम्यभाव मंगलम्।।
दानसेवा मंगलम्, शुचिधर्म मंगलम्।
मंगल ही मंगलम्, सदा सदा मंगलम्।।

# विश्व शान्ति हेतु प्रार्थना

**–आचार्य कनकनन्दी**

**(चाल : हेऽऽऽ नीले गगन के तले, धरती का प्यार पले..... )**

होऽऽऽ नीले गगन के तलेऽऽ सर्वत्र/(सर्वथा) शान्ति फैलेऽऽ
मानव हो या प्रकृति/(पशु) भी हो सदा ही शान्ति पाले ऽऽऽ...स्थायी...
मानव मिलकर राष्ट्र में रहकर वैश्विक भाव धरेंऽऽऽ...होऽऽऽ नीले गगन
मानव पशु पक्षी कीट या पतंग सबसे प्यार पलेऽऽऽ...होऽऽऽ नीले गगन
कोई न अपना कोई न पराया वैश्विक कुटुम्ब पलेऽऽऽ...होऽऽऽ नीले गगन
काहूँ न राग काहूँ न द्वेष सर्वत्र साम्य पलेऽऽऽ...होऽऽऽ नीले गगन
जाति व पंथ राष्ट्र के कारण काहूँ न वैर पलेऽऽऽ...होऽऽऽ नीले गगन
अनीति अनादर पाप व अत्याचार कोई न ऐसा करेऽऽऽ...होऽऽऽ नीले गगन
हिंसा व भ्रष्टाचार शोषण दुराचार ऐसा न कोई करेऽऽऽ...होऽऽऽ नीले गगन

प्रजा हो राजा नेता हो नागरिक सब में मैत्री पलेऽऽऽ...होऽऽऽ नीले गगन
प्राणी व प्रकृति सभ्यता संस्कृति सब में शान्ति झरेऽऽऽ...होऽऽऽ नीले गगन
शोषक शोषित मजदूर मालिक वैषम्य भाव टलेऽऽऽ...होऽऽऽ नीले गगन
प्रकृति शोषण सञ्चय प्रदूषण कोई कभी न करेऽऽऽ...होऽऽऽ नीले गगन
ग्लोबल वार्मिंग भूकम्प अतिवृष्टि कहीं भी कभी न पलेऽऽऽ...होऽऽऽ नीले गगन
सुनामी हीन वृष्टि ओजोन छेद भी विश्व से सभी टलेऽऽऽ...होऽऽऽ नीले गगन
सदा हो सदाचार भाव में शुद्धाचार वचन हित ही बोलेऽऽऽ...होऽऽऽ नीले गगन
शरीर मन में वचन आत्मा में सदा ही शान्ति झरेऽऽऽ...होऽऽऽ नीले गगन
पर्यावरण की सुरक्षा हेतु सब संकल्प करेऽऽऽ...होऽऽऽ नीले गगन
धर्म व विज्ञान परस्पर मिलकर विश्व कल्याण करेऽऽऽ...होऽऽऽ नीले गगन
मेरा लक्ष्य है सत्य साम्यमय सुखामृत झरेऽऽऽ...होऽऽऽ नीले गगन
'कनकनन्दी' का आह्वान विश्व को उदार भाव धरेऽऽऽ...होऽऽऽ नीले गगन
वैश्विक समता शान्ति के हेतु है सभी प्रयास करेऽऽऽ...होऽऽऽ नीले गगन

**पञ्च-परमेष्ठी प्रार्थना**

## साधु-उपाध्याय-आचार्य भी आंशिक भगवान्

### (साधु साधना अवस्था व सिद्ध साध्य अवस्था)

**(चाल : ऐ! मालिक तेरे बंदे हम.....)**

परमेष्ठी पञ्च..तेरे भक्त हम...तेरी भक्ति से..बने भगवन्...
तव ज्ञान करे..तव ध्यान धरे...तव स्वरूप बन जाएँ हम...
/(पञ्च देवता तेरे भक्त...)...(ध्रुव)...
आ...आ...आ...आ...आ...

साधु पाठक सूरी भगवन्...अरिहंत-सिद्ध परम भगवन्...
परमेष्ठी पाँचों ही..हैं भगवन्...पाँचों देवता-गुरु भगवन्...
आद्य त्रय आंशिक भगवन्...अंत द्वय परम शुद्ध भगवन्...

/(रत्नत्रयधारी पञ्च भगवन्)...

तव ज्ञान करे..तव ध्यान धरे...तव स्वरूप बन जाएँ हम...(1)...

आ...आ...आ...आ...आ...

पाँचों उत्तम-मंगल व शरण...पाँचों परमेष्ठी में गर्भित...
अंकुर से यथा बने है वृक्ष...साधु (पाठक, सूरी) से बनते अर्हन्-सिद्ध...
शिशु से बनता प्रौढ़-वृद्ध...श्रमण ही बनते अर्हन्-सिद्ध...

/(मोक्षमार्गी कृतकृत्य सिद्ध)...

तव ज्ञान करे..तव ध्यान धरे...तव स्वरूप बन जाएँ हम...(2)...

आ...आ...आ...आ...आ...

श्रमण काल में तपते हैं तप...परीषह-उपसर्ग करते सहन...
इसी काल में करे ध्यान-अध्ययन...आहार इस काल में आवश्यक...
इसी काल में कष्ट सहन...करते व्रत-नियम पालन...

/(सिद्ध/(अरिहंत) काल में सुख अनंत)...

तव ज्ञान करे..तव ध्यान धरे...तव स्वरूप बन जाएँ हम...(3)...

आ...आ...आ...आ...आ...

अनेकांत नय-निक्षेप से...साधु ही होते नव देवता...
जीवन्त तीर्थ/(धर्म) स्वरूप साधु...निश्चय-व्यवहार मोक्षमार्ग...
श्रमण परमेष्ठी पञ्चम काल के...जीवन्त परमेष्ठी साक्षात् हैं...

/(णमो लोए सव्व साहूणम्)...

तव ज्ञान करे..तव ध्यान धरे...तव स्वरूप बन जाएँ हम...(4)...

आ...आ...आ...आ...आ...

आत्मिक विकास पञ्च परमेष्ठी...शुद्ध/(शुभ) से शुद्धतर-शुद्धतम्...
अरिहंत सिद्ध तो साध्य रूप...साधु पाठक सूरी साधन रूप...
साधन बिन न साध्य सिद्धि है...तीनों परमेष्ठी/(गुरु) साधन रूप...

/(पाँचों को वंदे 'कनकनन्दी' )....

तव ज्ञान करे..तव ध्यान धरे...तव स्वरूप बन जाएँ हम...(5)...

आ...आ...आ...आ...आ...

**णमो लोए सव्व साहूणम्...**

**णमो लोए सव्व उवज्झायाणम्...**

**णमो लोए सव्व आयरियाणम्...**

**णमो लोए सव्व अरिहंताणम्...**

**णमो लोए सव्व सिद्धाणम्...**

(यह कविता धवला एवं जयधवला के आधार पर है।)

ग.पु. कॉलोनी, सागवाड़ा, दिनांक 07.01.2016,

रात्रि 11.05 व प्रातः 5.42

## ''प्रतिक्रमण''

### (आत्मालोचना, आत्मविश्लेषण, आत्मविशुद्धि के उपाय)

### (विभावों का परिमार्जन एवं स्वभाव के प्रगटीकरण हेतु प्रतिक्रमण)

**-आचार्य कनकनन्दी**

**(चाल : आत्मशक्ति से....., चिंगारी कोई भड़के.....)**

प्रतिक्रमण करता हूँ मैं...तन-मन और काय से।
कृत-कारित और अनुमतयुत...द्रव्य और भाव से।।ध्रु.।।

अनादिकाल से हे प्रभु !...जो किया है विपरीत कर्म।
मिथ्यात्व अज्ञान कषायवश...वे सब नाश हो दुष्कर्म।।

अनन्त पंचपरिवर्तन में...चतुर्गतिरूपी संसार में।
चौरासी लाख योनियों में...जो किया है कर्म मोह में।। (1)

सबसे अधिक मैं पाप किया...मोहभाव के कारण।
अनात्म वस्तु को आत्म मानकर...न किया सत्य पहचान।।

शरीर सत्ता सम्पत्ति स्व-पर...शत्रु-मित्र स्व-पर जन।
अपना मानकर इनके हेतु...किया अधिक कुकर्म।। (2)

धार्मिक अन्धश्रद्धान से...संकीर्ण पन्थ मत अपनाया।
हिंसा युद्ध आक्रमण व...भेदभाव घृणा को अपनाया।।

अज्ञान के कारण न जान पाया...हित-अहित के तत्त्व।
हितग्रहण व अहित त्याग...ज्ञान-ज्ञेय के तत्त्व।। (3)

क्रोध-मान-माया-लोभ तथा...नोकषायों के कारण।
हिंसा-झूठ-चोरी-कुशील-परिग्रह...किया भी विविध प्रमाण।।

प्रमादवश अनेक किया...अनर्थदण्ड अहितकर।
आवश्यक बिना ही पाप किया...नवकोटी से अनेक प्रकार।। (4)

पर के अहित चिन्तन व...वाद-विवाद कलह।
फैशन-व्यसन निन्दा-चुगली...ईर्ष्या-घृणा विद्रोह।।

चलने-बैठने-सोने में या...भोजन आदान-प्रदान में।
असि-मसि-कृषि-वाणिज्य-सेवा...शिल्पकला संगीत में।। (5)

राजनीति या कानून में...धार्मिक सामाजिक काम में।
जन्म-मरण व विवाह क्रिया...भोग-उपभोग काम में।।

सम्यग्दृष्टि अवस्था या...श्रावक ब्रह्मचारी अवस्था में।
क्षुल्लक ऐलक आर्यिका या...साधु पाठक सूरी में।। (6)

ज्ञात-अज्ञात भाव में या...शयन स्वप्न जागृत में।
द्रव्य-क्षेत्र-काल-भाव में...जो किया अनात्म काम में।।

वे सब मेरे कुकृत्यों का...कर रहा हूँ मैं प्रतिक्रमण/(आलोचना)।

निन्दा गर्हा पश्चात्ताप युत...आत्मविशुद्धि के कारण।। (7)

पश्चात्ताप से फलश्च्युति...प्रतिक्रमण से पाप विनाश।
अशुभ से शुभ प्राप्त कर...शुद्ध से बनूँ अविनाश।।

मेरे द्रव्य भाव कर्मों को...कर रहा हूँ मैं विसर्जन।
सच्चिदानन्द स्वभाव बिना...अन्य सबका विनाशन।। (8)

मैं ही मुझमें ही स्थिर रहूँ...बनूँ ज्ञानानन्दमय।
'कनक' निजरूप को ही चाहता...जो है विज्ञानधनमय।। (9)

# देव-दर्शन विधि (पूर्व व परे)

**-आचार्य कनकनन्दी**

**(चाल : चौपाई.....तू ही माता.....)**

देव दर्शन का भाव जब होता, सहस्र उपवास का फल जो मिलता।
गमन करने से लाख फल मिलता, दर्शन से कोटी फल भी मिलता।।

स्नान से शुचिवन्त बनकर, शुद्ध वस्त्र सह द्रव्य को लेकर।
जीवों की रक्षा करते चले, नंगा पैर से शुद्ध मार्ग पर।। (1)

प्रभु स्मरण या स्तुति पाठ कर, पहुँचे जाकर जिन मन्दिर पर।
प्रासुक जल से पैर धोकर, मन्दिर की त्रय परिक्रमा कर।।

निःसहि-निःसहि जय जयकर, प्रवेश कर श्री जिन मन्दिर।
गर्भगृह की त्रि परिक्रमा कर, मंत्र नमस्कार नव जाप कर।। (2)

जिन दर्शन से स्व दर्शन कर, संसार नाशक भावना कर।
स्वाध्याय ध्यान तत्त्वचर्चा कर, संकल्प विकल्प कषाय त्याग कर।।

श्रद्धा भक्ति व विशुद्धि से, पुण्यानुबन्ध होता विशेष से।
उभयलोक सुखी होता विशेष से, निस्पृह भाव हो जब विशेष से।। (3)

सद्भाव यदि है साधु गुरुवर, उनसे अवश्य ज्ञानार्जनकर।

उनकी सेवा वैय्यावृत्ति कर, साधु बनने की भावना भी कर।।
मन्दिर में शान्ति समता को धर, फैशन-व्यसन त्याग दंभाचार।
कुध्यान त्यागकर धर्म ध्यान कर, 'कनक' भाव करे मोक्ष प्राप्त कर।। (4)

संकीर्ण स्वार्थ व अहं भाव से, प्रदर्शन या कषाय भाव से।
पंथाग्रह व भेद-भाव रूढ़ि से, सुफल न मिले है अज्ञान से।। (5)

## साम्य भाव वन्दन

-आचार्य कनकनन्दी

**(चाल : शत-शत वन्दन हे गुरुवर.....)**

शत-शत वन्दन हे ! समभाव...शत-शत वन्दन हे ! निज भाव।
वन्दन तुझको बारम्बार...शत-शत वन्दन हे शुद्ध/(सत्य) भाव।।ध्रुव।।

तुम हो निर्विकारी शुद्ध भाव...संकल्प-विकल्प रहित भाव।
राग-द्वेष-मोह से रिक्त भाव...अविचल निकम्प हे ! नित्य भाव।।

तेरे हेतु व्रत/(यम) नियम पालन...ध्यान अध्ययन मनन चिन्तन।
क्षमा मार्दव आर्जव धारण...सत्य शौच व संयम धारण।। (वन्दन...1)

तप त्याग व ब्रह्मचर्य धारण...आकिञ्चन्य धैर्य व गुप्ति धारण।
लाभ-अलाभ में नहीं हर्ष-विषाद...शत्रु-मित्र में नहीं मोह-आमर्ष।।

जन्म-मरण में नहीं निज भाव...धन-जन-मान में न मोह भाव।
आकर्षण-विकर्षण रिक्त भाव...ख्याति पूजा लाभ विमुक्त भाव।। (वन्दन...2)

चिदानन्दमय है तेरा रूप...सत्य शिव सुन्दर हे ! आत्म रूप।
तेरे लिए ही चक्री त्यागे राज्य...सर्वश्रेष्ठ ज्येष्ठ है तेरा साम्राज्य।।

तेरी प्राप्ति से ही मोक्ष मिले...तेरे से ही सुख-शान्ति मिले।
तेरी प्राप्ति हेतु मैं सदा प्रयत्न...'कनकनन्दी' के तू परम रत्न।। (वन्दन...3)

# पंचामृत अभिषेक पाठ

(अगर समय हो तो अभिषेक के पूर्व यह संपूर्ण विधि करनी चाहिए)

**श्रीमज्जिनेन्द्रमभिवंद्यजगत्त्रयेशं, स्याद्वादनायकमनंतचतुष्टयार्हम्।**
**श्रीमूलसंघसुदृशां सुकृतैकहेतुर्जैनेन्द्रयज्ञविधिरेष मयाऽभ्यधायि।।1।।**

ॐ ह्रीं क्ष्वीं भूः स्वाहा स्नपनप्रस्तावनाय पुष्पाञ्जलिः।।1।।

(आगे लिखे श्लोक को पढ़कर आभूषण और यज्ञोपवीत धारण करना)

**श्रीमन्मन्दरसुन्दरे (मस्तके) शुचिजलैर्धौतैः सदर्भाक्षतैः,**
**पीठे मुक्तिवरं निधाय रचितं त्वत्पादपद्मस्त्रजः।**
**इन्द्रोऽहं निजभूषणार्थकमिदं यज्ञोपवीतं दधे,**
**मुद्राकंकणशेखराण्यपि तथा जैनाभिषेकोत्सवे।।2।।**

ॐ ह्रीं श्वेतवर्णे सर्वोपद्रवहारिणी सर्वजनमनोरञ्जिनि परिधानोत्तरीयं धारिणि हं हं झं झं सं सं तं तं पं पं परिधानोत्तरीयं धारयामि स्वाहा।

ॐ नमो परमशान्ताय शांतिकराय पवित्रीकृताय अहं रत्नत्रयस्वरूपं यज्ञोपवीतं धारयामि मम गात्रं पवित्रं भवतु ह्रीं नमः स्वाहा।

(तिलक लगाने का श्लोक)

**सौगंध्यसंगतमधुव्रतझङ्कृतेन संवर्ण्यमानमिव गंधमनिंद्यमादौ।**
**आरोपयामि विबुधेश्वरवृन्दवंद्य पादारविंदमभिवंद्य जिनोत्तमानाम्।।3।।**

अनामिका अंगुली से नौ स्थानों (मस्तक, ललाट, कर्ण, कण्ठ, हृदय, नाभि, भुजा, पहुचा और पीठ) पर तिलक करें।

1. ॐ ह्रीं परम पवित्राय नमः आगमोक्त नवांगेषु चन्दनानुलेपनं करोमि स्वाहा।
2. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः मम सर्वांग शुद्धि कुरु-कुरु।

(भूमि प्रक्षालन का श्लोक)

**ये संति केचिदिह दिव्यकुलप्रसूताः, नागा प्रभूतबलदर्पयुता विवोधाः।**
**संरक्षणार्थममृतेन शुभेन तेषां, प्रक्षालयामि पुरतः स्नपनस्य भूमिम्।।4।।**

ॐ ह्रीं जलेन भूमिशुद्धि करोमि।।4।।

जहाँ पर भगवान् को विराजित करना हो।

(पीठ प्रक्षालन का श्लोक)

**क्षीरार्णवस्य पयसां शुचिभिः प्रवाहैः, प्रक्षालितं सुरवरैर्यदनेकवारम्।**
**अत्युद्यमुद्यत-महं जिनपादपीठं, प्रक्षालयामि भवसंभवतापहारि।।5।।**

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पवित्रतरजलेन पीठप्रक्षालनं करोमि।।5।।

(पीठ पर श्रीकार वर्ण लेखन)

**श्रीशारदासुमुखनिर्गतबीजवर्ण, श्रीमंगलीकवरसर्वजनस्य नित्यं।**
**श्रीमत्स्वयं क्षयति तस्य विनाशविघ्नं, श्रीकारवर्णलिखितं जिनभद्रपीठे।।6।।**

ॐ ह्रीं श्री कारलेखनं करोमि।।6।।

(दश दिक्पाल का आह्वान)

**इन्द्राग्निदंडधरनैऋतपाशपाणिवायूत्तरेश शशिमौलफणींद्रचन्द्राः।**
**आगत्य यूयमिह सानुचराः सचिह्नाः, स्वं स्वं प्रतीच्छत बलिं जिनपाभिषेके।।7।।**

(दश दिक्पाल के मंत्र)

**ॐ आं क्रौं ह्रीं इन्द्र आगच्छ-आगच्छ इन्द्राय स्वाहा।।1।।**

**ॐ आं क्रौं ह्रीं आग्नेय आगच्छ-आगच्छ आग्नेय स्वाहा।।2।।**

**ॐ आं क्रौं ह्रीं यम आगच्छ-आगच्छ यमाय स्वाहा।।3।।**

**ॐ आं क्रौं ह्रीं नैऋत आगच्छ-आगच्छ नैऋताय स्वाहा।।4।।**

**ॐ आं क्रौं ह्रीं वरुण आगच्छ-आगच्छ वरुणाय स्वाहा।।5।।**

**ॐ आं क्रौं ह्रीं पवन आगच्छ-आगच्छ पवनाय स्वाहा।।6।।**

**ॐ आं क्रौं ह्रीं कुबेर आगच्छ-आगच्छ कुबेराय स्वाहा।।7।।**

**ॐ आं क्रौं ह्रीं ऐशान आगच्छ-आगच्छ ऐशानाय स्वाहा।।8।।**

**ॐ आं क्रौं ह्रीं धरणेंद्र आगच्छ-आगच्छ धरणेन्द्राय स्वाहा।।9।।**

**ॐ आं क्रौं ह्रीं सोम आगच्छ-आगच्छ सोमाय स्वाहा।।10।।**

**नाथ! त्रिलोकमहिताय दश प्रकार-धर्माम्बुवृष्टिपरिषिक्तजगत्त्रयाय।**
**अर्घं महार्घगुणरत्नमहार्णवाय, तुभ्यं ददामि कुसुमैर्विशदाक्षतैश्च।।8।।**

ॐ ह्रीं इन्द्रादिदशदिक्पालकेभ्यो इदं अर्घ्यं पाद्यं गंधं दीपं धूपं चरुं बलिं स्वस्तिकं अक्षतं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा।।8।।

ॐ ह्रीं दश दिक्पालेभ्योः पुष्पाञ्जलि क्षिपेत्।

(क्षेत्रपाल अर्घ)

**भो क्षेत्रपाल! जिनपःप्रतिमांकभाल। दंष्ट्राकराल जिनशासन रक्षपाल।**
**तैलादिजन्म गुडचन्दनपुष्पधूपै-र्भोगं प्रतीच्छ जगदीश्वरयज्ञकाले।।**
**विमलसलिलधारामोदगन्धाक्षतोघैः, प्रसवकुलनिवेद्यैर्दीपधूपैः फलौघैः।**
**पटहपटुतरोघैः वस्त्रसद्भूषणौघैः, जिनपतिपदभक्त्या ब्रह्मणं प्रार्चयामि।।9।।**

ॐ आं क्रौं अत्रस्थ विजयभद्र-वीरभद्र-मणिभद्रभैरवापराजित-पंचक्षेत्रपालाः इदं अर्घ्यं पाद्यं गंधं दीपं धूपं चरुं बलिं स्वस्तिकं अक्षतं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतामिति स्वाहा।।9।।

ॐ ह्रीं श्री क्षेत्रपाले पुष्पांजलि क्षिपेत्।

**(पद्मावती माता का अर्घ)**

**जल चन्दन अक्षत पुष्प चरु चित्त दीप धूप फल लाय धरे।**
**शुभ अर्घ बनायो पूजन धायो, तूर बजायो नृत्य करे।।**
**पद्मावती माता जग विख्याता दे मोहि साता मोद भरी।**
**मैं तुम गुण गाऊँ हर्ष बढ़ाऊँ बलि-बलि जाऊँ धन्य धरी।।10।।**

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं श्री पार्श्वनाथ भक्त श्री पद्मावती महादेव्यैः अर्घ्य समर्पयामि स्वाहा।

**जन्मोत्सवादिसमयेषु यदीयकीर्ति, सेन्द्राः सुराः प्रमदभारनताः स्तुवन्ति।**
**तस्याग्रतो जिनपतेः परया विशुद्धया, पुष्पांजलिं मलयजाद्रिमुपाक्षिपेऽहम्।।11।।**
ॐ ह्रीं नाना विध पवित्र सुगंधित पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।11।।
(भगवान् विराजमान करेंगे) उस जगह पुष्प क्षेपण करें।
**दध्युज्ज्वलाक्षत मनोहर पुष्प दीपैः, पात्रार्पितं प्रतिदिनं महतादरेणा।**
**त्रैलोक्य मंगल सुखालय कामदाह, मारार्तिकं तव विभोरव तारयामि।।12।।**
(दधि-अक्षत, पुष्प और दीप आदि रकेवी में रखकर अनेक वादित्रों के साथ श्री जिनेन्द्र देव की आरती उतारना चाहिए।)

(भगवान की मूर्ति स्थापना)

**यं पांडुकामलशिलागतमादिदेव, मस्नापयन् सुरवराः सुरशैलमूर्ध्नि।**
**कल्याणमीप्सुरहमक्षततोयपुष्पैः, संभावयामि पुर एव तदीयबिम्बम्।।13।।**
ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्रीवर्णे प्रतिमास्थापनं करोमि स्वाहा।।13।।

(चार कलश स्थापन और कलशों में जलधार देना)

**सत्पल्लवार्चितमुखान् कलधौतरौप्य, ताम्रारकूटघटितान् पयसा सुपूर्णान्।**
**संवाह्यतामिव गतांश्चतुरः समुद्रान्, संस्थापयामि कलशान् जिनवेदिकांते।।14।।**
ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पद्म महापद्म तिगिञ्छ केसरि महापुण्डरीक पुण्डरीक गंगा सिन्धु रोहिद्रोहितास्या हरिद्धरिकान्ता सीता सीतोदा नारी नरकान्ता सुवर्णरूप्य कूला रक्ता रक्तोदा क्षीराम्भोधिजलं सुवर्णघट प्रक्षिप्तं नवरत्नगन्धपुष्पाक्षतादिबीजपूरितं पवित्रं कुरु कुरु झौं झौं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं द्रां द्रां द्रीं द्रीं अ सि आ उ सा नमः स्वाहा।।14।।

(अभिषेक के लिए प्रतिमाजी को अर्घ्य चढ़ाना)

**उदक-चन्दन-तन्दुल-पुष्पकैश्चरु सुदीप सुधूप-फलार्घकैः।**
**धवल मंगल गान रवाकुले, जिनगृहे जिननाथ महंयजे।।15।।**
ॐ ह्रीं परमब्रह्मणेऽनन्तानन्तज्ञानशक्तये अष्टादशदोषरहिताय षट्चत्वारिंशदगुण

सहिताय अर्हत्परमेष्ठिने अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।15।।

(जलाभिषेक-1)

**दूरावनम्रसुरनाथकिरीटकोटि-संलग्नरत्नकिरणच्छविधूसरांघ्रिम्,**
**प्रस्वेदतापमलमुक्तमपि प्रकृष्टै-र्भक्त्या जलैर्जिनपतिं बहुधाभिषिञ्चे।।16।।**

मंत्र-(1) ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं झं झं झ्वीं झ्वीं क्ष्वीं क्ष्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पवित्रतर जलेन जिनाभिषेंचयामि स्वाहा।

मंत्र-(2) ॐ ह्रीं श्रीमंतं भगवंतं कृपालसंतं वृषभादि वर्धमानांतचतुर्विंशति-तीर्थंकरपरमदेवं आद्यानां आद्ये जम्बूद्वीपे भरतक्षेत्रे आर्यखंडे........देशे........प्रदेशे...... नाम नगरे एतद्.......जिनचैत्यालये वीर नि. सं. ..........मासोत्तमेमासे..........मासे..........पक्षे.......... तिथौः ............ वासरेप्रशस्त ग्रहलग्न होरायां मुनि-आर्यिका-श्रावक-श्राविकाणाम् सकलकर्मक्षयार्थं जलेनाभिषेकं करोमि स्वाहा। इति जलस्नपनम्।

नोट-उपर्युक्त दोनों मंत्रों में से कोई एक मंत्र बोलना चाहिए।

**उदक-चन्दन-तन्दुल-पुष्पकैश्चरु सुदीप सुधूप-फलार्घकैः।**
**धवल मंगल गान रवाकुले, जिनगृहे जिननाथ महंयजे।।**

अथवा

**संसार महादुःख सागर में, प्रभु गोते खाते आया हूँ।**
**अब कर्म मलों को धोने को, इस जल की धारा देता हूँ।।**

ॐ ह्रीं जलधारा करोमि अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(आम्ररसाभिषेक-2)

**सपक्वैः कनक-च्छायैः समादै-र्मोदकारिभिः।**
**सहकार-रसैः स्नानं कुर्मः शर्मैक-सद्मनः।।17।।**

मंत्र- ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं..... आम्ररसाभिषेंचयामि स्वाहा।

(शर्कराभिषेक-3)

**मुक्त्यङ्-गना-नर्म-विकीर्यमाणैः, पिष्टार्थ-कर्पूर-रजो-विलासैः।**
**माधुर्य-धुर्यै-र्वरशर्करोधै-र्भक्त्या जिनस्य स्नपनं करोमि।।18।।**

मंत्र- ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं..... शर्कराभिषेंचयामि स्वाहा।

(रसाभिषेक-4)

**सुनिग्धै-र्नव-नालिकेर-फलजै-राम्रादि-जातै-स्तथा।**
**पुण्ड्रेक्ष्वादि-समुद्भवैश्य गुरुभिः पापापहरैंजसा।।**
**पीयूष-द्रव-सन्निभै-र्वररसैः सज्ज्ञान-सम्प्राप्तये,**
**सुस्वादै-रमलै-रलं जिन-विभुं भक्त्यानद्यं स्नापये।।19।।**

मंत्र- ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं..... सर्वरसाभिषेंचयामि स्वाहा।

(रसाभिषेक-5)

**नालिकेर-जलै-स्वच्छैः शीतैः पूतै-र्मनोहरैः।**
**स्नान-क्रियां कृतार्थस्य विदधे विश्व-दर्शिनः।।20।।**

मंत्र- ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं..... नालिकेररसाभिषेंचयामि स्वाहा।

(इक्षुरसाभिषेक-6)

**भक्त्या ललाट तट देशनिवेशितोच्चैः, हस्तैश्च्युताः सुरवरासुरमर्त्यनाथैः।**
**तत्कालपीलितमहेक्षुरसस्य धारा, सद्यः पुनातु जिनबिम्बगतैव युष्मान्।।21।।**

मंत्र-(1) ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं झं झं झ्वीं झ्वीं क्ष्वीं क्ष्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पवित्रतर इक्षुरस जिनाभिषेंचयामि स्वाहा।

ॐ ह्रीं.................. इति इक्षुरसस्नपनम्।

**संसार महादुःख सागर में, प्रभु गोते खाते आया हूँ।**
**अब आत्म स्वाद को पाने को, इक्षु रस की धारा देता हूँ।।**

अर्घ्य- ॐ ह्रीं इक्षुरस धारा करोमि अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(घृताभिषेक-7)

**उत्कृष्टवर्ण-नव-हेम-रसाभिराम-देहप्रभावलयसङ्गमलुप्तदीप्तिम्।**
**धारां घृतस्य शुभगन्धगुणानुमेयां, वन्देऽर्हतां सुरभिसंस्नपनोपयुक्ताम्।।22।।**

मंत्र-(1) ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं झं झं झ्वीं झ्वीं क्ष्वीं क्ष्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय ॐ नमोऽर्हत भगवते श्रीमते पवित्रतर घृतेन........ जिनाभिषेंचयामि स्वाहा।

ॐ ह्रीं.................. इति घृतस्नपनम्।

**संसार महादुःख सागर में, प्रभु गोते खाते आया हूँ।**
**अब सार-भूत को पाने को, इस घृत की धारा देता हूँ।।**

मंत्र- ॐ ह्रीं घृत धारा करोमि अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(दुग्धाभिषेक-8)

**सम्पूर्ण-शारद-शशांकमरीचिजाल-स्यन्दैरिवात्मयशसामिव सुप्रवाहैः।**
**क्षीरैर्जिनाः शुचितरैरभिषिंच्यमानाः सम्पादयन्तु मम चित्तसमीहितानि।।23।।**

मंत्र-(1) ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं झं झं झ्वीं झ्वीं क्ष्वीं क्ष्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय ॐ नमोऽर्हत भगवते श्रीमते पवित्रतर दुग्ध जिनाभिषेंचयामि स्वाहा।

ॐ ह्रीं.................. इति दुग्धाभिषेकस्नपनम्।

**संसार महादुःख सागर में, प्रभु गोते खाते आया हूँ।**
**अब क्षीर मलाई सम होने को, इस दूध की धारा देता हूँ।।**

मंत्र- ॐ ह्रीं दूध धारा करोमि अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(दध्याभिषेक-9)

**दुग्धाब्धिवीचिपयसंचितफेनराशि-पाण्डुत्वकांतिमवधीरयतामतीव।**
**दध्नांगता जिनपतेः प्रतिमां सुधारा, सम्पद्यतां सपदि वाञ्छितसिद्धये वः।।24।।**

मंत्र-(1) ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं झं झं झ्वीं झ्वीं क्ष्वीं क्ष्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पवित्रतर दधि जिनाभिषेंचयामि स्वाहा।

ॐ ह्रीं................. इति दधिस्नपनम्।

**संसार महादुःख सागर में, प्रभु गोते खाते आया हूँ।**
**अब मक्खन सम मन होने को, इस दधि की धारा देता हूँ।।**

मंत्र- ॐ ह्रीं दधि धारा करोमि अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(सर्वोषधि 10) (पंच अमृत को शामिल किया द्रव्य)

**संस्नापितस्य घृतदुग्धदधीक्षुवाहैः, सर्वाभिरौषधिभिरर्हत उज्ज्वलाभिः।**
**उद्वर्तितस्य विदधाम्यभिषेकमेला-कालेयकुंकुमरसोत्कटवारिपूरैः।।23।।**

मंत्र-(1) ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं झं झं झ्वीं झ्वीं क्ष्वीं क्ष्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पवित्रतर सर्वौषधि जिनाभिषेंचयामि स्वाहा।

ॐ ह्रीं................. इति सर्वौषधिस्नपनम्।

**संसार महादुःख सागर में, प्रभु गोते खाते आया हूँ।**
**अब राग-रोग मिटाने को सर्वोषधि की धारा देता हूँ।।**

मंत्र- ॐ ह्रीं सर्वौषधि धारा करोमि अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(चतुः कोणकुंभकलशाभिषेकः-11)

**इष्टैर्मनोरथशतैरिव भव्यपुंसां, पूर्णैः सुवर्णकलशैर्निखिलैर्वसानैः।**
**संसारसागरविलंघनहेतुसेतुमाप्लावये त्रिभुवनैकपतिं जिनेन्द्रम्।।24।।**

मंत्र-(1) ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं झं झं झ्वीं झ्वीं क्ष्वीं क्ष्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पवित्रतरं................. जिनाभिषेंचयामि स्वाहा।

ॐ ह्रीं................. इति चतुःकोण कुम्भकलशस्नपनम्।

**संसार महादुःख सागर में, प्रभु गोते खाते आया हूँ।**
**अब घाति कर्म विनाशक को चतुः कलशों की धारा देता हूँ।।**
मंत्र- ॐ ह्रीं चतुः कलश धारा करोमि अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(चन्दनलेपनम्-12)

**संशुद्धशुद्धया परया विशुद्धया कर्पूरसम्मिश्रितचन्दनेन।**
**जिनस्य देवासुरपूजितस्य विलेपनं चारु करोमि भक्त्या।।25।।**
मंत्र- ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं चंदनानु लेपनं करोमि स्वाहा।
**संसार महादुःख सागर में, प्रभु गोते खाते आया हूँ।**
**अब संसार ताप विनाशन को चन्दन लेपन करता हूँ।।**
मंत्र- ॐ ह्रीं चन्दन लेपन करोमि अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(पुष्पवृष्टि-13)

**वासन्तिका जाति सुरेश वृन्दैः, वर्धूक वृन्दैरपि चम्पकाद्यै।**
**पुष्पैरनकैरलिभिर् हूताग्रैः, श्री मज्-जिनेन्द्राग्र युगं यजेहम्।।26।।**
ॐ ह्रीं सुमनः सुखप्रदाय पुष्पवृष्टि करोमि स्वाहा।
**संसार महादुःख सागर में, प्रभु गोते खाते आया हूँ।**
**अब संसार बाण विनाशन को इन पुष्पों की वृष्टि करता हूँ।।**
मंत्र- ॐ ह्रीं पुष्प वृष्टि करोमि अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(मंगल आरती-14)

**दध्युज्ज्वलाक्षतमनोहरपुष्पदीपैः पात्रार्पितं प्रतिदिनं महतादरेण।**
**त्रैयोक्यमंगलसुखालयकामदाहमारार्तिकंतव विभोरवतारयामि।।27।।**
इति मंगल आरती अवतरणम्।
**संसार महादुःख सागर में, प्रभु गोते खाते आया हूँ।**
**अब मिथ्यातम विनाशन को इस दीप की आरती करता हूँ।।**
मंत्र- ॐ ह्रीं दीप आरती करोमि अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(पूर्णसुगंधितकलशाभिषेक-15)

**द्रव्यैरनल्पघनसार-चतुः समाढ्यै-रामोदवासितसमस्तदिगंतरालैः।**
**मिश्रीकृतेन पयसा जिनपुंगवानां त्रैयोक्यपावनमहं स्नपनं करोमि।।28।।**

मंत्र-(1) ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं झं झं झ्वीं झ्वीं क्ष्वीं क्ष्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय ॐ नमोऽर्हत भगवते श्रीमते पवित्रतरं (सुगन्धित जलाभिषेकं करोमि) स्वाहा।
ॐ ह्री ......... इति पूर्णसुगंधितजलस्नपनम्।

**संसार महादुःख सागर में, प्रभु गोते खाते आया हूँ।**
**अब उत्तम तन पाने को इस गन्ध की धारा देता हूँ।।**

मंत्र- ॐ ह्रीं गन्ध धारा करोमि अर्घ निर्वपामीति स्वाहा।

(यंत्राभिषेक-16)

**अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय साधु मुनिवर हैं निज ज्ञानी।**
**जग में मंगलमय सुखदायक भविजन को शिवमारग दानी।।**
**उत्तम जग को शर्न सदा ही जीवन में सब विधि सुखदानी।**
**श्री विनायक सिद्ध यंत्र का नह्वन करते हैं भव प्रानी।।**

ॐ ह्रीं भूर्भूवः स्वः विघ्नौघ वारकं विनायक सिद्ध यंत्रं जलेनाभिषिच यामि।।30।।
(यंत्राभिषेक में जिस यंत्र का अभिषेक हो रहा हो उसका नाम बोला जावें।)

# लघु शांतिधारा

(शांतिधारा भगवान् के शिर पर अथवा यंत्र पर करें।)

**ॐ नमः सिद्धेभ्यः। श्री वीतरागाय नमः। ॐ नमोऽर्हते भगवते, श्रीमते पार्श्व तीर्थंकराय द्वादशगण परिवेष्टिताय, शुक्लध्यान पवित्राय, सर्वज्ञाय, स्वयंभुवे, सिद्धाय, बुद्धाय, परमात्मने, परम सुखाय, त्रैलोक्यमही व्याप्ताय, अनन्तसंसार चक्रपरिमर्दनाय, अनन्त दर्शनाय,**

**अनन्त ज्ञानाय, अनन्त वीर्याय, अनन्त सुखाय, त्रैलोक्य वशंकराय, सत्यज्ञानाय, सत्यब्रह्मणे, धरणेन्द्र फणा मण्डल-मण्डिताय, ऋष्यार्यिका-श्रावक-श्राविका प्रमुख चतुस्संघोपसर्ग विनाशनाय, घातिकर्म विनाशनाय, अघातिकर्म विनाशनाय,** (शान्तिधारा कर्त्ता का नाम)

**अपवादं अस्माकं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **मृत्युं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **अतिकामं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **रतिकामं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **क्रोधं पापं वैरं च** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **अग्निभयं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **सर्वोपसर्गं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **सर्वविघ्नं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **सर्वभयं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **सर्वराजभयं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **सर्व चौर भयं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **सर्वदुष्टभयं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **सर्व मृग भयं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **सर्वमात्म चक्रभयं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **सर्वपरमन्त्रं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **सर्व शूलरोगं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **सर्व क्षयरोगं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **सर्व कुष्ट रोगं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **सर्व क्रूर रोगं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **सर्व नरमारीं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **सर्व गौमारीं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **सर्व महिषमारीं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **सर्व धान्यमारीं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **सर्व वृक्षमारीं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **सर्व गुल्ममारीं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **सर्व पत्रमारीं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **सर्व पुष्पमारीं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **सर्व फलमारीं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **सर्व राष्ट्रमारीं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **सर्व देशमारीं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **सर्व विषमारीं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **सर्व वेतालशाकिनी भयं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **सर्व वेदनीयं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **सर्व मोहनीयं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **सर्व कर्माष्टकं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **सर्व दुर्भगत्वं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद।

ॐ सुदर्शन महाराज **चक्र-विक्रम तेजो-बल-शौर्य-वीर्य शांतिं** कुरु-कुरु। **सर्व जनानन्दनं** कुरु-कुरु। **सर्व भव्यानंदनं** कुरु-कुरु। **सर्व गोकुलानन्दनं** कुरु-कुरु। सर्वग्राम-नगर-**खेट-खर्वट-मटंब-पत्तन-**

**द्रोणमुख संवाहानन्दनं** कुरु-कुरु। **सर्व लोकानन्दनं** कुरु-कुरु। **सर्व देशानन्दनं** कुरु-कुरु। **सर्व यजमानानन्दनं** कुरु-कुरु। **सर्व दुःखं**, हन-हन, दह-दह, पच-पच, कुट-कुट, शीघ्रं-शीघ्रं।

**यत्सुखं त्रिषु लोकेषु, व्याधि-र्व्यसन वर्जितं।**
**अभयं क्षेम-मारोग्यं, स्वस्ति-रस्तु विधीयते।।**

शिवमस्तु ! कुल-गोत्र-धन-धान्यं सदास्तु पद्मप्रभ। चन्द्रप्रभ-वासुपूज्य-मल्लि-वर्द्धमान-पुष्पदंत शीतलनाथ-मुनिसुव्रत-नेमिनाथ-पार्श्वनाथ इत्येभ्यो जिनेभ्यो नमः।

(इत्यनेन मंत्रेण नवग्रहशान्त्यर्थं गंधोदक धारा वर्षणम्।)

श्री शान्तिरस्तु, शिवमस्तु, जयोऽस्तु, नित्यमारोग्यमस्तु, सर्वेषां पुष्टिरस्तु, तुष्टिरस्तु, समृद्धिरस्तु, कल्याणमस्तु, सुखमस्तु, अभिवृद्धिरस्तु, कुल गोत्र धन धान्यं सदास्तु, श्री सद्धर्म बल आयुः आरोग्य ऐश्वर्य अभिवृद्धिरस्तु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो सम्पूर्ण कल्याण मंगल रूप मोक्ष पुरुषार्थश्च भवतुः।

ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते प्रक्षीणाशेष दोष कल्मषाय दिव्यतेजो मूर्तये श्री शान्तिनाथाय शान्तिकराय सर्व विघ्न प्रणाशनाय सर्व रोगापमृत्यु विनाशनाय सर्व परकृत क्षुद्रोपद्रव विनाशनाय, सर्वक्षाम-डामर विनाशनाय, ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा नमः। सर्व देशस्य चतुर्विध संघस्य तथैव सर्व विश्वस्य तथैव (शांतिधारा कर्त्ता का नाम) सर्व शान्तिं कुरु-कुरु, तुष्टिं कुरु-कुरु, पुष्टिं कुरु-कुरु वषट् स्वाहा।

**णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं,**
**णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्व साहूणं।**

# गणधर वलयः मंत्र

## (श्री गौतम स्वामी रचित)

णमो जिणाणं[1]
णमो ओहि जिणाणं[2]
णमो परमोहि जिणाणं[3]
णमो सव्वोहि जिणाणं[4]
णमो अणंतोहि जिणाणं[5]
णमो कोट्ठ-बुद्धीणं[6]
णमो बीज बुद्धीणं[7]
णमो पदाणुसारीणं[8]
णमो संभिण्ण-सोदाराणं[9]
णमो सयं बुद्धाणं[10]
णमो पत्तेय बुद्धाणं[11]
णमो बोहिय बुद्धाणं[12]
णमो उजु मदीणं[13]
णमो विउल मदीणं[14]
णमो दस पुव्वियाणं[15]
णमो चउदस पुव्वियाणं[16]
णमो अट्ठंग महाणिमित्त कुसलाणं[17]
णमो विउव्वण पत्ताणं[18]
णमो विज्जाहराणं[19]
णमो चारणाणं[20]
णमो पण्णसमणाणं[21]
णमो आगास-गामीणं[22]
णमो आसी-विसाणं[23]
णमो दिट्ठि-विसाणं[24]
णमो उग्ग-तवाणं[25]
णमो दित्त-तवाणं[26]
णमो तत्त-तवाणं[27]
णमो महा-तवाणं[28]
णमो घोर-तवाणं[29]
णमो घोर-गुणाणं[30]
णमो घोर परक्कमाणं[31]
णमो अघोर-गुण-बंभयारीणं[32]
णमो आमोसहि पत्ताणं[33]
णमो खेल्लोसहि पत्ताणं[34]
णमो जल्लोसहि पत्ताणं[35]
णमो विट्ठोसहि पत्ताणं[36]
णमो सव्वोसहि पत्ताणं[37]
णमो मण-बलीणं[38]
णमो वचि-बलीणं[39]
णमो काय-बलीणं[40]
णमो खीर-सवीणं[41]
णमो सप्पि-सवीणं[42]

णमो महुरसवीणं[43]

णमो अमिय-सवीणं[44]

णमो अक्खीण महाणसाणं[45]

णमो वड्ढमाणाणं[46]

णमो सिद्धायदणाणं[47]

णमो भयवदो-महदि-महावीर-
वड्ढमाण-बुद्ध-रिसीणो चेदि।[48]

**जस्संतियं धम्म-पहं णियंच्छे, तस्संतियं वेणइयं पउं जे।**
**काएण वाचा-मणसाविणिच्चं, सक्कारएतं सिर-पंचमेण।।**

**शान्तिः शिरोधृत जिनेश्वर शासनानां, शान्तिः निरंतर तपोभव भावितानां।**
**शान्तिः कषाय जय जृम्भित वैभवानां, शान्तिः स्वभाव महिमान-मुपागतानां।।**

**संपूजकानां प्रतिपालकानां,**
**यतीन्द्र सामान्य तपोधनानाम्।**
**देशस्य राष्ट्रस्य पुरस्य राज्ञः,**
**करोतु शान्तिं भगवान् जिनेन्द्रः।।**

## अर्घ

**उदक-चंदन-तंदुल-पुष्पकैश्चरु-सुदीप-सुधूप-फलार्घकैः।**
**धवल मंगलगान रवाकुले, जिनगृहे जिननाथ-महं यजे।।**

ॐ ह्रीं श्री परमदेवाय शांतिधारा अभिषेकान्ते अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**निर्मलं निर्मली करणं, पवित्रं पाप नाशनम्।**
**जिन गंधोदकं वन्दे, अष्ट कर्म विनाशनम्।।**

यह छंद पढ़ते हुए गंधोदक नाभि के ऊपर विभिन्न अंगों में लगावें।

# विनय पाठ ''वन्दे तद्गुण-लब्धये''

## (आध्यात्म गुण-गुणी के स्मरण-भजन-अनुकरण ही पूजा, प्रार्थना, वन्दना, आराधना, आरती आदि)

## पूजा-प्रार्थना आदि के रहस्य, स्वरूप एवं फल

**-आचार्य कनकनन्दी**

**(राग : शत-शत वन्दन....., यमुना किनारे श्याम.....)**

पूजा प्रार्थना का स्वरूप जानो...'वन्दे तद्गुणलब्धये' रहस्य मानो।
भाव की विशुद्धि पूजादि मानो...जड़ात्मक क्रिया नहीं है जानो।।ध्रु.।।

पूजा-प्रार्थना-आराधना/(वन्दना)/(प्रशंसा) भक्ति...याग यज्ञ विधान संस्तुति।
पर्यायवाची शब्द पूजा के जानों...मन-वचन-काय से पूजा है मानों।।

स्तुति है पुण्य गुणोत्कीर्तिः...स्तोता है भव्यः प्रसन्नधीः।
निष्ठितार्थो है भवां स्तुत्यः...फल है नैश्रेयस सुखम्।। (1)

गुण-गुणी के भाव/(मन) में स्मरण...वचन में हो तथाहि उच्चारण /(कीर्तन)/(भजन)।
काय में हो तथाहि वन्दन...जीवन में हो गुणानुकरण।।

पूजक का भाव प्रसन्न होता...गुणानुस्मरण से प्रमुदित होता।
मोह-राग-द्वेष क्षीण करता...पूज्य पुरुष के गुणों को ग्रहता।। (2)

तब ही पूजक यथार्थ होता...शुभभाव से पाप को नाशता।
सातिशय पुण्य अर्जन करता...इह परलोक सुख को पाता।।

इससे रहित जो पूजादि होती...यथार्थ पूजा वह नहीं होती।
भाव शून्य क्रिया/(पूजा) फल न देती...जड़ क्रिया से भक्ति /(पूजा) न होती।। (3)

ख्याति-पूजा-लाभ निमित्त...राग-द्वेष-मोह-काम से युक्त।

रूढ़ि-परम्परा व अज्ञान युक्त...पूजा-प्रार्थना होती है अनर्थ।।

भावसहित वचन-तन से...द्रव्य-क्षेत्र व साधन क्रियाएँ।

स्तुति/(पूजा) से मिलता है यथार्थ फल...कृतकारिता अनुमत से फल।। (4)

पवित्र भावना महान् कर्म...दानदया-सेवा यथार्थ धर्म।

गुण-गुणी सम्मान यथार्थ पूजा...'कनकनन्दी' रचे ऐसी ही पूजा।। (5)

(पूजा संबंधी विस्तृत परिज्ञान के लिए आचार्य कनकनन्दी कृत (1) जिनार्चना (2) पूजा से मोक्ष-पुण्य-पाप आदि का अध्ययन करें।)

# ''जिन दर्शन : निज दर्शन''

## देव दर्शन का उददेश्य एवं फल

## (अध्यात्म आगम निष्ठ कविता)

**-आचार्य कनकनन्दी**

**(चाल : आत्म शक्ति से ओतप्रोत....., शत-शत वन्दन.....)**

जिन दर्शन निज दर्शन हेतु, यह दर्शन का सार है।
निज को जिन सम बनाना, यह समय का सार है।।ध्रु.।।

जिन (व) जीव एक समान द्रव्य है, जो कि चैतन्यमय है।
चेतन दृष्टि से एक समान है, निगोद या सिद्ध जीव है।। (1)

अतएव भक्त भगवान् सम है, दर्शन करे श्रद्धान से।
जिन/(भगवत्) गुण की प्राप्ति हेतु ही, दर्शन पूजन वन्दन भी।। (2)

गुण समूह ही द्रव्य होता है, जिन में जीव गुण प्रगट है।
निज में जिन गुण अव्यक्त है, अव्यक्त को व्यक्त करना है।। (3)

गुण पर्याय से युक्त द्रव्य है, जिनमें सिद्ध/(शुद्ध) पर्याय है।
भक्त में अशुद्ध पर्याय है, अशुद्ध को शुद्ध करना है।। (4)

जो देखता है जिन सिद्ध को, द्रव्य गुण पर्याय दृष्टि से।

वह देखता है निज रूप को, मुक्त होता है मोह/(कर्म) दृष्टि से।। (5)

इससे भक्त में विशुद्धि होती/(आती), पाप कर्म की निर्जरा होती।
सातिशय पुण्य का बन्ध भी होता, परम्परा से मोक्ष मिलता है।। (6)

सांसारिक सुख भी पुण्य से मिलता, आनुषंगिक रूप से मिलता।
याचना बिना ही यह सब मिलता, भक्त ही भगवान् भी बनता।। (7)

भक्त बिना जो भिखारी बनता, भिखारी को भीख ही मिलता।
भिक्षा से भगवान् न बनता, भिक्षा से राज्य न मिलता है।। (8)

याचना या प्रदर्शन मात्र से, जिन दर्शन नहीं निज दर्शन।
स्वात्म दर्शन हेतु 'कनक' प्रयास, अन्य लाभ में नहीं है आस।। (9)

# देव दर्शन से स्व-आत्म दर्शन

**-आचार्य कनकनन्दी**

**(चाल : तुम दिल की धड़कन.....)**

**जो जाणदि अरहंतं दव्वत्तगुणपत्तपज्जयत्तेहिं।**
**सो जाणदि अप्पाणं मोहो खलु जादि तस्सलयं।। (80)** (प्रवचन सार)

जो जानता है अरिहंत को, द्रव्य-गुण और पर्याय से।
वह जानता (है) स्व-आत्मा को, सम्यक्त्वी बनता मोह नाश से।। (1)

जो जानता है अरिहंत को, द्रव्य दृष्टि से जीव द्रव्य रूप।
तथाहि जानता स्वयं को, द्रव्य दृष्टि से शुद्ध जीव रूप।। (2)

अरिहंत में है अनंतज्ञान, दर्शन सुख वीर्यादि अनंत गुण।
तथाहि स्वयं में मानता है, निश्चयनय से अनंत गुणमय।। (3)

पर्याय दृष्टि से जानता है, अरिहंत होते हैं शुद्धोपयोगमय।
अतएव अनंत ज्ञान दर्शन सुख, वीर्यादि होते है प्रगटमय।। (4)

परन्तु पर्याय दृष्टि से स्वयं को, जानता है अशुभ व शुभमय।
अतएव अनंत ज्ञान दर्शन, सुख वीर्यादि नहीं होते प्रगट रूप।। (5)

ऐसा जब जानता/(मानता) है निकट भव्य, महान् विशुद्ध भाव से।
सम्यग्दृष्टि बनता है मिथ्यात्व, अनंतानुबंधी के नाश से।। (6)

चतुर्थ गुणस्थान में होता है अशुभ विशेष व शुभोपयोग किंचित्।
पंचम (श्रावक) व षष्टम (मुनि) गुणस्थान में, होता है शुभोपयोग अधिक।। (7)

ऐसी अवस्था में भी वह मानता है, हर जीव को सिद्ध समान।
''सव्वे सुद्धा हु सुद्धणया'' से मानता, है हर जीव को एक समान।। (8)

हर जीव में करे मैत्री भावना व, गुणी जीव में धरे प्रमोद भाव।
दुःखी जीव में धरे करुणा भाव, विपरीत में करे माध्यस्थ भाव।। (9)

संसार शरीर व भोग से, सत्ता सम्पत्ति व प्रसिद्धि से।
जन्म-मरण व जरा रोग (को) से, भिन्न माने स्व को कर्मों से।। (10)

अष्टअंगों को धरे भाव से, व अष्टमद न सेवे भाव से।
सप्तभय शून्य आत्मा से, अष्टगुण युक्त भाव से।। (11)

यह ही धर्म का मूल है, देव दर्शन पूजन का मूल्य है।
आत्म कल्याण का यह सूत्र है, मोक्ष प्राप्ति का महान् मंत्र है।। (12)

चक्रवर्तीत्व से भी महान् है, भौतिक संपत्ति से अनमोल है।
मोक्ष प्राप्ति हेतु यह मूल है, 'कनकनन्दी' ध्याये हर पल है।। (13)

# स्व-उपलब्धि की भावना

## (धन्य! मेरा तब भाव जगेगा)

**-आचार्य कनकनन्दी**

**(चाल : रात कली एक.....)**

धन्य ! मेरा तब भाव जगेगा, क्षायिक सुदृष्टि जब बनूँगा।
चल मल अवगाढ़ दोष हनूँगा, आत्मविश्वासी मैं दृढ़ बनूँगा।।

स्वयं में ही परमात्मा देखूँगा, उसी का ही मैं ध्यान करूँगा।
कषाय भावों को क्षीण करूँगा, क्रोध-मान-माया-लोभ हनूँगा।।

द्रव्य क्षेत्र काल परे रहूँगा, बाह्य से मैं अविचल रहूँगा।
मानव तिर्यंच देव-दानवों से, अप्रभावी हो मैं स्थिर रहूँगा।।

दैहिक मानसिक भौतिक पीड़ा को, आत्मशक्ति से नाश करूँगा।
अभ्युदय सुख स्वयं नशेगा, आत्मिक सुख उदित होगा।।

इन्द्रिय मनातीत ज्ञान पाऊँगा, अनन्त अविनाशी आत्मोत्थ होगा।।
अशरीरी मेरा स्वरूप होगा, अनन्त वीर्य(का) स्वामी बनूँगा।।

सच्चिदानन्दमय रूप बनेगा, सत्य शिव सुन्दरमय भी होगा।
'कनक' नहीं यह रूप रहेगा, चैतन्य चमत्कार स्वरूप होगा।।

# समता/(शान्ति) आती है धीरे-धीरे

**-आचार्य कनकनन्दी**

**(चाल : मोक्ष पद मिलता है धीरे-धीरे.....)**

समता आती है धीरे-धीरे।
स्वाध्याय करो ऽऽ मनन करो ऽऽ मौन को धारो,
धैर्य को धारो, संयम करो, समता आती...।।ध्रुव।।

क्षमा को धारो, निर्भय बनो,
सहज बनो, सरल बनो, स्थिरता/(समता) आती...।।1।।

राग को त्यागो, द्वेष को हनो,
संकल्प छोड़ो, विकल्प तोड़ो, शान्तता/(शान्ति) आती...।।2।।

तृष्णा को नाशो, ईर्ष्या विनाशो,
माया को हनो, कामना ध्वंशो, लीनता आती...।।3।।

आत्मा को मानो/(जानो), शुद्धात्मा सम,
विकार-विषय कर्मज मानो, वैराग्य बढ़ेगा...।।4।।

निस्पृह बनो, निर्द्वन्द्व बनो,
अचल बनो, गम्भीर बनो, अनुभव(के) रस को पीलो
/(आनन्द आयेगा धीरे-धीरे)...।।5।।

आनन्द पीलो, संक्लेश नाशो,
ज्ञानानन्द में नित्य निवास, यह ही निज ध्रुव निवास
/(कनक निज/(तेरा) सत्य सर्वस्व)...।।6।।

## 'साम्यावस्था प्राप्ति हेतु प्रार्थना-प्रयास'

**-आचार्य कनकनन्दी**

**(राग : तुम दिल की धड़कन....., सावन का महीना....., नरेन्द्र छन्द.....)**

गल जाये सब सुख-दुःख मेरे, जो पूर्व कर्म से प्राप्त हुए हैं।
आत्मिक सुख मैं अनुभव करूँ, जो साम्यमय आत्म रूप है।।ध्रु.।।

जन्म-मरण तथा बाल किशोर, यौवन-प्रौढ़ तथा ही वृद्ध।
लाभ-हानि व निन्दा प्रशंसा, नहीं है मेरी आत्मिक दशा।।

यह सब कर्म उदय के फल हैं, यह नहीं मेरा निज स्वरूप।
कर्मफल में आसक्त होने से, बंधन-बद्ध होते कर्म-जाल से।। (1)

जिससे आत्मिक विकास न होता, न मिलता है आत्मिक सुख।
भौतिकता में ही विकास चाहते, जो होता है जड़ स्वरूप।।

यथा ही तीर्थंकरों ने त्यागा, सांसारिक यह मोह ममत्व।
आत्म स्वरूप में स्थिर होकर, पाया यथा है निज स्वरूप।। (2)

यथा ही मेरी अवस्था चाहूँ, निर्विकल्प व शुद्ध स्वरूप।
आकर्षण-विकर्षण रहित होकर, साम्यभाव में करूँ निवास।।

यथा ही राम तथा भरत भी, दोनों अवस्था में रहे निस्पृह।
राज्य प्राप्ति व राज्य त्याग में, तथा मैं रहूँ हर स्थिति में।। (3)

मैं चाहूँ मेरी परमावस्था, तथा ही आत्मिक अनन्त ज्ञान।
इस जन्म में ही यथा योग्य मैं, प्राप्त करूँ हूँ परम स्थान।।

शरीर निमित्त आवश्यकता को, स्वीकार करूँ मैं हो अनासक्त।
परम लक्ष्य की प्राप्ति हेतु ही, ''कनक'' सतत करें/(करूँ) प्रयास।। (4)

# तीर्थंकरों से मुझे प्राप्त शिक्षाएँ

**-आचार्य कनकनन्दी**

**(चाल : ऐ मेरे दिल नादाँ....., तुम दिल की धड़कन.....)**

आत्मन् तुम शिक्षा लो...तीर्थंकर-सिद्धों से...
वे थे राजा-महाराजा-चक्री...तो भी राज-पाट छोड़े...

सत्ता संपत्ति प्रसिद्धि भोगों से...वे सर्वथा मोह छोड़े...
परिवार मित्र प्रजा से...वे सर्वथा राग छोड़े...आत्मन्...(ध्रुव)...

देवों की सेवा-सहायता...से कभी न आसक्त हुए...
अज्ञानी-मोही-दुष्ट-वैरी...से भी कभी न रूष्ट हुए...

चौसठ ऋद्धियों से सम्पन्न...हुए जब वे मुनि बने...
मनःपर्ययज्ञानी हुए...जब विरक्त साधु बने...आत्मन्...(1)

तो भी ऋद्धि व ज्ञान का...उन्होंने न प्रयोग किये...
ख्याति-प्रसिद्धि लाभ न चाहे...नहीं वे प्रवचन किये...

गृहस्थी के धन-जन-पद...का वे नहीं प्रयोग किये...
देवों के सहयोग को भी...न चाहे निस्पृह बने...आत्मन्...(2)

निस्पृह समता-ध्यान से...जब केवल ज्ञानी बने...
प्रभावित हुए तीन लोक...विश्व में प्रसिद्ध बने...

देवों द्वारा हुई रचना...समवसरण दिव्य सभा...
रत्न निर्मित समवसरण/(धर्मसभा)...में बनी बारह सभा...आत्मन्...(3)

गणधर ऋषि मुनि श्रावक...श्राविका इन्द्र चक्रवर्ती...
धर्मसभा में श्रोता बनकर...विराजे देव व पशु भी...

शत इन्द्र भी बने भक्त...विद्याधर व चक्रवर्ती...
तथापि वे रहे विरक्त...जिससे मिली उन्हें मुक्ति...आत्मन्...(4)

सिद्ध बनकर वे बने...अनंत गुणों के धनी...
आत्मा में ही लीन हो गये...ऐसे वे अनंत ज्ञानी...

तुम भी ये शिक्षा ले लो...तथा बनो लक्ष्यनिष्ठ...
निस्पृह निराडम्बर...समता-शांति में तिष्ठ...आत्मन्...(5)

मोही रागी कामी स्वार्थी...अज्ञानी सम न बनो...
ख्याति पूजा लाभ प्रसिद्धि...आदि को मल सम मानो...

तुम तो केवली सिद्ध हो...स्व-स्वभाव रूप से...
उसे ही प्राप्त करना है...'कनक' शुद्ध रूप से...आत्मन्...(6)

## आत्मिक-सुख-स्वरूप व सुख प्राप्ति के उपाय : धर्म

**-आचार्य कनकनन्दी**

**(चाल : आत्मशक्ति....., शत-शत वंदन....., सायोनारा.....)**

आत्मिक सुख की प्राप्ति हेतु, चक्री भी त्यागते राज-वैभव।

धर्म तो सुखमय सुख-उपाय, आत्मिक-सुख बिन न होता धर्म।।

अहिंसा-सत्य-अचौर्य ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह दान तप (व) त्याग।

क्षमा-मार्दव-आजर्व व, (शौच) संयम, सुख-प्राप्ति हेतु अतः ये धर्म।।

पूजा प्रार्थना व आराधना ध्यान, सुख-प्राप्ति हेतु होते ये धर्म।

यदि ये न होते सुख प्राप्ति हेतु, ये सब न होते कदापि धर्म।। (1)

नवकोटि से पालते हैं धर्म, मन-वचन-काय-कृत-कारित से।

अनुमत से व परस्पर गुणा से, आत्मविश्वास युक्त ज्ञान चारित्र से।।

सनम्र सत्यग्राही हो पवित्र भाव से, समता शांति सह धैर्य भाव से।

राग-द्वेष-मोह व ईर्ष्या-तृष्णा से, धर्म आराधना होती नवकोटि से।। (2)

विषय-वासना व द्वंद्व त्याग से, संकल्प-विकल्प संक्लेश त्याग से।

आरंभ-परिग्रह-आसक्ति त्याग से, निर्मल (व) निर्विकार होने से।।

आत्मध्यानरूपी आत्मलीनता से, द्रव्य-भाव-नोकर्म विनाश से।

सच्चिदानंदमय शुद्धात्मा प्राप्ति से, पूर्ण धर्म होता है मोक्ष प्राप्ति से।। (3)

मोक्ष प्राप्ति ही पूर्ण धर्म का फल, अनंत/(अक्षय)-आत्मिक-सुख-विमल।

यह ही जीव की सर्वोच्च-अवस्था-यह ही जीव की निज अवस्था।।

यह ही परम-धर्म व धर्म का फल, जीव का स्वरूप व स्व-अधिकार।

सर्वोदय यह ही पूर्ण विकास, 'कनकनंदी' चाहे आत्म-विकास।। (4)

### आराधना (पूजा-प्रार्थना-आरती)

# भक्ति से बनूँ भगवान्

### (भक्त एवं भगवान् का स्वरूप)

**-आचार्य कनकनन्दी**

**(तर्ज : हे राम-हे राम....., तू ही माता, तू ही पिता है.....)**

भगवान् तो सदा प्रसन्न हे ! बन्दे, तू भी प्रसन्न हुआ कर। रे मन...2, चेतन

भगवान तो सदा शान्त हे ! बन्दे, तू भी शान्त हुआ कर। रे मन...2, चेतन
भगवान् तो सदा सत्य हे ! बन्दे, तू भी सत्य को धार। रे मन...2, चेतन
भगवान् तो सदा कृपा के सागर, तू भी कृपा को धार। रे मन...2, चेतन
भगवान् तो सदा ज्ञान के सागर, तू भी ज्ञान को वर। रे मन...2, चेतन
भगवान् तो सदा क्षमा के सागर, तू भी क्षमा को धार। रे मन...2, चेतन
भगवान् तो सदा निर्भय हे ! भक्त, तू भी निर्भय हुआ कर। रे मन...2, चेतन
भगवान् तो सदा आदर्श हे ! भक्त, तू भी आदर्श हुआ कर। रे मन...2, चेतन
भगवान् तो सदा आत्मबल के धारी, तू भी आत्मबल धार। रे मन...2, चेतन
भगवान् तो सदा समता के धारी, तू भी समता को धार। रे मन...2, चेतन
भगवान् तो सदा अजातशत्रु, तू भी शत्रुता को त्याग। रे मन...2, चेतन
भगवान् तो सदा मोह के त्यागी, तू भी मोह को त्याग। रे मन...2, चेतन
भगवान् तो सदा उदारभावी, तू भी उदार बन। रे मन...2, चेतन
भगवान् तो सदा सुख के सागर, तू भी सुख को वर। रे मन...2, चेतन
भगवान् तो सदा स्वात्मावलंबी, तू भी स्वावलंबी बन। रे मन...2, चेतन
भगवान् तो सदा संतोषधारी, तू भी संतोष धार। रे मन...2, चेतन
भगवान् तो सदा दिव्य पवित्र, तू भी पवित्र बन। रे मन...2, चेतन
भगवान् तो सदा अमृत हे ! भव्य, तू भी अमृतपान कर। रे मन...2, चेतन

**दोहा छन्द**

भव्य भगवान् एक है, एक बीज एक वृक्ष।
एक भावी एक भूत है, पर्याय भेद प्रत्यक्ष।। प्रभुजी...

ईंधन अग्नि एक सम, अवस्था भेद विषम।
अप्रकट व्यक्त भेद है, भव्य और भगवान्।।

प्रगट हेतु है प्रार्थना, आराधना पूजा पाठ।

अन्यथा है आडम्बर, जैसे तोता के पाठ।।

भगवान् न दीन है, न ही दुर्बल विपन्न।
कृषि से कृषक होत है, स्वयं ही सम्पन्न।।

सूर्य की आरती विधि से, सूर्य न होता प्रकाश।
आरती से सदा भक्त ही, पाता है दिव्य प्रकाश।। प्रभुजी...

मोह तम संयुक्त जीव, जाने न सत्य प्रकाश।
देख न पाता उल्लू है, जैसे सूर्य प्रकाश।।

इसी हेतु भी होता है, धर्म में अधर्म काम।
अयोग्य सेवन से होता घी भी विष समान।।

वन्दे तद्गुण लब्धये, शिव भूत्वा शिव यजन् सन्देश।
भगवान् के गुण ग्रहण करो, पूजा का दिव्य सन्देश।।

## नरेन्द्र छन्द-पहली ढाल

हरिहर वीर बुद्ध या राम किसी भी नाम से करो प्रणाम।
शुद्धात्म भाव (देव) रहे प्रमाण, राग-द्वेष का फिर का क्या काम।।

राग-द्वेष मोह युक्त जो काम, वहाँ न होता है धर्म निदान।
पंथ या नाम भेद विभाव, नरकृत है नहीं भगवान्।।

## दोहा छन्द

'कनकनन्दी' का भाव यह, जीव बने जिनदेव।
मैं भी भक्तिभाव से, बनूँ निजातम देव।। प्रभुजी...

# पूजनीय-पूजा के प्रतीक एवं फल

## (मन्दिर-मूर्ति-पूजा का स्वरूप)

-आचार्य कनकनन्दी

(तर्ज : यमुना किनारे श्याम....., इक परदेशी मेरा.....)

समवसरण का प्रतीक होता है मंदिर,
केवल ईंट पत्थर का नहीं है मंदिर।।टेक/स्थायी।।

गर्भगृह होता गन्धकुटी का प्रतीक है,
वेदिका होती दिव्य सिंहासन का प्रतीक है।

प्रतिमा होती अरिहन्त देव के प्रतीक है,
पूजक होते हैं इन्द्रदेव के प्रतीक हैं।।...समवसरण...(1)

मानभंग प्रतीक में मानस्तम्भ विराजे,
जिनशासन देव रूपे यक्ष-यक्षी विराजे।

निःसहि निःसहि मिथ्या कषाय वर्जन,
त्रय/(तीन) परिक्रमा रूपे रत्नत्रय का अर्जन।।...समवसरण...(2)

दर्शन पाठ बोलना प्रभु दर्शन की आशा,
णमोकार मंत्र पञ्चगुरु में विश्वास।

नमोऽस्तु करना विनम्रता का प्रतीक,
अभिषेक करना पाप क्षालन/(पापनाशन)/पापा धोने का प्रतीक।।...समवसरण...(3)

गन्धोदक लेना प्रभु स्पर्शन प्रतीक,
आह्वानन करना है प्रभु सन्निकट प्रतीक।

जन्म जरा मृत्यु नाश के होता है उदक,
चन्दन होता भव ताप नाश के प्रतीक।।...समवसरण...(4)

अक्षत होता है अक्षय पद के प्रतीक,
पुष्प होता कामबाण नाश के प्रतीक।

नैवेद्य/(मिष्ठान्न) होता है क्षुधा नाश/(क्षय/शांति) के प्रतीक,
दीपक होता मोहतम नाश के प्रतीक।।...समवसरण...(5)

सुधूप होता अष्टकर्म नष्ट के प्रतीक,
सुफल होता मोक्षफल प्राप्ति के प्रतीक।

अनर्घ पद प्राप्ति के लिए सुअर्घ अर्पण,
स्व-पर-विश्व-शांति हेतु शांतिधारा अर्पण।।...समवसरण...(6)

सुमनस विस्तार हेतु पुष्पाञ्जली समर्पण,
जयमाला में है प्रभु गुण गण कीर्तन।

आगन्तुक देवों के विदाई विसर्जन,
आसिका ग्रहण आत्मिक गुण ग्रहण।।...समवसरण...(7)

स्वाध्याय वस्तु स्वरूप परिज्ञान निमित्ते,
जप करना प्रभु गुण स्मरण निमित्ते।

ध्यान करना आत्म रमण के निमित्ते,
वन्दना है प्रभु गुण प्राप्ति निमित्ते।।...समवसरण...(8)

सम्पूर्ण क्रियाएँ स्वात्म कल्याण के लिए,
निमित्त द्वारा उपादान जागृति के लिए।

इसके अतिरिक्त अन्य कार्य जो होते हैं,
पंथ-मत के लिए जो राग-द्वेषकारी है।।...समवसरण...(9)

सत्ता संपत्ति के लिए जो संघर्ष होते हैं,
अधोपतन के लिए कार्य सो होते हैं।

'कनकनन्दी' ने आगम अनुभव से लिखा है,
सुदृष्टि जनहितार्थे यह सब लिखा है।।...समवसरण...(10)

## मंगल पाठ

**मंगल मूर्ति परमपद, पञ्च धरो नित ध्यान।**
**हरो अमंगल विश्व का, मंगलमय भगवान्।। (1)**

**मंगल जिनवर पद नमो, मंगल अर्हंतदेव।**
**मंगलकारी सिद्धपद, सो वंदों स्वयंमेव।। (2)**

**मंगल आचारज मुनि, मंगल गुरु उवझाय।**
**सर्व साधु मंगल करो, वंदों मन वच काय।। (3)**

**मंगल सरस्वती मातका, मंगल जिनवर धर्म।**
**मंगलमय मंगल करो, हरो असाता कर्म।। (4)**

**या विधि मंगल करन से, जग में मंगल होत।**
**मंगल 'नाथूराम' यह, भव सागर दृढ़ पोत।। (5)**

**पठन करूँ श्री आदि का अंत नाम महावीर।**
**तीर्थंकर चौबीस जिन तिन्हें नवाऊँ शीश।। (6)**

।।पुष्पांजलिं क्षिपामि।। (कायोत्सर्गं करोम्यह्म)

(यहाँ पर नौ बार णमोकार मंत्र जपना एवं पूजन की प्रतिज्ञा करनी चाहिए।)

(जो शरीर पर वस्त्र एवं आभूषण हैं या जो भी परिग्रह है, इसके अलावा परिग्रह का त्याग एवं मंदिर से बाहर जाने का त्याग जब तक पूजन करेंगे तब तक के लिए करें।)

## पूजा प्रारंभ

**ॐ जय जय जय, नमोऽस्तु-नमोऽस्तु-नमोऽस्तु।**
**णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं,**
**णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्व साहूणं।।1।।**

ॐ ह्रीं अनादि मूल मंत्रेभ्यो नमः (पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

**चत्तारि मंगलं-अरिहन्त मंगलं, सिद्ध मंगलं,**
**साहू मंगलं, केवलि पण्णत्तो धम्मो मंगलं।**

**चत्तारि लोगुत्तमा-अरिहंत लोगुत्तमा, सिद्ध लोगुत्तमा,**
**साहू लोगुत्तमा, केवलि पण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमा।**

**चत्तारि सरणं पव्वज्जामि, अरिहंते सरणं पव्वज्जामि,**
**सिद्धे सरणं पव्वज्जामि, साहू सरणं पव्वज्जामि,**
**केवली पण्णत्तं धम्मं सरणं पव्वज्जामि।**

ॐ नमोऽर्हते स्वाहा। (पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

## मंगल विधान

**अपवित्रः पवित्रो वा, सुस्थितो दुःस्थितोऽपि वा।**
**ध्यायेत्पंच-नमस्कारं, सर्वपापैः प्रमुच्यते।।1।।**

**अपवित्रः पवित्रो वा, सर्वावस्थां गतोऽपि वा।**
**यः स्मरेत्परमात्मानं, स बाह्याभ्यंतरे शुचिः।।2।।**

**अपराजित मंत्रोऽयं, सर्वविघ्न विनाशनः।**
**मंगलेषु च सर्वेषु, प्रथम मंगलं मतः।।3।।**

**एसो पंच णमोयारो, सव्व पावप्पणासणो।**
**मंगलाणं च सव्वेसिं, पढ़मं हवई मंगलम्।।4।।**

**अर्हमित्यक्षरं ब्रह्मवाचकं परमेष्ठिनः।**
**सिद्धचक्रस्य सद्बीजं, सर्वतः प्रणमाम्यहम्।।5।।**

**कर्माष्टक विनिर्मुक्तं, मोक्ष लक्ष्मी निकेतनं।**
**सम्यक्त्वादि गुणोपेतं सिद्धचक्रं नमाम्यहम्।।6।।**

**विघ्नौघाः प्रलयं यान्ति, शाकिनी-भूत-पन्नगाः।**
**विषं निर्विषतां याति, स्तूयमाने जिनेश्वरे।।7।।**

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

## पंचकल्याणक का अर्घ्य

**उदक-चंदन-तंदुल-पुष्पकैश्चरु-सुदीप-सुधूप-फलार्घकैः।**
**धवल-मंगल-गान-रवाकुले, जिनगृहे कल्याण-महं यजे।।**

ॐ ह्रीं श्री भगवतो गर्भजन्मतपज्ञान-निर्वाण पंचकल्याणकेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

## पंच परमेष्ठी का अर्घ्य

**उदक-चंदन-तंदुल-पुष्पकैश्चरु-सुदीप-सुधूप-फलार्घकैः।**
**धवल-मंगल-गान-रवाकुले, जिनगृहे जिननाथमहं यजे।।**

ॐ ह्रीं श्री अर्हंत् सिद्धाचार्योपाध्याय-सर्वसाधुभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

## सहस्त्रनाम का अर्घ्य

**उदक-चंदन-तंदुल-पुष्पकैश्चरु-सुदीप-सुधूप-फलार्घकैः।**
**धवल-मंगल-गान-रवाकुले, जिनगृहे जिननाममहं यजे।।**

ॐ ह्रीं श्री भगवज्जिन अष्टाधिक सहस्त्रनामेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

## जिनसूत्र का अर्घ्य

**उदक-चंदन-तंदुल-पुष्पकैश्चरु-सुदीप-सुधूप-फलार्घकैः।**
**धवल-मंगल-गान-रवाकुले, जिनगृहे जिनसूत्रमहं यजे।।**

ॐ ह्रीं श्री जिनसूत्रेभ्यो अनर्घ पद प्राप्तये निर्वपामीति स्वाहा।

# स्वस्ति मंगल

श्रीमज्जिनेंद्र-मभिवंद्य जगत्त्रयेशं,
स्याद्वाद-नायक-मनंत-चतुष्टयार्हम्।
श्री मूलसंघ-सुदृशां सुकृतैक हेतुः
जैनेन्द्र-यज्ञ-विधिरेष मयाभ्यधायि।।1।।

स्वस्ति त्रिलोक-गुरुवे जिन-पुंगवाय,
स्वस्ति स्वभाव-महिमोदय-सुस्थिताय।
स्वस्ति प्रकाश-सहजोर्ज्जित-दृङ्मयाय,
स्वस्ति प्रसन्न-ललिताद्भुत-वैभवाय।।2।।

स्वस्त्युच्छलद् विमल-बोध-सुधा-प्लवाय,
स्वस्ति स्वभाव-परभाव-विभासकाय।
स्वस्ति त्रिलोक-विततैक-चिदुद्गमाय,
स्वस्ति-त्रिकाल-सकलायत-विस्तृताय।।3।।

द्रव्यस्य शुद्धि-मधिगम्य यथानुरूपं,
भावस्य शुद्धि-मधिकामधि-गंतुकामः।
आलंबनानि विविधान्यवलंम्ब्य वल्गन्,
भूतार्थ-यज्ञ-पुरुषस्य करोमि यज्ञं।।4।।

अर्हत्पुराण-पुरुषोत्तम-पावनानि,
वस्तून्यनून-मखिलान्ययमेक एव।
अस्मिन् ज्वलद्विमल-केवल-बोधवह्नौ,
पुण्यं समग्र-महमेकमना जुहोमि।।5।।

ॐ ह्रीं विधियज्ञ प्रतिज्ञानाय जिनप्रतिमाग्रे पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि।

(यहाँ स्वस्ति कहते समय पुष्प क्षेपण करें।)

श्री वृषभो नः स्वस्ति, स्वस्ति श्री अजितः।
श्री संभवः स्वस्ति, स्वस्ति श्री अभिनन्दनः।
श्री सुमतिः स्वस्ति, स्वस्ति श्री पद्मप्रभः।
श्री सुपार्श्वः स्वस्ति, स्वस्ति श्री चंदप्रभः।
श्री पुष्पदंतः स्वस्ति, स्वस्ति श्री शीतलः।
श्री श्रेयांसः स्वस्ति, स्वस्ति श्री वासुपूज्यः।
श्री विमलः स्वस्ति, स्वस्ति श्री अनंतः।
श्री धर्मः स्वस्ति, स्वस्ति श्री शांतिः।
श्री कुंथुः स्वस्ति, स्वस्ति श्री अरनाथः।
श्री मल्लिः स्वस्ति, स्वस्ति श्री मुनिसुव्रतः।
श्री नमिः स्वस्ति, स्वस्ति श्री नेमिनाथः।
श्री पार्श्वः स्वस्ति, स्वस्ति श्री वर्द्धमानः।

इति जिनेन्द्र स्वस्तिमङ्गलविधानम्। (पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

## परमर्षि उपासना

नित्याप्रकम्पाद्भुत-केवलौघाः स्फुरन्मनः पर्यय-शुद्धबोधाः।
दिव्यावधिज्ञान-बल प्रबोधाः स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः।।1।।

कोष्ठस्थ-धान्योपममेकबीजं संभिन्नसंश्रोतृ-पदानुसारि।
चतुर्विधं बुद्धिबलं दधानाः स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः।।2।।

संस्पर्शनं संश्रवणं च दूरादास्वादन-घ्राण-विलोकनानि।
दिव्यान् मतिज्ञानबलाद्वहंतः स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः।।3।।

प्रज्ञाप्रधानाः श्रमणाः समृद्धाः प्रत्येकबुद्धाः दशसर्वपूर्वैः।
प्रवादिनोऽष्टांगनिमित्तविज्ञाः स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो।।4।।

जंघानल-श्रेणि-फलांबु तंतु प्रसून-बीजांकुर चारणाह्वाः।

नभोऽङ्गण-स्वैर-विहारिणश्च, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः।।5।।

अणिम्नि दक्षा कुशला महिम्नि, लघिम्नि शक्ताः कृतिनो गरिम्णि।
मनो-वपुर्वाग्बलिनश्च नित्यं, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः।।6।।

सकाम-रूपित्व-वशित्वमैश्यं, प्राकाम्य-मन्तर्द्धि-मथाप्ति-माप्ताः।
तथाप्रतिघात गुण प्रधानाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः।।7।।

दीप्तं च तप्तं च तथा महोग्रं घोरं तपो घोर पराक्रमस्थाः।
ब्रह्मापरं घोर गुणाश्चरंतः स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः।।8।।

आमर्ष-सर्वौषधयस्तथाशी-र्विषाविषा-दृष्टि विषाविषाश्च।
साखेल्ल-विड्जल्ल-मलौषधीशाः स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः।।9।।

क्षीरं स्त्रवंतोऽत्र घृतं स्त्रवंतो मधुस्त्रवंतोऽप्यमृतं स्त्रवंतः।
अक्षीणसंवास-महानसाश्च स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः।।10।।

(इति पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

## कायोत्सर्ग करोम्यहम्

सम्यग्दर्शन पाऊँ, प्रभु जी तेरी पूजा में।
तेरे गुण को गाऊँ, प्रभु जी तेरी पूजा में।
तेरा ध्यान लगाऊँ, प्रभु जी तेरी पूजा में।
अष्ट दरब को लाऊँ, प्रभु जी तेरी पूजा में।
रत्नत्रय को भाऊँ, प्रभु जी तेरी पूजा में।
तुमसे मिलने आऊँ, प्रभु जी तेरी पूजा में।
निज में निज को पाऊँ, प्रभु जी तेरी पूजा में।
आठों कर्म नशाऊँ, प्रभु जी तेरी पूजा में।
गुल सा खिलने आऊँ, प्रभु जी तेरी पूजा में।
तुम सा रूप बनाऊँ, प्रभु जी तेरी पूजा में।

# देव-शास्त्र गुरु धर्म की पूजा

## (पूजा के आध्यात्मिक वैज्ञानिक सकारण)

-आचार्य कनकनन्दी

(तर्ज-दोहा : ....)

**आह्वान-** **(भावनात्मक रूप से पूज्यों का सान्निध्य प्राप्त करना)**

देव शास्त्र गुरु नमन करूँ, नमन रत्नत्रय धर्म...
निश्चय-व्यवहार पूजहूँ, पाने आत्मिक शर्म...प्रभुजी...

व्यवहार से मैं पूजक हूँ, पूजन से बनूँ (मैं) पूज्य...
भाव रूप निश्चय पूजन, द्रव्य है व्यवहारमय...प्रभुजी...

**मंत्र-** ॐ ह्रीं देव शास्त्र गुरु रत्नत्रयमय धर्मेभ्यो नमः
अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।

ॐ ह्रीं देव शास्त्र गुरु रत्नत्रयमय धर्मेभ्यो नमः
अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं देव शास्त्र गुरु रत्नत्रयमय धर्मेभ्योः नमः
अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम्।

(चाल : शत-शत वन्दन...)

**1. उदक-** **(आत्मिक विशुद्धि व जन्मजरा मृत्यु विनाश के प्रतीक)**

जल से न आत्मा शुद्ध होता (है), न जन्म जरा मृत्यु नशते हैं।
जल तो प्रतीक मात्र होता (है), शुद्धिकरण व ताप नाशन के।

उदक चढ़ा के मैं भावना भाऊँ, मैं आत्माविशुद्धि करता रहूँ।
कषाय जनित ताप मैं नाशूँ, जन्म जरा मृत्यु विनाश करूँ।

**ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरु रत्नत्रयमय धर्मेभ्यो नमः आत्म/(भाव) विशुद्धि करणाय जन्म-जरा-मृत्यु-विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।**

**2. चन्दन-** **(संक्लेश ताप विनाश व भाव आह्लाद के प्रतीक)**

भौतिक चन्दन प्रतीक मात्र जो, शीतलता (प्र) दान करता है।
सुगन्धी से पवन सुवासित होता, तनाव दूर होता है।

तथाहि आत्मा (को) शीतल करूँ, संक्लेश ताप के विनाश से।
आत्मिक गुणों की सुगन्धी द्वारा, आह्लादित रहूँ भाव से।

**ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरु रत्नत्रयमय धर्मेभ्यो नमः संक्लेश ताप विनाशनाय, भाव आह्लादित करणाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।**

**3. अक्षत-** **(संसार उत्पादक कर्मनाश व अक्षयपद के प्रतीक)**

अक्षत से न अक्षय पद मिले, यह तो प्रतीक मात्र है।
मोक्षपद न कभी क्षत होता, न ही संसार उत्पादक है।।

भूसा सम कर्म नाश करके, पाऊँ अक्षयपद निज के।
इसी भाव से अक्षत चढ़ाऊँ मैं, अक्षय ज्ञानानन्द बनूँ मैं।।

**ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरु रत्नत्रयमय धर्मेभ्यो नमः संसार उत्पादक कर्म विनाशनाय एवं अक्षय ज्ञानानन्द पद प्राप्ताय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।**

**4. सुमन-** **(ब्रह्मभाव विकास व ज्ञानानन्द रस के प्रतीक)**

सुमन तो वनस्पतिकायिक है, विकसित व मकरन्द युक्त है।
पुष्प से कामभाव न नाश होता, जो मन्मथमय भाव है।।

ब्रह्मभाव के विकास द्वारा, अब्रह्मभाव विनाश होता।
आत्मिक मकरन्द पान से, सांसारिक सुख नहीं भाता।।

**ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरु रत्नत्रयमय धर्मेभ्यो नमः ब्रह्मभाव विकासनाय ज्ञानानन्दरस प्राप्ताय सुमन/(पुष्प) निर्वपामीति स्वाहा।**

**5. नैवेद्य-** **(क्षुधा रोग विनाश के प्रतीक)**

नैवेद्य अर्पण माध्यम से, क्षुधारोग नाश भाव करूँ।
मोह वेदनीय विघ्ननाश से, क्षुधा रोग को क्षय करूँ।।

भोग-उपभोग सेवन से, शांत न होती तृष्णा क्षुधा।
ज्ञान-वैराग्य-त्याग द्वारा, शांत करूँ मैं तृष्णा क्षुधा।।

**ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरु रत्नत्रयमय धर्मेभ्यो नमः मोह-वेदनीय-अन्तराय नाश सहित तृष्णा-क्षुधा विनाशनाय नैवेद्य निर्वपामीति स्वाहा।**

**6. दीपक- (अज्ञान मोहान्धकार विनाश के प्रतीक)**

भौतिक दीपक प्रकाश से, अज्ञानतम न नाश होता।
दीपक तो प्रतीक मात्र है, भौतिक अन्धकार नाशन के।।

आध्यात्मिक ज्योति द्वारा, अज्ञानमोह मैं नाश करूँ।
ध्यान-अध्ययन-ज्ञान द्वारा, ऐसी प्रवृत्ति मैं सतत करूँ।।

**ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरु रत्नत्रयमय धर्मेभ्यो नमः ध्यान-अध्ययन-ज्ञानेन अज्ञान मोहान्धकार विनाशनाय दीपकं निर्वपामीति स्वाहा।**

**7. धूप- (अष्टकर्म नाश व अष्टगुण प्राप्ति के प्रतीक)**

अग्नि में धूप यथा खेने से, धूप जले सुवास फैले।
ध्यानाग्नि से कर्म जले, आध्यात्मिक गुण विस्तारे।।

धूप से वायुमण्डल शुद्ध, आत्मिक गुण से आत्मा है।
इसलिए पूजहूँ धूप खेकर, प्रत्यक्ष हेतु प्रतीक से।।

**ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरु रत्नत्रयमय धर्मेभ्यो नमः अष्ट कर्म विनाशनाय आध्यात्मिक गुण प्राप्ताय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।**

**8. फल- (मोक्षफल प्राप्ति के प्रतीक)**

अन्तिम परिणति वृक्ष के फल, तथाहि धर्म के मोक्ष है।
प्रत्यक्ष मोक्ष के प्रतीक स्वरूप, सुफल अर्पण ध्येय है।।

मोक्ष बिना अन्य भौतिक फल/(सुख), धर्म का नहीं सुफल है।

ज्ञानानन्द रस भरित मोक्ष, पूजन का मम लक्ष्य है।।

**ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरु रत्नत्रयमय धर्मेभ्यो नमः ज्ञानानन्द रस भरित मोक्ष फल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।**

**9. अर्घ्य- (अनर्घ्य गुण समूह प्राप्ति के प्रतीक)**

अष्ट कर्म नाश हेतु ये अष्टक, अष्ट मूलगुण प्राप्ति हेतु है।
अनन्त ज्ञान दर्श सुख वीर्य, अव्याबाध सूक्ष्मत्व अवगाहन है।।
अगुरुलघु सम्यक्त्व अस्तित्व, वस्तुत्व प्रमेयत्व अनन्त गुण है।
यह ही मेरे अनर्घ्यगुण, जिस हेतु है अर्घ्य अर्पण।।

**ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरु रत्नत्रयमय धर्मेभ्यो नमः अनन्त अनर्घ्य गुण प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।**

## जयमाला

**(आध्यात्मिक विजय के लिए पूज्यों के गुणानुस्मरण-गुणानुवाद-गुणानुकरण)**

**दोहा- देवशास्त्रगुरु अवलम्बन है, रत्नत्रय प्राप्ति हेतु में।**
**निश्चय व्यवहार रत्नत्रय ही, धर्म मोक्षमार्ग मोक्ष भी।।**

**(चाल-चौपाई : जय हनुमान ज्ञान...)**

सर्वज्ञ देव हे ! आपने कहा, जिनवाणी में भी वर्णन हुआ।
गुरुदेव ने मुझे बताया, रत्नत्रयमय धर्म जताया।।

देवशास्त्र गुरु अतः पूजनीय, रत्नत्रय से मिलता मोक्ष।
निश्चय व्यवहार दोनों सहित, धर्म आराधना मोक्ष निमित्त।।

देव मेरा हे ! अन्तिम लक्ष्य, शास्त्र मेरा है पथ-प्रदर्शक।
प्रायोगिक रूप गुरु प्रत्यक्ष, तीनों मेरे रत्नत्रय रूप।।

आपसे जाना मैं मेरा रूप, चिदानन्दमय मेरा स्वरूप।

सत्यशिव सुन्दर चैतन्य रूप, अव्यय अविनाशी परमात्म रूप।।

अनादि कर्म बन्ध के कारण, विभावमय हुआ परिणमन।
स्वभाव मेरा विभाव हुआ, जिससे अनन्त दुःख को पाया।।

अभी आपके सहयोग से, स्वभाव रूप बनूँ स्वयं मैं।
राग-द्वेषादि वैभाविक भाव, त्याग से पुनः पाऊँ स्वभाव।।

ख्याति पूजा लाभ कुछ नहीं चाहूँ, धन-जन-मान कभी न चाहूँ।
पुण्य से अभ्युदय नहीं चाहूँ, भोग-उपभोग सत्ता न चाहूँ।।

यह सब तो वैभाविक भाव, इसी से संसार होता उद्भव।
अनन्त बार इसे ही किया, परिवर्तन पंच भ्रमण किया।।

शत्रु-मित्र में रखूँ समभाव, सत्य समतामय करूँ स्वभाव।
सरल-सहज व पावन बनूँ, ईर्ष्या-घृणा-तृष्णा-मोह त्यागूँ।।

ध्यान-अध्ययन व आत्म चिन्तन से, ज्ञान-वैराग्य निस्पृह भाव से।
द्रव्य-भाव-नोकर्म को नाशूँ, सत्य शिव सुन्दरमय प्रकाशूँ।।

**दोहा- व्यवहार निश्चय भक्ति सहित, करूँ तव गुण पूजन।**
**पूजक से पूज्य मैं बनूँ, इसी हेतु (कनक करे) तुम्हें नमन।।**

**ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरु रत्नत्रयमय धर्मेभ्यो नमः आध्यात्मिक विजय हेतु जयमाला पूर्ण अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।**

# तत्त्वार्थसूत्र (मोक्षशास्त्र) की पूजा

## (पूजा के आध्यात्मिक वैज्ञानिक सकारण)

**-आचार्य कनकनन्दी**

**(लय : जय हनुमान....., तुम दिल की....., सायानोरा......)**

**आह्वान-(भावनात्मक रूप से पूज्यों का सान्निध्य प्राप्त करना)**

दश-अध्यायमय तत्त्वार्थसूत्र, सूरी उमास्वामी रचित ग्रंथ।

मोक्षमार्ग प्रकाशक ग्रंथ, आत्मा को परमात्मा बनाने के सूत्र।।

द्रव्य-तत्त्व-पदार्थ सहित, अनेकान्त-स्याद्वाद सहित।

हम पूजते हैं भाव सहित, मोक्ष प्राप्ति की भावना युक्त।।

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव द्वादशांग सारभूत श्री तत्त्वार्थसूत्र !

अत्र अवतर-अवतर संवोषट् आह्वाननं ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ

ठः ठः स्थापनं ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

**(चाल : शत-शत वंदन.....)**

**1. जल (उदक)-(आत्मिक विशुद्धि व जन्म-जरा-मृत्यु विनाश के प्रतीक)**

जन्म-जरा-मृत्यु नाशन हेतु, जल चढ़ाते हम तृप्ति हेतु।

प्रासुक सुगन्धित जल (के) द्वारा, तत्त्वार्थसूत्र पूजे मोक्ष हेतु।।

**ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थसूत्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वापामीति स्वाहा।**

**2. चन्दन-(संक्लेश ताप विनाश व भाव आह्लाद के प्रतीक)**

संसार ताप विनाशन हेतु, चन्दन अर्चन शान्ति के हेतु।

मलयागिरि चन्दन घिस लाये, तत्त्वार्थसूत्र पूजे आनन्द हेतु।।

**ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थसूत्राय भवतापविनाशनाय चन्दनं...**

**3. अक्षत-(संसार उत्पादक कर्मनाश व अक्षय पद के प्रतीक)**

अक्षत सुवासित धवल मनोहर अक्षय पद प्राप्ति हेतु पूजे ग्रंथवर।

सांसारिक सुख (तो) क्षणिक पापकर अक्षय पद तो अनन्त सुखकर।।

**ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थसूत्राय अक्षयपदप्राप्ताय अक्षतान्...**

**4. पुष्प (सुमन)-(ब्रह्मभाव विकास व ज्ञानानंद रस के प्रतीक)**

कमल गुलाब पारिजात मनोहर, विकसित सुवासित मृदु पुष्पवर।

मोक्षशास्त्र पूजे हम मदनहर, दश अध्याय ग्रंथित ग्रंथवर।।

**ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थसूत्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं...**

**5. नैवेद्य-(क्षुधा रोग विनाश के प्रतीक)**

मधुर मनोहर नैवेद्य लेकर, तत्त्वार्थसूत्र पूजे क्षुधा रोगहर।
असाता व घाती से उपजे क्षुधा, इनके नाश हेतु नैवेद्य से पूजा।।

**ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थसूत्राय क्षुधारोगनिवारणाय नैवेद्यं...**

**6. दीपक-(अज्ञान मोहन्धकार विनाश के प्रतीक)**

अज्ञान तमहर ज्ञान ज्योति हेतु, दीपक से पूजे मोह नाश हेतु।
तत्त्वार्थसूत्र को पूजे हम सब, सुज्ञान प्राप्त हो हमको शीघ्र।।

**ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थसूत्राय मोहन्धकारविनाशनाय दीपं...**

**7. धूप-(अष्टकर्म नाश व अष्टगुण प्राप्ति के प्रतीक)**

अष्टकर्म के नाशन हेतु, धूप खेते हैं मोक्ष के हेतु।
मोक्षशास्त्र पूजते इसके हेतु, सच्चिदानंद बनने हेतु।।

**ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थसूत्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं...**

**8. फल-(मोक्षफल प्राप्ति के प्रतीक)**

सुरस सुपक्व फल चढ़ाकर, पूजते हम तत्त्वार्थसूत्रवर।
मोक्ष प्राप्ति ही हमारा लक्ष्य, भेदाभेद रत्नत्रय से प्राप्त।।

**ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थसूत्राय महामोक्षफलप्राप्ताय फलं...**

**9. अर्घ्य-(अनर्घ्य गुण समूह प्राप्ति के प्रतीक)**

अष्टद्रव्यमय अर्घ्य चढ़ाकर, अनर्घ्य पद हेतु पूजे ग्रंथवर।
ग्रंथ अध्ययन-मनन-आचरण से मोक्ष गमन करते भाव से।।

**ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थसूत्राय अनर्घ्यपदप्राप्ताय अर्घ्यं...**

## जयमाला

**(लय : पंचमेरू पूजा जयमाला....., प्रथम सुदर्शन मेरू विराजै.....)**

मोक्षमार्ग प्रतिपादक ग्रंथ, उमास्वामी द्वारा रचित सूत्र।
दश अध्याय में ग्रंथित सूत्र, सुदर्शन-ज्ञान-चारित्र युक्त।।
जीव पुद्गल व धर्म-अधर्म, आकाश-काल सह छहों द्रव्य।
जीव-अजीव आस्रव-बंध, संवर-निर्जरा-मोक्ष तत्त्व।।
पुण्य-पाप सह नव पदार्थ, इनका श्रद्धान सम्यग्दर्शन।
षट्द्रव्यमय लोक बताया, केवल आकाश अलोक कहा।।
लोकालोक को शाश्वत कहा, उत्पाद-व्यय-ध्रौव बताया।
तत्त्वार्थ श्रद्धान ही सम्यग्दर्शन, निश्चय से स्वशुद्धात्मा श्रद्धान।।
सम्यग्दर्शनपूर्वक होता सुज्ञान, दोनों सहित सम्यक् आचरण।
सम्यक् चारित्र के दो भेद, श्रावक (चारित्र) व मुनि चारित्र।।
पंचाणुव्रतादि युक्त श्रावक, प्रथम प्रतिमा से लेकर क्षुल्लक।
महाव्रतधारी होते श्रमण, आत्मविशुद्धि हेतु करते श्रम।।
ध्यान-अध्ययन-समता युक्त, कर्मनाश हेतु सदा प्रयत्न।
घाती नाश कर बने अरिहंत, अष्टकर्म नाश से बनते सिद्ध।।
अष्ट मूलगुण से होते संयुक्त, अनंतानंत गुणों से मण्डित।
भव्य जीव ही बनते सिद्ध, सिद्धप्रभु (भगवान्) ही सच्चिदानंद।
दशों अध्याय में यह वर्णित, 'कनकनन्दी' द्वारा आराध्य ग्रंथ।।
ॐ ह्रीं तत्त्वार्थसूत्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**दोहा– भावना भक्ति से ग्रंथ का करता जो स्वाध्याय।**
**एक उपवास का फल पावे परंपरा से मोक्ष।।**

इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जली क्षिपेत्

ग.पु.कॉ., सागवाड़ा, दिनांक 02.06.2016, रात्रि 12.38

# श्री चारित्र शुद्धि व्रत समुच्चय पूजन

## (1234 व्रत पूजन)

-आचार्य कनकनन्दी

(लय : तुम दिल की....., आत्मशक्ति....., सुनिये जिन अर्ज.....)

**आह्वान-(भावनात्मक रूप से पूज्यों का सान्निध्य प्राप्त करना)**

चारित्र मोक्ष का प्रधान कारण सम्यग्दर्शन ज्ञान से सम्पन्न।
शैलेश अवस्था में चारित्रपूर्ण जिससे होता साक्षात् निर्वाण।
निर्वाण पद हेतु पूजूँ चारित्रपूर्ण बारह सौ चौतीस व्रत पूजन।।
ॐ ह्रीं अष्टादशदोषरहित षट्चत्वारिंशद्गुण सहित अर्हत् परमेष्ठिन्।
अत्र-अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं/अत्र तिष्ठः तिष्ठः
ठः ठः स्थापनम्/अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

### अष्टक

**1. जल-(आत्मिक विशुद्धि व जन्मजरामृत्यु विनाश के प्रतीक)**

प्रासुक सुगन्धित जल भर लाऊँ प्रभु चरण में भाव से चढ़ाऊँ।
बारह सौ चौतीस प्रोषध उपकारी पूजूँ जिनपद भवदुःख हारी।।

**मंत्र- ॐ ह्रीं अष्टादशदोषरहिताय षट्चत्वारिंषद्गुणसहिताय बारह सौ चौतीस शुद्ध चारित्र व्रतमंडिताय अर्हत् परमेष्ठिने जलं निर्वपामीति स्वाहा।**

**2. चन्दन-(संक्लेश ताप विनाश व भाव आह्लाद के प्रतीक)**

मलयागिरि शीतल चन्दन लाऊँ प्रभु चरणे भाव से चढ़ाऊँ।
बारह सौ चौतीस प्रोषध उपकारी पूजूँ जिनपद भवदुःखहारी।।

**मंत्र- ॐ ह्रीं अष्टादशदोषरहिताय षट्चत्वारिंषद्गुणसहिताय बारह सौ चौतीस शुद्ध चारित्र व्रतमंडिताय अर्हत् परमेष्ठिने भवतापनिवारणाय चंदनं....।**

**3. अक्षत-(संसार उत्पादक कर्मनाश व अक्षयपद के प्रतीक)**

धवल अक्षत तंदुल मैं लाऊँ प्रभु समक्ष भाव से चढ़ाऊँ।
बारह सौ चौतीस प्रोषध उपकारी पूजूँ जिनपद भवदुःखहारी।।

**मंत्र- ॐ ह्रीं अष्टादशदोषरहिताय षट्चत्वारिंषद्गुणसहिताय बारह सौ चौतीस शुद्ध चारित्र व्रतमंडिताय अर्हत् परमेष्ठिने अक्षयपदप्राप्ताय अक्षतं...।**

**4. पुष्प-(ब्रह्मभाव विकास व ज्ञानानन्द रस के प्रतीक)**

कमल गुलाब जुही मैं लाऊँ प्रभु चरण में भाव से चढ़ाऊँ।
बारह सौ चौतीस प्रोषध उपकारी पूजूँ जिनपद भवदुःखहारी।।

**मंत्र- ॐ ह्रीं अष्टादशदोषरहिताय षट्चत्वारिंषद्गुणसहिताय बारह सौ चौतीस शुद्ध चारित्र व्रतमंडिताय अर्हत् परमेष्ठिने कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं...।**

**5. नैवेद्य-(क्षुधा रोग विनाश के प्रतीक)**

लड्डू पेड़ा जलेबी मैं लाऊँ प्रभु समक्ष भक्ति से चढ़ाऊँ।
बारह सौ चौतीस प्रोषध उपकारी पूजूँ जिनपद भवदुःखहारी।।

**मंत्र- ॐ ह्रीं अष्टादशदोषरहिताय षट्चत्वारिंषद्गुणसहिताय बारह सौ चौतीस शुद्ध चारित्र व्रतमंडिताय अर्हत् परमेष्ठिने क्षुधारोगनिवारणाय नैवेद्यं...।**

**6. दीपक-(अज्ञान मोहन्धकार विनाश के प्रतीक)**

गो-घृत (का) दीपक मैं जलाऊँ प्रभु समक्ष भक्ति से चढ़ाऊँ।
बारह सौ चौतीस प्रोषध उपकारी पूजूँ जिनपद भवदुःखहारी।।

**मंत्र- ॐ ह्रीं अष्टादशदोषरहिताय षट्चत्वारिंषद्गुणसहिताय बारह सौ चौतीस शुद्ध चारित्र व्रतमंडिताय अर्हत् परमेष्ठिने मोहन्धकारविनाशनाय दीपं...।**

**7. धूप-(अष्टकर्म नाश व अष्टगुण प्राप्ति के प्रतीक)**

सुगन्धित धूप भक्ति से लाऊँ प्रभु समक्ष भाव से चढ़ाऊँ।
बारह सौ चौतीस प्रोषध उपकारी पूजूँ जिनपद भवदुःखहारी।।

**मंत्र- ॐ ह्रीं अष्टादशदोषरहिताय षट्चत्वारिंषद्गुणसहिताय बारह सौ चौतीस शुद्ध चारित्र व्रतमंडिताय अर्हत् परमेष्ठिने अष्टकर्मदहनाय धूपं...।**

**8. फल-(मोक्षफल प्राप्ति के प्रतीक)**

केला नारिकेल आम मैं लाऊँ प्रभु समक्ष भाव से चढ़ाऊँ।
बारह सौ चौतीस प्रोषध उपकारी पूजूँ जिनपद भवदुःखहारी।।

**मंत्र- ॐ ह्रीं अष्टादशदोषरहिताय षट्चत्वारिंषद्गुणसहिताय बारह सौ चौतीस शुद्ध चारित्र व्रतमंडिताय अर्हत् परमेष्ठिने महामोक्षफलप्राप्ताय फलं...।**

**9. अर्घ्य-(अनर्घ्य गुण समूह प्राप्ति के प्रतीक)**

अष्टकर्म के नाशन हेतु अष्ट मूलगुण प्राप्ति हेतु।
अष्टम वसुधा प्राप्ति हेतु अर्घ्य चढ़ाऊँ मोक्ष हेतु।।

**मंत्र- ॐ ह्रीं अष्टादशदोषरहिताय षट्चत्वारिंषद्गुणसहिताय बारह सौ चौतीस शुद्ध चारित्र व्रतमंडिताय अर्हत् परमेष्ठिने अनर्घ्यपदप्राप्ताय अर्घ्यं...।**

## जयमाला

सत्यरूपाय नमो नमः विश्वरूपाय नमो नमः।
द्रव्यरूपाय नमो नमः परमेश्वराय नमो नमः।

सनातनाय नमो नमः ध्रौवरूपाय नमो नमः।
गुणरूपाय नमो नमः सर्वात्मने नमो नमः।

अजराय नमो नमः अमराय नमो नमः।
अमृताय नमो नमः अव्ययाय नमो नमः।

सूक्ष्मरूपाय नमो नमः विशालाय नमो नमः।
अनन्तरूपाय नमो नमः सर्वव्याप्ताय नमो नमः।

अस्तिस्वरूपाय नमो नमः नास्तिस्वरूपाय नमो नमः।
अव्यक्तरूपाय नमो नमः व्यक्तरूपाय नमो नमः।

एकरूपाय नमो नमः अनेकरूपाय नमो नमः।
ज्ञानरूपाय नमो नमः ज्ञेय-रूपाय नमो नमः।

परमरूपाय नमो नमः अन्तिमरूपाय नमो नमः।
अन्तःरूपाय नमो नमः बाह्यरूपाय नमो नमः।

प्रज्ञारूपाय नमो नमः प्रमेयरूपाय नमो नमः।
ध्यानरूपाय नमो नमः ध्येयरूपाय नमो नमः।

रत्नत्रयाय नमो नमः शीलगुणयुक्ताय नमो नमः।
अष्टदश दोष रहित नमः पंचमहाव्रत सहित नमः।

पंचसमिति सहित नमः त्रिगुप्ति गुप्त सहित नमः।
क्षमादि दशधर्म सहित नमः शुद्ध चारित्र सहित नमः।।

**दोहा– तव गुण प्राप्ति हेतु तव पूजन बारह सौ चौतीस व्रत पूजन।**
**भव दुःख हरण हेतु तव पूजन आत्म वैभव हेतु 'कनक' करे पूजन।।**

**मंत्र– ॐ ह्रीं अष्टादशदोषरहिताय षट्चत्वारिंषद्गुण सहिताय बारह सौ चौतीस शुद्ध चारित्र व्रतमंडिताय अर्हत् परमेष्ठिने जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।**

# सिद्ध परमेष्ठी की पूजा

## (पूजा के आध्यात्मिक वैज्ञानिक सकारण)

-आचार्य कनकनन्दी

**(चाल : चाँद सी महबूबा हो....., आत्मशक्ति....., भालुकली.....)**

**आह्वान : ( भावनात्मक रूप से पूज्यों का सान्निध्य प्राप्त करना)**

शुद्ध-बुद्ध हो परमसिद्ध हो आप हो सच्चिदानंद देव।
अनंत ज्ञान दर्शन सुख वीर्यादि अनंत गुणों से आप सम्पन्न।।

आपके सम बनने हेतु आप का करूँ मैं आह्वान।
अमूर्त स्वरूप आप का मैं मन-मंदिर में करूँ स्थापन।।

ॐ ह्रीं श्री सिद्धचक्राधिपतये! सिद्धपरमेष्ठिन् अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं श्री सिद्धचक्राधिपतये! सिद्धपरमेष्ठिन् अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं श्री सिद्धचक्राधिपतये! सिद्धपरमेष्ठिन् अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

**1. उदक-(आत्मिक विशुद्धि व जन्म जरा मृत्यु विनाश के प्रतीक)**

जन्म-जरा-मृत्यु नाश करके आप (तो) बन गये अजर-अमर।
तन-मन-इन्द्रिय परे होकर आप बन गये परमेश्वर।।

आप तो निर्मल-निर्विकारी हो अष्ट कर्मों से भी रहित।
उदक से आप का पूजन करके मैं भी बन जाऊँ तव स्वरूप।।

**ॐ ह्रीं श्री सिद्धचक्राधिपतये! सिद्धपरमेष्ठिने जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।**

**2. चन्दन-(संक्लेश ताप विनाश व भाव आह्लाद के प्रतीक)**

लोकालोक प्रकाशक प्रभुवर आप तो अमूर्तिक ध्रुव स्वरूप।
शुद्ध-बुद्ध हो आनंदकंद अव्यय अविनाशी आत्म स्वरूप।।

भौतिक समस्त संबंध रिक्त संसार ताप से आप विमुक्त।
आपकी पूजा चंदन से करके मैं भी बनूँ कर्मों से मुक्त।।

**ॐ ह्रीं श्री सिद्धचक्राधिपतये! सिद्धपरमेष्ठिने भवतापविनाशनाय चन्दनं...**

**3. अक्षत-(संसार उत्पादक कर्मनाशक व अक्षयपद के प्रतीक)**

अक्षय पद प्रभु पाया आपने नष्टकर दुष्टाष्टक कर्मों को।
अष्ट मूलगुण सहित आपने पाया अनंतानंत गुणों को।।

तुष रहित यथा अक्षत अंकुरित कदापि नहीं होता है।
तथाहि आप कर्म रहित होने से पुनः जन्म आपका नहीं होता है।।

**ॐ ह्रीं श्री सिद्धचक्राधिपतये! सिद्धपरमेष्ठिने अक्षयपदप्राप्ताय अक्षतम्...**

**4. सुमन (पुष्प)-(ब्रह्मभाव विकास व ज्ञानानंद रस के प्रतीक)**

पुष्प सुगंधित प्रासुक मनोहर कमल गुलाब जुही लाओ।
आपके समान गुण पूर्ण विकसित हेतु आपकी पूजा रचाऊँ।।

आप तो तन-मन-इंद्रियाँ रहित तो भी अनंत सुगुण युक्त।
आपके अमूर्तिक चेतन गुण स्मरण से पाऊँ आत्मिक सुख।।

**ॐ ह्रीं श्री सिद्धचक्राधिपतये! सिद्धपरमेष्ठिने कामबाण विध्वंसनाय सुमन (पुष्पं)...**

**5. नैवेद्य-(क्षुधा रोग विनाश के प्रतीक)**

अक्षय अनंत आत्म वैभव-सुख का करते आप भोगोपभोग।
ज्ञानाकारमय अमूर्त स्वरूप आप तो स्वयं में ही परम तृप्त।।

तथापि स्वक्षुधा नाशन हेतु व अनंत परम तृप्ति हेतु।
घृत निर्मित सुरस सुगंधित प्रासुक नैवेद्य से पूजन करूँ।।

**ॐ ह्रीं श्री सिद्धचक्राधिपतये! सिद्धपरमेष्ठिने क्षुधारोगविनाशनाय**

**नैवेद्यं...**

**6. दीपक-(अज्ञान मोहान्धकार के प्रतीक)**

अनंत आत्मोत्थ चैतन्य ज्योति से आप हो सदा प्रकाशवान्।
अनंत लोकालोक प्रकाशने योग्य आप तो सुज्ञानवान्।।

तथापि स्व-आज्ञान मोहतम हरण हेतु दीपक से पूजा करूँ।
आप तो कृतकृत्य राग-द्वेष रहित स्वहित हेतु पूजा मैं करूँ।।

**ॐ ह्रीं श्री सिद्धचक्राधिपतये! सिद्धपरमेष्ठिने मोहान्धकार विनाशनाय दीपं...**

**7. धूप-(अष्टकर्म नाश व अष्टगुण प्राप्ति के प्रतीक)**

अष्ट कर्म को जलाकर आप बन गये शुद्ध व बुद्ध।
लोकाग्र शिखरे निवास करके भोग करते हो ज्ञानानंद।।

आपके समान मैं भी कर्म जलाऊँ इस हेतु धूप से पूजा करूँ।
स्व-कर्म नाश से स्वगुणों को पाऊँ इस हेतु आपकी पूजा करूँ।।

**ॐ ह्रीं श्री सिद्धचक्राधिपतये! सिद्धपरमेष्ठिने अष्टकर्मदहनाय धूपं...**

**8. फल-(मोक्षफल प्राप्ति के प्रतीक)**

धर्म का फल पाया आपने अक्षय-अनंत सुख रूप।
मैं भी तव सम धर्म का फल पाऊँ इस हेतु पूजूँ तव स्वरूप।।

ऐसा धर्म का फल इन्द्र चक्रवर्ती विद्याधर को भी अलब्ध।
तव गुण स्मरण-ध्यान-आचरण से तव सम फल हो उपलब्ध।।

**ॐ ह्रीं श्री सिद्धचक्राधिपतये! सिद्धपरमेष्ठिने महामोक्षफलप्राप्ताय फलं...**

**9. अर्घ्य-(अनर्घ्य गुण समूह प्राप्ति के प्रतीक)**

अनर्घ्यपद पाया आपने नाशकर के अष्ट कर्मों को।

अष्टम वसुधा में विराजमान हुए पाकर अष्ट गुणों को।।

अष्ट द्रव्यों से आपकी पूजा करूँ पाने हेतु आपके गुण।
आप तो अमूर्तिक ज्ञान ज्योति स्वरूप मैं भी पाऊँ ऐसे गुण।।

**ॐ ह्रीं श्री सिद्धचक्राधिपतये! सिद्धपरमेष्ठिने अनर्घ्यपदप्राप्ताय अर्घ्यं...**

## जयमाला

### (आध्यात्मिक विजय के लिए पूज्यों के गुणस्मरण-गुणानुवाद-गुणानुकरण)

**(चाल : चाँद सी मेहबूबा हो....., आत्मशक्ति....., जय हनुमान....., जिस देश में.....)**

हे ! शुद्ध-बुद्ध आनंद नमः...हे ! ज्ञानदर्शन सुख नमः।
हे ! सच्चिदानंद कंद नमः...हे ! सत्य सनातन आत्मा नमः।।
हे ! अक्षय अनंतगुण नमः...हे ! द्रव्यगुण-पर्याय नमः।
हे ! घाती-अघाती नाशक नमः...हे ! अष्ट प्रमुख गुणाय नमः।।
हे ! रत्नत्रयमय आत्मा नमः...हे ! ज्ञान-ज्ञेय-ज्ञाता नमः।
हे ! उत्पाद-व्यय-ध्रौव्य नमः...हे ! एक अनेक (अनंत) स्वरूप नमः।।
हे ! जन्म-जरा-मृत्यु रिक्त नमः...हे ! तन-मन-अक्ष रिक्त नमः।
हे ! द्रव्य-भाव-नोकर्म रिक्त नमः...हे ! अस्तित्व-वस्तुत्व युक्त नमः।।
हे ! संसार चक्रनाशक नमः...हे ! लोकालोक ज्ञायक नमः।
हे ! सर्वज्येष्ठ सर्वश्रेष्ठ नमः...हे ! पावन परमेश्वर नमः।।
हे ! परमपरमेष्ठी सिद्ध नमः...हे ! परम अमृत तत्त्व नमः।
हे ! परम पुरुष आत्मा नमः...हे ! लिंगातीत चैतन्य नमः।।
हे ! आत्मस्थित सर्वगत नमः...हे ! आत्मज्ञाता सर्वज्ञाता नमः।
हे ! पूज्य से भी पूजनीय नमः...हे ! कनक सूरी द्वारा पूजनीय नमः।।

**ॐ ह्रीं श्री सिद्धचक्राधिपतये! सिद्धपरमेष्ठिने आध्यात्मिक विजय हेतु जयमाला पूर्ण...**

# तीर्थंकर पूजा

## (एक तीर्थंकर की पूजा से समस्त तीर्थंकरों की पूजा)

## (व्यवहार-निश्चय-आध्यात्मिक-वैज्ञानिक दृष्टि से)

**-आचार्य कनकनन्दी**

**(चाल : चाँद सी महबूबा हो....., आत्मशक्ति.....)**

**आह्वान : (भावनात्मक रूप से पूज्यों का सान्निध्य प्राप्त करना)**

हे ! तीर्थंकर ! अनंत गुणधर सर्वज्ञ सर्वदर्शी भुवनेश्वर।
पंच कल्याण से युक्त श्रीधर विश्व उद्धारक धर्म-धुरंधर।।

दिव्य ध्वनि से विश्व संबोधा अन्त्योदय से सर्वोदय बताया।
संसार सागर तीरने हेतु (आपने) सर्वोत्तम धर्मतीर्थ बताया।।

मंत्र- ॐ ह्रीं तीर्थंकर ! (समूह) अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं तीर्थंकर ! (समूह) अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं तीर्थंकर ! (समूह) अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरण।

**1. उदक-(आत्मिक विशुद्धि व जन्म जरा मृत्यु विनाश के प्रतीक)**

शरीर मल धोने हेतु यथा निर्मल जल चाहिए।
कर्ममल/(आत्मिक मल) धोने हेतु तथाहि निर्मल चित्त चाहिए।।

ऐसे परम ज्ञान का शोध-बोध, आपने दिया विश्व को।
इस हेतु आपका पूजन जल से करूँ पावन हेतु।।

**मंत्र- ॐ ह्रीं तीर्थंकरेभ्यो आत्म/भाव विशुद्धिकरणाय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।**

**2. चन्दन-(संक्लेश ताप विनाश व भाव आह्लाद के प्रतीक)**

संसार ताप विनाश हेतु, आपने सत्यज्ञान दिया।
आत्मविश्वास ज्ञान चारित्र, आपने संसार नाश कहा।।

आत्मविशुद्धि समता-शांति से, मिलता है परम मोक्ष।
ऐसा परमपद प्राप्ति हेतु मैं पूजूँ, चंदन से आपके पद।।

**मंत्र- ॐ ह्रीं तीर्थंकरेभ्यो संक्लेश ताप विनाशनाय, भाव आह्लादित करणाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।**

**3. अक्षत-(संसार उत्पादक कर्मनाशक व अक्षयपद के प्रतीक)**

आत्म स्वभाव है स्वयंभू-स्वयंपूर्ण-अक्षय-अव्याबाध गुणमय।
अनंतज्ञान दर्शन सुख वीर्यमय अस्तित्व-वस्तुत्व-प्रमेयत्वमय।।

ऐसा परमपद प्राप्ति हेतु (आपने) कहा व्यवहार-निश्चय धर्म।
व्यवहार धर्म से निश्चय प्राप्ति हेतु, मैं पूजूँ अक्षत ले तव पद।।

**मंत्र- ॐ ह्रीं तीर्थंकरेभ्यो संसार उत्पादक कर्म विनाशनाय एवं अक्षय ज्ञानानंद प्राप्ताय अक्षतम् निर्वपामीति स्वाहा।**

**4. सुमन (पुष्प)-(ब्रह्मभाव विकास व ज्ञानानंद रस के प्रतीक)**

पुष्प मनोहर प्रासुक सुगंधित कमल गुलाब आदि से।
तव पदकमल पूजन द्वारा, सातिशय पुण्य पाऊँ भाव से।।

जो आत्मा को पावन करे, (वह) यथार्थ से सातिशय पुण्य कहा।
ऐसे सातिशय उपदेशक का पूजन कर आत्मा निर्मल हुआ।।

**मंत्र- ॐ ह्रीं तीर्थंकरेभ्यो ब्रह्मभाव विकासनाय ज्ञानानंद रस प्राप्ताय सुमन/(पुष्प) निर्वपामीति स्वाहा।**

**5. नैवेद्य-(क्षुधा रोग विनाश के प्रतीक)**

अनादि काल से अनंत पंचपरिवर्तन में क्षुधारोग न नाश हुआ।
विश्व के समस्तभौतिक वस्तु खाया, तथापि क्षुधारोग न नाश हुआ।।

शाश्वतिक क्षुधारोग नाश के लिए, आपने घाती कर्म नाश किया।
मैं भी क्षुधारोग नाश के लिए लड्डू-पेड़ा (आदि) से पूजन रचा।।

**मंत्र- ॐ ह्रीं तीर्थंकरेभ्यो मोह-वेदनीय-अंतराय नाश सहित तृष्णा**

**क्षुधा रोग विनाशनाय नैवद्यं निर्वपामीति स्वाहा।**

**6. दीपक-(अज्ञान मोहान्धकार के प्रतीक)**

शुक्ल ध्यान रूपी अग्नि से आपने घाती कर्म को नाश किया।
अनंत अक्षय आत्म ज्योति पाकर लोकालोक प्रकाश किया।।

अनंत आत्म ज्योति प्राप्ति हेतु, घृत दीपक से पूजन करूँ।
निर्मल स्निग्ध भाव प्रकाश द्वारा, पावनगुण स्मरण करूँ।।

**मंत्र- ॐ ह्रीं तीर्थंकरेभ्यो ध्यान-अध्ययन-ज्ञानेन अज्ञान मोहान्धकार विनाशनाय दीपकं निर्वपामीति स्वाहा।**

**7. धूप-(अष्टकर्म नाश व अष्टगुण प्राप्ति के प्रतीक)**

अनादि कालीन अष्टकर्मों को आपने जलाया शुक्ल ध्यान से।
जिससे आपको प्राप्त हुए अनंत चतुष्टय स्व-आत्मा से/(में)।।

लोकालोक में व्याप्त हुआ आपका ज्ञान स्पष्ट रूप से।
आपके गुण प्राप्त हेतु मैं पूजूँ आपको सुगंधि धूप से।।

**मंत्र- ॐ ह्रीं तीर्थंकरेभ्यो अष्ट कर्म विनाशनाय आध्यात्मिक गुण प्राप्ताय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।**

**8. फल-(मोक्षफल प्राप्ति के प्रतीक)**

आत्म स्वभाव की प्राप्ति हेतु, आपने त्यागा राज्य वैभव।
निस्पृह निराडम्बर वीतरागी बनकर मौन से किया ध्यान-अध्ययन।।

जिससे आपको इसके फलस्वरूप प्राप्त हुआ अनंत वैभव।
आपके सम फल प्राप्ति हेतु मैं पूजूँ आपको सरस फलों से।।

**मंत्र- ॐ ह्रीं तीर्थंकरेभ्यो ज्ञानानंद रस भरित मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।**

**9. अर्घ्य-(अनर्घ्य गुण समूह प्राप्ति के प्रतीक)**

अनर्घ्यपद पाया आपने जो अभूतपूर्व अद्वितीय है।
संपूर्ण विश्व के भौतिक मूल्य से न हो पायेगा मूल्यांकन है।।

आपका वैभव आत्मोत्थ अविनाशी अनंत अक्षय सुखमय है।
आपके सम अनर्घ्य पद प्राप्त हेतु मैं भी पूजूँ आपको अर्घ्य से।।

**मंत्र- ॐ ह्रीं तीर्थंकरेभ्यो अनंतअनर्घ्य गुण प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।**

## पंचकल्याणक अर्घ्य

1. **गर्भकल्याणक-**

आपके अतिरिक्त अन्य किसी का नहीं होता है गर्भ कल्याणक।
जन्म-जरा-मृत्यु नाशन हेतु आपका गर्भ कल्याणक।।
अपुनर्भव कारण हेतु आपका गर्भ होता अंतिम गर्भ।
मेरा भी हो अपुनर्भव इस हेतु पूजूँ मैं गर्भ कल्याणक।।

**मंत्र- ॐ ह्रीं गर्भमंगलमंडिताय श्री तीर्थंकर जिनेन्द्राय अनर्घ्यपद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।**

2. **जन्मकल्याणक-**

आपके जन्म सम किसी का भी जन्म नहीं होता तीनों लोक में।
चतुर्गतिमय चौरासी लक्ष्य योनियों में आपका जन्म अद्वितीयमय।।
दश अतिशय युक्त आपका जन्म तीनों लोक/(में) मंगलप्रद।
मंगलमय बनने हेतु मैं भी पूजूँ आपका जन्म कल्याणक।।

**मंत्र- ॐ ह्रीं जन्ममंगलमंडिताय श्री तीर्थंकर जिनेन्द्राय अनर्घ्यपद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।**

3. **तप कल्याणक-**

राज्य वैभव को त्यागा आपने धारण किया श्रामण्य रूप।
अंत-बाह्य परिग्रह त्याग के धारण किया दिगम्बर रूप।।

बहिरंग-अंतरंग तपों को तपा जिससे कर्म हुए क्षीण।
तप कल्याण पूजन द्वारा मैं भी करूँ कर्मों को क्षीण।।

**मंत्र- ॐ ह्रीं तप मंगलमंडिताय श्री तीर्थंकर जिनेन्द्राय अनर्घ्यपद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।**

**4. केवलज्ञान कल्याणक-**

अंतरंग-बहिरंग तपों द्वारा, आपने नाशा घातिया कर्म।
अनंत-चतुष्टय को पाकर विश्व को संबोधा यथार्थ धर्म।।
सत्य-अहिंसा-अचौर्य-ब्रह्मचर्य-अपरिग्रह को धर्म बताया।
अनेकान्तात्मक वस्तु स्वभाव का आपने प्रतिपादन किया।।

**मंत्र- ॐ ह्रीं ज्ञान मंगलमंडिताय श्री तीर्थंकर जिनेन्द्राय अनर्घ्यपद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।**

**5. मोक्ष कल्याणक-**

अंत में योग निरोध करके शैलेश अवस्था आप पाते हो।
शेष कर्मों को भी निःशेष करके परम मुक्ति आप पाते हो।।
आप बन गये परम शुद्ध, सच्चिदानंदमय ध्रुव स्वभाव।
आपके पूजन व अनुकरण से, मैं भी पाऊँ आप सम स्वभाव।।

**मंत्र- ॐ ह्रीं मोक्ष मंगलमंडिताय श्री तीर्थंकर जिनेन्द्राय अनर्घ्यपद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।**

# जयमाला

(आध्यात्मिक विजय के लिए पूज्यों के गुणस्मरण-गुणानुवाद-गुणानुकरण)

# तीर्थंकर भगवान् V/S आधुनिक वैज्ञानिक से लेकर समाज सुधारक तक

**-आचार्य कनकनन्दी**

**(चाल : चाँद सी मेहबूबा हो....., आत्मशक्ति....., जय हनुमान.....)**

परम पावन परम उदार परम ज्ञानी हे ! तीर्थंकर।
विश्व कल्याणक विश्व उद्धारक विश्व प्रबोधक हे ! तीर्थंकर।।
अन्त्योदयी हो ! सर्वोदयी हो ! निष्पक्षपाती करुणाकर।
राग द्वेष मोह काम क्रोध रिक्त ईर्ष्या तृष्णा घृणा से आप विरक्त।
ख्याति पूजा लाभ प्रसिद्धि रहित, सत्ता-संपत्ति से आप विरक्त।
दबाव प्रलोभन वर्चस्व रहित, समता शांति से आप संयुक्त।। (1)
अनंत ज्ञान दर्शन सुख वीर्यमय, समस्त बाधा से आप रहित।
अपना-पराया भेदभाव रिक्त, समस्त जीवों में समता युक्त।
सर्वजीव समान अधिकार कहा, 'सव्वे सुद्धा हु सुद्ध णया' बताया।
मानव अधिकार या 'पशुक्रूरता निवारण' से भी व्यापक बताया।। (2)
साम्यवाद-समाजवाद राजनीति से भी श्रेष्ठ तव समतावाद।
अपरिग्रह से ले अहिंसा तक आपका अधिक व्यापक सिद्धांत।
मनोविज्ञान से ले क्रम विकास जीव वाद से भी कहा श्रेष्ठ सिद्धांत।
तन-मन व इन्द्रिय परे भी जीव होते हैं चैतन्यमय अनादि अनंत।। (3)
अनेकांत तो आपका महान् देन, हर द्रव्य गुण आदि अनेकांतमय।
चेतन-अचेतन मूर्तिक-अमूर्तिक, हर वस्तु में व्याप्त है अनेकांत।
अनादि अनंत विश्व को कहा, स्वयंभू अकृत्रिम शाश्वत कहा।
षट् द्रव्यमयी लोक को कहा लोक से परे भी अलोक कहा।। (4)

अणु-स्कंद-व-वर्गणा रूप से, भौतिक द्रव्य को अनंत कहा।
वर्तमान के भौतिक विज्ञान से भी, अति सूक्ष्म से ले स्थूल/(व्यापक) कहा।
आत्म विकास को प्रधान कहा, इस हेतु ही धर्म का वर्णन किया।
पंचव्रत-पंच समिति दशधर्म द्वारा, आत्मा का विकास कहा।। (5)
समता-शांति-आत्मविशुद्धि, रत्नत्रयमय धर्म बताया।
चौदह गुणस्थान के क्रम से आत्म विकास का पैमाना बताया।
श्रावक से परे श्रमण बनकर, आत्म विकास से मोक्ष बताया।
मोक्ष ही जीवों का शुद्ध स्वभाव (जो) अनंत ज्ञान दर्शन सुखमय बताया।। (6)
अतः ही आप हो परम गुरु महावैज्ञानिक (दार्शनिक) समाज सुधारक।
आपके ही गुण प्राप्ति के हेतु, आपको आदर्श माने सूरी 'कनक'।।

**मंत्र- ॐ ह्रीं तीर्थंकरेभ्यो आध्यात्मिक विजय हेतु जयमाला पूर्ण अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।**

सीपुर, दिनांक 02.03.2017, मध्याह्न 3.07

# श्री अरिहन्त परमेष्ठी-पूजा

**(चाल : हरिगीतिका छन्द....., श्री रामचंद्र कृपालु भजमन....., जो मोह माया.....)**

**आह्वान :** जो क्रोध मान माया लोभ, नाश कर सर्वज्ञ हैं,
शरीर सह होते हुए भी, सुखी सिद्ध सम ही हैं।
जो रत्नयुत द्वादश सभा में, विराजित निर्लिप्त हैं,
विश्व के गुरु होते हुए भी, स्वयं में तल्लीन है।।...

**मंत्र-** ॐ ह्रीं श्री अरहंत परमेष्ठिन् अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्री अरहंत परमेष्ठिन् अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री अरहंत परमेष्ठिन् अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

**1. उदक-** जिनके स्मरण मात्र से ही, पाप कर्मों का नाश हो।
जिनकी दिव्य ध्वनि से ही, ज्ञान का प्रकाश हो।।
धर्म सभा में राजते, जिनदेव सच्चे आप्त हो।
आपके दिव्य दर्शन से, आत्मबोध सुप्राप्त हो।।

**मंत्र-** **ॐ ह्रीं श्री अरहंत परमेष्ठिने जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।**

**2. चन्दन-** षट् द्रव्य नव पदार्थों के तुम, ज्ञाता सच्चे जिनराज हो।
अनेकान्त और सापेक्ष के, उपदेश में तुम दक्ष हो।।
धर्मसभा में राजते।।

मंत्र- **ॐ ह्रीं अरहंत परमेष्ठिने भवताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।**

**3. तंदुल-** जीव अजीव धर्म अधर्म, काल ज्ञाता आप हो।
आकाश में सब गर्भित है, आप इनके ज्ञाता हो।। (धर्मसभा में राजते)

मंत्र- **ॐ ह्रीं श्री अरहंत परमेष्ठिने अक्षयपदप्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।**

**4. पुष्प-** आस्रव व बन्ध को ही, प्रभुवर ने भव भ्रमण कहा।
मोक्ष के प्राप्ति हेतु भी, निर्जरा संवर कहा।। (धर्मसभा में राजते)

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री अरहंत परमेष्ठिने कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।**

**5. चरु-** मोक्ष ही है पूर्णता व ज्ञानानंद स्वरूप महा।
उत्पाद व्यय ध्रौव्य रूप, शुद्ध स्वरूप तुमने कहा।। (धर्मसभा में राजते)

मंत्र- **ॐ ह्रीं श्री अरहंत परमेष्ठिने क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।**

**6. दीप-** धर्म दर्शन के ज्ञाता हो, त्रैकालज्ञ हो तुम सदा।
विश्वशांति के हो प्रणेता, विश्वगुरु हो सर्वदा।। (धर्मसभा में राजते)

मंत्र- **ॐ ह्रीं श्री अरहंत परमेष्ठिने मोहान्धकार विनाशनाय दीप निर्वपामीति स्वाहा।**

**7. धूप-** राग-द्वेष और मोह को भी, आपने त्यजनीय कहा।
आस्रव बंध में भी इसे, महाकारण है कहा।। (धर्मसभा में राजते)

मंत्र- **ॐ ह्रीं श्री अरहंत परमेष्ठिने अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।**

**8. फल-** साध्य साधन भेद वाला, मोक्षमार्ग है द्विधा।
परस्पर सापेक्ष है, निरपेक्ष नहीं है कदा।। (धर्मसभा में राजते)

मंत्र- **ॐ ह्रीं श्री अरहंत परमेष्ठिने महामोक्षफलप्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।**

**9. अर्घ्य-** अष्टकर्म नष्ट हेतु, अष्ट द्रव्य अर्पण करें।
अष्ट गुण प्राप्ति के हेतु, अष्ट विध तर्पण करें।।

धर्म सभा में राजते, जिनदेव सच्चे आप्त हो।
आपके दिव्य दर्शन से, आत्म बोध सुप्राप्त हो।।

मंत्र- **ॐ ह्रीं श्री अरहंत परमेष्ठिन अनर्घ्यपदप्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।**

जाप्य मंत्र- **ॐ ह्रीं श्री अरिहंताणं।** (9, 27 या 108 बार जाप करें।)

स्व-पर-विश्वशान्त्यर्थे, करते शान्ति धार।
मन सुमन सम बन जाए, पुष्पाञ्जलि मनहार।।
शान्तये शान्ति धारा! परिपुष्पाञ्जलिक्षिपेत्!

**गुण-गण माला (जयमाला)**

गुण गण की गुणमाला ले, गाये हम जयमाला।
अनंत गुण के हो धनी, करते मालामाल।।

# वन्दे तीर्थेश्वर

**रचयिता-आचार्य कनकनन्दी**

**(चाल : जय हनुमान.....)**

वन्दे तीर्थेश्वर ज्ञान नयनम्, सच्चिदानंद हे पूर्ण कामम्।
दिव्य ज्योति हे चतुराननम्, अनंतवीर्य केवल धामम्।। (1)
सापेक्षवादी हे अनंतज्ञाता, अनंत संसार तारण कर्त्ता।
अनंत चतुष्टय धारणकर्त्ता, जिनवाणी के तुम हो भर्त्ता।। (2)
ज्ञान-विज्ञान के तुम हो विधाता, मोक्षमार्ग के प्रेरणा दाता।
भव्य सरोज के विकास कर्त्ता, विश्वशांति के हे उपदेष्टा।। (3)
वीतराग हो हे समदर्शी, महर्षियों के तुम महर्षि।
शतेन्द्र पूजित अनंतदर्शी, कमले विराजित हो अस्पर्शी।। (4)
ध्याता हो हे ज्ञान ज्ञाता, आत्मनंदी हो ज्ञान दाता।
सत्य सनातन चिन्मय रूपा, दिव्यध्वनीश्वर भव्य प्रचेता।। (5)

जिनेश महेश शुद्ध स्वरूपा, अनंत गुणधारी विश्वरूपा।
''कनकनन्दी'' के ध्यान स्वरूपा, तुम सम हो मम् भावी रूपा।। (6)
दोहा- वन्दे तद्गुण लब्धये, भाव से करे स्मरण।
वही भव्य भगवान् बने, करे जो आत्म रमण।।

## पंचपरमेष्ठी-धर्म-जिनवाणी की आरती

**(तर्ज : शास्त्रीय....., वीर महावीर जय-जय....., इह विधि मंगल.....)**

आरती पंचगुरु जी तुम्हारी, तारण-तरण भवदुःखहारी।। ॐ जय बोल...जय...
जय जिनवर जय-जय गुरुवर...

प्रथम आरती सिद्ध स्वरूपा,
चिज्जयोतिर्मय निराकार रूपा।। ॐ जय बोल...जय...
अष्ट गुणों के तुम हो धारी,
अष्टम पृथ्वी में आत्मविहारी।। (1) जय ॐ ...जय...
शुद्ध-बुद्ध हो ज्ञानस्वरूपी,
सच्चिदानंद हैं ध्रुव स्वरूपी।। जय ॐ ...जय...
जन्म-मरण से रहित स्वरूपा,
अमूर्तिक हो अमृतमय रूपा।। (2) जय ॐ ...जय...
द्वितीय आरती केवली स्वामी,
समवशरणाधीशा अन्तरयामी।। जय जिनवर...
दिव्य ध्वनि से विश्व संबोधा,
सर्व हितंकर तत्त्व प्रबोधा।। (3) जय जिनवर...
तृतीय आरती सूरीश्वर देवा,
शिक्षा-दीक्षा के प्रदाता देवा।। जय जिनवर...
मोक्षमार्ग में विहार हैं करते,
भव्य जीवों को विहार कराते।। (4) जय जिनवर...

चतुर्थ आरती पाठक गुरुवर,

पठन-पाठन रत ऋषिवर।। जय जिनवर...

स्व-पर मत के तुम हो ज्ञाता,

सत्य-तथ्य की करो समीक्षा।। (5) जय जिनवर...

पंचम आरती मुनीश्वरों की,

मौन साधक यतीश्वरों की।। जय जिनवर...

ध्यान अध्यन समता के धारी,

मोक्ष पथ के तुम हो विहारी।। (6) जय जिनवर...

षष्टम आरती रत्नत्रय की,

उत्तम क्षमादि दश धर्मों की।। जय जिनवर...

सोलह भावना अनुप्रेक्षा की,

आत्म कल्याण के व्रत नियमों की।। (7) जय जिनवर...

सप्तम आरती श्री दिव्यवाणी,

मोक्षमार्ग दीपिका जिनवाणी।। जय जिनवर...

स्व-पर-विश्व कल्याणी माता,

अमृत वर्षणी सरस्वती माता।। (8) जय जिनवर...

दोहा- जो भव्य भक्ति भाव से, तमहरण आरती नित करे।

अनुक्रम से है कर्मनाशे, अंत में मुक्ति वरे।।

## पंचपरमेष्ठी की आरती

**(तर्ज : मैं तो आरती उतारूँ रे.....)**

मैं तो आरती उतारूँ रे पंच परम गुरु की-2

जय-जय पंचगुरु जय-जय हो-2 (टेक)

पंचमगति प्राप्त सिद्धेश्वरों की, सिद्धेश्वरों की

अष्टगुणधारी धीर प्रभुवरों की, प्रभुवरों की

नमन करूँ, प्रणाम करूँ, भक्ति करूँ, भाव धरूँ, आरती उतारूँ रे। मैं तो...
घातिया नाशक श्री अरहंत प्रभुवर की, अरहंत प्रभुवर की
अनंत चतुष्टय धारी श्री जिनवरों की, श्री जिनवरों की
नमन करूँ, प्रणाम करूँ, भक्ति करूँ, भाव धरूँ, आरती उतारूँ रे। मैं तो...
संघ नायक आचार्य ऋषिवरों की, आचार्य ऋषिवरों की
छत्तीस गुणधारी गुरुवरों की, गुरुवरों की
नमन करूँ, प्रणाम करूँ, भक्ति करूँ, भाव धरूँ, आरती उतारूँ रे। मैं तो...
पठन पाठनधारी पाठकवृन्दों की, पाठकवृन्दों की
चौबीसों गुणधारी उपाध्याय साधक की, उपाध्याय साधक की
नमन करूँ, प्रणाम करूँ, भक्ति करूँ, भाव धरूँ, आरती उतारूँ रे। मैं तो...
आत्म साधक यतिराज साधुवरों की, साधुवरों की
अठबीस गुण धारक श्री मुनिराजों की, श्री मुनिराजों की
नमन करूँ, प्रणाम करूँ, भक्ति करूँ, भाव धरूँ, आरती उतारूँ रे। मैं तो...

## माँ-जिनवाणी सरस्वती की पूजा

### (पूजा के आध्यात्मिक वैज्ञानिक सकारण)

**-आचार्य कनकनन्दी**

**(चाल : चाँद सी मेहबूबा....., आत्मशक्ति....., भातुकली.....)**

**आह्वान : (भावनात्मक रूप से पूज्यों का सान्निध्य प्राप्त करना)**

हे ! जिनवाणी जगकल्याणी, हिताहित बखानी माँ।
सर्वज्ञ सुता गणधर माता, द्वादशांग जिनवाणी माँ।।
आपको ध्याऊँ तवगुण गाऊँ, अज्ञान मम नाश दो माँ।
आह्वान तव पूजन-तव ध्यान-अध्ययन तव करूँ माँ।। (ध्रुव)

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव सरस्वती देवी! अत्र अवतर अवतर संवोषट् आह्वाननम्।

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव सरस्वती देवी! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव सरस्वती देवी! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

**1. उदक-(आत्मिक विशुद्धि व जन्म जरा मृत्यु विनाश के प्रतीक)**

तव पूजा हेतु उदक चढ़ाऊँ, मम कर्ममल नाश दो माँ।

तव प्रसाद से बनूँ निर्मलभावी, वीतराग-विज्ञान सिखा दो माँ।।..आपको ध्याऊँ

**ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव सरस्वतीदेव्यै! आत्म (भाव) विशुद्धिकरणाय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।**

**2. चन्दन-(संक्लेश ताप विनाश व भाव आह्लाद के प्रतीक)**

चंदन चढ़ाऊँ तव गुण गाऊँ, मेरे भवताप मिटा दो माँ।

तव पय पीऊँ शांत-तृप्त बनूँ, ऐसे वरदान दे दो माँ।।...आपको ध्याऊँ

**ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव सरस्वतीदेव्यै! संक्लेश ताप विनाशनाय, भाव आह्लादित करणाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।**

**3. अक्षत-(संसार उत्पादक कर्म के नाशक व अक्षयपद के प्रतीक)**

अक्षत चढ़ाऊँ स्वाध्याय करूँ, अक्षयपद हेतु साधना करूँ माँ।

आपसे शिक्षा लहूँ राग द्वेष त्यजूँ, आपकी आज्ञा पालन करूँ माँ।।...आपको ध्याऊँ

**ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव सरस्वतीदेव्यै! संसार उत्पादक कर्म विनाशनाय एवं अक्षय ज्ञानानंद पद प्राप्ताय अक्षतं...**

**4. पुष्प-(ब्रह्मभाव विकास व ज्ञानानंद रस के प्रतीक)**

पुष्प चढ़ाऊँ पुलकित बनूँ, आपका ज्ञानामृतपान करूँ माँ।

मोहमद नाशूँ आत्मशक्ति जगाऊँ, स्व-पर, भेद विज्ञान करूँ माँ।।...आपको ध्याऊँ

**ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव सरस्वतीदेव्यै! ब्रह्मभाव विकासनाय ज्ञानानंदरस प्राप्ताय सुगंध (पुष्पं)...**

**5. नैवेद्य-(क्षुधा रोग विनाश के प्रतीक)**

नैवेद्य से पूजूँ ज्ञानरस पीऊँ, अनादि की क्षुधा शांत करूँ माँ।

भोगराग त्यागूँ शुभभाव भजूँ, शुद्धात्मारस मैं पान करूँ माँ।।...आपको ध्याऊँ

**ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव सरस्वतीदेव्यै! मोह-वेदनीय अंतराय नाश सहित तृष्णा-क्षुधा विनाशनाय नैवेद्यं...**

**6. दीपक-(अज्ञान मोहान्धकार के प्रतीक)**

दीपक चढ़ाऊँ ज्ञान ज्योति पाऊँ, अज्ञानतम नाश करूँ माँ।
तव पय पीऊँ शक्ति बढ़ाऊँ, मोहमल्ल को नाश करूँ माँ।।...आपको ध्याऊँ

**ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव सरस्वतीदेव्यै! ध्यान-अध्ययन-ज्ञानेन अज्ञानमोहान्धकार विनाशनाय दीपं...**

**7. धूप-(अष्टकर्म नाश व अष्टगुण प्राप्ति के प्रतीक)**

धूप सुगंधित अगर-तगर से, आपका पूजन करूँ सरस्वती माँ।
मेरे कर्मकाष्ठ जले ज्ञान ज्योति फैले, इस हेतु पूजन तव करूँ माँ।।...आपको ध्याऊँ

**ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव सरस्वतीदेव्यै! अष्टकर्म विनाशनाय आध्यात्मिक गुण प्राप्ताय धूपं...**

**8. फल-(मोक्षफल प्राप्ति के प्रतीक)**

फल सुमधुर रसाल अँगूर से, तव पूजन करूँ मैं माँ।
तव प्रसाद से मोक्षफल मिले, ऐसी प्रार्थना करूँ मैं माँ।।...आपको ध्याऊँ

**ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव सरस्वतीदेव्यै! ज्ञानानंद रस भरित मोक्षफल प्राप्ताय फलं...**

**9. अर्घ्य-(अनर्घ्य गुण समूह प्राप्ति के प्रतीक)**

अष्टद्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, अष्टांग प्राणिपात करूँ मैं माँ।
अनर्घ्यपद मिले अष्टगुण मिले, ऐसी भावना भाऊँ मैं माँ।।...आपको ध्याऊँ

**ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव सरस्वतीदेव्यै! अनंत अनर्घ्यगुण प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।**

# जयमाला

## (आध्यात्मिक विजय के लिए पूज्य जिनवाणी-सरस्वती माँ के गुणानुस्मरण-गुणानुवाद-गुणानुकरण)

**(चाल : चाँद सी मेहबूबा....., आत्मशक्ति....., जय हनुमान.....)**

हे ! जग जननी हे ! जिनवाणी, मेरी विनती सुनो तू माँ।
मुझे ज्ञान दो अज्ञान हर लो, वीतराग विज्ञानी बना दो माँ।।

सत्य को जानूँ हित को मानूँ, अहित त्याग हेतु शक्ति दो माँ।
आत्मा को जानूँ परमात्मा मानूँ, ऐसा ही भेदज्ञान करा दो माँ।।

जीव को जानूँ अजीव को मानूँ, द्रव्य-गुण-पर्याय सिखाओ माँ।
आस्रव-बंध संवर-निर्जरा, मोक्ष स्वरूप सिखाओ माँ।।

राग द्वेष मोह काम क्रोध त्यागूँ, सत्य-समता को पाऊँ मैं माँ।
ईर्ष्या तृष्णा घृणा संक्लेश को त्यागूँ, ऐसी शक्ति मुझे प्राप्त हो माँ।।

क्षमा सहिष्णुता ऋजुता मृदुता, शांति उदारता को पाऊँ मैं माँ।
ख्याति पूजा लाभ प्रसिद्धि त्यागकर, आत्मा की विशुद्धि करूँ मैं माँ।।

कर्मनाश करूँ मोक्षप्राप्त करूँ, ऐसी शक्ति पाऊँ मैं माँ।
शक्ति प्राप्त करूँ आत्मशुद्धि करूँ, ऐसी साधना करूँ मैं माँ।।

तेरे प्रसाद से मुझे ज्ञान हुआ, मुझमें शक्ति अनंत हे ! माँ।
अनंत शक्ति की पूर्ण उपलब्धि, मोक्ष में ही संभव होती हे ! माँ।।

ऐसी ज्ञानदात्री तुम सरस्वती, तुम्हारा पूजन करूँ (हूँ) मैं माँ।
तव प्रसाद से मोक्ष मिले, 'कनक' प्रार्थना करता हे ! माँ।।

**ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव सरस्वतीदेव्यै! आध्यात्मिक विजय हेतु जयमाला पूर्ण अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।**

सीपुर, दिनांक 13.04.2017, रात्रि 10.54

# आद्य धर्म प्रवर्तक आदिनाथ तीर्थंकर पूजन

## (पूजा के आध्यात्मिक वैज्ञानिक कारण)

-आचार्य कनकनन्दी

(चाल : चाँद सी महबूबा....., जय हनुमान ज्ञान गुण सागर.....)

**आह्वान : (भावनात्मक रूप से पूज्यों का सान्निध्य प्राप्त करना)**

आदिनाथ हे ! आदिप्रभु ! आदिब्रह्मा हे ! आदीश्वर।

भारतवर्ष के आर्यखण्ड के आप हो आदि तीर्थंकर।

आपके गुण स्मरण द्वारा आपका करे हैं आह्वान।

आपके गुणों की प्राप्ति हेतु करे हैं स्थापना सन्निधिकरण।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवोषट् आह्वाननम्।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

**1. उदक-(आत्मिक विशुद्धि व जन्म जरा मृत्यु विनाश के प्रतीक)**

निर्मल आपके गुण-गण स्मरण से, निर्मल होता है मेरा मन।

आप तो विरागी समताधारी, आप में निहित अनंत गुण।

तथापि निर्मल प्रासुक जल से, आपका मैं करूँ पूजन।

मेरे भी जन्म-जरा नाश होकर, मुझे मिले तव गुण-गण।। आदिनाथ...

**ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय! जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।**

**2. चन्दन-(संक्लेश ताप विनाश व भाव आह्लाद के प्रतीक)**

आत्मस्थित हो ! सर्वगत हो ! सर्वांग सुंदर मलातीत हो।

अनंत ज्ञान दर्शन सुख वीर्यमय दोषातीत व परिमल हो।

तव गुण प्राप्ति हेतु चंदन अर्पित तव चरणों में हो।

तव गुण प्राप्ति से मम संसार ताप सभी विनाश हो।। आदिनाथ...

**ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय! भवतापविनाशनाय चन्दनं...**

**3. अक्षत-(संसार उत्पादक कर्मनाशक व अक्षयपद के प्रतीक)**

अक्षय अनंत आत्मोत्थ वैभव सम्पन्न आप हो।
तीन लोक तीन काल के संसारी जीवों से अनंत सुखी हो।
आत्मिक सुख का ही करते आप भोगोपभोग हो।
अखंडित तंदुल से पूजूँ तव गुण मुझे प्राप्त हो।। आदिनाथ...

**ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय! अक्षयपदप्राप्ताय अक्षतम्...**

**4. सुमन (पुष्प)-(ब्रह्मभाव विकास व ज्ञानानंद रस के प्रतीक)**

सुवासित सुमन पूजन से, पाऊँ मैं सु-मन प्रभु।
इस हेतु कमलादि कुसुम से, पूजूँ आपको हे ! विभु।
निर्मल विकसित प्राप्त हो, प्रभु ! मम आत्मिक गुण।
इस हेतु प्राप्त हो तव आध्यात्मिक अनंत गुण।। आदिनाथ...

**ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय! कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं...**

**5. नैवेद्य-(क्षुधा रोग विनाश के प्रतीक)**

मधुर रसभरीत सुगंधित, प्रासुक नैवेद्य से मैं पूजूँ।
अनादि क्षुधारोग नाशन हेतु, लाडू-पेड़ा से मैं पूजूँ।
आप तो अनंत ज्ञानानंद से तृप्त, क्षुधादि दोष रहित हो।
नैवेद्य पूजा फल से मुझे, ज्ञानानंद की प्राप्ति हो।। आदिनाथ...

**ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय! क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...**

**6. दीपक-(अज्ञान मोहान्धकार नाश के प्रतीक)**

लोकालोक प्रकाशी प्रभुवर, आप तो अद्वितीय (अलौकिक) सूरज हो।
सुदीप से पूजन करूँ, आप सम ज्ञान मुझे प्राप्त हो।
आत्मज्ञान से मोह अज्ञान नाशूँ, आप सम ज्ञान सूरज बनूँ।
इस हेतु घृतक दीपक से प्रभुवर, आपकी मैं पूजा रचूँ।। आदिनाथ...

**ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय! मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...**

**7. धूप-(अष्टकर्म नाश व अष्टगुण प्राप्ति के प्रतीक)**

अगर चंदन सुगंधित धूप से, सर्वज्ञ देव की पूजा करूँ।
अष्ट कर्म के दहन प्रतीक भूत, सुगंधित धूप से पूजन करूँ।
दुर्गुण नाश से सुगुण फैले, ऐसी भावना मैं भाता हूँ।
स्व-पर-विश्व के दुर्गुण नाश हो, ऐसी भावना मैं भाता हूँ।। आदिनाथ...

**ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय! अष्टकर्मदहनाय धूपं...**

**8. फल-(मोक्षफल प्राप्ति के प्रतीक)**

अनंतज्ञान दर्शन सुख वीर्यमय, आपने पाया धर्म का फल।
उस फल को प्राप्त करने हेतु, मैं अर्पण करूँ सुरस फल।
आम्र नारिकेल कदली आदि, अर्पण कर पूजन करूँ।
आपके सम मोक्षफल पाने हेतु भावपूर्वक अर्चन करूँ।। आदिनाथ...

**ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय! महामोक्षफलप्राप्ताय फलं...**

**9. अर्घ्य-(अनर्घ्य गुण समूह प्राप्ति के प्रतीक)**

इन्द्र चक्रवर्ती विद्याधर तक जिस पदवी को न पा सके।
तीन लोक की भौतिक संपत्ति द्वारा जिसका मूल्य न हो सके।
ऐसे अलौकिक आत्मवैभव पाकर तीन लोक के विभु बने।
ऐसे अनर्घ्यपद प्राप्ति हेतु तव चरणों में अर्घ्य अर्पित करे।। आदिनाथ...

**ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय! अनर्घ्यपदप्राप्ताय अर्घ्यं...**

## पंचकल्याणक अर्घ्य

1. **गर्भकल्याणक-**

अपुनर्भव प्राप्ति हेतु आपका अंतिम गर्भ हुआ मंगलकारी।
माता मरूदेवी के गर्भ में आपका अवतरण विश्व मंगलकारी।
आषाढ़ कृष्ण द्वितीया तिथि इस हेतु बनी मंगलकारी।
मंगलमय के पूजन द्वारा मैं भी बनूँ मंगलकारी।।

**ॐ ह्रीं आषाढ़ कृष्णा द्वितीयां गर्भमंगलमंडिताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।**

2. **जन्मकल्याणक-**

जन्म जरा मृत्यु नाशन हेतु आपका हुआ अंतिम जन्म।
इसलिए तो आपका जन्म संसार तारक जन्म कल्याणक।
इस हेतु ही सुमेरु पर आपका हुआ जन्माभिषेक।
आपके गुण स्मरण द्वारा मेरा जन्म भी हो कल्याणमय।।

**ॐ ह्रीं चैत्र कृष्णा नवम्यां जन्मकल्याणक मंडिताय श्री....**

3. **तप (दीक्षा) कल्याणक-**

संसार ताप नाश हेतु, आपने त्यागा राज्य वैभव।
राग द्वेष मोह काम क्रोधादि नाशन हेतु तपा द्विविध तप।
समता शांति निस्पृहता से, किया ध्यान व अध्ययन।
साधु बनते ही आपमें प्रगट हुआ मनःपर्यय ज्ञान।।

**ॐ ह्रीं चैत्र कृष्णा नवम्यां तपकल्याणक मंडिताय श्री....**

4. **ज्ञान कल्याणक-**

आत्मविशुद्धि से क्षपक श्रेणी, आपने किया जब आरोहण।
घाती कर्मों को नाशकर के, आपने पाया अनंत ज्ञान।
समवसरण में विराजमान होकर, आपने दिया दिव्य संदेश।
सत्य-अहिंसा-अपरिग्रह, अनेकांत का दिया संदेश।।

**ॐ ह्रीं फाल्गुन कृष्णा एकादश्यां ज्ञानकल्याण मंडिताय श्री....**

5. **मोक्ष कल्याणक-**

अंत में योग निरोध करके, शैलेश अवस्था को प्राप्त हुए।
अघाती कर्म को नाश करके, लोकाग्र शिखर में निवास किये।
आप बन गये शुद्ध-बुद्ध व, अविनाशी अविकारी आनंद घन।

मैं भी आपके आदर्श अनुसरण से बन जाऊँ आपके सम।।

**ॐ ह्रीं माघ कृष्णा चतुर्दश्यां मोक्षकल्याण मंडिताय श्री....**

## जयमाला

### (आध्यात्मिक विजय के लिए पूज्यों के गुणानुस्मरण-गुणानुवाद-गुणानुकरण)

**(चाल : चाँद सी मेहबूबा.....)**

आदि ब्रह्मा आदिश्वर श्री आदिनाथ महान् हो।
आदिराज आदिगुरु वृषध्वज नमो नमः।। (टेक)
भोगभूमि का जब अंत आया, कल्पवृक्ष सब नष्ट हुये।
क्षुधित प्रजा को प्रभु ने सिखाया, कृषि के द्वारा जीवन बचाया-2
आत्मरक्षार्थे असि सिखाया, लेखन पठनार्थे मसि बताया।।1।। आदिराज...
भौतिक विनिमय हेतु वाणिज्य, गृहोपकरण शिल्प बताये।
परस्पर सहयोग सेवा बताया, इसलिये आदि ब्रह्मा कहलाये-2
आपने ब्राह्मी लिपि भी सिखायी, जिसका नाम ब्राह्मी लिपि हुआ।।2।। आदिराज...
सुंदरी पुत्री को अंक सिखाया, इसलिये आदिगुरु (भी) कहलाये।
राजा बनकर शासन किया, राजनीति न्याय आप सिखाये-2
तुम्हारा पुत्र भरत हुआ, प्रथम चक्री विख्यात हुआ।।3।। आदिराज...
उनसे आर्य देश हुआ भारत, शस्यश्यामला हमारा देश।
तुम्हारा पुत्र बाहुबली हुआ, प्रथम कामदेव शक्तिशाली हुआ-2
अर्ककीर्ति अन्य पुत्र भी हुये, सबको विभिन्न विद्या सिखाये।।4।। आदिराज...
आपको जब वैराग्य हुआ, सब पुत्रों को राज्य दिया।
जिससे देशों का उदय हुआ, पुत्रों के नाम से वंश चला-2
इक्षुरस प्रयोग तुमने सिखाया, इसलिये इक्ष्वाकु वंश कहाया।।5।। आदिराज...
सूर्य चन्द्रादि वंश पुत्रों से, वंशों का प्रारंभ इनसे हुआ।

दीक्षा प्रयाण से प्रयाग हुआ, अक्षय वट दीक्षावृक्ष बना-2
आत्मध्यान में लीन होने से, जटाजूट से भूषित हुये।।6।। आदिराज...
पुरिमताल में हुआ केवलज्ञान, अशोक है बोधि वृक्ष का नाम।
देवों ने समवसरण बनवाया, गंधकुटी मध्य में बनवाया-2
सर्वभाषामयी दिव्य ध्वनि से, प्रभु ने ज्ञान विज्ञान संबोधा।।7।। आदिराज...
आत्मविकास का मार्ग बताया, वैश्विक तत्त्व का रहस्य बताया।
कैलाश से मोक्षधाम पधारे, सच्चिदानंद है रूप तिहारे-2
सत्य शिव सुंदर अविकारी बन, अनंत वैभव अविनाशी हुये।।8।। आदिराज...
आदि अणु प्रकृति ज्ञानी, शिक्षा संस्कृति के आदि विज्ञानी।
सापेक्ष सिद्धांत के आदि ज्ञाता, न्याय राजनीति के आद्य प्रणेता-2
आधुनिक या प्राचीन ज्ञान, देश-विदेशों के संपूर्ण ज्ञाता।।9।। आदिराज...
रीति रिवाज समाज ज्ञान, समस्त ज्ञाता आदि भगवान्।
'कनकनन्दी' है भक्त तुम्हारा, तुम्हारा आदर्श हमको प्यारा-2
तुम्हारी भक्ति से तुम सम बनूँ, इसी हेतु से भक्ति मैं करूँ।।10।। आदिराज...

**आदिराज...**

**आदि ब्रह्मा...**

**ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय जयमाला महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।**

# अजितनाथ भगवान् की पूजा

**-आचार्य कनकनन्दी**

**(चाल : क्या मिलिये.....)**

**आह्वान : (भावनात्मक रूप से पूज्यों का सान्निध्य प्राप्त करना)**

अजितनाथ हे ! कर्म जेता जिससे बने (आप) विश्वजयी।
आत्मजयी होने से आपश्री बन गये विश्व के विजयी।
आपके पूजन ध्यान आचरण से मैं भी बनूँ आत्मजयी।
आत्म विजयी है विश्वविजयी, अन्य सभी जीव पराजयी।।
प्रभु की जय...जय...जय...

**मंत्र-** ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ तीर्थंकर! अत्र अवतर अवतर संवोषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ तीर्थंकर! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ तीर्थंकर! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

**1. पय-(आत्मिक विशुद्धि व जन्म जरा मृत्यु विनाश के प्रतीक)**

प्रासुक अम्बु से आपका पूजन करूँ मैं आत्मिक शुद्धि हेतु।
रोग-शोक-दुःख-ताप नाश हेतु, आपका पूजन मोक्ष हेतु।।

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ तीर्थंकराय आत्म/(भाव) विशुद्धि करणाय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।**

**2. मंगल्य-(संक्लेश ताप विनाश व भाव आह्लाद के प्रतीक)**

सुगंधित मंगल्य से आपके पूजन से हो (मेरा) भाव मंगलमय।
मंगल से भी मंगल है, आपके सम मैं बनूँ मंगलमय।।

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ तीर्थंकराय संक्लेश ताप विनाशनाय भाव आह्लादित करणाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।**

**3. तंदुल-(संसार उत्पादक कर्मनाशक व अक्षयपद के प्रतीक)**

अक्षय अनुपम पद पाया, आपने आत्मविजयी बनकर।

अक्षत से पूजन करके मैं भी पाऊँ तव सम मोक्षपुर।।

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ तीर्थंकराय संसार उत्पादक कर्म विनाशनाय एवं अक्षय ज्ञानानंद पद प्राप्ताय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।**

**4. पुहुप-(ब्रह्मभाव विकास व ज्ञानानंद रस के प्रतीक)**

भ्रमर मधुप गुंजायमान उत्पल से पूजूँ आपके पदकमल।

आपके सम बनूँ मैं निर्लिप्त, अतएव यजूँ मैं पदयुगल।।

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ तीर्थंकराय ब्रह्मभाव विकासनाय ज्ञानानंद रस प्राप्ताय सुमन (पुष्पं) निर्वपामीति स्वाहा।**

**5. चरु-(क्षुधा रोग विनाश के प्रतीक)**

अनंत आत्मोत्थ सुख से तृप्त, आप हो प्रभु अजितनाथ।

मैं भी तव सम तृप्त बनने हेतु नैवेद्य से पूजूँ हे! विश्वनाथ।।

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ तीर्थंकराय मोह-वेदनीय-अंतराय नाश सहित तृष्णा क्षुधा विनाशनाय नैवद्यं निर्वपामीति स्वाहा।**

**6. दीपक-(अज्ञान मोहान्धकार विनाश के प्रतीक)**

अनंत आत्मिक ज्योति से आपने प्रकाशित किया लोक-अलोक।

प्रासुक घृत दीपक से पूजन कर आप सम पाऊँ मैं आत्म-अलोक।।

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ तीर्थंकराय ध्यान-अध्ययन-ज्ञानेन अज्ञान मोहान्धकार विनाशनाय दीपकं निर्वपामीति स्वाहा।**

**7. धूप-(अष्टकर्म नाश व अष्टगुण प्राप्ति के प्रतीक)**

धूप से पूजन आपका करके, मैं जलाऊँ मेरे कर्मकाष्ठ।

आप सम मैं भी पाऊँ स्वशुद्ध आत्मा के पद उत्कृष्ट।।

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ तीर्थंकराय अष्टकर्म विनाशनाय आध्यात्मिक गुण प्राप्ताय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।**

**8. फल-(मोक्षफल प्राप्ति के प्रतीक)**

फल मनोहर रसाल नारिकेल से, पूजा करूँ मैं तव पद युगल।
आपके सम आत्मिक फल पाऊँ नहीं चाहूँ मैं सांसारिक फल।।

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ तीर्थंकराय ज्ञानानंद रस भरित मोक्ष फल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।**

**9. अर्घ्य-(अनर्घ्य गुण समूह प्राप्ति के प्रतीक)**

अष्ट द्रव्यों का अर्घ्य चढ़ाकर, आपको पूजूँ हे! अजितनाथ।
अष्ट कर्मों को नष्टकर के मैं भी पाऊँ अनर्घ्य पद।।

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ तीर्थंकराय अनंत अनर्घ्यगुणप्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।**

## पंचकल्याणक अर्घ्य

**1. गर्भकल्याणक-**

अनुत्तर स्वर्ग से च्युत होकर, माता विजयसेना के गर्भ में आये।
पिता जितशत्रु राजा प्रसन्न हुए, सेवा हेतु देवियाँ अयोध्या पधारे।।

**मंत्र- ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णामवस्यायां श्री अजितनाथजिन गर्भकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।**

**2. जन्मकल्याणक-**

मंगलमय का हुआ जन्म अयोध्या में, देव भी महोत्सव मनाये।
सुमेरु पर किया जन्मकल्याणक, तीन लोक में आनंद छाये।।

**मंत्र- ॐ ह्रीं माघशुक्लादशम्यां श्री अजितनाथजिन जन्मकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।**

**3. तप कल्याणक-**

आपको हुआ वैराग्य अलौकिक, उल्कापात देखकर संसार भोगों से।

सहेतुक वन में एक हजार जन सह श्रमण बने आत्महित में।।

**मंत्र- ॐ ह्रीं माघशुक्लानवम्यां श्री अजितनाथजिन तपकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।**

**4. ज्ञान कल्याणक-**

सहेतुक वन में हुआ केवलज्ञान, लोकालोक प्रकाशक ज्ञान।
समवसरण में खिरी दिव्य ध्वनि, सर्वभाषामयी अलौकिक वचन।।

**मंत्र- ॐ ह्रीं पौषशुक्लाएकादश्यां श्री अजितनाथजिन ज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।**

**5. मोक्ष कल्याणक-**

शेष में योग निरोधकर एक सहस्त्रमुनि सह पाये निर्वाण।
शुद्ध-बुद्ध व आनंद बनकर आत्मा में लीन काल अनंत प्रमाण।।

**मंत्र- ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लापंचम्यां श्री अजितनाथजिन मोक्षकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।**

## जयमाला

**(चाल : भातुकली.....)**

अजितनाथ हे ! जितशत्रु, अंतरंग शत्रु के हनन कर्त्ता।
गर्भ से पूर्व ही आप थे प्रभु अनंतानुबंधी (व) मोह हनन कर्त्ता।।
गर्भ में ही थे आप सम्यग्दृष्टि तीन सम्यक् ज्ञान के धारी।
जन्म से ही थे दश अतिशय युक्त, असामान्य शरीर के धारी।।
(1) श्वेद रहित था आपका शरीर (2) मल-मूत्र से भी था रहित।
(3) दूध के समान श्वेत रक्त (4) वज्रवृषभ नाराच संहनन युक्त।।
(5) शरीर संरचना थी प्रभु समचतुरस्त्र संस्थान समान।
(6) विश्व सुंदर थे आप प्रभु, अनुपम रूप लावण्य सम्पन्न।।
(7) नवीन चंपक सम उत्तम गंध (8) सहस्त्र अष्टोत्तर शुभ लक्षण (पूर्ण)।

(9) अनंत बलवीर्य सम्पन्न (10) हित-मित-प्रिय वचन।।
अष्टमद व सप्तभय तथा सप्त व्यसन से भी रहित।
आपका शिशु काल भी था, शांत व सौम्य सहित।।
अष्ट वर्ष (व) अंतमुहूर्त के बाद, अप्रत्याख्यान चार (के) हनन कर्त्ता।
जिससे आप बने श्रावक, पंचाणुव्रतादि पालन कर्त्ता।।
प्रत्याख्यान चतुष्क जयकर आप, बन गए परम वैरागी।
संसार-शरीर-भोगों से विरक्त, बने ध्यानी ज्ञानी वैरागी।।
आत्मविशुद्धि की शक्ति द्वारा, घाती कर्म किया विनाश।
अनंतज्ञान दर्शन सुख वीर्य पाकर, बन गये आप विश्वेश।।
अंत में अघाती को नाश करके, बने परम शुद्ध-बुद्ध-आनंद।
अक्षय अनंत आत्म वैभव, युक्त बने मुक्ति के कांत।।
अतएव आप विश्व विजयी हो, आत्मविजयी भी आप।
आपके आदर्श पथ पर चलकर, 'कनक' चाहे तव स्वरूप।।

सीपुर, दिनांक 01.04.2017, रात्रि 10.52

# संभवनाथ भगवान् की पूजा

## (पूजा के आध्यात्मिक वैज्ञानिक सकारण)

-आचार्य कनकनन्दी

(चाल : चाँद सी मेहबूबा....., बाबुल की दुआएँ....., आत्मशक्ति.....)

**आह्वान : (भावनात्मक रूप से पूज्यों का सान्निध्य प्राप्त करना)**

असंभव को भी संभव किया जो मिथ्यात्व दशा में असंभव था।
रत्नत्रय की साधना द्वारा/(से) संभव किया जो अनादि संसार में नहीं हुआ था।।
मैं भी आपके सम संभव करने हेतु आपका पूजन करूँ भाव से।
मैं भी रत्नत्रय साधना द्वारा आप सम बनूँ अतः यजूँ भाव से।। (ध्रुव)

**मंत्र-** ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवोषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

**1. पय-(आत्मिक विशुद्धि व जन्म जरा मृत्यु विनाश के प्रतीक)**

आपका पूजन तोय से करके, कर्मकलंक धोऊँ सभी मैं।
तोय (है) प्रतीक प्रक्षालन हेतु कर्म प्रक्षालन हेतु पूजूँ भाव से।।...मैं भी आपके

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय! आत्म/(भाव) विशुद्धि करणाय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।**

**2. मलय-(संक्लेश ताप विनाश व भाव आह्लाद के प्रतीक)**

सुगंधित चंदन घिसकर संभवनाथ के चरणों में चढ़ाऊँ।
संसारताप मेरा शांत हो, ऐसी भावना मैं भाता हूँ।।...मैं भी आपके

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय! संक्लेश ताप विनाशनाय भाव आह्लादित करणाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।**

**3. तंदुल-(संसार उत्पादक कर्मनाशक व अक्षयपद के प्रतीक)**

अखंडित तंदुल से (मैं) पूजन कर, अक्षय पद तव सम मैं पाऊँ।

सांसारिक पद तो भयप्रद है, अभयप्रद पद तव सम पाऊँ।।...मैं भी आपके

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय! संसार उत्पादक कर्म विनाशनाय एवं ज्ञानानंद पद प्राप्ताय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।**

**4. पुष्प (सुमन)-(ब्रह्मभाव विकास व ज्ञानानंद रस के प्रतीक)**

पुष्प से यथा फल संभव होता, पुष्प पूजन से आप सम बनूँ।
पुष्प प्रतीक भक्ति सुमन का, पद्म चढ़ाकर विकसित बनूँ।।...मैं भी आपके

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय! ब्रह्मभाव विकासनाय ज्ञानानंद रस प्राप्ताय सुमन (पुष्पं) निर्वपामीति स्वाहा।**

**5. नैवेद्य-(क्षुधा रोग विनाश के प्रतीक)**

क्षुधाशांत हेतु यथा नैवेद्य निमित्त, तव भक्ति भी मुक्ति निमित्त।
निमित्त-नैमित्तिक व प्रतीक (प्राकृत) स्वरूप से आपको पूजूँ।।...मैं भी आपके

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय! मोह-वेदनीय-अंतराय नाश सहित तृष्णा क्षुधा विनाशनाय नैवद्य निर्वपामीति स्वाहा।**

**6. दीपक-(अज्ञान मोहान्धकार विनाश के प्रतीक)**

दिव्य ज्योति प्राप्ति हेतु, तव पूजन दीप ज्योति से।
दिव्य ज्योति को पाकर मैं आपका, करूँ वंदन शुभ-भक्ति से।।...मैं भी आपके

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय! ध्यान-अध्ययन-ज्ञानेन अज्ञान मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।**

**7. धूप-(अष्टकर्म नाश व अष्टगुण प्राप्ति के प्रतीक)**

अग्नि में धूप खेने से यथा, सुगंधित धुआँ होता संभव।
संभवनाथ के पथ पर चलने से, कर्मक्षय से मोक्ष होता संभव।।...मैं भी आपके

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय! अष्टकर्म विनाशनाय आध्यात्मिक गुण प्राप्ताय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।**

**8. फल-(मोक्षफल प्राप्ति के प्रतीक)**

बीज की (अंतिम) परिणति यथा फल होता, धर्म का तथा होता मोक्ष।

रसाल नारिकेल कदली से पूजकर, अंतिम फल पाऊँ मोक्ष तक।।...मैं भी आपके

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय! ज्ञानानंद रस भरित मोक्ष फल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।**

**9. अर्घ्य-(अनर्घ्य गुण समूह प्राप्ति के प्रतीक)**

शक्ति-भक्ति से संभव अर्घ्य से, पूजाकर संभवनाथ गुण गाऊँ।

मेरी संभावित शक्ति जागृत हो, इस हेतु आपका ज्ञान-ध्यान करूँ।।...मैं भी आपके

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय! अनंत अनर्घ्यगुणप्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।**

## पंचकल्याणक अर्घ्य

**1. गर्भकल्याणक-**

गर्भ में आपका जब आगमन हुआ, रत्न वर्षाकर हर्षाए।

माता सुषेणा पिता दृढ़रत सहित, मानव-पशु-पक्षी भी हर्षाए।।...मैं भी आपके

**मंत्र- ॐ ह्रीं फाल्गुनशुक्लाष्टम्यां गर्भकल्याणकप्राप्ताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।**

**2. जन्मकल्याणक-**

जन्म कल्याणक हुआ आपका, जन्म-जरा-मृत्यु विनाश हेतु।

देवों ने किया जन्माभिषेक, स्वयं को पावन बनाने हेतु।।...मैं भी आपके

**मंत्र- ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्लापूर्णिमायां जन्मकल्याणकप्राप्ताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।**

**3. तप कल्याणक-**

मेघों के विनाश देखकर, आपको हुआ वैराग्य महान्।

एक सहस्र राजाओं के साथ, सहेतुक वन में बने श्रमण।।...मैं भी आपके

**मंत्र- ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्लापूर्णिमायां दीक्षाकल्याणकप्राप्ताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।**

4. **केवलज्ञान कल्याणक-**

आपको हुआ केवलज्ञान सहेतुक वन में नाशकर घातीकर्म।
समवसरण में दिया दिव्य संदेश, सर्वजीव हिताय सर्वजीव सुखाय।।...मैं भी

**मंत्र- ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णाचतुर्थ्यां केवलज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।**

5. **मोक्ष कल्याणक-**

शेष अघाती को भी घात करके, आपने पाया पद निर्वाण।
एक सहस्त्र मुनि भी आपके साथ, पाये पद परिनिर्वाण।।...मैं भी आपके

**मंत्र- ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लाषष्ठयां मोक्षकल्याणकप्राप्ताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।**

## जयमाला

### (आध्यात्मिक विजय के लिए पूज्य संभवनाथ प्रभु के गुणानुस्मरण-गुणानुवाद-गुणानुकरण)

**(चाल : जय हनुमान....., आत्मशक्ति....., क्या मिलिये.....)**

सार्थक नाम आपका संभवनाथ है, जो संभव था किया आपने।
अनंतानंत गुणों को प्राप्त किया, जो गुण सुप्त थे आपमें।।
पंचलब्धियों को प्राप्तकर आपने, पाया है आत्मविश्वास अनंत।
द्रव्य-तत्त्व व पदार्थ सहित, स्व-शुद्धात्मा (द्रव्य) का भी हुआ सम्यक्त्व।।
इससे आपका ज्ञान हुआ सुज्ञान, चारित्र भी आपका हुआ सम्यक्।
तीनों के संयोग से बना मोक्षमार्ग, मिथ्यात्व दशा में जो था असंभव।।
मोक्षमार्ग पथ पे चलकर श्रमण बनकर आपने की आत्म-साधना।
इसके बल पर ऋद्धियाँ हुई प्रकट, पूर्व में थी आपको अनुपलब्ध।।
समता शांति व आत्मविशुद्धि से, आपने किया ध्यान-अध्ययन।
मौन एकांत व निस्पृह भाव से, ख्याति पूजा लाभ से होकर शून्य।।

(जिससे) हुई आपकी आत्मिक शक्ति जागृत, जिससे आप चढ़े क्षपक श्रेणी।
घाती नाश से सर्वज्ञ बनकर, समवसरण में खिरी दिव्य ध्वनि।।
देवों ने रचा था समवसरण जिसमें, असंख्यात जीव सुनते थे दिव्य ध्वनि।
बारह कोठाओं में मनुष्य-देव व पशु-पक्षी सुनते थे (आपकी) दिव्य वाणी।।
आपने बताया हर भव्य जीव आत्मविकास से बन सकते हैं भगवान्।
हर जीव में होती अनंत संभावनायें, प्रकट करने हेतु हो प्रयत्न।।
छहों द्रव्यों में होती अनंत शक्तियाँ, हर द्रव्य है अनादि अनंत।
जीव-पुद्गल होते अशुद्ध-शुद्ध, अन्य द्रव्य होते शाश्वत शुद्ध।।
शुद्ध द्रव्यों में अनंत शक्तियाँ प्रकट, अशुद्ध में होती सुप्त व गुप्त।
जीव की शुद्ध होने की प्रक्रिया को ही, आपने कहा है यथार्थ धर्म।।
इससे विपरीत होता है अधर्म, जिससे जीव होते है अशुद्ध।
राग द्वेष मोह काम क्रोध लोभ ईर्ष्या, घृणा तृष्णा से जीव अशुद्ध।।
संभावनाओं को आप किया संभव, उस हेतु आप दिया दिव्य संदेश।
स्व-संभावनाओं को संभाव्य करने हेतु, 'कनक' को मान्य आपके संदेश
/(कनकनंदी माने आपके आदर्श)।।

**ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वापमीति स्वाहा।**

सीपुर, दिनांक 02.04.2017, रात्रि 1.07

# अभिनंदननाथ भगवान् की पूजा

## (पूजा के आध्यात्मिक वैज्ञानिक सकारण)

**-आचार्य कनकनन्दी**

**(चाल : चाँद सी मेहबूबा....., तुम दिल की धड़कन.....)**

**आह्वान : (भावनात्मक रूप से पूज्यों का सान्निध्य प्राप्त करना)**

अभिनंदन हे ! अभिनंदन हे ! अभिनंदननाथ भगवान् का।
जिसने किया अभिवंदनीय काम, स्व-पर-विश्वकल्याण का।।
आपका वंदन मैं भी करके, आपके सम (मैं) भी गुण पाऊँ।
आपका वंदन है गुणाभिनंदन, अतएव आपका गुण गाऊँ।। (ध्रुव)

**मंत्र-** ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवोषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

**1. अंभ-(आत्मिक विशुद्धि व जन्म जरा मृत्यु विनाश के प्रतीक)**

प्रासुक अम्बु से पूजन करके, मेरे कर्म को मैं धौत करूँ।
जिससे मैं भी आपके सम गुण पाकर अभिनंदनीय बनूँ।।...आपका

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय! आत्म/(भाव) विशुद्धि करणाय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।**

**2. चंदन-(संक्लेश ताप विनाश व भाव आह्लाद के प्रतीक)**

चंदन से आपका अर्चन करके, शांत व शीतल गुण पाऊँ।
संसार ताप नाशन हेतु आपके, अभिनंदनीय गुणों को ध्याऊँ।।...आपका

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय! संक्लेश ताप विनाशनाय भाव आह्लादित करणाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।**

**3. अक्षत-(संसार उत्पादक कर्मनाशक व अक्षयपद के प्रतीक)**

अक्षय अनंत गुण पाकर आप, अभिनंदननाथ बन गये।

अक्षत से यजन करके मेरे, तन-मन-आत्मा पावन भये/(हुए)।।...आपका

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय! संसार उत्पादक कर्म विनाशनाय एवं ज्ञानानंद पद प्राप्ताय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।**

**4. कुसुम (पुष्प)-(ब्रह्मभाव विकास व ज्ञानानंद रस के प्रतीक)**

सुमन सुगंधित मलिका-गुलाब से, आपका अभिनंदन करूँ।

मेरे आत्मिक गुण भी विकसित हों, ऐसी भावना से (मैं) पूजन करूँ।।...आपका

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय! ब्रह्मभाव विकासनाय ज्ञानानंद रस प्राप्ताय सुमन (पुष्पं) निर्वपामीति स्वाहा।**

**5. नैवेद्य-(क्षुधा रोग विनाश के प्रतीक)**

नैवेद्य सुमधुर प्रासुक मिष्टान्न से, मैं आपका पूजन करूँ।

क्षुधारोग सहकर्म नाशकर, आपके सम गुणगण वरूँ।।...आपका

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय! मोह-वेदनीय-अंतराय नाश सहित तृष्णा क्षुधा विनाशनाय नैवद्यं निर्वपामीति स्वाहा।**

**6. दीपक-(अज्ञान मोहान्धकार विनाश के प्रतीक)**

गोघृत दीपक से पूजन करके, अज्ञान तमिस्त्र को मैं नशाऊँ।

आत्मिक ज्योति प्रकट करके, शुद्ध-बुद्ध मैं हो जाऊँ।।...आपका

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय! ध्यान-अध्ययन-ज्ञानेन अज्ञान मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।**

**7. धूप-(अष्टकर्म नाश व अष्टगुण प्राप्ति के प्रतीक)**

धूप सुगंधित अनल में खेकर, आपका पूजन मैं करूँ।

अष्टकर्म के काष्ठ जलाकर, आपके सम (मैं) गुणगण वरूँ।।...आपका

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय! अष्टकर्म विनाशनाय आध्यात्मिक गुण प्राप्ताय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।**

**8. फल-(मोक्षफल प्राप्ति के प्रतीक)**

धर्म का फल आपने पाया, अक्षय अनंत सुखमय।

प्रासुक रसाल फलों से यजन कर, मैं भी बन जाऊँ सुखमय।।...आपका

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय! ज्ञानानंद रस भरित मोक्ष फल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।**

**9. अर्घ्य-(अनर्घ्य गुण समूह प्राप्ति के प्रतीक)**

अनर्घ्य पद पाकर आप, बन गये अभिनन्दननाथ।

अर्घ्य से आपका पूजन करके, मैं भी बन जाऊँ सनाथ।।....आपका

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय! अनंत अनर्घ्य गुण प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।**

## पंचकल्याणक अर्घ्य

1. **गर्भकल्याणक-**

अनुत्तर विमान से होकर च्युत माता सिद्धार्थी के गर्भ में आये।

अभिनंदनीय अंतिम गर्भ स्वर्ग के देव भी मंगल गाये।।....आपका

**मंत्र- ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लाषष्ठयां श्री अभिनन्दननाथजिन गर्भकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।**

2. **जन्मकल्याणक-**

विश्व मंगलकारी आपका जन्म, अभिनंदनीय आपका पुण्य।

सुमेरु पर हुआ जन्माभिषेक, प्रकृति तक में आनंद छाये।।....आपका

**मंत्र- ॐ ह्रीं माघशुक्लाद्वादश्यां श्री अभिनन्दननाथजिन जन्मकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।**

3. **तप कल्याणक-**

गंधर्वनगर नाश देखकर आपको, वैराग्य भाव उत्पन्न हुआ।

एक सहस्त्रजनों के साथ श्रमण-पद को आपने ग्रहण किया।।....आपका

**मंत्र- ॐ ह्रीं माघशुक्लाद्वादश्यां श्री अभिनन्दननाथजिन दीक्षाकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।**

**4. केवलज्ञान कल्याणक-**

अठारह वर्षों की आत्मसाधना से, आपको केवलज्ञान उत्पन्न हुआ।
विश्व को दिव्य संदेश देकर, अभिनंदनीय काम किया।।....आपका

**मंत्र- ॐ ह्रीं पौषशुक्लाचतुर्दश्यां श्री अभिनन्दननाथजिन केवलज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।**

**5. मोक्ष कल्याणक-**

अठारह वर्ष तक दिव्य देशना देकर, एक मास का योग निरोध किया।
एक सहस्त्र मुनियों के साथ, परिनिर्वाण को आपने पाया।।....आपका

**मंत्र- ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लाषष्ठयां श्री अभिनन्दननाथजिन मोक्षकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।**

## जयमाला

### (आध्यात्मिक विजय के लिए पूज्य अभिनंदननाथ प्रभु के गुणानुस्मरण, गुणानुवाद-गुणानुकरण)

**(चाल : भातुकली....., जय हनुमान....., चाँद सी महबूबा.....)**

अभिनंदनीय है आपका जन्म अभिनंदनीय है तव कर्म।
अभिनंदनीय है आपके संदेश, विश्वमंगलकारी (आपका) धर्म।।
आपका धर्म है वस्तु स्वभाव, जो हर द्रव्य का शुद्ध स्वभाव।
जीव का शुद्ध स्वभाव सच्चिदानंद, यह ही जीव का परम धर्म।।
इसे प्राप्त योग्य जो भाव-व्यवहार, वह होता है व्यवहार धर्म।
अहिंसा सत्य अचौर्य ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह आदि आत्मा के धर्म।।
उत्तम क्षमा मार्दव आर्जव शौच, संयम तप त्याग आकिंचन्य।

समता शांति व ध्यान-अध्ययन, निस्पृह निराडम्बर धैर्य धर्म।।
मैत्री प्रमोद कारुण्य माध्यस्थ भाव सत्त्व गुणी दुःखी विपरीत से।
सर्वजीव सुखकर हितकर धर्म, सभी जीव को चैतन्य कहा।।
अनेकान्तमय विश्व सिद्धांत कहा अन्त्योदय से सर्वोदय तक कहा।।
समस्त ज्ञान-विज्ञान बताया, सात सौ अठारहमयी आपकी गीरा।
'परस्परो उपग्रहो जीव' बताया, दया दान सेवा परोपकार बताया।।
'सादा जीवन उच्च विचार कहा', 'जीना है तो जीने दो' बताया।
अणु से लेकर ब्रह्माण्ड का ज्ञान, आत्मा से परमात्मा का ज्ञान।।
संख्या से लेकर अनंत ज्ञान सत्य, असत्य परिज्ञानमय सुज्ञान।
संकीर्णता रूढ़ि अंधविश्वास, पक्षपातपूर्ण वर्चस्ववाद।।
ढोंग-पाखण्ड बाह्य आडम्बर, त्याग से होता अनेकांतवाद।
आत्मविश्वास युक्त ज्ञान चारित्रमय, होते है जीव सुधर्ममय।।
आत्मविशुद्धि से श्रेणी आरोहण होता, जिससे जीवों का विकास होता।
परम-आत्मविकास से जीव बनते हैं, शुद्ध जिसे कहते हैं सिद्ध-बुद्ध।।
यही जीवों का निज स्वभाव, यही जीवों का परम धर्म।
ऐसा आपने शोध-बोध किया, विश्व मंगलकारी उपदेश दिया।।
अतएव आप अभिनंदननाथ, 'कनकनंदी' के परम आराध्य।
**ॐ ह्रीं श्रीं अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय! आध्यात्मिक विजय हेतु जयमाला पूर्ण अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।**

सीपुर, दिनांक 04.04.2017, प्रातः 6.22

# सुमतिनाथ जिनेन्द्र की पूजा

## (पूजा के आध्यात्मिक वैज्ञानिक सकारण)

**-आचार्य कनकनन्दी**

**(चाल : आत्मशक्ति....., चाँद सी मेहबूबा....., भातुकली.....)**

**आह्वान : (भावनात्मक रूप से पूज्यों का सान्निध्य प्राप्त करना)**

सुमितनाथ हे ! सन्मति दाता, सन्मति से बने सम्यग्ज्ञान।
सम्यग्ज्ञान से बने सम्यग्चारित्र श्रद्धान सहित मोक्षमार्ग।।
ऐसा अनुपम दिया मोक्षमार्ग का ज्ञान/(दान) अतः आप हो विश्वगुरु।
आपके गुण स्मरण द्वारा, आपका मैं आह्वान करूँ।। (ध्रुव)

**मंत्र-** ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ तीर्थंकर ! अत्र अवतर अवतर संवोषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ तीर्थंकर ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ तीर्थंकर ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

**1. वारि-(आत्मिक विशुद्धि व जन्म जरा मृत्यु विनाश के प्रतीक)**

सलिल प्रासुक से पूजन करके, मेरे भाव को करूँ पावन।
भाव पावन से पूजन करके, जन्म-जरा-मृत्यु करूँ हनन।।....ऐसा अनुपम

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय! आत्म/(भाव) विशुद्धि करणाय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।**

**2. मलय-(संक्लेश ताप विनाश व भाव आह्लाद के प्रतीक)**

श्रीखण्ड सुगंधित के पूजन से, संसार ताप करूँ हनन।
समता-शांतिमय शीतलता पाऊँ, इस हेतु करूँ तव अर्चन।।...ऐसा अनुपम

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय! संक्लेश ताप विनाशनाय भाव आह्लादित करणाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।**

**3. तंदुल-(संसार उत्पादक कर्मनाशक व अक्षयपद के प्रतीक)**

अक्षयपद को पाया आपने, नाश करके अशेष कर्म।

अक्षयपद प्राप्ति हेतु अक्षत करूँ समर्पण।।...ऐसा अनुपम

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय! संसार उत्पादक कर्म विनाशनाय एवं अक्षय ज्ञानानंद पद प्राप्ताय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।**

**4. पुष्प-(ब्रह्मभाव विकास व ज्ञानानंद रस के प्रतीक)**

सुमन सुगंधित अरविन्द से पूजूँ मैं आपके पद कमल।
कामबाण मम नाश हो प्रभु! इस हेतु यजूँ पदयुगल।।...ऐसा अनुपम

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय! ब्रह्मभाव विकासनाय ज्ञानानंद रस प्राप्ताय सुमन (पुष्प) निर्वपामीति स्वाहा।**

**5. चरु-(क्षुधा रोग विनाश के प्रतीक)**

क्षुधादि अठारह दोष रहित, आप हो प्रभु सुमतिनाथ।
घृत निर्मित मिष्टान्न से पूजन करके, आपके सम पाऊँ अनंत सुख।।...ऐसा अनुपम

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय! मोह-वेदनीय-अंतराय नाश सहित तृष्णा क्षुधा विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।**

**6. दीपक-(अज्ञान मोहान्धकार विनाश के प्रतीक)**

अज्ञान मोह तिमिर नाश हेतु, दीपक से करूँ आपके पूजन।
अनंत आत्म ज्योति प्रकट हेतु, आपका करूँ मैं यजन।।...ऐसा अनुपम

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय! ध्यान-अध्ययन-ज्ञानेन अज्ञान मोहान्धकार विनाशनाय दीपकं निर्वपामीति स्वाहा।**

**7. धूप-(अष्टकर्म नाश व अष्टगुण प्राप्ति के प्रतीक)**

अष्टकर्म को नष्ट करने हेतु, धूपार्चन करूँ हे! प्रभुवर।
आप सम मैं अष्ट गुण पाऊँ, अष्टांग धूप से तव अर्चन।।...ऐसा अनुपम

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय! अष्टकर्म विनाशनाय आध्यात्मिक गुण प्राप्ताय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।**

**8. फल-(मोक्षफल प्राप्ति के प्रतीक)**

तव सम मैं भी मोक्षफल पाऊँ, इस हेतु फल से तव अर्चन।

मोक्ष ही अंतिम परमफल है, धर्म का अंतिम फल निर्वाण।।...ऐसा अनुपम

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय! ज्ञानानंद रस भरित मोक्ष फल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।**

**9. अर्घ्य-(अनर्घ्य गुण समूह प्राप्ति के प्रतीक)**

भौतिक मूल्य से परे आध्यात्मिक, मूल्य है जिसे कहते अनर्घ्य पद।
अनर्घ्य पद प्राप्ति के हेतु, अर्घ्य से पूजूँ (तव) पावन पद।।...ऐसा अनुपम

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय! अनंत अनर्घ्य गुण प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।**

# पंचकल्याणक अर्घ्य

**1. गर्भकल्याणक-**

माता मंगला मंगलकारिणी बनी, जब सुमतिनाथ गर्भ में आये।
पिता मेघरथ अति हर्षाये, सोलह स्वप्न के फल बताये।। ऐसा अनुपम...

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लाद्वितीयायां श्री सुमतिनाथजिन गर्भकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।**

**2. जन्मकल्याणक-**

जन्म कल्याणक तव पावन, विश्व मंगलकारी तव जन्म।
सुमेरु पर हुआ जन्माभिषेक, देव करे आपको नमन।। ऐसा अनुपम...

**मंत्र- ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लाएकादश्यां श्री सुमतिनाथजिन जन्मकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।**

**3. तप कल्याणक-**

जाति स्मरण से आपको हुआ, वैराग्य संसार-शरीर भोगों से।
एक सहस्त्र जनों के साथ श्रमण बने आपश्री पूर्वाह्न काल में।। ऐसा अनुपम...

**मंत्र- ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लानवम्यां श्री सुमतिनाथजिन जिनदीक्षाकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।**

**4. ज्ञान कल्याणक-**

घाती कर्मों को घात करके, आप बन गये सर्वज्ञ देव।

समवसरण में विराजमान होकर, विश्व को दिया दिव्य उपदेश।। ऐसा अनुपम...

**मंत्र- ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लाएकादश्यां श्री सुमतिनाथजिन केवलज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।**

**5. मोक्ष कल्याणक-**

शेष अघाती को निशेष करके, आप बन गये सच्चिदानंद।

आपके साथ भी एक सहस्त्र मुनि, कर्मनाश कर पाये परमानंद।। ऐसा अनुपम...

**मंत्र- ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लाएकादश्यां श्री सुमतिनाथजिन मोक्षकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।**

## जयमाला

### (आध्यात्मिक विजय के लिए पूज्य सुमतिनाथ प्रभु के गुणानुस्मरण, गुणानुवाद-गुणानुकरण)

**(चाल : क्या मिलिये....., भातुकली.....)**

सुमतिनाथ हे ! सर्वज्ञ प्रभु समवसरण में दिया दिव्य संदेश।
बारह कोठाओं के सदैव मानव पशु-पक्षी तक सुने तव उपदेश।।
समवसरण या दशयोजन प्रमाण, जिसके मध्य में आप विराजे।
एकसौ सोलह गणधर आपके, तेरह हजार केवली भी विराजे।।
अठारह हजार चारसौ थे विक्रियाधारी चौबीससौ थे पूर्वघर।
दश हजार चारसौ विपुलमति अवधिज्ञानी थे ग्यारह हजार।।
दो लाख चौवन हजार तीन सौ पचास थे शिक्षक आपके।
दश हजार चारसौ पचास वादी, तीन लाख थे श्रावक आपके।।
तीन लाख बीस हजार आर्यिका, पंचलाख थी आपकी श्राविका।
समवसरण आपका देवों ने रचा, ऐसा था पुण्यकर्म आपका।।

एकादश अतिशय हुए थे आपके, केवलज्ञान जब हुए प्रकट।
देवकृत हुए त्रयदश अतिशय, सर्वत्रऋतु के फूल-फल प्रकट।।
मंद-मंद सुखद समीर चले, वैर-विरोध सभी जीव भी छोड़े।
दर्पणतल सम रत्नमयी पृथ्वीतल, देव वर्षा करे सुगंध जल।।
सस्यशामला धरती बनी वायुकुमार देव से बहे पावन।
हर जीव हुए आनंद मग्न, कूप तालाब हुए जल से पूर्ण।।
निर्मल हुआ नभ चहुँओर सर्वजीव के हुए रोग शोक दूर।
धर्मचक्र भी होते संचार प्रभु के, चरणतल में होते कमल।।
शतयोजन में होता सुभिक्ष, समवसरण में न होता वैरत्व।
प्रभु के ऐसे अतिशय विशेष, अलौकिक आपका व्यक्तित्व।।
आपके सम व्यक्तित्व हेतु, आपका पूजन करते विभु।
आप ही सच्चे प्रवचनकर्त्ता, 'कनक' से पूज्य विश्व प्रभु।।
**ॐ ह्रीं श्रीं सुमतिनाथ जिनेन्द्राय! आध्यात्मिक विजय हेतु जयमाला पूर्ण अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।**

# पद्मप्रभ जिनेन्द्र की पूजा

## (पूजा के आध्यात्मिक वैज्ञानिक सकारण)

**-आचार्य कनकनन्दी**

**(चाल : चाँद सी मेहबूबा....., आत्मशक्ति....., मेरे सामने वाली.....)**

**आह्वान : (भावनात्मक रूप से पूज्यों का सान्निध्य प्राप्त करना)**

पद्मप्रभ के पदकमलों को धारण करूँ मैं हृदय पद्म में।
पदकमल आपके विराजमान हो जब तक रहूँ संसार में।।
आपके आदर्श चरणों से पाऊँ मैं आपका आदर्श आचरण।
जिससे मुझे मिले आप सम पद इस हेतु पूजूँ आपके चरण।। (ध्रुव)

**मंत्र-** ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवोषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

**1. सलिल-(आत्मिक विशुद्धि व जन्म जरा मृत्यु विनाश के प्रतीक)**

तोय से पूजूँ आपके पदयुगल जिससे मिटे मेरे भ्रमण।
पाप ताप भव संताप नाशन हेतु पूजूँ तवचरण।।...आपके आदर्श

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय! आत्म/(भाव) विशुद्धि करणाय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।**

**2. गंधसार-(संक्लेश ताप विनाश व भाव आह्लाद के प्रतीक)**

आपको पूजूँ मैं गंधराज से संसार ताप नाशन हेतु।
चंदन प्रतीक शीतलता का तव चिंतन आत्म शांति हेतु।।...आपके आदर्श

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय! संक्लेश ताप विनाशनाय भाव आह्लादित करणाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।**

**3. अक्षत-(संसार उत्पादक कर्मनाशक व अक्षयपद के प्रतीक)**

आपने पाया अपना पद जो, पद अक्षय गुण सहित।

मैं भी तव सम अक्षय पद हेतु, अक्षत से पूजन रत।।...आपके आदर्श

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय! संसार उत्पादक कर्म विनाशनाय एवं अक्षय ज्ञानानंद पद प्राप्ताय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।**

**4. सुमन-(ब्रह्मभाव विकास व ज्ञानानंद रस के प्रतीक)**

पद्मप्रभ के चरणपद्म को, मैं पूजूँ सरोज प्रसूनों से।
मेरा भाव भी हो कमल सम निर्मल, विकसित बनूँ शील गुणों से।।...आपके आदर्श

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय! ब्रह्मभाव विकासनाय ज्ञानानंद रस प्राप्ताय सुमनं (पुष्पं) निर्वपामीति स्वाहा।**

**5. चरु-(क्षुधा रोग विनाश के प्रतीक)**

क्षुधा सम अन्य आधि-व्याधि आदि नाशन हेतु पूजूँ चरु से।
आप तो अनंतज्ञानानंद तृप्त, तव तृप्ति प्राप्ति हेतु यजूँ मैं।।...आपके आदर्श

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय! मोह-वेदनीय-अंतराय नाश सहित तृष्णा क्षुधा विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।**

**6. दीपक-(अज्ञान मोहान्धकार विनाश के प्रतीक)**

ज्ञानावरणीय आदि घाती नाश से, आपने पाया अनंत ज्ञान।
तव सम ज्ञान प्राप्ति हेतु दीपक से करूँ आपका पूजन।।...आपके आदर्श

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय! ध्यान-अध्ययन-ज्ञानेन अज्ञान मोहान्धकार विनाशनाय दीपकं निर्वपामीति स्वाहा।**

**7. धूप-(अष्टकर्म नाश व अष्टगुण प्राप्ति के प्रतीक)**

गंधसार के धूप खेकर, आपका पूजन करूँ भाव से।
अष्टकर्म को जलाकर मैं अष्टम वसुधा पाऊँ शीघ्र से।।...आपके आदर्श

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय! अष्टकर्म विनाशनाय आध्यात्मिक गुण प्राप्ताय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।**

**8. फल-(मोक्षफल प्राप्ति के प्रतीक)**

फल सुमधुर रसाल नारिकेल नारंगी दाड़िम से करूँ पूजन।

आपके सम अद्वितीय मोक्षफल प्राप्ति हेतु आपका करूँ स्मरण।।...आपके आदर्श

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय! ज्ञानानंद रस भरित मोक्ष फल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।**

**9. अर्घ्य-( अनर्घ्य गुण समूह प्राप्ति के प्रतीक)**

अष्ट द्रव्यमय अर्घ्य से पूजूँ अष्ट गुणमय अनर्घ्य पद पाऊँ।
दुष्टाष्टकर्म को नष्ट करके, अष्टम वसुधा को मैं पाऊँ।।...आपके आदर्श

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय! अनंत अनर्घ्यगुणप्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।**

## पंचकल्याणक अर्घ्य

**1. गर्भकल्याणक-**

माता सुसीमा के गर्भ में आना, गर्भकल्याणक कहलाया।
जन्म-जरा-मृत्यु नाशन हेतु, आपका हुआ गर्भावतरण।।...आपके आदर्श

**मंत्र- ॐ ह्रीं माघकृष्णा षष्ठी दिने गर्भमंगल प्राप्ताय श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।**

**2. जन्मकल्याणक-**

जन्म लिया आपने अद्वितीय जिससे न होगा द्वितीय जन्म।
जन्म कल्याणक देवों ने मनाया सुमेरु पर कर जन्माभिषेक।।...आपके आदर्श

**मंत्र- ॐ ह्रीं कार्तिक कृष्णा त्रयोदशम्यां जन्ममंगल प्राप्ताय श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।**

**3. तप कल्याणक-**

हुआ आपको अपूर्व वैराग्य जाति स्मरण ज्ञान के कारण।
लौकांतिक देव अनुमोदना कर, बांधे सातिशय पुण्य।।...आपके आदर्श

**मंत्र- ॐ ह्रीं कार्तिक कृष्णा त्रयोदशम्यां तपोमंगल प्राप्ताय श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।**

**4. ज्ञान कल्याणक-**

धर्मध्यान परे शुक्लध्यान ध्याया अनंतचतुष्टय पाया।

विश्व उद्धार हेतु उपदेश दिया, अनेकांतमयी आपकी गिरा।।...आपके आदर्श

**मंत्र- ॐ ह्रीं चैत्र शुक्ला पूर्णिमायां केवलज्ञान प्राप्ताय श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।**

**5. मोक्ष कल्याणक-**

योग निरोध अंत में किया, सर्व कर्मनाश से मोक्ष पाया।

मैं पूजूँ आपको भक्ति से, भक्ति से मुक्ति को मुझे पाना।।...आपके आदर्श

**मंत्र- ॐ ह्रीं फाल्गुन कृष्णा चतुर्थीदिने मोक्षमंगल प्राप्ताय श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।**

## जयमाला

### (आध्यात्मिक विजय के लिए पूज्य पद्मप्रभ के गुणानुस्मरण, गुणानुवाद-गुणानुकरण)

**(चाल : आत्मशक्ति....., भातुकली....., चाँद सी महबूबा....., मेरे सामने वाली खिड़की में.....)**

भव्य पद्म के विकास कर हे ! पद्मप्रभ हे ! जिनेन्द्रवर।
आपके स्वरूप दर्शन द्वारा, सुदृष्टि बनते भव्य प्रवर।।
आपका दर्शन भक्त करके, करते वे स्व-आत्मदर्शन।
द्रव्य-गुण-पर्याय दृष्टि से, करते वे स्व-आत्मदर्शन।।
आपके स्वरूप दर्शन से व आपके दिव्य उपदेश से।
भक्त को होती श्रद्धा-प्रज्ञा, स्वयं को जाने आपकी दृष्टि से।।
भगवान् भी है जीवद्रव्य, मैं भी हूँ तो जीवद्रव्य।
इस दृष्टि से दोनों समान, भगवान् शुद्ध मैं अशुद्ध द्रव्य।।
भगवान यथा बने हैं शुद्ध, तथाहि मैं भी बनूँ शुद्ध।

इस हेतु मुझे भगवान् सम, रत्नत्रय से बनना शुद्ध।।
राग द्वेष मोह काम क्रोधादि को यथा भगवान् ने किया विनाश।
तथाहि मुझे तप-त्याग द्वारा करना है रागादि विनाश।।
अतः मैं श्रमण बनकर समता-शांति से करूँ आत्मविकास।
ख्याति पूजा व प्रसिद्धि त्यागकर, आत्मसाधना हेतु एकांतवास।।
ध्यान-अध्ययन व मनन-चिंतन से, आत्म का करूँ (मैं) परिशोधन।
अशुभ त्यागकर शुभ के द्वारा, शुद्ध भाव को करूँ वरण।।
पाप त्यागकर पुण्य प्राप्त कर, पाना है मुझे सुद्रव्यादि।
आर्त्तरौद्र पर धर्मध्यान से, करना है मुझे आत्मविशुद्धि।।
इसी भावना से पूजा करने से, सातिशय पुण्य का होता बंधन।
जिससे भक्त की भावना निश्चय से करती है फल प्रदान।।
भक्त भी भगवान् बनता क्रम से, श्रमण बनकर आत्मशुद्धि से।
ऐसी महान् उपलब्धि भक्त करता, भगवान् की भक्ति से।।
इस हेतु हे! पद्मप्रभ आपका, पूजन करूँ उक्त भाव से।
बोधि-समाधि-परिणामशुद्धि, हेतु 'कनक' वंदे भाव से।।

**ॐ ह्रीं श्रीं पद्मप्रभ जिनेन्द्राय! आध्यात्मिक विजय हेतु जयमाला पूर्ण अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।**

सीपुर, दिनांक 30.03.2017, प्रातः 5.43

# सुपार्श्वनाथ भगवान् की पूजा

## (पूजा के आध्यात्मिक वैज्ञानिक सकारण)

-आचार्य कनकनन्दी

(चाल : चाँद सी महबूबा हो....., आत्मशक्ति.....)

**आह्वान : (भावनात्मक रूप से पूज्यों का सान्निध्य प्राप्त करना)**

प्रार्थना करता हूँ सुपार्श्वनाथ से स्वसंसार पाश नाशन हेतु।
द्रव्य-भाव-नोकर्म रूपी पाश-नाश कर स्व-उपलब्धि करने हेतु।।
आपके स्वरूप चिंतन-मनन व ज्ञान-ध्यान व पूजन से।
आपके समगुण प्रकट हो प्रभु! मुझमें इस हेतु प्रार्थना आपसे।। (ध्रुव)

**मंत्र-** ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवोषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

**1. सलिल-(आत्मिक विशुद्धि व जन्म जरा मृत्यु विनाश के प्रतीक)**

आपके सम कर्म धौत करने हेतु, आपका पूजन वारि से।
राग द्वेष मोह काम क्रोध धौत हेतु आपका यजन भाव से।। आपके...

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय! आत्म/(भाव) विशुद्धि करणाय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।**

**2. पराग-(संक्लेश ताप विनाश व भाव आह्लाद के प्रतीक)**

सुगंधित चंदन से पूजन करूँ, संसार ताप नाशन हेतु।
तव सम समता-शांति से साधना करूँ, आधि-व्याधि-उपाधि नाश हेतु।। आपके...

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय! संक्लेश ताप विनाशनाय भाव आह्लादित करणाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।**

**3. तंदुल-(संसार उत्पादक कर्मनाशक व अक्षयपद के प्रतीक)**

अक्षय पद है आपका पद स्व-आत्मोपलब्धि से आपने पाया।

तव सम पद प्राप्ति के हेतु, अक्षत से पूजन कर आपको ध्याया।। आपके...

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय! संसार उत्पादक कर्म विनाशनाय एवं अक्षय ज्ञानानंद पद प्राप्ताय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।**

**4. सुमन-(ब्रह्मभाव विकास व ज्ञानानंद रस के प्रतीक)**

शतदल मल्लिका से आपका पूजन करूँ आत्म कमल विकास हेतु।
काम शर सह कर्म सभी नशे इसी भावना से पूजन मोक्ष हेतु।। आपके...

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय! ब्रह्मभाव विकासनाय ज्ञानानंद रस प्राप्ताय सुमनं (पुष्पं) निर्वपामीति स्वाहा।**

**5. चरु-(क्षुधा रोग विनाश के प्रतीक)**

अनादिकालीन क्षुधा रोग नशे, घातिया कर्म के नाश से।
चरु अर्पण कर भावना भाऊँ मेरे घाती कर्म नशे तीव्रता से।। आपके...

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय! मोह-वेदनीय-अंतराय नाश सहित तृष्णा क्षुधा विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।**

**6. दीप-(अज्ञान मोहान्धकार विनाश के प्रतीक)**

अज्ञान अंधकार नाशन हेतु, दीपक से पूजूँ प्रभुवर को।
आपसे प्रकाशित मार्ग पे चलकर, प्राप्त करूँ आत्म ज्योति को।। आपके...

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय! मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।**

**7. धूप-(अष्टकर्म नाश व अष्टगुण प्राप्ति के प्रतीक)**

धूप खेकर भावना भाऊँ मेरे, अष्ट कर्म भी हो जाये भस्म।
ध्यानाग्नि से यथा कर्म जलाये, तथा मैं करूँ स्वकर्म भस्म।। आपके...

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय! अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।**

**8. फल-(मोक्षफल प्राप्ति के प्रतीक)**

मोक्षफल प्राप्ति हेतु फल से पूजूँ, तव पूजन का फल पाऊँ मोक्ष।

मोक्षफल ही है परम फल, सांसारिक फल सभी निष्फल।। आपके...

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय! महामोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।**

**9. अर्घ्य-(अनर्घ्य गुण समूह प्राप्ति के प्रतीक)**

अनर्घ्य पद तव ही पद है, चक्री का भी पद नहीं अनर्घ्य पद।

चक्रवर्ती से भी अधिक आपका वैभव, जो आत्माधीन शाश्वत पद।। आपके...

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय!अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।**

## पंचकल्याणक अर्घ्य

**1. गर्भकल्याणक-**

जन्म हुआ तव मंगलदायक, अतः हुआ जन्मकल्याणक।

माता पृथिवीषेणा के गर्भ में आये, राजा सुप्रतिष्ठ अति हर्षित।। आपके...

**मंत्र- ॐ ह्रीं गर्भमंगलमंडिताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।**

**2. जन्मकल्याणक-**

जन्म से थे आप अतिशयकारी, दश अतिशय युक्त शरीरधारी।

हरित वर्ण था आपका शरीर, जन्माभिषेक आनंदकारी।। आपके...

**मंत्र- ॐ ह्रीं जन्ममंगलमंडिताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।**

**3. तप कल्याणक-**

सांसारिक सुख को (जब) क्षणिक जाना, सांसारिक सुख से हुए विरक्त मना।

एक सहस्र लोग भी हुए विरक्त, सहेतुक वन में बने श्रमण।। आपके...

**मंत्र- ॐ ह्रीं तपोमंगलमंडिताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।**

**4. केवलज्ञान कल्याणक-**

घातीनाश से आप बने सर्वज्ञ, जिसे कहते हैं केवलज्ञान।

समस्त विश्व का हुआ ज्ञान, तीन कालवर्ती सकलज्ञान।। आपके...

**मंत्र- ॐ ह्रीं केवलज्ञानप्राप्ताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।**

**5. मोक्ष कल्याणक-**

अंत में योग निरोध किया, समस्त, कर्मों को विनाश किया।

पाँच सौ मुनियों के साथ मोक्ष पाये, अक्षय अनंत सुख प्राप्त किया।। आपके...

**मंत्र- ॐ ह्रीं मोक्षमंगलमंडिताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।**

## जयमाला

### (आध्यात्मिक विजय के लिए पूज्य सुपार्श्वनाथ प्रभु के गुणानुस्मरण, गुणानुवाद-गुणानुकरण)

**(चाल : सायोनारा....., चाँद सी महबूबा.....)**

परम पुण्यशाली सुपार्श्वनाथ, जन्म (भी) लिया दश अतिशय साथ।

गर्भ में (भी) न हुआ माता को त्रास, महान् करुणावंत आपका चारित्र।।

खेद रहित था दिव्य शरीर, मल-मूत्र रहित निर्मल देह।

दूध सदृश था श्वेत रक्त, वज्रवृषभनाराच संहनन सहित।।

समचतुरस्र संस्थान सहित, अनुपम था रूप-लावण्य।

नवीन चंपक सम गंध युक्त, अष्टोत्तर सहस्र शुभलक्षण युक्त।।

अनंत बल-वीर्य सहित आप, हित-मित-प्रिय वचन आलाप।

केवलज्ञान के (भी) हुए अतिशय ग्यारह, एक सौ योजन पर्यंत सुभिक्ष।।

पाँच हजार धनुष ऊपर विहार, अहिंसामय होता था चहूँ ओर।

नहीं होता था आपका कवलाहार, उपसर्ग सभी हो गये थे दूर।।

चारों ओर दिखते थे आपके मुख, छाया से रहित हो गया देह।
निर्निमेष हो गई आपकी दृष्टि, सर्वविद्या ईश्वरत्व महिमावंत।।
वृद्धि रहित हो गये नख, केश, सात सौ अठारह भाषाओं में उपदेश।
तीनों संध्याओं में होता था उपदेश, नव मुहूर्त तक होता था उपदेश।।
स्व-स्व भाषाओं में समझते थे जीव, मनुष्य पशु-पक्षी तथाहित देव।
समस्त तत्त्वों के आप थे प्रवक्ता, मोक्षमार्ग के थे उपदेष्टा।।
आपको वंदन हे ! सुपार्श्वनाथ, 'कनक' सूरी को मान्य आपको संदेश।
**ॐ ह्रीं श्रीं सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय! आध्यात्मिक विजय हेतु जयमाला पूर्ण अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।**

सीपुर, दिनांक 04.04.2017, रात्रि 3.10

# चन्द्रप्रभ जिनेन्द्र की पूजा

## (पूजा के आध्यात्मिक वैज्ञानिक सकारण)

-आचार्य कनकनन्दी

(चाल : चाँद सी मेहबूबा हो....., आत्मशक्ति.....)

**आह्वान : (भावनात्मक रूप से पूज्यों का सान्निध्य प्राप्त करना)**

कोटिचन्द्र से भी अधिक प्रभा, जिनकी आध्यात्मिक ज्योति।
ऐसे चन्द्रप्रभ जिनेन्द्र की पूजा करूँ मैं पाने आत्म ज्योति।।
आप सम बनने हेतु आपका, करूँ मैं स्मरण वंदन।
आपके ज्ञान-ध्यान से पाऊँ, आप सम मैं आत्मिक गुण।। (ध्रुव)

**मंत्र-** ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवोषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

**1. नीर-(आत्मिक विशुद्धि व जन्म जरा मृत्यु विनाश के प्रतीक)**

तन धौत हेतु यथा जल चाहिए, मन धौत हेतु आपका ध्यान।
प्रासुकवारि से पूजन करके, प्रक्षालित करूँ मैं समस्त कर्म।।...आप सम

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय! आत्म/(भाव) विशुद्धि करणाय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।**

**2. श्रीखंड-(संक्लेश ताप विनाश व भाव आह्लाद के प्रतीक)**

संसार तप नाशन हेतु, मैं पूजूँ आपको गंधसार से।
मेरे तन-मन-आत्मा हो जाये, स्वस्थ्य इस हेतु पूजन भाव से।।...आप सम

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय! संक्लेश ताप विनाशनाय भाव आह्लादित करणाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।**

**3. तंदुल-(संसार उत्पादक कर्मनाशक व अक्षयपद के प्रतीक)**

आपने पाया है अक्षयपद, नाशकर सभी कर्म बंधन।

मैं भी आपकी पूजा अक्षत से करके, नाश करूँ मेरा कर्म बंधन।।...आप सम

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय! संसार उत्पादक कर्म विनाशनाय एवं अक्षय ज्ञानानंद पद प्राप्ताय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।**

**4. पुहुप (पुष्प, सुमन)-(ब्रह्मभाव विकास व ज्ञानानंद रस के प्रतीक)**

प्रासुक प्रसून सुगंधित से पूजा करूँ मैं आपके पदकमल।

काम तीर सह कर्मशर नशे, इस हेतु पूजूँ पदयुगल।।...आप सम

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय! ब्रह्मभाव विकासनाय ज्ञानानंद रस प्राप्ताय सुमनं (पुष्पं) निर्वपामीति स्वाहा।**

**5. नैवेद्य-(क्षुधा रोग विनाश के प्रतीक)**

घृत से निर्मित प्रासुक मधुर, मिष्टान्न से करूँ आपका पूजन।

क्षुधा रोग सह सभी आधि-व्याधि नशे, इस हेतु पूजूँ आपके चरण।।...आप सम

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय! मोह-वेदनीय-अंतराय नाश सहित तृष्णा क्षुधा विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।**

**6. दीप-(अज्ञान मोहान्धकार विनाश के प्रतीक)**

आप तो कोटि चन्द्र मरीचि से भी अधिक प्रकाशवान्।

आप सम ज्योत्स्ना प्राप्ति हेतु, मैं करूँ आपका पूजन।।...आप सम

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय! ध्यान-अध्ययन-ज्ञानेन अज्ञान मोहान्धकार विनाशनाय दीपकं निर्वपामीति स्वाहा।**

**7. धूप-(अष्टकर्म नाश व अष्टगुण प्राप्ति के प्रतीक)**

गंधसार का धूप खेकर आपका करूँ मैं पूजन।

मेरे भी अष्टकर्म नष्ट होकर, मुझे मिले आपका धाम।।...आप सम

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय! अष्टकर्म विनाशनाय आध्यात्मिक गुण प्राप्ताय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।**

**8. फल-(मोक्षफल प्राप्ति के प्रतीक)**

रसाल, दाड़िम, नारिकेल, कदली आदि फल से करूँ पूजन।

आपके सम मुझे भी मोक्षफल मिले, ऐसा करूँ मैं नित्य ध्यान।।...आप सम

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय! ज्ञानानंद रस भरित मोक्ष फल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।**

**9. अर्घ्य-(अनर्घ्य गुण समूह प्राप्ति के प्रतीक)**

भौतिक मूल्य से अपरिमेय आपका है अनर्घ्य पद।

अर्घ्य से पूजन कर शुभभाव भाऊँ, मुझे मिले आपका पद।।...आप सम

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय! अनंत अनर्घ्यगुणप्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।**

## पंचकल्याणक अर्घ्य

**1. गर्भकल्याणक-**

माता सुलक्षणा के गर्भ में आये, सर्वसुलक्षण युक्त प्रभुवर।

माता को किसी भी प्रकार से न हुआ, गर्भ संबंधी कुविकार।।...आप सम

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय! गर्भमंगलमंडिताय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।**

**2. जन्मकल्याणक-**

जन्म से ही दश अतिशय युक्त, विश्व मंगलकारी आपका जन्म।

आपका जन्मोत्सव देवों ने मनाया, बढ़ाने हेतु स्वपुण्य कर्म।।...आप सम

**मंत्र- ॐ ह्रीं जन्ममंगलमंडिताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...**

**3. तप कल्याणक-**

कर्मों को तपाकर क्षय करने हेतु आप बन गये परम तपस्वी।

राज्य वैभव को त्यागकर आप, आत्मवैभव हेतु बने तपस्वी।।...आप सम

**मंत्र- ॐ ह्रीं तपोमंगलमंडिताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...**

**4. ज्ञान कल्याणक-**

तपस्या द्वारा घाती कर्मों को नाशकर आप बन गये सर्वज्ञ।

दिव्य ध्वनि द्वारा आपने दिया, विश्व को मंगलकारी संदेश।।...आप सम

**मंत्र- ॐ ह्रीं केवलज्ञान प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...**

**5. मोक्ष कल्याणक-**

अंत में योग निरोधकर सर्वकर्म नाश से बन गये परम सिद्ध।
अनंत ज्ञान दर्शन सुख वीर्यादि को, भोग करोगे अनंत तक।।...आप सम

**मंत्र- ॐ ह्रीं मोक्षमंगलमंडिताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...**

## जयमाला

### (आध्यात्मिक विजय के लिए पूज्य चन्द्रप्रभ प्रभु के गुणानुस्मरण, गुणानुवाद-गुणानुकरण)

**(चाल : तुम दिल की..., चाँद सी....., क्या मिलिये....., आत्मशक्ति....., जय हनुमान.....)**

तिमिर हरचन्द्र समान आप अज्ञान मोह तिमिर हर।
लोकालोक व त्रिकालवर्ती द्रव्य-गुण पर्यायों का प्रकाश कर।।
घाती कर्म के नाश से आपने अनंत ज्ञान दर्शन सुख पाया।
तीर्थंकर प्रकृति उदय होने से समवसरण निर्माण देवों ने किया।।
समवसरण में (आप) विराजमान होकर, दिव्य ध्वनि से विश्व संबोध।
बारह कोठों में बैठकर देव-मानव-पशु-पक्षियों ने श्रवण किया।।
आपने बताया जीवों में निहित अनंत गुण पर्याय हैं।
आत्मविश्वास ज्ञानचारित्र द्वारा, गुणादि प्रकट संभव है।
जो जीव विश्वास करता मुझमें, अनंत ज्ञानदर्शन सुख है।
उसका विश्वास होता आत्मविश्वास, संपूर्ण विकास का मूल है।।
आत्मविश्वास से ज्ञान होता सुज्ञान जिससे होता सदाचरण।
तीनों से होता आत्मविकास चतुर्थ गुणस्थान से सिद्ध पर्यंत।।
पंचपाप सप्त व्यसन सहित, अष्टमद का होता विसर्जन।
देवशास्त्र गुरु भक्ति सहित, दयादान सेवादि से सम्पन्न।।

ईर्ष्या द्वेष घृणा काम क्रोध तृष्णा (को) जय करने हेतु करे प्रयत्न।
अन्याय अत्याचार पापाचार त्याग हेतु करता सही यतन।।
गृहस्थों के षट्कर्त्तव्य पालन सहित उत्तरोत्तर विकास का करता प्रयत्न।
ग्यारह प्रतिमा धारण करके श्रमण बनने हेतु प्रयत्नवान्।।
ज्ञान-वैराग्य सम्पन्न होकर सर्व संन्यास से बने श्रमण।
समता-शांति-निस्पृहता से, ध्यान-अध्ययन में होता मगन।।
ख्याति पूजा लाभ प्रसिद्धि त्यागकर, आत्मविशुद्धि हेतु करे साधना।
आत्मविशुद्धि से क्षपकश्रेणी आरोहणकर कर्मनाश से पावे निर्वाण।।
आपने पाया अनंत सुख विश्व को भी दिया वही संदेश।
अतएव आप परमपूज्य, 'कनकनन्दी' को मान्य तव संदेश।।

**ॐ ह्रीं श्रीं चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय! आध्यात्मिक विजय हेतु जयमाला पूर्ण अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।**

सीपुर, दिनांक 27.03.2017, रात्रि 1.00

# श्री सुविधिनाथ (पुष्पदंत) भगवान् की पूजा

## (पूजा के आध्यात्मिक वैज्ञानिक सकारण)

**-आचार्य कनकनन्दी**

**(चाल : क्या मिलिये.....)**

**आह्वान : (भावनात्मक रूप से पूज्यों का सान्निध्य प्राप्त करना)**

हे ! पुष्पदंत हे ! सुविधिनाथ आप हो सुविधि के उन्नायक।
आत्मविकास की विधि ही सुविधि, जिसे कहते हैं मोक्षमार्ग।।
सम्यक्दर्शन ज्ञान चारित्रमय होता, व्यवहार व निश्चय मोक्षमार्ग।
आपके आह्वान-पूजन-ध्यान से, मुझे भी करना है पूर्ण मोक्षमार्ग।। (ध्रुव)

**मंत्र-** ॐ ह्रीं श्री सुविधिनाथ (पुष्पदंतनाथ) जिनेन्द्राय ! अत्र अवतर अवतर संवोषट् आह्वाननम्।

ॐ ह्रीं श्री सुविधिनाथ (पुष्पदंतनाथ) जिनेन्द्राय ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं श्री सुविधिनाथ (पुष्पदंतनाथ) जिनेन्द्राय ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

**1. उदक-(आत्मिक विशुद्धि व जन्म जरा मृत्यु विनाश के प्रतीक)**

उदक से आपका पूजन कर मैं, भावना भाता हूँ कर्म धौत की।
कर्मनाश से जन्म-जरा-मरण नशे, जिससे प्राप्ति होगी मुक्तिश्री।। आप...

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री सुविधिनाथ जिनेन्द्राय! जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं...**

**2. चंदन-(संक्लेश ताप विनाश व भाव आह्लाद के प्रतीक)**

चंदन से पूजूँ आपके चरण, मेरे पाप-ताप होवे निवारण।
अनंत आत्मोत्थ आह्लाद पाऊँ, इस हेतु पूजूँ तव चरण।। आप...

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री सुविधिनाथ जिनेन्द्राय! भव ताप विनाशनाय चंदन...**

**3. तंदुल-(संसार उत्पादक कर्मनाशक व अक्षयपद के प्रतीक)**

तंदुल अखण्डित तव चरणों में, अर्पितकर चाहता हूँ अक्षय पद।
आपसे कथित सुविधि द्वारा, प्राप्त करना है मुझे अक्षय पद।। आप...
**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री सुविधिनाथ जिनेन्द्राय! अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतं...**
**4. सुमन-(ब्रह्मभाव विकास व ज्ञानानंद रस के प्रतीक)**
सुमन से पूजूँ आपके चरण, जिससे मेरा मन हो सदा सुमन।
सुमन से आपकी सुविधि पालन, कर अंत में पाऊँ पद निर्वाण।। आप...
**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री सुविधिनाथ जिनेन्द्राय! कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं...**
**5. नैवेद्य-(क्षुधा रोग विनाश के प्रतीक)**
चरु मनोहर प्रासुक सुमधुर, घृत निर्मित मिष्टान्न प्रचुर।
तव चरणों में अर्पण कर, मैं पाना चाहता हूँ मोक्षपुर।। आप...
**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री सुविधिनाथ जिनेन्द्राय! क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं...**
**6. दीपक-(अज्ञान मोहान्धकार विनाश के प्रतीक)**
दीप तमहर तव चरणों में, अर्पण कर चाहूँ मोह हरण।
चैतन्य ज्योति चमत्कार, लोकालोक प्रकाश पाऊँ तव पूजनसार।। आप...
**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री सुविधिनाथ जिनेन्द्राय! मोहान्धकार विनाशनाय दीपं...**
**7. धूप-(अष्टकर्म नाश व अष्टगुण प्राप्ति के प्रतीक)**
अगर तगर अग्नि में खेकर, आपका पूजन करूँ प्रभुवर।
ध्यानादि पाकर कर्म जलाकर, तव सम बनना है पूजन सार।। आप...
**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री सुविधिनाथ जिनेन्द्राय! अष्टकर्म दहनाय धूपं...**
**8. फल-(मोक्षफल प्राप्ति के प्रतीक)**
फल सुमधुर आम नारिकेल आदि, फल से पूजूँ आपको प्रभुवर।
तव सम पाऊँ मोक्षफल सुमधुर, जिससे सभी दुःख होवे दूर।। आप...
**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री सुविधिनाथ जिनेन्द्राय! महामोक्षफल प्राप्ताय फल...**
**9. अर्घ्य-(अनर्घ्य गुण समूह प्राप्ति के प्रतीक)**
अष्ट द्रव्यों का अर्घ्य चढ़ाकर, पूजन करूँ हे ! सुविधिनाथ।

तव पूजन से पाऊँ अनर्घ्य पद, जिससे मैं बनूँ मुक्तिकांत।। आप...

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री सुविधिनाथ जिनेन्द्राय! अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं...**

## पंचकल्याणक अर्घ्य

1. **गर्भकल्याणक-**

आरण स्वर्ग से च्युत होकर, माता जयरामा के गर्भ में आये।
रत्नवर्षा भी देवो ने किया, माता ने भी सोलह स्वप्न देखे।।

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री सुविधिनाथ जिनेन्द्राय फाल्गुन कृष्णानवम्यां गर्भ मंगल मंडिताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।**

2. **जन्मकल्याणक-**

आपका जन्म हुआ तीर्थ प्रवर्तन हेतु, जिसे कहते हैं जन्मकल्याणक।
इन्द्र ने मनाया जन्म महोत्सव, सुमेरु पर किया जन्माभिषेक।।

**मंत्र- ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्ला प्रतिपदायां श्री सुविधिनाथ जिनेन्द्राय जन्म मंगल मंडिताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।**

3. **तप कल्याणक-**

उल्कापात देखकर आप हुए वैराग्य, पुष्पवन में आप बने श्रमण।
सहस्र राजा भी साथ श्रमण बने, आत्मसाधना में सभी हुए लीन।।

**मंत्र- ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्ला प्रतिपदायां श्री सुविधिनाथ जिनेन्द्राय दीक्षा कल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।**

4. **ज्ञान कल्याणक-**

चार वर्ष तक आप साधनारत, घाती नाश कर बने अरिहंत।
दिव्य ध्वनि से दिया संदेश, समता साधना से होता आत्मविकास।।

**मंत्र- ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्ल द्वितीयायां श्री सुविधिनाथ जिनेन्द्राय केवलज्ञान कल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।**

5. **मोक्ष कल्याणक-**

शेष अघाती को भी निःशेष कर, आप बन गये मुक्ति वधु के वर।
अनंत काल तक भोगोगे अनंत सुख, सच्चिदानंदमय आत्मिक सुख।।

**मंत्र- ॐ ह्रीं भाद्रपदशुक्ला अष्टम्यां श्री सुविधिनाथ जिनेन्द्राय मोक्ष कल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।**

## जयमाला

**(आध्यात्मिक विजय के लिए पूज्य सुविधिनाथ (श्री पुष्पदंतनाथ जी) प्रभु के गुणानुस्मरण, गुणानुवाद-गुणानुकरण)**

हे ! सुविधिनाथ हे ! सुविधिकर्त्ता, मोक्षमार्ग उपदेशक शास्ता।
रत्नत्रय को कहा मोक्षमार्ग, सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्र संयुक्त।।
तत्त्वार्थ श्रद्धान सम्यक्दर्शन, द्रव्य-तत्त्व-पदार्थ श्रद्धान।
देव-शास्त्र-गुरु का श्रद्धान, आत्मा-परमात्मा का दर्शन।।
स्वयं को मानना चैतन्य रूप, द्रव्य-भाव-नोकर्म रहित।
अनंत ज्ञान दर्श सुखवीर्य रूप, व्यवहार से मानना कर्म सहित।।
इससे युक्त होता सम्यग्ज्ञान, हिताहित विवेक युक्त वीतराग विज्ञान।
अनेकांतमय वस्तु परिज्ञान, आध्यात्मिक अनुभूति सहित ज्ञान।।
हीनाधिक व विपरीत रहित, संकीर्ण कट्टर पंथ-मत रहित।
हठाग्रह पूर्वाग्रह रहित ज्ञान, आगम-अनुभव प्रमाण ज्ञान।।
दोनों से युक्त होता सम्यक् आचरण, पाप से निवृत्ति रूप आचरण।
श्रावक त्यागते पाप अणु रूप से, पूर्ण रूप से त्यागते श्रमण।।
हिंसा झूठ कुशील चोरी परिग्रह, अष्टमद व सप्त व्यसन त्याग।
क्रोध मान माया लोभ त्याग, ईर्ष्या तृष्णा मोहादि का त्याग।।
समता शुचिता शांति सहिष्णुता, निस्पृहता क्षमा मृदुता।
ध्यान-अध्ययन व तप-त्याग, इससे होता मोक्षमार्ग प्रशस्त।।

इससे आत्मा की होती विशुद्धि, जिससे बढ़ती है आत्मशक्ति।
जिससे गुणस्थान की होती वृद्धि, क्षीण होती कर्म की शक्ति।।
क्षपकश्रेणी आरोहण होता, घाती नाश से सर्वज्ञ होता।
अघाती नाश से सर्वज्ञ होता, जिससे जीव शुद्ध-बुद्ध बनता।।
इससे जीव को मिलता परम सुख, अक्षय अव्याबाध आत्मिक सुख।
ऐसा हो! सुविधिनाथ आपने, विश्व को दिया दिव्य-संदेश।।
इस हेतु आप हो परम पूज्य, आपको पूजूँ पाऊँ परम पद।
नवकोटि से आपका करूँ पूजन, 'कनक' को मिले मोक्षपद/(तवपद)।।

**ॐ ह्रीं श्रीं सुविधिनाथ जिनेन्द्राय! जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।**

# श्री शीतलनाथ भगवान् की पूजा

## (पूजा के आध्यात्मिक वैज्ञानिक सकारण)

-आचार्य कनकनन्दी

**(चाल : चाँद सी मेहबूबा....., आत्मशक्ति....., भातुकली.....)**

**आह्वान : (भावनात्मक रूप से पूज्यों का सान्निध्य प्राप्त करना)**

शीतलनाथ हे ! शीतलकर्त्ता भौतिक शीतलता से भी अनंतकर्त्ता।
आप तो भवताप हरणकर्त्ता, अनंत आत्मिक शांति के विधाता।।
मैं भी मेरे भवताप नाशन हेतु, आपका आह्वान पूजन मोक्ष के हेतु।
आपके आदर्श गुण-गणों को मैं भी चाहूँ, अतएव आपका मैं ध्यान करूँ।। (ध्रुव)

**मंत्र-** ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवोषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

**1. उदक-(आत्मिक विशुद्धि व जन्म जरा मृत्यु विनाश के प्रतीक)**

उदक शीतल, चंदन शीतल, कर्पूर से भी शीतल शीतलनाथ।
आपका पूजन जल से करके, मैं भी बन जाऊँ तव सम शीतल।।...मैं भी मेरे

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय! आत्म/(भाव) विशुद्धि करणाय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।**

**2. चंदन-(संक्लेश ताप विनाश व भाव आह्लाद के प्रतीक)**

संसार ताप नाशन हेतु, आपका अर्चन करूँ चंदन से।
आपके सम सत्य-समता को, प्राप्त करूँ मैं शांति से।।...मैं भी मेरे

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय! संक्लेश ताप विनाशनाय भाव आह्लादित करणाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।**

**3. अक्षत-(संसार उत्पादक कर्मनाशक व अक्षयपद के प्रतीक)**

अक्षय से तव पूजन करूँ, अक्षय पद हेतु हे ! शीतलनाथ।

अक्षय पद है तव सम मोक्षपद, सांसारिक पद न अक्षय पद।।...मैं भी मेरे

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय! संसार उत्पादक कर्म विनाशनाय एवं अक्षय ज्ञानानंद पद प्राप्ताय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।**

**4. पुष्प-(ब्रह्मभाव विकास व ज्ञानानंद रस के प्रतीक)**

मल्लिका उत्पल कुसुम से पूजा कर, आप सम बनूँ मैं विकसित।
कामशर सह सभी कर्म नशे, इस हेतु पूजन शीतलनाथ।।...मैं भी मेरे

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय! ब्रह्मभाव विकासनाय ज्ञानानंद रस प्राप्ताय सुमन (पुष्प) निर्वपामीति स्वाहा।**

**5. चरु-(क्षुधा रोग विनाश के प्रतीक)**

तीन पदवी के धारी आप हो, तथाहि अनंत सुख के स्वामी।
आप सम अनंत सुख प्राप्ति हेतु, नैवेद्य से पूजूँ आपको स्वामी।।...मैं भी मेरे

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय! मोह-वेदनीय-अंतराय नाश सहित तृष्णा क्षुधा विनाशनाय नैवद्य निर्वपामीति स्वाहा।**

**6. दीपक-(अज्ञान मोहान्धकार विनाश के प्रतीक)**

सूर्य के हेतु यथा न दीपक चाहिए, मानव स्व हेतु दीपक जलाता।
तथाहि आपके हेतु दीपक न चाहिए, स्व तम दूर हेतु दीपक चढ़ाता।।...मैं भी मेरे

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय! ध्यान-अध्ययन-ज्ञानेन अज्ञान मोहान्धकार विनाशनाय दीपकं निर्वपामीति स्वाहा।**

**7. धूप-(अष्टकर्म नाश व अष्टगुण प्राप्ति के प्रतीक)**

दुष्टाष्ट कर्मकाष्ठ जलाने हेतु, धूप से आपका करूँ पूजन।
आप सम ध्यानाग्नि से कर्म जलाने हेतु, आपका मैं करूँ पूजन।।...मैं भी मेरे

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय!अष्टकर्म विनाशनाय आध्यात्मिक गुण प्राप्ताय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।**

**8. फल-(मोक्षफल प्राप्ति के प्रतीक)**

सुंदर सुमधुर रसाल फल से आपका पूजन करूँ हे ! शीतलनाथ।

मुझे भी ज्ञान रसभरित फल मिले, इस हेतु आपका पूजन नाथ।।...मैं भी मेरे

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय! ज्ञानानंद रस भरित मोक्ष फल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।**

**9. अर्घ्य-(अनर्घ्य गुण समूह प्राप्ति के प्रतीक)**

आप सम अमूल्य पद प्राप्ति हेतु, आपका पूजन करूँ अर्घ्य से।
भौतिक मूल्य से प्राप्त सभी पद, क्षणभंगुर है संसार में।।...मैं भी मेरे

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय! अनंत अनर्घ्यगुणप्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।**

## पंचकल्याणक अर्घ्य

**1. गर्भकल्याणक-**

माता नंदा के गर्भ में आये, च्युत होकर अच्युत स्वर्ग से।
पिता राजा दृढ़रथ ने सोलह स्वप्नों का, भविष्य बताया सभा में।। मैं भी...

**मंत्र- ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णाष्टम्यां श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय! गर्भ मंगल मंडिताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।**

**2. जन्मकल्याणक-**

संसार ताप विनाश हेतु शीतलनाथ का हुआ जन्मकल्याणक।
सुमेरु पर हुआ जन्माभिषेक, आपका लाँछन था स्वस्तिक।। मैं भी...

**मंत्र- ॐ ह्रीं माघकृष्णद्वादश्यां जन्मकल्याणक प्राप्ताय श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय! अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।**

**3. तप कल्याणक-**

हिमनाश का दृश्य देखकर आपको हुआ संसार से वैराग्य।
एक हजार राजाओं के साथ सहेतुक वन में आप बने श्रमण।। मैं भी...

**मंत्र- ॐ ह्रीं माघकृष्णद्वादश्यां तपःकल्याणक प्राप्ताय श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय! अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।**

## 4. केवलज्ञान कल्याणक-

तीन वर्ष की आत्मसाधना से आप बने अनंत चतुष्टय के स्वामी।
सर्वांग से खिरी दिव्य ध्वनि जो, सात सौ अठारह प्रकार या सर्ववाणी।। मैं भी...

**मंत्र- ॐ ह्रीं पौषकृष्ण चतुर्दश्यां ज्ञानकल्याणक प्राप्ताय श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय! अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।**

## 5. मोक्ष कल्याणक-

अंत में योग निरोध करके, शेष कर्मों को भी निःशेष किया।
एक हजार मुनियों के साथ, लोकाग्र में जाकर निवास किया।। मैं भी...

**मंत्र- ॐ ह्रीं आश्विनशुक्लाष्टम्यां मोक्षकल्याणक प्राप्ताय श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय! अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।**

# जयमाला

## (आध्यात्मिक विजय के लिए पूज्य शीतलनाथ प्रभु के गुणानुस्मरण, गुणानुवाद-गुणानुकरण)

**(चाल : भातुकली.....)**

तीर्थंकर थे प्रभु शीतलनाथ, आपने किया राज्य अनेक वर्ष।
हिमनाश से आपको हुआ वैराग्य, भाया आपने अनुप्रेक्षा द्वादश।।
संसार-शरीर-भोगों को अनित्य जाना, जिससे बने विरक्त मना।
संसार में कोई न किसी का शरण, स्व-आत्म रमण ही (परम) शरण माना।।
विभाव भाव ही यथार्थ से संसार, द्रव्य-भाव-नोकर्म रूपी संसार।
चउरासी लाख योनि में जन्म-मरण संसार, जिसमें मिले दुःख अपार।।
संसार भ्रमण जीव एकला करता, सुख-दुःख भी स्वयं भोगता।
इससे परे भी जीव एकला मोक्ष पाता, अनंत सुख स्वयं भोगता।।
द्रव्य-भाव-नोकर्म से जीव होता अन्य, इसे कहते वीतराग विज्ञान।
स्व-आत्म द्रव्य होता है स्व-स्वरूप, अन्य सभी होते है पर-स्वरूप।।

विभाव भाव अशुचि राग-द्वेष, मोह-काम-क्रोधादि अशुचि।
सप्त धातुमय शरीर होता अशुचि, शुद्धात्मा स्वरूप ही होता शुचि।।
राग द्वेष मोहादि से होता आस्रव, जिससे होता संसार भ्रमण।
आस्रव निरोध से होता संवर, जिससे होती निर्जरा व निर्वाण।।
अकृत्रिम-शाश्वत लोक मध्य में, संसारी जीव करते भ्रमण।
आत्मोपलब्धि ही सबसे दुर्लभतम, जिसे कहते है परिनिर्वाण।।
परिनिर्वाण हेतु चाहिए धर्म शरण, शुद्धात्म स्वभाव ही परम धर्म।
रत्नत्रयमय होता है धर्म, उत्तम क्षमादि होते आत्म धर्म।।
इत्यादि भावना से आप भावित होकर, श्रमण बनकर पाये निर्वाण।
आपके समान बनने हेतु आपका, स्मरण-ध्यान करे 'कनक' श्रमण।।

**ॐ ह्रीं श्रीं शीतलनाथ जिनेन्द्राय! जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।**

सीपुर, दिनांक 07.04.2017, रात्रि 10.50

# श्रेयांसनाथ भगवान् की पूजा

## (पूजा के आध्यात्मिक वैज्ञानिक सकारण)

**-आचार्य कनकनन्दी**

**(चाल : चाँद सी मेहबूबा हो....., आत्मशक्ति.....)**

**आह्वान : (भावनात्मक रूप से पूज्यों का सान्निध्य प्राप्त करना)**

श्रेयमार्ग के पथिक बनकर आप बन गये श्रेयांसनाथ।
शुभ से शुद्ध को प्राप्त करके आप बन गये जगन्नाथ।।
श्रेय प्राप्ति हेतु आपने विश्व को दिया दिव्य उपदेश।
मैं भी श्रेय प्राप्त करने हेतु आपको हृदय में करूँ स्थापित।।

**मंत्र-** ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवोषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

**1. उदक-(आत्मिक विशुद्धि व जन्म जरा मृत्यु विनाश के प्रतीक)**

कर्मकलंक को धौत करने से, मिलता परम श्रेयपद।
श्रेयपद को प्राप्त हेतु आपको, पूजूँ चढ़ाके उदक।।
उदक चढ़ाकर मैं भावना भाऊँ, मेरा कर्म हो रहा है धौत।
तन-मन-आत्मा को शुद्ध करके, तव गुण करूँ मैं आत्मसात्।।

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय! आत्म/(भाव) विशुद्धि करणाय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।**

**2. चंदन-(संक्लेश ताप विनाश व भाव आह्लाद के प्रतीक)**

मलयगिरी के चंदन सुवासित, आपके श्री चरणों में चढ़ाऊँ।
मेरे राग द्वेष काम क्रोधादि ताप, नाश हो ऐसी भावना भाऊँ।।
आप तो अनंत शांति-समता के स्वामी, आपके सम मैं बनूँ।
जिससे अनादि संसार ताप नाश से, अनंत शांतिमय बनूँ।।

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय! संक्लेश ताप विनाशनाय भाव आह्लादित करणाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।**

**3. अक्षत-(संसार उत्पादक कर्मनाशक व अक्षयपद के प्रतीक)**

श्रेयपद ही अक्षय पद, अन्य सभी पद विपत्तिप्रद।
अतएव मैं अक्षत द्वारा पूजा करूँ, प्राप्त हेतु अक्षयपद।।
आप तो अक्षय (अनंत) गुणों के स्वामी, आपका पद ही अक्षयपद।
राजा महाराजा चक्रवर्ती तक साधु बने, प्राप्ति (प्राप्तार्थे) हेतु अक्षयपद।।

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय! संसार उत्पादक कर्म विनाशनाय एवं अक्षय ज्ञानानंद पद प्राप्ताय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।**

**4. सुमन (पुष्प)-(ब्रह्मभाव विकास व ज्ञानानंद रस के प्रतीक)**

पुष्प मनोहर चंपक चमेली से, पूजा करूँ तव पद कमल।
पुष्प समर्पण कर भावना भाऊँ, मैं भी बन जाऊँ तव सम निर्मल।।
राग द्वेष मोह काम क्रोध नाश से, मैं भी बनूँ तव सम निर्मल।
ऐसी निर्मल भावना विकसित हेतु, पुष्प समर्पित अति परिमल।।

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय! ब्रह्मभाव विकासनाय ज्ञानानंद रस प्राप्ताय सुमन (पुष्प) निर्वपामीति स्वाहा।**

**5. नैवेद्य (चरु)-(क्षुधा रोग विनाश के प्रतीक)**

घृत विनिर्मित विभिन्न मिष्टान्न से, पूजा करूँ मैं तवचरण।
तव सम अनंत ज्ञानामृत पान (तृप्त) से, नाश करूँ क्षुधारोग संपूर्ण।।
अनंत पुद्गल परिवर्तन में सभी, पुद्गलों को किया भक्षण।
तथापि क्षुधा न दूर हुई, अतएव ज्ञानामृत हेतु तव करूँ पूजन।।

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय! मोह-वेदनीय-अंतराय नाश सहित तृष्णा क्षुधा विनाशनाय नैवद्य निर्वपामीति स्वाहा।**

**6. दीपक-(अज्ञान मोहान्धकार विनाश के प्रतीक)**

अज्ञान अंधकार न दूर होता, केवल भौतिक प्रकाश से।

आपने अज्ञान तम दूर किया, केवलज्ञान ज्योति से।।
आपके समान ज्ञान ज्योति प्राप्त हेतु, आपको पूजूँ दीप से।
आपके पूजन-स्मरण-ध्यान से, मेरा ज्ञान प्रगट हो मुझसे।।

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय! ध्यान-अध्ययन-ज्ञानेन अज्ञान मोहान्धकार विनाशनाय दीपकं निर्वपामीति स्वाहा।**

**7. धूप-(अष्टकर्म नाश व अष्टगुण प्राप्ति के प्रतीक)**

ध्यानाग्नि से आप कर्म जलाकर, शुद्ध-बुद्ध-आनंद हुए।
मैं भी अग्नि में धूप जलाकर, आपके गुण में ध्यान लगाऊँ।।
आपके ध्यान से कर्म जलाकर, आपके समान ही बन जाऊँ।
ऐसी भावना व श्रद्धा-प्रज्ञा से, आपके पूजन में चित्त लगाऊँ।।

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय! अष्टकर्म विनाशनाय आध्यात्मिक गुण प्राप्ताय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।**

**8. फल-(मोक्षफल प्राप्ति के प्रतीक)**

श्रेयफल ही यथार्थ से परम फल है, जो जीवों के अंतिम ध्येय।
उसे ही प्राप्त करने हेतु, श्रीफल से पूजूँ आपके पद युग्म (युगल/कमल)।।
आप तो वीतरागी कृतकृत्य हो, वरदान भी नहीं देते हो।
किन्तु आपकी भक्ति द्वारा, मुक्ति मिले ऐसे (आप) महान् हो।।

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय! ज्ञानानंद रस भरित मोक्ष फल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।**

**9. अर्घ्य-(अनर्घ्य गुण समूह प्राप्ति के प्रतीक)**

श्रेयपद ही अनर्घ्यपद है, जो अभी तक मुझे न हुआ लब्ध।
इसे प्राप्त हेतु अनादि काल से, मैं भी कर रहा हूँ यत्न विविध।।
किन्तु यत्न न हुआ सम्यक्, जिससे संसार मेरा न हुआ अंत।
संसार अंत करने हेतु, आपको पूजूँ मैं चढ़ाके अर्घ्य।।

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय! अनंत अनर्घ्यगुणप्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।**

# पंचकल्याणक अर्घ्य

**1. गर्भकल्याणक-**

अपुनर्भव गर्भ के कारण आपका गर्भ हुआ कल्याणक।
माता वेणुदेवी के गर्भ में आये पुष्पोत्तर स्वर्ग से होकर च्युत।।
सोलह स्वप्न माता ने देखा पिता विष्णु ने फल बताया।
विश्व उद्धारक शांति प्रदायक पुत्ररत्न तेरे गर्भ में आया।।

**मंत्र- ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णाषष्ठयां गर्भ मंगल मंडिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।**

**2. जन्मकल्याणक-**

जन्म जरा मृत्यु रोग हर ऐसा आपने लिया जन्म।
जिससे आपका जन्म हुआ पावन अतः हुआ जन्मकल्याण।।
देवों ने मनाया जन्म महोत्सव, सुमेरु में किया जन्माभिषेक।
क्षीरोदधि से जल लाकर आपका किया जन्माभिषेक।।

**मंत्र- ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णाएकादश्यां जन्म मंगल मंडिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।**

**3. तप कल्याणक-**

प्राकृतिक दृश्य के परिवर्तन से, आपमें जगा वैराग्य भाव।
संसार-शरीर-भोगों से विरक्त हो, आपने त्यागा राज्य वैभव।।
श्रमण दीक्षा धारण कर आपने किया मौन से ध्यान-अध्ययन।
ख्याति पूजा लाभ प्रसिद्धि त्यागकर मनन-चिंतन में हुए मग्न।।

**मंत्र- ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णा एकादश्यां तपो मंगल मंडिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।**

4. **ज्ञान कल्याणक-**

आत्मविशुद्धि से शुक्लध्यान से, क्षपकश्रेणी आपने चढ़ा।
घाती कर्मों को नाश करके अनंत चतुष्टय को आपने पाया।।
दिव्य ध्वनि से विश्व प्रबोधा सदैव मानव पशु-पक्षी सभी को।
अहिंसा-अपरिग्रह-अनेकांतमय विश्व बंधुत्वमय आत्मधर्म को।।

**मंत्र- ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णा अमावस्यायां केवलज्ञान मंगल मंडिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।**

5. **मोक्ष कल्याणक-**

अंत में आप योग निरोध करके शेष कर्मों को भी निशेष किया।
शुद्ध-बुद्ध व आनंदमय होकर, लोकाग्र में जाकर निवास किया।।
अक्षय अनंत काल तक रहोगे, शुद्ध-बुद्ध आनंदमय।
मैं भी आपके सम बनने हेतु, आपका करूँ पूजन ध्यान।।

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्रावणशुक्ला पूर्णिमायां मोक्ष मंगल मंडिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।**

## जयमाला

### (आध्यात्मिक विजय के लिए पूज्य श्रेयांसनाथ प्रभु के गुणानुस्मरण, गुणानुवाद-गुणानुकरण)

**(चाल : चाँद सी मेहबूबा हो....., आत्मशक्ति....., जय हनुमान.....)**

श्रेयांसनाथ हे ! श्रेयकर/(क्षेमंकर), श्रेयमार्ग/(मोक्षमार्ग) के उपदेशक।
संसार तारक मोक्ष प्रदायक, अनेकांतमय वाणी स्वरूप।।
आपने कहा है विश्व शाश्वतिक अनादि अनंत व प्राकृतिक।
अनंत ज्ञान से आपने देखा, जैसा है विश्व का स्वरूप।।
षटद्रव्यों से बना है विश्व जीव पुद्गल धर्म-अधर्म।
आकाश-काल है स्वयंभू-द्रव्य अनंत गुण-पर्यायमय।।

अनंतानंत जीव हैं विश्व में जो चेतना गुण से सहित।
अनादि काल कर्म आबद्ध से चौरासी लक्ष्य योनि सहित।।
पाँचों लब्धियों को प्राप्त करके जो जीव पाते हैं सम्यक्दर्शन।
उसके ज्ञान होते सुज्ञान जिससे चारित्र भी हो जाते सदाचरण।।
तीनों मिलकर होते श्रेयमार्ग/(मोक्षमार्ग) अन्यथा होता संसारमार्ग।
श्रेयमार्ग में चलकर जीव कर्म नाशकर बनते शुद्ध-बुद्ध।।
शुद्ध जीवों में होते है अनंत ज्ञान दर्शन सुखवीर्य अव्याबाधत्व।
सूक्ष्मत्व अवगाहनत्व अगुरुलघुत्व अस्तित्व व वस्तुत्व।।
जन्म जरा मरण से वे रहित होते, सांसारिक दुःखों से भी रहित।
आधि-व्याधि-उपाधि रहित होते वे ज्ञानानंद सहित।।
समस्त संसारी जीवों के सुख से एक सिद्ध का सुख अनंत गुणा।
ऐसा सुख प्राप्त करने हेतु आपने श्रेयमार्ग को बताया।।
इसलिए आप तीर्थंकर हो संसार तारक दिव्य उपदेशक (हो)।
सात सौ अठारह भाषाओं में आपने विश्व को दिया उपदेश।।
इसलिए आप पूजनीय हो नमस्करणीय अनुकरणीय।
आपके सम श्रेय प्राप्ति हेतु 'कनकसूरी' से स्मरणीय/(वंदनीय)।।
**ॐ ह्रीं श्रीं श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय! आध्यात्मिक विजय हेतु जयमाला पूर्ण अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।**

सीपुर, दिनांक 24.03.2017, प्रातः

# वासुपूज्य भगवान् की पूजा
## (पूजा के आध्यात्मिक वैज्ञानिक सकारण)

-आचार्य कनकनन्दी

**(चाल : चाँद सी मेहबूबा....., आत्मशक्ति....., भातुकली.....)**

**आह्वान : (भावनात्मक रूप से पूज्यों का सान्निध्य प्राप्त करना)**

(हे !) वासुपूज्य हे ! विश्वपूज्य, बाल ब्रह्मचारी मेरे पूज्य।
तव गुण प्राप्ति हेतु (मैं) पूजूँ, (हे !) पूज्यपाद मम हृदये विराजे पद।।
भाव से आह्वान करूँ पदयुग्म, मोक्ष प्राप्ति हेतु बने निमित्त।
(तव) आदर्श को करूँ मैं आत्मसात्, जिससे मुझे मिले तव पद।। (ध्रुव)

**मंत्र-** ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवोषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

**1. उदक-(आत्मिक विशुद्धि व जन्म जरा मृत्यु विनाश के प्रतीक)**

प्रासुक उदक से पूजूँ (मैं) आपके पद, संसार तारक आप जहाज।
भावना भाऊँ कर्म नाश होवे, जिससे मैं पाऊँ मोक्ष निवास।।...भाव से

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय! आत्म/(भाव) विशुद्धि करणाय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।**

**2. चंदन-(संक्लेश ताप विनाश व भाव आह्लाद के प्रतीक)**

चंदन शीतल सुगंधकर तव चरणे चढ़ाऊँ हे ! पूज्यवर।
संसार ताप मेरे होवे दूर, आप सम पाऊँ मैं मोक्षपुर।।...भाव से

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय! संक्लेश ताप विनाशनाय भाव आह्लादित करणाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।**

**3. अक्षत-(संसार उत्पादक कर्मनाशक व अक्षयपद के प्रतीक)**

अक्षयपद प्राप्ति के हेतु, अक्षत से पूजूँ आपको विभु।

संसार पद है विपत्तिप्रद, तवपद चाहूँ जो अक्षयप्रद।।...भाव से

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय! संसार उत्पादक कर्म विनाशनाय एवं अक्षय ज्ञानानंद पद प्राप्ताय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।**

**4. प्रसून-(ब्रह्मभाव विकास व ज्ञानानंद रस के प्रतीक)**

सुवासित कुसुम कमल गुलाब से, आपको पूजूँ हे ! पूज्यवर।

कामशर सह सर्व कर्म नशे, जिससे मुझे मिले मोक्षपुर।।...भाव से

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय! ब्रह्मभाव विकासनाय ज्ञानानंद रस प्राप्ताय सुमन (पुष्प) निर्वपामीति स्वाहा।**

**5. चरु-(क्षुधा रोग विनाश के प्रतीक)**

पुद्गल परिवर्तन में समस्त, पुद्गलों को भोगा व त्यागा।

क्षुधा शांत न हुई अभी तक, क्षुधानाश हेतु चरु से पूजा।।...भाव से

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय! मोह-वेदनीय-अंतराय नाश सहित तृष्णा क्षुधा विनाशनाय नैवद्य निर्वपामीति स्वाहा।**

**6. दीपक-(अज्ञान मोहान्धकार विनाश के प्रतीक)**

अज्ञान मोहतम नाशन हेतु, दीपक से पूजूँ हे ! ज्ञानपुँज।

अनंत आध्यात्मिक ज्योति प्राप्त, करूँ ऐसा मेरा परम लक्ष्य।।...भाव से

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय! ध्यान-अध्ययन-ज्ञानेन अज्ञान मोहान्धकार विनाशनाय दीपकं निर्वपामीति स्वाहा।**

**7. धूप-(अष्टकर्म नाश व अष्टगुण प्राप्ति के प्रतीक)**

धूप सुवासित पावक खेकर, मैं भी बन जाऊँ पावन।

अष्टकर्म रूपी काष्ठ जलाकर, मैं भी बन जाऊँ तव सम।।...भाव से

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय! अष्टकर्म विनाशनाय आध्यात्मिक गुण प्राप्ताय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।**

**8. फल-(मोक्षफल प्राप्ति के प्रतीक)**

फल सहकार से पूजन करके, प्राप्त करूँ मैं अमर फल।

अशांति-अतृप्ति शांत कर मैं, पाऊँ आध्यात्मिक फल रसाल।।...भाव से

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय! ज्ञानानंद रस भरित मोक्ष फल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।**

**9. अर्घ्य-(अनर्घ्य गुण समूह प्राप्ति के प्रतीक)**

प्रासुक बसुविध अर्घ्य से पूजन कर, प्राप्त करूँ मैं अनर्घ्य पद।

त्रैलोक्य के भौतिक वैभव से भी, अतुलनीय है अनर्घ्य पद।।...भाव से

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय! अनंत अनर्घ्यगुणप्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।**

## पंचकल्याणक अर्घ्य

**1. गर्भकल्याणक-**

रानी विजया के गर्भ में आये, पिता वसुपूज्य भी हर्षाये।

सोलह स्वप्न माता को दर्शन हुए, महाशुक्र स्वर्ग से आप पधारे।।...भाव से

**मंत्र- ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्णाषष्ठयां श्री वासुपूज्यजिन गर्भकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।**

**2. जन्मकल्याणक-**

जन्म कल्याणक देवों ने मनाया, सुमेरु पर अभिषेक किया।

ताण्डव नृत्य इन्द्र ने किया, माता-पिता ने भी हर्ष मनाया।।...भाव से

**मंत्र- ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णाचतुर्दश्यां श्री वासुपूज्यजिन जन्मकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।**

**3. तप कल्याणक-**

जाति स्मरण से हुआ वैराग्य, मनोहर वन में दीक्षा ग्रहण।

एक वर्ष तक किया मौन धारण, ध्यान-अध्ययन में हुए लीन।।...भाव से

**मंत्र- ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णाचतुर्दश्यां श्री वासुपूज्यजिन दीक्षाकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।**

4. **केवलज्ञान कल्याणक–**

इसके अनंतर हुआ केवलज्ञान, लोकालोक प्रकाशी परम ज्ञान।
पाटल वृक्ष के नीचे हुआ ज्ञान, गंधकूटी से आप दिया उद्‌बोधन।।...भाव से

**मंत्र- ॐ ह्रीं माघशुक्लाद्वितीयायां श्री वासुपूज्यजिन ज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।**

5. **मोक्ष कल्याणक–**

एक माह तक योग निरोध किया, पाटल वृक्ष के नीचे हुआ निर्वाण।
छः सौ एक मुनि भी मोक्ष पधारे, शुद्ध-बुद्ध व आनंद हुए।।...भाव से

**मंत्र- ॐ ह्रीं भाद्रपदशुक्लाचतुर्दश्यां श्री वासुपूज्यजिन मोक्षकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।**

# जयमाला

## (आध्यात्मिक विजय के लिए पूज्य वासुपूज्य प्रभु के गुणानुस्मरण, गुणानुवाद–गुणानुकरण)

**(चाल : आत्मशक्ति....., सायोनारा....., अच्छा सिला दिया....., देहाची तिजोरी....., गजानना....., माइन–माइन....., जिन्दगी इक सफर है सुहाना.....)**

बाल ब्रह्मचारी शील गुणधारी, जगत् पूज्य हो ! वासुपूज्य।
जन्म से दश अतिशय युक्त, केवलज्ञान के ग्यारह सहित।।
देवकृत भी हुए तेरह अतिशय, आपके सातिशय पुण्य निसृत।
सोलह कारण भावना से जात, विश्व हितकारी भावना सहित।।
केवलज्ञान के ग्यारह अतिशय अन्य जीवें में भी नहीं संभव।
आप जहाँ होते थे विराजमान सुभिक्ष[1] होता था शत योजन।।
आकाश में आपका होता था विहार[2] आपका न था कवलाहार[3]।
हिंसा[4] का अभाव भी आपके पास, उपसर्ग[5] आपसे होता दूर।।
चारों दिशाओं के जीवों को आपका होता था श्रीमुख[6] दर्शन।

छाया[7] रहित देह था व आपके निर्निमेष[8] होते थे नयन।।
सर्वज्ञ देव हो! प्रभु आप सर्व विधाओं के भी ईश्वर।
नख-केश-वृद्धि से रहित था, आपका परम औदारिक[10] शरीर।।
आपकी दिव्य[11] ध्वनि तो खीरती थी, आपश्री के सर्व-अंगों से।
सात सौ अठारह भाषा युक्त या सर्व भाषाओं में।।
अलौकिक अद्भुत थी आपकी, दिव्य ध्वनि की विशेषता।
मनुष्य से लेकर पशु-पक्षी (व) देव तक, समझने की योग्यता।।
समवसरण के हर जीव भी, समझ लेते थे स्व-स्व भाषा में।
संशय भय वैर-विरोध रहित हो, मानते थे आत्महित में।।
समवसरण में सभी जीवों को, मिला था समान अधिकार।
स्व-स्व योग्यता अनुसार, पालन/(भोगते) करते स्व-अधिकार।।
श्रावक पशु-पक्षी के भावात्मक स्थान देवों से भी था अधिक।
सदृष्टि मनुष्य से भी उनका स्थान था आध्यात्मिक अधिक।।
ऐसा था आपका आध्यात्मिक शासन जो अन्यत्र असंभव।
राजतंत्र से लेकर साम्यवाद व लोकतंत्र में भी असंभव।।
इसलिए तो आप हो विश्व के अन्त्योदयी व सर्वोदयी।
आपके दिव्य संदेश के अनुसार, आचरण करे 'कनकसूरी'।।

**ॐ ह्रीं श्रीं वासुपूज्य जिनेन्द्राय! आध्यात्मिक विजय हेतु जयमाला पूर्ण अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।**

# भगवान् विमलनाथ पूजन

## (पूजा के आध्यात्मिक वैज्ञानिक सकारण)

-आचार्य कनकनन्दी

(चाल : सुनिये जिन अरज हमारी....., तुम दिल की.....)

**आह्वान : (भावनात्मक रूप से पूज्यों का सान्निध्य प्राप्त करना)**

शतार स्वर्ग से आये, पंचकल्याण युक्त मोक्ष पाये।
हम भी तव पद ही चाहे, भाव से आपके गुण गाये।।

आह्वान करते तव गुण हेतु, भाव-द्रव्य पूजा इसी हेतु।
विमल पद लक्ष्य संयुक्त, विमलनाथ पूजे आत्महित।

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवोषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

**1. उदक-(आत्मिक विशुद्धि व जन्म जरा मृत्यु विनाश के प्रतीक)**

प्रासुक सुगंधित जल से, विमल पद हम पूजे भाव से।
जन्म-जरा-मृत्यु नाश हेतु, करे हम भव नाश हेतु।।

जल शीतलता का प्रतीक, मल धौत हेतु भी प्रतीक।
प्रतीक से हम यथार्थ चाहे, शान्त शीतल विमल गुण चाहे।।

**ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।**

**2. चन्दन-(संक्लेश ताप विनाश व भाव आह्लाद के प्रतीक)**

संसार ताप विनाशन हेतु प्रतीक चन्दन हम लाये।
विमलनाथ के पद कमल में, भक्तिपूर्वक हम चढ़ाये।

सम्यक्त्व के अष्ट अंग से, मोह के अष्ट दोष नशाये।
प्रशम संवेग आस्तिक अनुकम्पा से, जीवन को हम महकाये।।

**ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चन्दनं...**

**3. अक्षत-(संसार उत्पादक कर्मनाशक व अक्षयपद के प्रतीक)**

अक्षय पद की प्राप्ति हेतु, अक्षत प्रतीक लाये हम।
धवल सुगंधित अक्षत चढ़ाकर, विमल पद को पाये हम।।

सांसारिक वैभव सब कुछ, क्षणभंगुर दुःखदायी जाने/(पाये)।
इसलिये अक्षय पद हेतु, विमलनाथ को ध्याये हम।।

**ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्ताय अक्षतम्...**

**4. सुमन (पुष्प)-(ब्रह्मभाव विकास व ज्ञानानंद रस के प्रतीक)**

सुगंध मनोहर सुमन चढ़ाकर, विमलनाथ को पूजे हम।
कामबाण क्लेशनाश हेतु, विमलनाथ को ध्याये हम।।

विमलनाथ के ज्ञान ध्यान से, भावसुमन विकसाये हम।
कोमल आह्लादित भाव द्वारा, विमलनाथ (के) गुण पाये हम।।

**ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं...**

**5. नैवेद्य-(क्षुधा रोग विनाश के प्रतीक)**

प्रासुक षट्रस भरित सुमधुर, नैवेद्य प्रभु को अर्पण करे।
क्षुधा शान्त आत्मरस हेतु, विमलनाथ को हिये धरे।।

आत्मरस अमृत प्राप्ति हेतु, विषयभोग को हेय माने।
अनन्त चतुष्टय प्राप्ति हेतु, विमलभाव को श्रेय माने।।

**ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...**

**6. दीपक-(अज्ञान मोहान्धकार के प्रतीक)**

दीपक तमहर प्रतीक से, विमलनाथ को पूजे हम।
आध्यात्मिक ज्ञानज्योति से, अज्ञान मोह को हने हम।।

अज्ञान मोह को नाशकर, भव भ्रमण दूर करे।
ऐसे उज्ज्वल भाव लेकर, विमलनाथ की पूजा करे।।

**ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...**

**7. धूप-(अष्टकर्म नाश व अष्टगुण प्राप्ति के प्रतीक)**

अष्टकर्म के ज्वलन हेतु, धूप प्रतीकमय हम खेये।
अगर-तगर-चन्दन मिश्रित, सुगन्धित धूप को खेये।।

भाव-वायु प्रदूषण हर, धूप खेकर मन हरषाये।
विमलनाथ/(भगवान्) के गुण प्राप्ति हेतु, कर्ममल हम सभी नशाये।।

**ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं...**

**8. फल-(मोक्षफल प्राप्ति के प्रतीक)**

विविध रसाल फल लाये, विमलनाथ प्रभु को चढ़ाये।
मोक्ष फल के यह प्रतीक, आम्र नारिकेल फल आदिक।।

धर्म वृक्ष का फल मोक्ष, जिससे मिले अनंत सुख।
मोक्ष हेतु ही तव पूजन, उसी हेतु ही भावना सब।।

**ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय महामोक्षफलप्राप्ताय फलं...**

**9. अर्घ्य-(अनर्घ्य गुण समूह प्राप्ति के प्रतीक)**

आगमोक्त अष्ट द्रव्य लेकर, भक्ति भाव (से) पूजन जिनवर।
अनर्घ्य आत्मोपलब्धि हेतु, अर्घ्य चढ़ाते है मोक्ष हेतु।।

भौतिक उपलब्धियों से परे, आत्मिक लाभ हो हमारे।
विमल पद प्राप्ति के कारण, करते विमलनाथ पूजन।।

**ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्ताय अर्घ्यं...**

# पंचकल्याणक अर्घ्य

(चाल : तुम दिल की.....)

1. **गर्भकल्याणक-**

जेष्ठवदी दशमी शुभ बेला में, प्रभु आये माता (के) गर्भ में।
गर्भ में ही थे प्रभु महाज्ञानी, मति-श्रुत व अवधिज्ञानी।।

**ॐ ह्रीं गर्भमंगलमंडिताय श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।**

2. **जन्मकल्याणक-**

माघ शुक्ल चौदस के दिन, हुआ विमलनाथ का जन्म।
सुमेरु पर हुआ अभिषेक महान्, दस अतिशय युक्त भगवान्।।

**ॐ ह्रीं जन्ममंगलमंडिताय श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...**

3. **तप (दीक्षा) कल्याणक-**

माघ शुक्ल चौदस अपराह्न, श्रमण बने विमलनाथ भगवान्।
मनःपर्यय ज्ञान प्रगट हुआ, चउसठ (64) ऋद्धि सम्पन्न भगवन्त।।

**ॐ ह्रीं तपोमंगलमंडिताय श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...**

4. **केवलज्ञान कल्याणक-**

पौष शुक्ल दशमी अपराह्न, प्राप्त हुआ प्रभु को केवलज्ञान।
लोक-अलोक हुआ प्रकाशित, अनंत चतुष्टय गुण सहित।।

**ॐ ह्रीं केवलज्ञानप्राप्ताय श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...**

5. **मोक्ष कल्याणक-**

आषाढ़ कृष्ण अष्टमी के दिन, पाये विमलनाथ परिनिर्वाण।
श्री सम्मेदशिखर मोक्ष स्थान, हुए शुद्ध-बुद्ध भगवान्।।

**ॐ ह्रीं मोक्षमंगलमंडिताय श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...**

# जयमाला

(चाल : जय हनुमान.....)

**(आध्यात्मिक विजय के लिए पूज्य विमलनाथ प्रभु के गुणानुस्मरण-गुणानुवाद-गुणानुकरण)**

जय विमलनाथ हे ! विगतमल, रागद्वेष रहित आप निर्मल।
घाति कर्म रिक्त हो अरिहन्त, अनन्त ज्ञान युक्त भगवन्त।।

अठारह दोष रहित निर्दोष समवसरण पति आप जिनेश।
सात सौ अठारह भाषा में उपदेशक, शतेन्द्र से पूजित परमेश।।

मोक्षमार्ग उपदेशक तीर्थेश, अनेकान्तमय आपका/(तव) उपदेश।
षट्द्रव्यमय लोक बताया, उत्पाद-व्यय-ध्रौव्यमय लोकालोक।।

अनादि अनंत लोक-अलोक, हर द्रव्य शाश्वत गुणपर्याय युत।
धर्म-अधर्म-काल-आकाश, शाश्वत शुद्ध द्रव्य अमूर्तिक।।

अशुद्ध-शुद्ध होते जीव पुद्गल, अशुद्ध संसारी (जीव) शुद्ध निर्मल।
कर्म सहित जीव होते संसारी, कर्म रहित जीव अशरीरी।।

आत्मविश्वास ज्ञान चारित्र युक्त, ध्यान-अध्ययन संयम युक्त।
सर्व परिग्रह मुक्त (जो) श्रमण, आत्मविकास द्वारा पाते निर्वाण।।

श्रमण उपासक होते श्रावक, श्रद्धा-प्रज्ञा-चारित्र युक्त।
दान-दया-पूजा व्रत सहित, श्रमण बनकर होते हैं मुक्त।।

पचपन (55) गणधर के स्वामी आप, अड़सठ (67) हजार श्रमण आपके।
एक लाख तीस हजार श्रमणी हुई, दो लाख श्रावक चार लाख श्राविका हुई।।

अंत में योग निरोध किया, अघाती नाशकर मोक्ष को पाया।
सम्मेदशिखर से मोक्ष सिधारे, विराजमान आप लोक शिखरे।।

आपके साथ में छः सौ मुनि मोक्ष पधारे, शुद्ध-बुद्ध हो विराजे लोक-शिखरे।

आपके गुण प्राप्ति हेतु पूजे, सांसारिक दुःखों से निवृत्त कीजे।।

जय विमल जिनेशं त्रिभुवनईशं, सुर-नर पूजित भव्येशं।
हम तव गुण गाये भक्ति बढ़ाये, तव पद चाहे हे ! जगदीशं।।

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं...

**दोहा- जो भाव-भक्ति-शक्ति से, विमल प्रभु पूजा करे।**
**सभी भव-ताप संताप नाशे, 'कनक' सिद्धि पद वरे।।**

।।परिपुष्पाञ्जलिम् क्षिपेत्, इत्याशीर्वादः।।

ग.पु.कॉ., सागवाड़ा, दिनांक 27.05.2015, रात्रि 2.22

# श्री अनंतनाथ भगवान् की पूजा

## (पूजा के आध्यात्मिक वैज्ञानिक सकारण)

**-आचार्य कनकनन्दी**

**(चाल : क्या मिलिये....., सायोनारा.....)**

**आह्वान : (भावनात्मक रूप से पूज्यों का सान्निध्य प्राप्त करना)**

अक्षय अनंत गुणों के धनी हे ! अनंतनाथ तीर्थंकर स्वामी।
आपके गुणों का वर्णन स्वयं, नहीं कर पाते गणधर स्वामी।।
आपके आह्वान-स्मरण-पूजन से, मैं भी चाहता हूँ आपके गुण।
अन्य सभी सांसारिक लाभ नहीं होते, आप सम अनंत गुण संपन्न।। (ध्रुव)

**मंत्र-** ॐ ह्रीं श्री अनंतनाथ जिनेन्द्राय! अत्र अवतर अवतर संवोषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्री अनंतनाथ जिनेन्द्राय! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री अनंतनाथ जिनेन्द्राय! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

**1. उदक-(आत्मिक विशुद्धि व जन्म जरा मृत्यु विनाश के प्रतीक)**

उदक चढा के मैं भावना भाऊँ, मेरे कर्मफल हो जावे क्षय।
आपके आदर्श पथ पर चलकर, मैं भी चाहता हूँ पद अक्षय।। आपके...

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री अनंतनाथ जिनेन्द्राय नमः आत्म/(भाव) विशुद्धि करणाय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।**

**2. चंदन-(संक्लेश ताप विनाश व भाव आह्लाद के प्रतीक)**

शीतल सुगंधित चंदन से (आपका) अर्चन करके मैं भावना भाऊँ।
संसार ताप नाश हो प्रभु, मेरे भी तव सम गुणों को पाऊँ।। आपके...

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री अनंतनाथ जिनेन्द्राय नमः संक्लेश ताप विनाशनाय भाव आह्लादित करणाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।**

**3. तंदुल-(संसार उत्पादक कर्मनाशक व अक्षयपद के प्रतीक)**

अक्षय अनंत आपके गुण प्राप्ति हेतु, अक्षत से मैं पूजन करूँ।
आपके गुणों के स्मरण-अनुसरण से, आप सम मैं निर्वाण पाऊँ।। आपके...

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री अनंतनाथ जिनेन्द्राय नमः संसार उत्पादक कर्म विनाशनाय एवं अक्षय ज्ञानानंद पद प्राप्ताय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।**

**4. पुष्प-(ब्रह्मभाव विकास व ज्ञानानंद रस के प्रतीक)**

पुष्प सुगंधित कमल गुलाब से, आपके चरण कमल यजूँ।
मेरे भी अनंत गुण विकसित हो, इस हेतु तव यजन करूँ।। आपके...

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री अनंतनाथ जिनेन्द्राय नमः ब्रह्मभाव विकासनाय ज्ञानानंद रस प्राप्ताय सुमनं/(पुष्पं) निर्वपामीति स्वाहा।**

**5. दीप-(अज्ञान मोहान्धकार विनाश के प्रतीक)**

अनंत ज्ञान ज्योति से प्रकाशित, आप प्रभुवर हे ! अनंतनाथ।
आपका का पूजन दीप से करके, मैं भी प्राप्त करूँ तव गुण अनंत।। आपके...

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री अनंतनाथ जिनेन्द्राय नमः ध्यान-अध्ययन-ज्ञानेन अज्ञान मोहान्धकार विनाशनाय दीपकं निर्वपामीति स्वाहा।**

**6. धूप-(अष्टकर्म नाश व अष्टगुण प्राप्ति के प्रतीक)**

ध्यानाग्नि से आपने कर्म जलाकर, अक्षय अनंत गुणों को पाया।
मैं भी आपका पूजन करके, आपके गुणों को मन में ध्याया।। आपके...

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री अनंतनाथ जिनेन्द्राय नमः अष्टकर्म विनाशनाय आध्यात्मिक गुण प्राप्ताय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।**

**7. फल-(मोक्षफल प्राप्ति के प्रतीक)**

फल विविध रसाल मनोहर से, आपका पूजन करूँ अनंतनाथ।
आप सम मैं आत्मसाधना से, अनंत गुण पाकर बनूँ स्वनाथ।। आपके...

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री अनंतनाथ जिनेन्द्राय नमः ज्ञानानंद रस भरित मोक्ष फल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।**

**8. अर्घ्य-(अनर्घ्य गुण समूह प्राप्ति के प्रतीक)**

अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, आपका पूजन करूँ हे ! अनंतनाथ।

अनर्घ्य पद आप सम प्राप्त कर, मैं भी बन जाऊँ सच्चिदानंद।। आपके...

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री अनंतनाथ जिनेन्द्राय नमः अनंत अनर्घ्यगुणप्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।**

## पंचकल्याणक अर्घ्य

**1. गर्भकल्याणक-**

सोलह स्वप्न सह माता सर्वयशा के, गर्भ में आये प्रभु अनंतनाथ।

पिता सिंहसेन प्रसन्न हुए पाकर, जगत् उद्धारक विश्वनाथ।। आपके...

**मंत्र- ॐ ह्रीं कार्तिककृष्ण प्रतिपदायां श्री अनंतनाथजिन गर्भकल्याणकाय अर्घ्यं...**

**2. जन्मकल्याणक-**

तव जन्म हुआ अनंतगुण प्राप्ति हेतु, अतः हुआ जन्म कल्याणक।

देव भी मनाये जन्म महोत्सव, तीन लोक में आनंद छाये।। आपके...

**मंत्र- ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णा द्वादश्यां श्री अनंतनाथजिन जन्मकल्याणकाय अर्घ्यं...**

**3. तप कल्याणक-**

देख के उल्कापात हुआ वैराग्य, लौकांतिक देव भी स्वर्ग से आये।

एक सहस्त्र राजाओं के साथ, सहेतुक वन में श्रमण हुए।। आपके...

**मंत्र- ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णा द्वादश्यां श्री अनंतनाथजिन दीक्षाकल्याणकाय अर्घ्यं...**

**4. केवलज्ञान कल्याणक-**

तीन वर्ष की आत्मसाधना से, आपको हुआ केवलज्ञान।

अनंत सुख प्राप्ति के लिए, आपने विश्व को दिया सम्यग्ज्ञान।। आपके...

**मंत्र- ॐ ह्रीं चैत्रकृष्ण अमावस्यायां श्री अनंतनाथजिन केवलज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यं...**

**5. मोक्ष कल्याणक-**

सर्व कर्म नाश सात सहस्र मुनियों के साथ पाये पद निर्वाण।

अनंत अक्षय समय तक, अनंत सुख को भोगोगे भगवान्।। आपके...

**मंत्र- ॐ ह्रीं चैत्रकृष्ण अमावस्यायां श्री अनंतनाथजिन मोक्षकल्याणकाय अर्घ्यं...**

## जयमाला

### (आध्यात्मिक विजय के लिए पूज्य अभिनंदनाथ प्रभु के गुणानुस्मरण, गुणानुवाद-गुणानुकरण)

**(चाल : तुम दिल की.....)**

अक्षय अनंत गुणों के स्वामी, आप हो ! अनंतनाथ जगनामी।
अनादि कालीन अनंत कर्मनाश से, आप बने अनंत गुणों के स्वामी।।
अनंत ज्ञान को आपने पाया, त्रिकालवर्ती सत्य को (आपने) जाना।
दिव्य ध्वनि से उसे बताया, जीव-अजीव को सत्य बताया।।
अनादि अनंत शाश्वत विश्व स्वयंभू, अकृत्रिम गुण व पर्याय सहित।
जीव पुद्गल धर्म-अधर्म आकाश काल, हैं मौलिक स्वतंत्र-स्वतंत्र।।
हर द्रव्य में होते अनंत गुण, तथाहि उनकी पर्याय अनंत।
शुद्ध द्रव्यों में गुण व पर्याय शुद्ध, अशद्ध में होते दोनों अशुद्ध।।
जीव अनंत पुद्गल उससे अनंत गुणा, दोनों ही होते अशुद्ध-शुद्ध।
अनादिकाल से जीव कर्म आबद्ध, जिससे जीव होते अशुद्ध।।

सूक्ष्म निगोदिया से ले मनुष्य तक, होते है जीव कर्म आबद्ध।
चौरासी लक्ष्य योनि चतुर्गति के, जीव होते है सभी ही अशुद्ध।।
पंचलब्धियों को पाकर जीव, जो पाते है सम्यक्‌दर्शन विशुद्ध।
उससे वे पाते सम्यग्ज्ञान जिससे, चारित्र भी होता सम्यक्।।
तीनों से बनता है मोक्षमार्ग, जिससे वे बनते हैं मोक्ष पथिक।
पंचपाप व सप्त व्यसन अष्टमद, त्याग कर बढ़ते मोक्ष के पथ।।
समस्त विभाव भावों को छोड़कर, जो समता-शांति को पाते।
ध्यान-अध्ययन तप-त्याग से, आत्मविशुद्धि से मोक्ष पाते।।
मोक्ष ही जीवों का शुद्ध स्वरूप, जो अनंतज्ञान दर्शन वीर्य स्वरूप।
शुद्ध जीव कभी न अशुद्ध होते, अनंतकाल तक सुख ही भोगते।।
ऐसा परम सत्य का (आपने) दिया उपदेश, परम सुख का दिव्य संदेश।
अतएव आप अनंत उपकारी, 'कनकनंदी' को मान्य आपका संदेश।।
**ॐ ह्रीं श्रीं अनंतनाथ जिनेन्द्राय! जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।**
सीपुर, दिनांक 10.04.2017, मध्याह्न 3.03

# श्री धर्मनाथ भगवान् की पूजा

## (पूजा के आध्यात्मिक वैज्ञानिक सकारण)

**-आचार्य कनकनन्दी**

**(चाल : चाँद सी मेहबूबा....., आत्मशक्ति....., तुम दिल की.....)**

**आह्वान : (भावनात्मक रूप से पूज्यों का सान्निध्य प्राप्त करना)**

हे ! धर्मनाथ धर्म के नाथ, धर्मधुरंधर धर्म प्रवर्तक।
हे ! विश्वगुरु हे ! तीर्थंकर, साक्षात् धर्ममय आपका रूप।।
आपका आह्वान-स्मरण-ध्यान से, मैं करूँ साक्षात् धर्म पूजन।
इससे मैं भी साक्षात् धर्ममय बन जाऊँ इस हेतु तव पूजन।। (ध्रुव)

**मंत्र-** ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवोषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

**1. उदक-(आत्मिक विशुद्धि व जन्म जरा मृत्यु विनाश के प्रतीक)**

नीर से पूजन आपका करके, मैं आत्मस्वभाव करूँ निर्मल।
निर्मल आत्मा ही साक्षात् धर्म, ऐसा आपका है दिव्य संदेश।।...आपका

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय ! आत्म/(भाव) विशुद्धि करणाय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।**

**2. मंगल्य-(संक्लेश ताप विनाश व भाव आह्लाद के प्रतीक)**

मलय से आपका पूजन करके, मैं भी बन जाऊँ आप सम मंगल।
मंगल है धर्म मंगल आप, मंगल में भी मंगल आत्म निर्मल।।...आपका

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय ! संक्लेश ताप विनाशनाय भाव आह्लादित करणाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।**

**3. अक्षत-(संसार उत्पादक कर्मनाशक व अक्षयपद के प्रतीक)**

अक्षत है शुद्ध आत्मस्वरूप, उसे प्राप्त हेतु करूँ अक्षत से पूजन।

अक्षय-अव्याबाध आपका पद, उसे प्राप्त हेतु आपका ध्यान।।...आपका

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय! संसार उत्पादक कर्म विनाशनाय एवं अक्षय ज्ञानानंद पद प्राप्ताय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।**

**4. प्रसून-(ब्रह्मभाव विकास व ज्ञानानंद रस के प्रतीक)**

अरविंद से पूजन करके, तव गुणगणों का करूँ स्मरण।

तव स्मरण-ध्यान-अनुकरण से, मुझे भी मिले पद निर्वाण।।...आपका

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय! ब्रह्मभाव विकासनाय ज्ञानानंद रस प्राप्ताय सुमन (पुष्प) निर्वपामीति स्वाहा।**

**5. चरु-(क्षुधा रोग विनाश के प्रतीक)**

चरु सुरसाल विविध मिष्टान्न, क्षुधाहर से मैं आपको यजूँ।

क्षुधाक्षय हो क्षोभमय हो, इस हेतु भाव से मैं आपको भजूँ।।...आपका

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय! मोह-वेदनीय-अंतराय नाश सहित तृष्णा क्षुधा विनाशनाय नैवद्य निर्वपामीति स्वाहा।**

**6. दीप-(अज्ञान मोहान्धकार विनाश के प्रतीक)**

दीपतमहर से पूजन करूँ, अज्ञानमोहतमहर हेतु।

जिससे मैं धर्ममय बन जाऊँ, अन्य प्रयोजन नहीं जो संसार हेतु।।...आपका

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय! ध्यान-अध्ययन-ज्ञानेन अज्ञान मोहान्धकार विनाशनाय दीपकं निर्वपामीति स्वाहा।**

**7. धूप-(अष्टकर्म नाश व अष्टगुण प्राप्ति के प्रतीक)**

पावक में धूप खेकर पूजन करूँ, हे! धर्मनाथ जिनेश।

मेरे कर्मजले तव गुण मिले, इस हेतु पूजन हे! जगदीश/(विश्वेश)।।...आपका

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय! अष्टकर्म विनाशनाय आध्यात्मिक गुण प्राप्ताय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।**

**8. फल-(मोक्षफल प्राप्ति के प्रतीक)**

अमृतफल से पूजन करूँ, मैं अमृतफल प्राप्ति निमित्त।

धर्म का स्वरूप धर्म का फल तो, होना ही स्व-स्वरूप में ही लीन।।...आपका

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय! ज्ञानानंद रस भरित मोक्ष फल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।**

**9. अर्घ्य-(अनर्घ्य गुण समूह प्राप्ति के प्रतीक)**

तीन लोक तीन काल में नहीं, अनर्घ्य द्रव्य धर्म सम।

सर्व द्रव्य तत्त्व पदार्थ मध्य में, आत्मोपलब्धि ही परम धर्म।।...आपका

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय! अनंत अनर्घ्यगुणप्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।**

## पंचकल्याणक अर्घ्य

**1. गर्भकल्याणक-**

माता सुव्रता के गर्भ में आये, धर्म प्रवर्तक श्री धर्मनाथ।

पिता भानु भी प्रसन्न हुए, तीन लोक में छाया आनंद।।...आपका

**मंत्र- ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लात्रयोदश्यां श्री धर्मनाथजिन गर्भकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।**

**2. जन्मकल्याणक-**

विश्व मंगलकारी आपका जन्म, जिससे हुआ जन्मकल्याणक।

देवों ने सुमेरु पर जन्माभिषेक किया, इन्द्र ने किया तांडव नृत्य।।...आपका

**मंत्र- ॐ ह्रीं माघशुक्लात्रयोदश्यां श्री धर्मनाथजिन जन्मकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।**

**3. तप कल्याणक-**

उल्कापात देखकर आपको हुआ, वैराग्य शालवन में हुए श्रमण।

एक सहस्रराजा भी बने श्रमण, ध्यान-अध्ययन में हो गये लीन।।...आपका

**मंत्र- ॐ ह्रीं माघशुक्लात्रयोदश्यां श्री धर्मनाथजिन तपकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।**

**4. केवलज्ञान कल्याणक-**

सहेतुक बन में हुआ केवलज्ञान, देवों ने किया समवसरण निर्माण।
विश्व को दिया दिव्य संदेश, जिसे कहते धर्म तीर्थ प्रवर्तन।।...आपका

**मंत्र- ॐ ह्रीं पौषशुक्लापूर्णिमायां श्री धर्मनाथजिन केवलज्ञान कल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।**

**5. मोक्ष कल्याणक-**

अंत में शेष कर्मों को निःशेष कर, आप बने शुद्ध-बुद्ध-आनंद।
यह ही जीवों की परम अवस्था, जो है जीवों की शुद्ध धर्म दशा।।...आपका

**मंत्र- ॐ ह्रीं ज्येष्ठशुक्लाचतुर्थ्यां श्री धर्मनाथजिन मोक्षकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।**

## जयमाला

**(चाल : जय हनुमान....., सायोनारा.....)**

हे ! तीर्थ प्रवर्तक धर्मनाथ, आपने बताया धर्म का स्वरूप।
वस्तु स्वभाव ही होता धर्म, हर द्रव्य का स्वशुद्ध स्वरूप धर्म।।
अशुद्ध स्वरूप धर्म का होता है विकार भाव, यथा जीव में राग द्वेष मोह।
क्रोध मान माया लोभ आदिक, ईर्ष्या घृणा तृष्णा काम आदिक।।
इससे जन्मते हिंसा झूठ व कुशील चोरी परिग्रहादि पाप।
सप्त व्यसन अन्याय-अत्याचार शोषण आदि पाप।।
इससे जीव बाँधते विविध कर्म, जिससे संसार में होता भ्रमण।
चौरासी लक्ष्य योनि में करते जन्म-मरण, पाते अनंत दुःख-दैन्य।।
विकार भाव को त्यागना होता धर्म, जिससे न बंधते कर्म।
अहिंसा अचौर्य सत्य अपरिग्रह, ब्रह्मचर्य पालन होता धर्म।।
सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्र युक्त, क्षमा मार्दव-आर्जव व तप त्याग।
समता-शांति व आत्मविशुद्धि, दया दान सेवा निस्पृह वृत्ति।।

विकार भाव जितने अंश में होते क्षीण, उतने अंश में धर्म उत्पन्न।
पूर्ण विकार भाव क्षय से होता है, पूर्ण धर्म जिससे मिले परिनिर्वाण।।
यह जीवों का शुद्ध स्वरूप जो, होता है निश्चय से परम धर्म।
अनंत ज्ञान दर्शन सुख वीर्यादि, अनंतगुण होते निश्चय से परम धर्म।।
ऐसा हो ! धर्मनाथ आप दिया संदेश, अलौकिक आपका दिव्य संदेश।
अतएव आप हो धर्म के नाथ, 'कनकनंदी' को मान्य आपका संदेश।।
**ॐ ह्रीं श्रीं धर्मनाथ जिनेन्द्राय जयमाला संपूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।**

# शांतिनाथ भगवान् की पूजा

## (पूजा के आध्यात्मिक वैज्ञानिक सकारण)

**-आचार्य कनकनन्दी**

**(चाल : चाँद सी महबूबा हो....., आत्मशक्ति.....)**

**आह्वान : (भावनात्मक रूप से पूज्यों का सान्निध्य प्राप्त करना)**

तीन-तीन पदवी के धारी शांतिनाथ हे ! शांतिकर।
आपके सम शांति प्राप्ति हेतु आपको पूजूँ हे ! प्रभुवर।।
आपके आदर्श पथ पर चलकर मैं भी आपके सम बनूँ।
इस हेतु ही आपका आह्वान श्रद्धा (व) प्रज्ञा से मैं करूँ।।

**मंत्र-** ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवोषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

**1. उदक-(आत्मिक विशुद्धि व जन्म जरा मृत्यु विनाश के प्रतीक)**

जन्म-जरा-मृत्यु विनाश हेतु, अनंत शांति प्राप्ति हेतु।
आपका पूजन मैं जल से करूँ, आपके गुण प्राप्ति हेतु।।
मल धौत हेतु यथा जल निमित्त, कर्ममल धौत हेतु भाव निमित्त।
अतएव मैं भाव सहित, जल से पूजूँ कर्म कलंक धौत निमित्त।।

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय! आत्म/(भाव) विशुद्धि करणाय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।**

**2. चंदन-(संक्लेश ताप विनाश व भाव आह्लाद के प्रतीक)**

आप तो अनंत शांतिमय, द्रव्य-भाव-नोकर्म रहित से।
मैं भी चंदन से पूजन करके, अनंत सुख प्राप्त करूँ आत्मा से।।
मलयागिरी के सुगंधित चंदन सम, मैं भी बनूँ शीतल सुवासित।
इस हेतु आपकी करूँ चंदन से अर्चना, आत्मगुण हो मेरे विकसित।।

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय! संक्लेश ताप विनाशनाय भाव आह्लादित करणाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।**

**3. अक्षत-(संसार उत्पादक कर्मनाशक व अक्षयपद के प्रतीक)**

तीन-तीन पदवी से परे भी, आपने पाया है अक्षय पद।
उस पदवी की प्राप्ति हेतु मैं, अक्षत से पूजूँ आपके पद।।
कर्मातीत है पद आपका, जिससे आपका पद अक्षय।
जन्म-जरा-मृत्यु क्षय से परे, अव्यय-अविनाशी-अक्षय।।

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय! संसार उत्पादक कर्म विनाशनाय एवं अक्षय ज्ञानानंद पद प्राप्ताय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।**

**4. पुष्प (सुमन)-(ब्रह्मभाव विकास व ज्ञानानंद रस के प्रतीक)**

पुष्प सुगंधित प्रासुक मनोहर, कमल गुलाब से पूजूँ।
आत्मिक गुण प्रफुल्लित हेतु, आपके पद कमलों को पूजूँ।।
कमल आदि पुष्प हैं प्रतीक, कामबाण विनाश से आत्मविकास।
पुष्पों से पूजा कर भावना भाऊँ, मेरा भी हो आत्मविकास।।

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय! ब्रह्मभाव विकासनाय ज्ञानानंद रस प्राप्ताय सुमन (पुष्प) निर्वपामीति स्वाहा।**

**5. नैवेद्य-(क्षुधा रोग विनाश के प्रतीक)**

प्रासुक सुमधुर घृत निर्मित, लड्डू घेबरादि से पूजूँ।
अनादि कालीन क्षुधारोग नाशकर, अनंत तृप्ति को (मैं) भोगूँ।।
घाती कर्म को नाशकर पाया, अनंत ज्ञान दर्शन सुख वीर्य।
मैं भी आत्मिक गुण नाशक, चार घाती को विनाश करूँ।।

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय! मोह-वेदनीय-अंतराय नाश सहित तृष्णा क्षुधा विनाशनाय नैवद्य निर्वपामीति स्वाहा।**

**6. दीपक-(अज्ञान मोहान्धकार विनाश के प्रतीक)**

परम शुक्लध्यान से आपने, नाश किया ज्ञानावरणादि कर्म।

जिससे आपने पाया, लोकालोक प्रकाशी अनंत ज्ञान।।
अज्ञान अंधकार नाश हेतु, मैं भी दीपक से करूँ पूजन।
अज्ञान तम नाशक प्रतीक रूप से, घृत दीपक से करूँ पूजन।।

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय! ध्यान-अध्ययन-ज्ञानेन अज्ञान मोहान्धकार विनाशनाय दीपकं निर्वपामीति स्वाहा।**

**7. धूप-(अष्टकर्म नाश व अष्टगुण प्राप्ति के प्रतीक)**

अष्टकर्म के नाशन हेतु, अष्टांग धूप से मैं पूजूँ।
अष्टकर्मों को नाशकर के, अष्टम बसुधा को पाऊँ।।
दुष्टाष्ट कर्म नाशकर आपने, अष्ट मूलगुणों को पाया।
आपके गुण-स्मरण/(कीर्तन) व अनुकरण से, आपके गुणों को ही पाना।।

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय! अष्टकर्म विनाशनाय आध्यात्मिक गुण प्राप्ताय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।**

**8. फल-(मोक्षफल प्राप्ति के प्रतीक)**

तीन-तीन पद त्यागकर, आप श्रमण बनकर सिद्ध बने।
ऐसे महान् फल प्राप्ति हेतु मैं, आम्रादि फल से यजूँ।।
आपकी सफलता है महानतम, जो संसार में अनुपलब्ध।
राजा महाराजा चक्रवर्ती से ले, इन्द्र तक को भी अनुपलब्ध।।

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय! ज्ञानानंद रस भरित मोक्ष फल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।**

**9. अर्घ्य-(अनर्घ्य गुण समूह प्राप्ति के प्रतीक)**

अघातीत हो घाती रहित हो, अतः आपका पद अनर्घ्य है।
ऐसे अनर्घ्य पद प्राप्ति हेतु, आपको पूजूँ अर्घ्य से।।
संसार के समस्त भौतिक मूल्य, आपके समक्ष मूल्यहीन।
ऐसे अमूल्य पद प्राप्ति हेतु, आपको अर्घ्य समर्पण है।।

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय! अनंत अनर्घ्यगुणप्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।**

## पंचकल्याणक अर्घ्य

### 1. गर्भकल्याणक-

अनंत जन्म मरण नाशन हेतु, आप अंतिम बार गर्भ में आये।
एरादेवी माता के गर्भ में, सर्वार्थसिद्धि से च्युत होकर आये।।
सोलह स्वप्न दर्शन द्वारा, माता को शुभतम संदेश मिले।
विश्वकल्याणक पुत्ररत्न जन्म का, पूर्वाभास माता को मिले।।

**मंत्र- ॐ ह्रीं भाद्रपदकृष्णासप्तम्यां गर्भमंगलमंडिताय श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।**

### 2. जन्मकल्याणक-

आपका जन्म भी है अद्वितीय, जिसे आपने पूर्व में नहीं पाया।
जिस जन्म के बाद पुनः कभी, आपने संसार में न जन्म लिया।।
ऐसे असाधारण जन्म पाकर, जन्म-जरा-मरण (को) नाश किया/(क्षय किया)।
जन्म कल्याणक पूजा कर, आपके सम जन्म को मैं चाहा।।

**मंत्र- ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णचतुर्दश्यां जन्ममंगलमंडिताय श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।**

### 3. तप कल्याणक-

वैराग्य आपको उत्पन्न हुआ, जाति स्मरण ज्ञान होने से/(पर)।
लौकांतिक देव आकर अनुमोदना की, स्वयं की भक्ति-भाव से।।
लौकांतिक देव से लेकर, सर्वार्थसिद्धि तक जो दुर्लभ है।
ऐसे विरागी होकर श्रमण बने, जो देव हेतु भी दुर्लभ है।।

**मंत्र- ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णचतुर्दश्यां तपमंगलमंडिताय श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।**

**4. ज्ञान कल्याणक-**

इच्छा निरोध तप तपा आपने, ख्याति पूजा लाभ रहित होकर।
एकांत मौन निस्पृह भाव से, समता-शांति से सहित होकर।।
आत्मविशुद्धि शुक्लध्यान से आपने, क्षपक श्रेणी आरोहण किया।
घाती कर्म को नाशकर आपने, केवलज्ञान को प्राप्त किया।।

**मंत्र- ॐ ह्रीं पौषशुक्लदशम्यां केवलज्ञानमंडिताय श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।**

**5. मोक्ष कल्याणक-**

दिव्य ध्वनि द्वारा समवसरण में, आपने मोक्षमार्ग बताया।
अंत में एक मास योग निरोधकर, अघाती कर्मों को भी नाश किया।।
आप बन गये शुद्ध-बुद्ध-निरंजन, अनंत अक्षय गुणों के स्वामी।
आपके गुण प्राप्ति के लिए, आपको पूजूँ हे ! जगत् स्वामी।।

**मंत्र- ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णाचतुर्दश्यां मोक्षमंगल प्राप्तये श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।**

## जयमाला

### (आध्यात्मिक विजय के लिए पूज्य शांतिनाथ प्रभु के गुणानुस्मरण, गुणानुवाद-गुणानुकरण)

**(चाल : चाँद सी मेहबूबा हो....., आत्मशक्ति.....)**

यथा नाम है तथा गुण है हे ! शांतिनाथ तीर्थंकर।
घाती नाश से पाया अनंत सुख, जो इन्द्र/(गणधर) को भी अगोचर।।
स्व-दोष शांति से मिली अनंत शांति अतः आप हो शांतिनाथ।
अनंत शांति हेतु आपने कहा रत्नत्रयमय मोक्षपथ।।
आत्म श्रद्धान ज्ञान चारित्र ही यथार्थ से है मोक्षपथ।
द्रव्य तत्त्व पदार्थ श्रद्धानमय स्व आत्मश्रद्धान से प्रारंभ पथ।।

इस हेतु ही श्रद्धान चाहिए सच्चे देव शास्त्र व गुरु का।
अष्टमद रिक्त अष्ट गुणयुक्त अष्ट अंग सहित सम्यक्दर्शन का।।
इससे युक्त होता ज्ञान सुज्ञान जिसे कहते है भेद विज्ञान।
स्व शुद्धात्मा ही उपादेय/(ग्रहणीय) है, अन्य सब त्यजनीय/(हेय) ऐसा ज्ञान।।
उक्त श्रद्धा व प्रज्ञा सहित जो आचरण है सो सम्यक् चारित्र।
देश चारित्र है श्रावक योग्य श्रमण योग्य होता सकल चारित्र।।
ग्यारह प्रतिमा होती है देश चारित्र जो ज्ञान-वैराग्य सहित है।
संसार-शरीर-भोगों से अनासक्त साधु बनने के भाव सहित।।
ज्ञान-वैराग्य बढ़ने पर अंतरंग-बहिरंग परिग्रह त्यागकर।
साधु बनकर समता-शांति से आत्मविशुद्धि करते निराडंबर।।
आत्मविशुद्धि से क्षपकश्रेणी आरोहण करके घातते घातीकर्म।
अरिहंत बनकर अनंत चतुष्टय पाते सिद्ध बनते अघाती नाशकर।।
ऐसा परम शांति को पाकर आपने दिया शांति का उपदेश।
परम शांति प्राप्ति के लिए 'कनक' को मान्य आपके उपदेश।।

**ॐ ह्रीं श्रीं शांतिनाथ जिनेन्द्राय आध्यात्मिक विजय हेतु जयमाला पूर्ण अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।**

सीपुर, दिनांक 21.03.2017, मध्याह्न 2.58

# श्री कुंथुनाथ भगवान् की पूजा
## (पूजा के आध्यात्मिक वैज्ञानिक सकारण)

-आचार्य कनकनन्दी

**(चाल : चाँद सी मेहबूबा....., आत्मशक्ति....., तुम दिल क.....)**

**आह्वान : (भावनात्मक रूप से पूज्यों का सान्निध्य प्राप्त करना)**

कुंथुनाथ हे ! जगत् हितकारी, कुंथुसम जीवों के भी हितकारी।
तीन पदवी को त्यागा बने श्रमण, अंत में पाये पद निर्वाण।।
अनंत आत्मिक वैभव पाया, तवसम वैभव मुझे भी पाना।
इसलिए आपका मैं करूँ स्मरण, तवसम साधना से पाऊँ निर्वाण।। (ध्रुव)

**मंत्र-** ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवोषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

**1. तोय-(आत्मिक विशुद्धि व जन्म जरा मृत्यु विनाश के प्रतीक)**

तोय से मैं पूजूँ आपको, जन्म-जरा-मरण नाशन को।
शुद्ध-बुद्ध व आनंद हेतु, जल से पूजूँ विमुक्ति हेतु।।...अनंत

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय! आत्म/(भाव) विशुद्धि करणाय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।**

**2. चंदन-(संक्लेश ताप विनाश व भाव आह्लाद के प्रतीक)**

आपका पूजन करूँ चंदन से, संसार के ताप विनाश हेतु।
अनंत आत्मिक आह्लाद पाकर, स्व-स्वरूप में ही विहार हेतु।।...अनंत

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय! संक्लेश ताप विनाशनाय भाव आह्लादित करणाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।**

**3. अक्षत-(संसार उत्पादक कर्मनाशक व अक्षयपद के प्रतीक)**

तंदुल अखण्डित से पूजन करके, अक्षय पद मैं प्राप्त करूँ।

अव्यय अनंत सुख प्राप्त करूँ, इस हेतु आपका मैं यजन करूँ।।...अनंत

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय! संसार उत्पादक कर्म विनाशनाय एवं अक्षय ज्ञानानंद पद प्राप्ताय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।**

**4. कुसुम-(ब्रह्मभाव विकास व ज्ञानानंद रस के प्रतीक)**

सुमन सुगंधित चंपा चमेली से, आपके पद कमल को यजूँ।
कामबाण सह कर्म नाशकर, मोक्ष प्राप्ति हेतु आपको भजूँ।।...अनंत

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय! ब्रह्मभाव विकासनाय ज्ञानानंद रस प्राप्ताय सुमन (पुष्प) निर्वपामीति स्वाहा।**

**5. चरु-(क्षुधा रोग विनाश के प्रतीक)**

आनंद अनुपम आत्मोत्थ अनंत, आपने पाया हे! कुंथुनाथ।
नैवेद्य से आपका पूजन करके, मैं भी बन जाऊँ तव सम नाथ।।...अनंत

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय! मोह-वेदनीय-अंतराय नाश सहित तृष्णा क्षुधा विनाशनाय नैवद्य निर्वपामीति स्वाहा।**

**6. दीपक-(अज्ञान मोहान्धकार विनाश के प्रतीक)**

परम ज्योति को आपने पाया, अज्ञान मोह को नाशकर।
मैं भी तव सम ज्योति प्राप्त हेतु, दीपक से पूजूँ हे! प्रभुवर।।...अनंत

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय! ध्यान-अध्ययन-ज्ञानेन अज्ञान मोहान्धकार विनाशनाय दीपकं निर्वपामीति स्वाहा।**

**7. धूप-(अष्टकर्म नाश व अष्टगुण प्राप्ति के प्रतीक)**

सुगंधित धूप अग्नि में खेकर, आपका पूजन करूँ मैं प्रभुवर।
मेरे अष्टकर्मों को भी नष्ट करके मैं, तव सम पाऊँ मोक्षपुर।।...अनंत

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय! अष्टकर्म विनाशनाय आध्यात्मिक गुण प्राप्ताय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।**

**8. फल-(मोक्षफल प्राप्ति के प्रतीक)**

फल विविध रसाल नारिकेल से, पूजन करूँ हे! प्रभुवर।

इससे मुझे मोक्षफल मिले, जिससे सर्व दुःख होवे दूर।।...अनंत

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय! ज्ञानानंद रस भरित मोक्ष फल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।**

**9. अर्घ्य-(अनर्घ्य गुण समूह प्राप्ति के प्रतीक)**

अष्ट द्रव्य के अर्घ्यं समर्पण कर, पूजन-स्मरण-ध्यान करूँ।

अष्ट कर्मों को नष्ट करके तव सम मैं अनर्घ्य पद वरूँ।।...अनंत

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय! अनंत अनर्घ्यगुणप्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।**

## पंचकल्याणक अर्घ्य

**1. गर्भकल्याणक-**

माता श्रीमती के गर्भ में आये, सर्वार्थसिद्धि से च्युत होकर।

पिता सूर्यसेन राजा हर्ष मनाये, सोलह स्वप्न सह गर्भ में आये।।...अनंत

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्रावणकृष्णादशम्यां श्री कुंथुनाथजिन गर्भकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।**

**2. जन्मकल्याणक-**

रत्नवर्षा सह हुआ तव जन्म, विश्व मंगलकारी जन्मकल्याणक।

सुमेरु पर हुआ जन्माभिषेक, इन्द्र ने किया तांडव नृत्य।।...अनंत

**मंत्र- ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लाप्रतिपत्तिथौ श्री कुंथुनाथजिन जन्म कल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।**

**3. तप कल्याणक-**

जाति स्मरण से हुआ वैराग्य, सहस्त्र राजा सह हुए श्रमण।

ध्यान-अध्ययन में हुए लीन, निस्पृह निराडंबर से मौन साधना।।...अनंत

**मंत्र- ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लाप्रतिपत्तिथौ श्री कुंथुनाथजिन दीक्षा कल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।**

**4. केवलज्ञान कल्याणक-**

सहेतुक वन में हुआ केवलज्ञान, लोकालोक प्रकाशी अनंतज्ञान।
दिव्य ध्वनि से आपने दिया संदेश, विश्व हितकारी दिव्य उपदेश।।...अनंत

**मंत्र- ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लातृतीयायां श्री कुंथुनाथजिन केवलज्ञान कल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।**

**5. मोक्ष कल्याणक-**

एक मास का किया योग निरोध, सर्व कर्म नाशकर बन गये सिद्ध।
एक सहस्र मुनि भी पाये निर्वाण, हो गये आप सब शुद्ध व बुद्ध।।...अनंत

**मंत्र- ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लाप्रतिपत्तिथौ श्री कुंथुनाथजिन मोक्ष कल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।**

## जयमाला

### (आध्यात्मिक विजय के लिए पूज्य कुंथुनाथ प्रभु के गुणानुस्मरण, गुणानुवाद-गुणानुकरण)

**(चाल : चाँद सी मेहबूबा....., आत्मशक्ति....., जय हनुमान.....)**

कुंथुनाथ हे ! जगत् नाथ तीन-तीन पदवीं से आप सनाथ।
तीर्थंकर चक्री कामदेव, तीनों पदवीं से आप हुए प्रसिद्ध।।
तीर्थंकर पदवीं तो महान् पदवीं है, जो तद्भव मोक्ष दायी है।
सर्वोच्च पुण्यशाली ही विरल से पाते है ऐसी ये पदवीं है।।
कामदेव होते हैं विश्व सुंदर, (ऐसी) तीनों पदवीं के धारी आप।
अतएव आप हो धर्म के साथ (साथ), सत्ता व सुंदरता के नाथ।।
चक्रवर्ती रूप में राज्य वैभव, मानव लोक में सबसे श्रेष्ठ।
धर्मक्षेत्र में तीर्थंकर रूप में, सुंदरता में आप कामदेव।।
चक्रवर्ती रूप में आपने पाया, वज्रवृषभनाराच संहनन।
स्वर्ण सदृश्य शरीर वर्ण व, समचतुरस्र-संस्थान प्रमाण।।

छयानवे हजार रानियाँ होती, संतान होती संख्यात हजार।
बत्तीस हजार थे अंगरक्षक देव, तीन सौ साठ थे आपके वैद्य।।
रसोइया थे तीन सौ साठ, चौदह प्रकार के थे उत्तम रत्न।
नौ प्रकार थी आपकी निधियाँ, छह खंडों में थे आपके राज्य।।
गायें भी आपकी तीन करोड़ व थालियाँ आपकी एक करोड़।
भद्रहाथी थे चौरासी लाख, रथ भी थे आपके चौरासी लाख।।
घोड़े थे आपके अठारह करोड़, वीर योद्धा थे चौरासी करोड़।
मुकुटबद्ध राजा थे बत्तीस हजार, नाट्यशालाएँ थी बत्तीस हजार।।
संगीतशालाएँ थी बत्तीस हजार, द्रोणमुख थे निन्यानवे हजार।
देश आपके थे बत्तीस हजार, नगर आपके पचहत्तर हजार।।
चौरासी करोड़ थे पदातिक सैनिक, ग्राम थे आपके छियानवे करोड़।
अंतर्द्वीप थे आपके छप्पन और भी, प्रचुर थे आपके वैभव।।
(तथापि) जाति स्मरण से हुआ आपको वैराग्य, त्यागा आपने राज्य वैभव।
एक सहस्र राजासह बने श्रमण, आत्म साधना से पाये निर्वाण।।
जो सुख न मिला राज्य वैभव से, उससे अधिक सुख साधु होने से।
अरिहंत सिद्ध में मिला सुख अनंत, इसलिए विरक्त हुए राज्य से।।
अतएव पूजन आपका भगवन्, 'कनक' करे आपको नमन।।

**ॐ ह्रीं श्रीं कुंथुनाथ जिनेन्द्राय! आध्यात्मिक विजय हेतु जयमाला पूर्ण अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।**

सीपुर, दिनांक 05.04.2017, रात्रि 10.30

# श्री अरहनाथ भगवान् की पूजा
## (पूजा के आध्यात्मिक वैज्ञानिक सकारण)

-आचार्य कनकनन्दी

**(चाल : चाँद सी मेहबूबा....., आत्मशक्ति....., भातुकली.....)**

**आह्वान : (भावनात्मक रूप से पूज्यों का सान्निध्य प्राप्त करना)**

अंतरंग-बहिरंग शुत्रु से रहित हे ! अरहनाथ तीर्थंकर।
तीर्थंकर-चक्री-कामदेव पदवीं से सहित तो भी हुए आप दिगम्बर।।
घाती नाश से अरिहंत बने, अघाती नाश से बने सिद्ध।
आपका पूजन मैं भी करके, मैं भी बनूँ तव सम शुद्ध।। (ध्रुव)

**मंत्र-** ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवोषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

**1. उदक-(आत्मिक विशुद्धि व जन्म जरा मृत्यु विनाश के प्रतीक)**

जल से पूजा कर प्रक्षालन करूँ मैं मेरे कर्मकलंक।
तव सम निर्मल चिन्मय बनूँ, इस हेतु बना मैं पूजक।।...घातीनाश से

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय ! आत्म/(भाव) विशुद्धि करणाय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।**

**2. चंदन-(संक्लेश ताप विनाश व भाव आह्लाद के प्रतीक)**

चंदन अर्चन से बनूँ तव सम शीतल ऐसी भावना भाता हूँ।
संसार ताप मेरा विनाश हो, ऐसी शुभकामना करता हूँ।।...घातीनाश से

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय ! संक्लेश ताप विनाशनाय भाव आह्लादित करणाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।**

**3. तंदुल-(संसार उत्पादक कर्मनाशक व अक्षयपद के प्रतीक)**

अखंडित तंदुल से पूजन करके, अक्षय तव पद चाहता हूँ।

कर्मजनित सांसारिक पद तो, संतापप्रद अतः इसे त्यागूँ।।...घातीनाश से

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय! संसार उत्पादक कर्म विनाशनाय एवं अक्षय ज्ञानानंद पद प्राप्ताय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।**

**4. पुष्प-(ब्रह्मभाव विकास व ज्ञानानंद रस के प्रतीक)**

पुष्प से पूजाकर अपवर्ग चाहूँ, सांसारिक वर्ग से परे है।

पुष्प सम मम गुण विकसित हो, जो कर्मबंध से परे है।।...घातीनाश से

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय! ब्रह्मभाव विकासनाय ज्ञानानंद रस प्राप्ताय सुमन (पुष्प) निर्वपामीति स्वाहा।**

**5. नैवेद्य-(क्षुधा रोग विनाश के प्रतीक)**

सांसारिक भोग-उपभोग से परे, आत्मिक सुख मैं चाहता हूँ।

अतएव नैवेद्य से पूजा करके, आध्यात्मिक सुख ध्याता हूँ।।...घातीनाश से

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय! मोह-वेदनीय-अंतराय नाश सहित तृष्णा क्षुधा विनाशनाय नैवद्य निर्वपामीति स्वाहा।**

**6. दीपक-(अज्ञान मोहान्धकार विनाश के प्रतीक)**

तिमिर हर दीपक से पूजाकर, आध्यात्मिक ज्योति मैं चाहता हूँ।

आपके पूजन-ज्ञान-ध्यान से, आत्मिक प्रकाश मैं चाहता हूँ।।...घातीनाश से

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय! ध्यान-अध्ययन-ज्ञानेन अज्ञान मोहान्धकार विनाशनाय दीपकं निर्वपामीति स्वाहा।**

**7. धूप-(अष्टकर्म नाश व अष्टगुण प्राप्ति के प्रतीक)**

ध्यान अग्नि से यथा आप कर्म जलाये, तथाहि मैं भी चाहता हूँ।

अष्टांग धूप अग्नि में खेकर, कर्म जलाने का भाव करता हूँ।।...घातीनाश से

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय! अष्टकर्म विनाशनाय आध्यात्मिक गुण प्राप्ताय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।**

**8. फल-(मोक्षफल प्राप्ति के प्रतीक)**

चक्रवर्तीत्व से भी महान् फल है आत्मिक उपलब्धि रूपी फल।

ऐसे महान् फल प्राप्ति हेतु, पूजा करूँ चढ़ाके रसाल फल।।...घातीनाश से

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय! ज्ञानानंद रस भरित मोक्ष फल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।**

**9. अर्घ्य-(अनर्घ्य गुण समूह प्राप्ति के प्रतीक)**

भौतिक मूल्य के विनिमय द्वारा, नहीं मिलता है अनर्घ्यं पद।

अनर्घ्यं पद प्राप्ति के हेतु, तव पूजन करूँ चढ़ाके अर्घ्य।।...घातीनाश से

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय! अनंत अनर्घ्यगुणप्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।**

## पंचकल्याणक अर्घ्य

**1. गर्भकल्याणक-**

माता मित्रा रानी के गर्भ में आये, च्युत होकर अपराजित स्वर्ग से।

सोलह स्वप्न से ज्ञात हुआ तीर्थंकर प्रभु गर्भ में आये।।...घातीनाश से

**मंत्र- ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णातृतीयायां श्री अरहनाथजिन गर्भ कल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।**

**2. जन्मकल्याणक-**

मति-श्रुत-अवधि सुज्ञान सहित, जन्म लिए प्रभु अरहनाथ।

जन्माभिषेक हुआ था सुमेरु पर, इन्द्र ने किया था तांडव नृत्य।।...घातीनाश से

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री अरहनाथजिन जन्मकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।**

**3. तप कल्याणक-**

मेघों के विनाश देखने से, विरक्त हुए सांसारिक भोगों से।

एक सहस्र राजाओं के साथ, श्रमण बने सहेतुक वन में।।...घातीनाश से

**मंत्र- ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्लादशम्यां श्री अरहनाथजिन दीक्षा कल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।**

**4. केवलज्ञान कल्याणक–**

सोलह वर्ष अपने तप किया, घाती नाश से केवल ज्ञान पाया।
दिव्य ध्वनि से विश्व संबोधा, विमुक्ति मार्ग को आप बताया।।...घातीनाश से

**मंत्र– ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्लाद्वादश्यां श्री अरहनाथजिन ज्ञान कल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।**

**5. मोक्ष कल्याणक–**

शेष अघाती को घातकर आप, शुद्ध-बुद्ध हुए प्रभुवर।
अनंत ज्ञानदर्शन सुखवीर्य सह, अनंत गुण के बने ईश्वर।।...घातीनाश से

**मंत्र– ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णामावस्यायां श्री अरहनाथजिन मोक्षकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।**

## जयमाला

### (आध्यात्मिक विजय के लिए पूज्य अरहनाथ प्रभु के गुणानुस्मरण, गुणानुवाद–गुणानुकरण)

**(चाल : चाँद सी मेहबूबा....., आत्मशक्ति....., जय हनुमान.....)**

तीन पदवीं के धारी आप हो, तीर्थंकर अरहनाथ स्वामी।
सोलह कारण भावना भाकर, आप बन गये तीर्थंकर स्वामी।।
विश्व कल्याण की भावना आपने, भायी थी सोलह भावना में।
आत्मविश्वास ज्ञान चारित्र सहित, भावना भायी थी वात्सल्य से।।
दर्शनविशुद्धि भावना में आपने, आत्मविश्वास को पावन किया।
विनयसम्पन्न भावना में आपने, आत्मिक गुण-गुणी का विनय किया।।
शील-व्रतों का पालन आपने, निरतिचार रूप से पालन किया।
अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोग में आपने, द्रव्य-तत्त्वों का सतत ज्ञान किया।।
सतत संवेग भावना में आप, संसार के दुःखों से संवेग रहे।
शक्तिस्तः त्याग भावना में आप, विभावों को सदा त्यागते रहे।।

शक्तिस्तः तप भावना में, आप, अंतरंग-बहिरंग तपों को तपा।
साधु समाधि भावना में आप, साधु-समाधि में सहयोग किया।।
सच्चे गुरु के मंगल हेतु आपने, वैयावृत्ति की भावना भायी।
अरिहंत-आचार्य-बहुश्रुत भक्ति व, प्रवचन भक्ति की भावना भायी।।
धार्मिक आवश्यक क्रियाओं को आपने, निरतिचार से पालन किया।
मोक्षमार्ग की प्रभावना हेतु, आपने ज्ञान-दान-तपादि किया।।
धार्मिक जीव प्रति वात्सल्य भाव से, सेवा-सहयोग-सम्मान किया।
जिससे सातिशय पुण्य स्वरूप, तीर्थंकर नामकर्म आस्रव किया।।
जिससे आपके हुए पंचकल्याणक, जो अन्य जीव हेतु अलभ्य है।
ऐसी भावना की उपलब्धि हेतु, 'कनक' को मान्य आपके आदर्श।।

**ॐ ह्रीं श्रीं अरहनाथ जिनेन्द्राय! आध्यात्मिक विजय हेतु जयमाला पूर्ण अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।**

सीपुर, दिनांक 06.04.2017, रात्रि 11.57

# श्री मल्लिनाथ भगवान् की पूजा

## (पूजा के आध्यात्मिक वैज्ञानिक सकारण)

**-आचार्य कनकनन्दी**

**(चाल : चाँद सी महेबूबा....., आत्मशक्ति....., भातुकली.....)**

**आह्वान : (भावनात्मक रूप से पूज्यों का सान्निध्य प्राप्त करना)**

हे ! मल्लिनाथ मोहमल्ल मर्दक, बाल ब्रह्मचारी शीलधारी।
केवल छह दिन में बने केवली, पाँच हजार मुनि सह गये मोक्षपुरी।।
आप सम बनूँ मोहमल्ल मर्दक, इसलिए आपका आह्वान पूजन।
आपका आदर्श मेरे पथ-प्रदर्शक, अतः आपका स्मरण-ध्यान।। (ध्रुव)

**मंत्र-** ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवोषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

**1. अम्बु-(आत्मिक विशुद्धि व जन्म जरा मृत्यु विनाश के प्रतीक)**

अंभ से आपका करूँ पूजन, मेरे पाप-ताप हो प्रक्ष्यालन।
आप सम बनने हेतु करूँ, पूजन कर्ममल हो मेरा प्रक्ष्यालना।।...आपसम

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय! आत्म/(भाव) विशुद्धि करणाय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।**

**2. गंधसार-(संक्लेश ताप विनाश व भाव आह्लाद के प्रतीक)**

गंधराज से करूँ तव चरण अर्चन, भवताप मेरे हो शमन।
शांत-शीतल गुणों को करूँ वरण, इस हेतु आपका करूँ पूजन।।...आपसम

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय! संक्लेश ताप विनाशनाय भाव आह्लादित करणाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।**

**3. तंदुल-(संसार उत्पादक कर्मनाशक व अक्षयपद के प्रतीक)**

अखंडित तंदुल से पूजन करके चाहूँ मैं तव सम अक्षय पद।
तव पद ही है शाश्वत जो जन्म-जरा-मरण से रहित पद।।...आपसम

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय! संसार उत्पादक कर्म विनाशनाय**

**एवं अक्षय ज्ञानानंद पद प्राप्ताय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।**

**4. पुष्प (सुमन)-(ब्रह्मभाव विकास व ज्ञानानंद रस के प्रतीक)**

शतदल मल्लिका अर्पण करके, तव पूजन करूँ हे ! मल्लिनाथ।
कामशर मम नाश हो प्रभु, तव सम बनूँ मैं समता शांत।।...आपसम

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय! ब्रह्मभाव विकासनाय ज्ञानानंद रस प्राप्ताय सुमन (पुष्प) निर्वपामीति स्वाहा।**

**5. चरु-(क्षुधा रोग विनाश के प्रतीक)**

चरु सुमधुर मोदक से, पूजन करूँ तव हे ! मल्लिनाथ।
क्षुधारोग व भवरोग नशे, इस हेतु पूजन करूँ हे ! मोक्षकांत।।...आपसम

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय! मोह-वेदनीय-अंतराय नाश सहित तृष्णा क्षुधा विनाशनाय नैवद्य निर्वपामीति स्वाहा।**

**6. दीपक-(अज्ञान मोहान्धकार विनाश के प्रतीक)**

भौतिक तमहर दीपक चढ़ाकर, भावना भाऊँ मम मोहतम नशे।
ज्ञान ज्योति मम हो पूर्ण प्रकट, ज्ञानावरणीय (व) मोहनीय कर्म नशे।।...आपसम

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय! ध्यान-अध्ययन-ज्ञानेन अज्ञान मोहान्धकार विनाशनाय दीपकं निर्वपामीति स्वाहा।**

**7. धूप-(अष्टकर्म नाश व अष्टगुण प्राप्ति के प्रतीक)**

धूप सुगंधित अग्नि में खेकर, भावना भाऊँ मेरे कर्मकाष्ठ जले।
आत्मिक गुण मम होवे प्रकट, जिससे मुझे मोक्षसुख मिले।।...आपसम

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय! अष्टकर्म विनाशनाय आध्यात्मिक गुण प्राप्ताय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।**

**8. फल-(मोक्षफल प्राप्ति के प्रतीक)**

कदली च्युत नारिकेल से पूजूँ, मैं मोक्षफल प्राप्ति हेतु।
मोक्षफल ही शाश्वत सुखफल, उसमें न होते दुःख के हेतु।।...आपसम

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय! ज्ञानानंद रस भरित मोक्ष फल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।**

**9. अर्घ्य-(अनर्घ्य गुण समूह प्राप्ति के प्रतीक)**

अष्ट द्रव्यों के अर्घ्यं चढ़ाकर, आपके सम अनर्घ्यपद पाऊँ।
आत्मिक पद ही है अमूल्य पद, अतएव आत्मिक पद पाऊँ।।...आपसम

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय! अनंत अनर्घ्यगुणप्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।**

## पंचकल्याणक अर्घ्य

**1. गर्भकल्याणक-**

गर्भ में आये प्रभु मल्लिनाथ, अपराजित स्वर्ग से होकर च्युत।
माता प्रभावती हुई हर्षित, पिता राजा कुंभ भी प्रमुदित।।...आपसम

**मंत्र- ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लाप्रतिपदायां श्री मल्लिनाथजिन गर्भकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।**

**2. जन्मकल्याणक-**

जन्म कल्याणक हुआ आनंदप्रद, तीन लोक के जीव पाये आनंद।
सुमेरु पर हुआ तव जन्माभिषेक, भक्ति करने वाले हुए (स्वयं) पुण्यवंत।।...आपसम

**मंत्र- ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्ला एकादश्यां श्री मल्लिनाथजिन जन्मकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।**

**3. तप कल्याणक-**

बाल ब्रह्मचारी आप हुए विरक्त, लौकांतिक देव (भी) हुए आनंदित।
जयंती पालकी से (आप) गये शालीवन, तीन सौ राजा सह बने श्रमण।।...आपसम

**मंत्र- ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्ला एकादश्यां श्री मल्लिनाथजिन दीक्षाकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।**

**4. केवलज्ञान कल्याणक-**

नंदीषेण राजा के घर हुआ पारणा, पंचाश्चर्य से देवों से हुई अनुमोदना।
छह दिनों में ही बने केवलज्ञानी, सात सौ अठारह भाषा में खिरी ध्वनि।।...आपसम

**मंत्र- ॐ ह्रीं पौषकृष्णाद्वितीयायां श्री मल्लिनाथजिन केवलज्ञान कल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।**

**5. मोक्ष कल्याणक-**

अंत में योग निरोध कीना, कर्मनाश से आप मोक्ष सिधारे।
पंच सहस्त्र मुनि भी मोक्ष पधारे, अनंत गुणों के साथ विराजे।।...आपसम

**मंत्र- ॐ ह्रीं फाल्गुनशुक्लापंचम्यां श्री मल्लिनाथजिन मोक्षकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।**

## जयमाला

### (आध्यात्मिक विजय के लिए पूज्य श्री मल्लिनाथ प्रभु के गुणानुस्मरण, गुणानुवाद-गुणानुकरण)

**(चाल : हाँ तुम बिल्कुल....., जिस देश में....., सायोनारा.....)**

हे ! मल्लिनाथ प्रभु निर्दोष आप्त, अक्षय गुणगण धारक आप।
संसारी जीवों के होते अठारह दोष, इन सभी दोषों से रहित आप।।
संसारी जीव होते भूख से त्रास, घाती नाश से आपको न लगे भूख।
अनंतज्ञान दर्श सुख वीर्य संयुक्त, प्यास की पीड़ा से हो गये मुक्त।।
परम औदारिक शरीर सहित, आप बूढ़ापा से भी रहित।
तथाहि रोग जन्म-मरण रहित, सप्तभय व अष्टमद से रहित।।
राग द्वेष मोह से आप हो शून्य, आश्चर्य अरति व खेद शून्य।
शोक निद्रा व चिंता से रिक्त, शारीरिक मल-मूत्र स्वेद रहित।।
शरीर सहित भी थे भावमुक्त, घातीनाश से आप जीवनमुक्त।
दिव्य ध्वनि से उपदेश या विहार, इच्छा रहित थे अतिशय पुण्यफल।।
अलौकिक आपके भाव-व्यवहार, सामान्यजन की बुद्धि के अगोचर।
अनंत चतुष्टय व तीर्थंकर पुण्य कारण, श्रद्धा-प्रज्ञा रिक्त से न होता गोचर।।
अघाती नाश से आप हुए विमुक्त, (अक्षय) अनंत सुख को भोगते सतत।
सच्चिदानंदमय आपका स्वरूप, 'कनक' वंदे प्राप्त हेतु आपका रूप।।

**ॐ ह्रीं श्रीं मल्लिनाथ जिनेन्द्रेभ्यो! आध्यात्मिक विजय हेतु जयमाला पूर्ण अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।**

सीपुर, दिनांक 11.04.2017, रात्रि 9.17

# श्री मुनि सुव्रतनाथ भगवान् की पूजा

## (पूजा के आध्यात्मिक वैज्ञानिक सकारण)

**-आचार्य कनकनन्दी**

**(चाल : चाँद सी मेहबूबा....., आत्मशक्ति....., भातकुली.....)**

**आह्वान : (भावनात्मक रूप से पूज्यों का सान्निध्य प्राप्त करना)**

हे ! मुनि सव्रत सुव्रतधारी, जिससे बने आप मोक्ष अधिकारी।
अव्रत को त्याग व्रतों को स्वीकारा, आत्मध्यान से मोक्ष को वरा।।
आप सम गुण प्राप्ति के हेतु, भाव से आह्वान पूजन हेतु।
तव पूजन व ज्ञान-ध्यान, मेरे लिए बने मोक्ष के हेतु।। (ध्रुव)

**मंत्र-** ॐ ह्रीं श्री मुनि सुव्रतनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवोषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्री मुनि सुव्रतनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री मुनि सुव्रतनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

**1. तोय-(आत्मिक विशुद्धि व जन्म जरा मृत्यु विनाश के प्रतीक)**

सलिल से तव पूजन करूँ, जन्म-जरा-मरण नाश करूँ।
पाप-ताप व संकट हरूँ, अजर-अमर पद मैं वरूँ।।...आपसम

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय! आत्म/(भाव) विशुद्धि करणाय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।**

**2. चंदन-(संक्लेश ताप विनाश व भाव आह्लाद के प्रतीक)**

चंदन से आपके चरण यजूँ, संसार ताप नाशन हेतु मैं भजूँ।
शुभ भाव से मैं अशुभ त्यजूँ, शुभ से शुद्ध को भजूँ।।...आपसम

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय! संक्लेश ताप विनाशनाय भाव आह्लादित करणाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।**

**3. अक्षत-(संसार उत्पादक कर्मनाशक व अक्षयपद के प्रतीक)**

अक्षत से पूजूँ अक्षय पद, पाने के हेतु निर्वाण पद।
यह ही मेरा शाश्वत पद, अन्य सभी पद विपत्तिप्रद।।...आपसम

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय! संसार उत्पादक कर्म विनाशनाय एवं अक्षय ज्ञानानंद पद प्राप्ताय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।**

**4. पुष्प-(ब्रह्मभाव विकास व ज्ञानानंद रस के प्रतीक)**

पुष्प सुगंधित वनस्पति उपज, चंपा चमेली से आपको पूजूँ।
आत्मिक गुण मेरे विकसित हो, इस उद्देश्य से आपको भजूँ।।...आपसम

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय! ब्रह्मभाव विकासनाय ज्ञानानंद रस प्राप्ताय सुमनं (पुष्प) निर्वपामीति स्वाहा।**

**5. चरु-(क्षुधा रोग विनाश के प्रतीक)**

चरु सुमधुर घृत से निर्मित, आपके चरणों में अर्पित करूँ।
क्षुधा नाश करूँ क्षोभ नाश करूँ, आप सम मैं शांति को वरू।।...आपसम

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय! मोह-वेदनीय-अंतराय नाश सहित तृष्णा क्षुधा विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।**

**6. दीपक-(अज्ञान मोहान्धकार विनाश के प्रतीक)**

दीपक से पूजूँ तमनाश करूँ, आत्मिक प्रकाश मैं विकसित करूँ।
आत्मप्रकाश से अहित त्यागूँ, हितग्रहण से स्व-विकास करूँ।।...आपसम

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय! ध्यान-अध्ययन-ज्ञानेन अज्ञान मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।**

**7. धूप-(अष्टकर्म नाश व अष्टगुण प्राप्ति के प्रतीक)**

धूप सुगंधित दुर्गंध नाशक आपके समक्ष अग्नि में खेऊँ।
धूप सम मम कर्मकाष्ठ जले, ऐसी भावना से आपको पूजूँ।।...आपसम

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय! अष्टकर्म विनाशनाय आध्यात्मिक गुण प्राप्ताय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।**

**8. फल-(मोक्षफल प्राप्ति के प्रतीक)**

फल सुमधुर गोस्तनी रसाल, आपके चरण में अर्पण करूँ।
फल अर्पण सह भावना भाऊँ, आपके समान मोक्षफल पाऊँ।।...आपसम

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय! ज्ञानानंद रस भरित मोक्ष फल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।**

**9. अर्घ्य-(अनर्घ्य गुण समूह प्राप्ति के प्रतीक)**

अष्ट द्रव्यमय अर्घ्य चढ़ाऊँ अनर्घ्य पद हेतु भावना भाऊँ।
अष्टकर्म नाश से अष्टगुण पाऊँ, इस हेतु तव पूजन मैं ध्याऊँ।।...आपसम

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय! अनंत अनर्घ्यगुणप्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।**

## पंचकल्याणक अर्घ्य

**1. गर्भकल्याणक-**

गर्भ कल्याणक मंगलकारक, माता पद्मारानी हुई पुलकित।
पिता सुमित्रराज भी हुए आनंदित, पुण्यशाली पुत्ररत्न हुआ प्राप्त।।...आपसम

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्रावणकृष्णाद्वितीयायां श्री मुनिसुव्रतनाथजिन गर्भ कल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।**

**2. जन्मकल्याणक-**

रत्न वर्षापूर्वक हुआ आपका जन्म, सुमेरु पर हुआ जन्माभिषेक।
आपका शरीर था नील वर्ण का, दश अतिशय थे भी जन्म के।।...आपसम

**मंत्र- ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णाद्वादश्यां श्री मुनिसुव्रतनाथजिन जन्म कल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।**

**3. तप कल्याणक–**

हाथी को संबोधित करते हुए विरक्त, संसार शरीर भोग में अनासक्त।

एक सहस्र राजा भी हुए श्रमण, नीलवन में आप बने श्रमण।।...आपसम

**मंत्र– ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णादशम्यां श्री मुनिसुव्रतनाथजिन दीक्षा कल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।**

**4. केवलज्ञान कल्याणक–**

घाती कर्मनाश बने केवली, समवसरण में खिरी दिव्य ध्वनि।

सत्य-समता (शांति) का दिया उपदेश, विश्व शांतिकर दिव्य संदेश।।...आपसम

**मंत्र– ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णानवम्यां श्री मुनिसुव्रतनाथजिन केवलज्ञान कल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।**

**5. मोक्ष कल्याणक–**

अंत में शुद्ध-बुद्ध आप हुए, एक सहस्र मुनि भी मोक्ष गये।

परम विकास को आपने पाया, सच्चिदानंद स्वरूप को पाया।।...आपसम

**मंत्र– ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णाद्वादश्यां श्री मुनिसुव्रतनाथजिन मोक्ष कल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।**

## जयमाला

### (आध्यात्मिक विजय के लिए पूज्य मुनि सुव्रतनाथ प्रभु के गुणानुस्मरण, गुणानुवाद–गुणानुकरण)

**(चाल : चाँद सी मेहबूबा....., आत्मशक्ति....., जय हनुमान....., भातुकली.....)**

मुनिसुव्रतनाथ हे ! तीर्थंकर, जगत् उद्धारक प्रभु हितंकर।

आपने उपदेश दिया व्रत दो प्रकार, अणुव्रत व महाव्रतसार।।

श्रावक हेतु कहा आप अणुव्रत, श्रमण हेतु कहा महाव्रत।

एक देश त्याग है अणुव्रत, सकल देश त्याग महाव्रत।।

अहिंसा सत्य अचौर्य ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह रूपी व्रत पाँच प्रकार।

श्रावक पालते पंचाणुव्रतमय, श्रमण पालते महाव्रतमय।।
व्रत पालन हेतु चाहिए, क्रोध मान माया लोभ मोह त्याग।
ईर्ष्या तृष्णा व घृणा रहित, समता शांति सत्य युक्त।।
अष्टमद व सप्त व्यसन त्याग, हठाग्रह दुराग्रह मिथ्यात्व त्याग।
रूढ़ि-संकीर्णता व कट्टरता त्याग, मैत्री प्रमोद कारुण्य माध्यस्थ भाव।।
परनिंदा अपमान वैर-विरोध त्याग, अन्याय-अत्याचार पापाचार त्याग।
शोषण-मिलावट-भ्रष्टाचार त्याग, असहिष्णुता आतंकवाद त्याग।।
आत्मविश्वास ज्ञानचारित्र युक्त, ख्याति पूजा लाभ से रहित।
ध्यान-अध्ययन मनन-स्मरण, अनुप्रेक्षा युक्त वैराग्य चिंतन।।
उत्तरोत्तर जब भाव विशुद्ध होता, गुणस्थान क्रमशः बढ़ता।
गुणस्थान चतुर्थ में जीव जैन बनते, पंचम गुणस्थान श्रावक तथा।।
भाव विशुद्धि से जब आत्मविकास होता, श्रावक से श्रमण बनते।
श्रमण बनकर कर्म नाशते, अनंत सुख संपन्न सिद्ध बनते।।
ऐसा आपने दिया दिव्य संदेश, भव्य से भगवान् बनने का सूत्र।
अतः (आप) पूजनीय मुनिसुव्रतनाथ, आपका आदर्श माने सूरी 'कनक'।।
**ॐ ह्रीं श्रीं मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय! आध्यात्मिक विजय हेतु जयमाला पूर्ण अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।**

सीपुर, दिनांक 12.04.2017, मध्याह्न 12.00

# श्री नमिनाथ भगवान् की पूजा

## (पूजा के आध्यात्मिक वैज्ञानिक सकारण)

-आचार्य कनकनन्दी

(चाल : चाँद सी मेहबूबा हो....., आत्मशक्ति.....)

**आह्वान : (भावनात्मक रूप से पूज्यों का सान्निध्य प्राप्त करना)**

भाव-भक्ति के आह्वान करूँ श्री नमिनाथ भगवान् का/(को)।

उनके गुण (भी) मुझमें भी प्रकट हो, इस हेतु आह्वान भगवान् का/(को)।।

वन्दे तदगुणलब्धये उद्देश्य से, स्मरण-पूजन-ध्यान करूँ।

जिससे मेरे आत्मिक गुण को, मुझमें मेरे द्वारा प्रकट करूँ।। (ध्रुव)

**मंत्र-** ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवोषट् आह्वाननम्।

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

**1. जल-(आत्मिक विशुद्धि व जन्म जरा मृत्यु विनाश के प्रतीक)**

जल है प्रतीक मल धौत हेतु, कर्म (मल) धौत हेतु शुद्ध भाव करूँ।

इस हेतु हे! नमिनाथ भगवान्, वारि से आपका मैं पूजन करूँ।।...वंदे

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय! आत्म/(भाव) विशुद्धि करणाय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।**

**2. श्रीखंड-(संक्लेश ताप विनाश व भाव आह्लाद के प्रतीक)**

श्रीखंड है प्रतीक शीतलता का, संसार ताप नाश हेतु चंदन।

राग द्वेष मोह काम क्रोध ताप नशे, इस हेतु मलय से आपको यजूँ।।...वंदे

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय! संक्लेश ताप विनाशनाय भाव आह्लादित करणाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।**

**3. अक्षत-(संसार उत्पादक कर्मनाशक व अक्षयपद के प्रतीक)**

अक्षत से पूजूँ आपको जिनवर, मुझे भी अक्षय पद मिले।
आत्म स्वभाव को क्षत करने वाले, विभाव भाव मेरे गले।।...वंदे

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय! संसार उत्पादक कर्म विनाशनाय एवं अक्षय ज्ञानानंद पद प्राप्ताय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।**

**4. सुमन-(ब्रह्मभाव विकास व ज्ञानानंद रस के प्रतीक)**

कमल मल्लिका प्रसून से पूजूँ, मेरे मन भी सुमन हो! प्रभु।
जिससे मेरे आत्मिक गुण विकसित हो इस हेतु पूजन विभु।।...वंदे

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय! ब्रह्मभाव विकासनाय ज्ञानानंद रस प्राप्ताय सुमनं (पुष्प) निर्वपामीति स्वाहा।**

**5. नैवेद्य-(क्षुधा रोग विनाश के प्रतीक)**

मोदक पेड़ादि नैवेद्य से पूजूँ, क्षुधा रोग शांत करने हेतु।
कर्म नाशकर अनंत सुख पाऊँ, आपका पूजन करूँ इस हेतु।।...वंदे

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय! मोह-वेदनीय-अंतराय नाश सहित तृष्णा क्षुधा विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।**

**6. दीपक-(अज्ञान मोहान्धकार विनाश के प्रतीक)**

दीपक से तव पूजन करके, मोहतम नाश हेतु भावना भाऊँ।
इस हेतु श्रद्धा-प्रज्ञा-ज्योति, आपका मैं ज्ञान-ध्यान करूँ।।...वंदे

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय! ध्यान-अध्ययन-ज्ञानेन अज्ञान मोहान्धकार विनाशनाय दीपकं निर्वपामीति स्वाहा।**

**7. धूप-(अष्टकर्म नाश व अष्टगुण प्राप्ति के प्रतीक)**

धूप खेकर मैं भावना भाऊँ, मेरे अष्टकर्म भी जल जाये।
अष्टम वसुधा प्राप्त कर मैं, अष्ट मूल गुणों को पाऊँ।।...वंदे

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय! अष्टकर्म विनाशनाय आध्यात्मिक गुण प्राप्ताय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।**

**8. फल-(मोक्षफल प्राप्ति के प्रतीक)**

अँगूर अनार रसाल सुमधुर, विविध फल से आपको पूजूँ।
आपके पूजन के फलस्वरूप, आपके सम मोक्षफल पाऊँ।।...वंदे

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय! ज्ञानानंद रस भरित मोक्ष फल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।**

**9. अर्घ्य-(अनर्घ्य गुण समूह प्राप्ति के प्रतीक)**

अर्घ्य चढ़ा आपका पूजन कर, मैं आपके गुण गण गाऊँ।
तव ज्ञान-ध्यान-अनुकरण से, मैं आपके सम गुण पाऊँ।।...वंदे

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय! अनंत अनर्घ्यगुणप्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।**

## पंचकल्याणक अर्घ्य

**1. गर्भकल्याणक-**

माता वप्रिला के गर्भ में आये, अपराजित स्वर्ग से चयकर।
पिता विजयनरेन्द्र भी प्रसन्न हुए, रत्न वर्षाकर देव प्रसन्न।।

**मंत्र- ॐ ह्रीं आश्विनकृष्णाद्वितीयायां श्री नमिनाथजिन गर्भकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।**

**2. जन्मकल्याणक-**

जन्मकल्याणक मनाने हेतु, ऐरावत सहित देव भी आये।
सुमेरु पर हुआ जन्माभिषेक, देव-देवियाँ भी सेवा में आये।।

**मंत्र- ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्णादशम्यां श्री नमिनाथजिन जन्मकल्याणकाय**

**अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।**

**3. तप कल्याणक–**

जाति स्मरण से हुआ वैराग्य (आपको) दश सहस्र राजा हुए श्रमण।

राजा दत्तने आपको आहार दिया, सातिशय पुण्य अर्जन किया।।

**मंत्र- ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्णादशम्यां श्री नमिनाथजिन दीक्षाकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।**

**4. केवलज्ञान कल्याणक–**

नौ वर्ष की आत्म साधना द्वारा, केवलज्ञान को आपने पाया।

संपूर्ण विश्व को युगपत् जाना, संपूर्ण भाषाओं में विश्व संबोधा।।

**मंत्र- ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्लाएकादश्यां श्री नमिनाथजिन केवलज्ञान कल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।**

**5. मोक्ष कल्याणक–**

योग निरोधकर कर्म नशाया, सहस्र मुनि सह निर्वाण पाया।

जन्म जरा मरण से हुए विमुक्त, शाश्वतिक रूप से शुद्ध व बुद्ध।।

**मंत्र- ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णाचतुर्दश्यां श्री नमिनाथजिन मोक्षकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।**

## जयमाला

### (आध्यात्मिक विजय के लिए पूज्य श्री नमिनाथ जी के गुणानुस्मरण, गुणानुवाद–गुणानुकरण)

**(चाल : चाँद सी मेहबूबा....., सायोनारा....., जय हनुमान.....)**

हे ! नमिनाथ परम विज्ञानी, हे ! नमिनाथ केवलज्ञानी।

हे ! नमिनाथ निर्दोष आप्त, हे ! नमिनाथ सर्वज्ञ आप।।

हे ! नमिनाथ आत्म विजयी, हे ! शत्रु विजयी नमिनाथ।
हे ! नमिनाथ स्वयंभू सनातन, हे ! नित्य निरंजन आप्त।।
हे ! नमिप्रभु विश्वलोचन आप, हे ! विभु विश्वभूतेश आप।
हे ! नमिप्रभु विभुवेधा, हे ! विभु विधिधाता आप।।
हे ! नमिप्रभु शाश्वत आप, हे ! जगज्येष्ठ प्रभुवर।
हे ! नमिप्रभु अनीश्वर आप, हे ! जिनेश्वर प्रभुवर।।
हे ! नमिनाथ परतर आप, हे ! परमेष्ठी परमेश्वर।
हे ! नमिनाथ सहस्राक्ष, हे ! प्रभु सहस्रपात।।
हे ! नमिनाथ सहस्रशीर्ष, हे ! नमिनाथ समंतभद्र।
हे ! नमिनाथ तथागत, हे ! नमिनाथ सुगत हो आप।।
हे ! नमिनाथ सिद्धार्थ हो, हे ! नमिनाथ बोधिसत्त्व।
हे ! नमिनाथ मारजित हो, हे ! नमिनाथ समीक्ष हो।।
हे ! नमिनाथ शुद्ध हो आप, हे ! नमिनाथ बुद्ध हो आप।।
हे ! नमिनाथ चिदानन्द हो आप, हे ! नमिनाथ आनंदकंद।।
अनंत गुण तव है अनंत नाम, छद्मस्थ अज्ञ आपके गुण।
मै करूँ आपका पूजन-ध्यान, 'कनक' चाहे तव अनंत गुण।।

**ॐ ह्रीं श्रीं नमिनाथ जिनेन्द्राय! आध्यात्मिक विजय हेतु जयमाला पूर्ण अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।**

सीपुर, दिनांक 13.04.2017, प्रातः 6.00

# नेमीनाथ भगवान् की पूजा
## (पूजा के आध्यात्मिक वैज्ञानिक सकारण)

**-आचार्य कनकनन्दी**

**(चाल : चाँद सी मेहबूबा हो....., आत्मशक्ति.....)**

**आह्वान : (भावनात्मक रूप से पूज्यों का सान्निध्य प्राप्त करना)**

नेमीनाथ हे! करूणावंत पशुवध से आप हुए द्रवित।
राज्य वैभव विवाह त्यागकर साधु बनकर हुए सिद्धि के कांत।।
आपके स्मरण कीर्तन ध्यान से मैं भी पाऊँ गुण अनंत।
इसलिए आपको हृदय में धारणकर (आपके) पूजन में लगाऊँ चित्त।। (ध्रुव)

**मंत्र-** ॐ ह्रीं श्री नेमीनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवोषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्री नेमीनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री नेमीनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

**1. उदक-(आत्मिक विशुद्धि व जन्म जरा मृत्यु विनाश के प्रतीक)**

जन्म-जरा-मृत्यु विनाश हेतु आपका पूजन करूँ जल से।
सदय हृदय मेरा भी बने हर जीव से बने मित्रता भाव।।
आपके स्मरण कीर्तन ध्यान से मैं भी पाऊँ गुण अनंत।
इसलिए आपको हृदय में धारणकर (आपके) पूजन में लगाऊँ चित्त।।

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री नेमीनाथ जिनेन्द्राय! आत्म/(भाव) विशुद्धि करणाय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।**

**2. चंदन-(संक्लेश ताप विनाश व भाव आह्लाद के प्रतीक)**

शीतलदायक आपके पूजन अतः चंदन से पूजूँ आपको।
मेरा भाव भी हो शीतलदायक स्व-पर-विश्व मंगलदायक।। आपके...

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री नेमीनाथ जिनेन्द्राय! संक्लेश ताप विनाशनाय भाव आह्लादित करणाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।**

**3. अक्षत-(संसार उत्पादक कर्मनाशक व अक्षयपद के प्रतीक)**

अक्षय पद प्राप्ति के हेतु मैं, आपको पूजूँ अक्षय पद।
अन्य सभी पद है विपत्तिप्रद, मनुष्य से लेकर देवों के पद।। आपके...

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री नेमीनाथ जिनेन्द्राय! संसार उत्पादक कर्म विनाशनाय एवं अक्षय ज्ञानानंद पद प्राप्ताय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।**

**4. पुष्प (सुमन)-(ब्रह्मभाव विकास व ज्ञानानंद रस के प्रतीक)**

सुकोमल आपके हृदय कमल जिससे द्रवित हो बने श्रमण।
आपके सम मम कोमल हृदय बने, इस हेतु कमल से तव पूजन।। आपके...

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री नेमीनाथ जिनेन्द्राय! ब्रह्मभाव विकासनाय ज्ञानानंद रस प्राप्ताय सुमनं (पुष्प) निर्वपामीति स्वाहा।**

**5. चरु (नैवेद्य)-(क्षुधा रोग विनाश के प्रतीक)**

प्रासुक मिष्टान्न मोदक से पूजन करके प्रमुदित मेरा मन।
आप सम बनूँ मैं स्वयं से तृप्त, नाशकर मोहनीयादि कर्म।। आपके...

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री नेमीनाथ जिनेन्द्राय! मोह-वेदनीय-अंतराय नाश सहित तृष्णा क्षुधा विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।**

**6. दीपक-(अज्ञान मोहान्धकार विनाश के प्रतीक)**

स्व-पर प्रकाशी अनंत ज्योति से, आप प्रकाशित हे ! नेमीनाथ।
दीपक से आपका पूजन करके, नाश करूँ मेरा अज्ञानतम।। आपके...

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री नेमीनाथ जिनेन्द्राय! ध्यान-अध्ययन-ज्ञानेन अज्ञान मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।**

**7. धूप-(अष्टकर्म नाश व अष्टगुण प्राप्ति के प्रतीक)**

ध्यानाग्नि से स्वकर्म जलाकर, आप बन गये हो परमेश्वर।
धूप से आपका पूजन करके, नाश करूँ मेरा कर्म सकल।। आपके...

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री नेमीनाथ जिनेन्द्राय! अष्टकर्म विनाशनाय आध्यात्मिक गुण प्राप्ताय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।**

**8. फल-(मोक्षफल प्राप्ति के प्रतीक)**

फल मनोहर प्रासुक रसाल केला नारिकेल से आपको पूजूँ।
आपके सम आध्यात्मिक फल प्राप्ति हेतु, भावना-भक्ति से यजूँ।। आपके...

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री नेमीनाथ जिनेन्द्राय! ज्ञानानंद रस भरित मोक्ष फल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।**

**9. अर्घ्य-(अनर्घ्य गुण समूह प्राप्ति के प्रतीक)**

अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर अनर्घ्य पद आप सम पाऊँ।
मोक्षपद ही अनर्घ्य पद उसे प्राप्त कर अष्ट मूल गुणों को पाऊँ।। आपके...

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री नेमीनाथ जिनेन्द्राय! अनंत अनर्घ्यगुणप्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।**

## पंचकल्याणक अर्घ्य

**1. गर्भकल्याणक-**

रानी शिवादेवी के गर्भ में आये अपराजित विमान से च्युत होकर।
राजा समुद्र विजय हुए आह्लादित आप सम पुत्ररत्न पाकर।। आपके...

**मंत्र- ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्ल षष्ठयां मंगलमंडिताय श्री नेमीनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।**

**2. जन्मकल्याणक-**

जन्म से ही आप दश अतिशय के धारी स्वेद रहित निर्मल शरीर।
तो भी स्वभक्ति से देवों ने किया जन्माभिषेक सुमेरु पर।। आपके...

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लषष्ठयां जन्ममहोत्सवप्राप्ताय श्री नेमीनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।**

**3. तप कल्याणक-**

पशुओं के क्रंदन सुनकर आपको हुई संसार से विरक्ति।

राजुल संग विवाह त्यागकर विवाहने गये बधु श्री मुक्ति।। आपके...

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लषष्ठयां तपोमंगलभूषिताय श्री नेमीनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।**

**4. ज्ञान कल्याणक-**

समदम त्याग समाधि द्वारा, आपने नाशा घातिया कर्म।

अनंत ज्ञान दर्शन सुख वीर्य से, आपने पाया अनंत शर्म।। आपके...

**मंत्र- ॐ ह्रीं अश्विनशुक्लप्रतिपदायां ज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्री नेमीनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।**

**5. मोक्ष कल्याणक-**

अंत में योग निरोधकर आपने वरा श्री मुक्ति बधु को/(कांता)।

अक्षय अनंत गुणों का आप, कर रहे हो भोगोपभोग।। आपके...

**मंत्र- ॐ ह्रीं आषाढ़शुक्लसप्तम्यां मोक्षमंगलप्राप्ताय श्री नेमीनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।**

## जयमाला

### (आध्यात्मिक विजय के लिए पूज्य नेमीनाथ प्रभु के गुणानुस्मरण, गुणानुवाद-गुणानुकरण)

**(चाल : भातुकली....., चाँद सी मेहबूबा....., आत्मशक्ति.....)**

दया के सागर हे ! नेमीनाथ पशुवध से हुए व्यथित।

जिससे त्यागा राज्य वैभव विवाह बंधन से हुए विरक्त।।

संसार के दुःख नाशन हेतु आपने किया शोध-बोध विशेष।

आत्मविशुद्धि से पाया केवलज्ञान, दिव्य ध्वनि से दिया संदेश।।

आपने कहा अहिंसा परमोधर्म जिससे मिलता अनंत शर्म।

अहिंसा धर्म पालन हेतु पंद्रह प्रमाद को करना होगा विनाश।।

क्रोध मान माया लोभ त्याग सप्त व्यसन व अष्टमद त्याग।
असत्य चोरी कुशील परिग्रह त्याग से अहिंसा धर्म होगा पूर्ण।।
इससे ही भाव अहिंसा होगी जिससे संभव होगी द्रव्य अहिंसा।
जिससे विश्व का होगा कल्याण अंत्योदय से सर्वोदय संभव।।
''जीना है तो जीने भी दो'' 'परस्परोपग्रहो जीवानां' का संदेश।
इससे न होगा प्रकृति शोषण हर जीव का होगा यथायोग्य विकास।।
यथा मानवों में आत्मा का अस्तित्व तथाहि हर जीवित प्राणी में।
मानव यथा सुखमय जीवन चाहते तथाहि चाहते हर प्राणी विश्व में।।
हर जीव है स्वतंत्र-मौलिक सभी को मिला है प्राकृतिक अधिकार।
मानवों का अधिकार नहीं है नाश करने का अन्य का अधिकार।।
परम सुख प्राप्त करना हर जीव का स्वभावगत ही लक्ष्य।
जो जीव आत्मविश्वास ज्ञानचारित्र पाले उसे मिलता परम लक्ष्य।।
परम लक्ष्य प्राप्ति करने हेतु अहिंसा धर्म पालना अनिवार्य।
अन्यथा कोई उपाय नहीं है जिससे प्राप्त हो परम लक्ष्य।।
ऐसे महान् लक्ष्य को आपने पाया दिव्य ध्वनि से विश्व संबोधा।
ऐसे महान् लक्ष्य प्राप्ति हेतु, 'कनक' आपका आदेश/(आदर्श) माना।।

**ॐ ह्रीं श्रीं नेमिनाथ जिनेन्द्राय! आध्यात्मिक विजय हेतु जयमाला पूर्ण अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।**

सीपुर, दिनांक 24.03.2017, रात्रि 9.30

# पार्श्वनाथ तीर्थंकर की पूजा

## (पूजा के आध्यात्मिक वैज्ञानिक सकारण)

**-आचार्य कनकनन्दी**

**(चाल : आत्मशक्ति....., भातुकली....., चाँद सी मेहबूबा.....)**

**आह्वान : (भावनात्मक रूप से पूज्यों का सान्निध्य प्राप्त करना)**

हे ! तीर्थंकर ! पार्श्व प्रभुवर ! क्षमा का आदर्श प्रस्तुत किया।
दशभव तक क्षमा धारणकर अंत में मोक्ष को वरण किया।।
परम दयालु पर उपकारी जलते नाग-नागीणी को महामंत्र सुनाया।
ऐसे प्रभुवर को आह्वान करके मेरे हृदय में धारण किया।।

**मंत्र-** ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवोषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

**1. उदक-(आत्मिक विशुद्धि व जन्म जरा मृत्यु विनाश के प्रतीक)**

क्षमा जल से आपने शांत किया, अनादिकालीन क्रोध ज्वाला को।
जिससे आपने शांत शीतल हो, वरण किया है मोक्ष लक्ष्मी को।।
आपके समान शांत शीतल होने हेतु, मैं भी पूजा करूँ आपको।
इस हेतु मैं प्रासुक सुगंधित जल से अर्चना करूँ प्रभुवर को।।

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय! जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।**

**2. चंदन-(संक्लेश ताप विनाश व भाव आह्लाद के प्रतीक)**

आप सम शीतल होने हेतु आपको पूजूँ मैं चंदन से।
देह ताप हर चंदन प्रतीक परम शांति मिले तव गुणों से।।
यथा चंदन को घीसने पर शीतल सुगंधित गुण बिखरे।
तथाहि आत्मिक साधना द्वारा आत्मिक गुणगण निखरे।।

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय! भवताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।**

**3. अक्षत-(संसार उत्पादक कर्मनाशक व अक्षयपद के प्रतीक)**

अक्षय अनंत गुणों के धारी आप प्रभु हे ! पार्श्वनाथ।
अक्षत से आप की अर्चना कर मैं भी पाऊँ अक्षय पद।।
तव सम पद ही अक्षय पद है अन्य सभी पद विपदप्रद।
राजा महाराजा सेठ साहूकार के पद नहीं है अभयप्रद।।

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय! अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।**

**4. सुमन (पुष्प)-(ब्रह्मभाव विकास व ज्ञानानंद रस के प्रतीक)**

पुष्प से भी आप अधिक कोमल, आपको पूजूँ मैं कमलों से।
कमलों से भी आप अधिक निर्मल/(निर्लिप्त) कर्मकलंक रहित से।।
आपके सम मैं निर्लिप्त बनूँ इस हेतु पूजूँ कमल पुष्पों से।
राग द्वेष मोह व कामबाण नशे इस हेतु पूजूँ मैं भावों से।।

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय! कामबाध विध्वंसनाय सुमनं (पुष्प) निर्वपामीति स्वाहा।**

**5. नैवेद्य-(क्षुधा रोग विनाश के प्रतीक)**

आप तो अनंत तृप्त हुए प्रभु अनंत ज्ञान दर्शन सुख से।
मैं भी आपके सम तृप्त होने हेतु आपको पूजूँ चरु से।।
प्रासुक सुरस सुगंधित घृत, निर्मित लड्डू जलेबी से।
मेरा भी अनादि क्षुधादि रोग नशे इस हेतु पूजूँ भाव से।।

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय! क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।**

**6. दीपक-(अज्ञान मोहान्धकार विनाश के प्रतीक)**

अनंत आध्यात्मिक ज्ञान ज्योति से आपने प्रकाशा लोक-अलोक।

तव सम मैं भी ज्ञान ज्योति प्राप्त करने हेतु पूजूँ दीप से।।
मोह अज्ञान ही यथार्थ से तम उसे मैं नाश करूँ आत्म ज्योति से।
ऐसी श्रद्धा-प्रज्ञा सहित आपको यजूँ मैं शुभ भाव से।।

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय! मोहान्धकार विनाशनाय दीपकं निर्वपामीति स्वाहा।**

**7. धूप-(अष्टकर्म नाश व अष्टगुण प्राप्ति के प्रतीक)**

धूप सुगंधित अगुरु चंदन दश दिशाओं को करे आह्लादित।
आपके सुगुण स्मरण द्वारा मेरा हृदय भी हो रहा आह्लादित/(प्रफूल्लित)।।
दूरस्थ सूर्य के कारण से यथा सूर्यमुखी फूल होता प्रभावित।
तथाहि मेरे आत्मिक गुण आपके पूजन से हो रहे विकसित/(प्रभावित)।।

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय! अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।**

**8. फल-(मोक्षफल प्राप्ति के प्रतीक)**

अनेक भवों की आत्म साधना से आपको मिला अमृत फल।
दोष अठारह से रहित होकर आप बन गये परमात्मा सकल।।
अनंत सुख का भोग करते हुए भी, आप कामभोगों से रहित हो।
आपके सम अमृत फल प्राप्ति हेतु, सरस सुगंधित फल अर्पित हो।।

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय! महामोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।**

**9. अर्घ्य-(अनर्घ्य गुण समूह प्राप्ति के प्रतीक)**

प्रासुक मनोहर आगम प्रणीत अष्ट द्रव्य से मैं पूजा करूँ।
अनर्घ्य पद प्राप्ति के लिए आपके चरण मैं पूजन करूँ।।
अलौकिक व अभौतिक भी आपने पाया है अनर्घ्य पद।
अनंत ज्ञान दर्शन सुख वीर्यादि अनंतानंत गुण निकंद।।

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय! अनर्घ्यपदप्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।**

# पंचकल्याणक अर्घ्य

**1. गर्भकल्याणक-**

माता वामादेवी गर्भ में आये तीन ज्ञान के धारी भी थे।
देवों ने रत्नों की वर्षा भी की जनगण भी हर्षाये।।
मंगलमय है आपके गर्भ कल्याणक अपुनर्भव कारण है।
चौरासी लाख योनि में पुनः जन्म न होगा आपका है।।

**मंत्र- ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णाद्वितीयायां गर्भकल्याणकशोभिताय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।**

**2. जन्मकल्याणक-**

जन्म से ही दश अतिशय युक्त आप महामहिम हो।
आपके जन्म से नारकी तक को मिला सुख ऐसा आप पावन हो।।
देवों ने आपका जन्माभिषेक किया सुमेरु के ऊपर है।
आपके सम मेरा भी अंतिम जन्म हो ऐसा भाव मेरा है।।

**मंत्र- ॐ ह्रीं पौषकृष्णाएकादश्यां जन्मकल्याणकशोभिताय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।**

**3. तप कल्याणक-**

बाल ब्रह्मचारी महाधैर्यधारी, आप विरक्त हुए युवावय में।
संसार शरीर भोगों से विरक्त हो श्रमण बनकर गये वन में।।
अंतरंग-बहिरंग तप से तपकर, आत्मविशुद्धि में हुए तत्पर।
निस्पृह निराडम्बर मौन रहकर आत्मध्यान में हुए तत्पर।।

**मंत्र- ॐ ह्रीं पौषकृष्णाएकादश्यां तपकल्याणकशोभिताय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।**

**4. ज्ञान कल्याणक–**

आत्मविशुद्धि से श्रेणी आरोहण कर चार घाती को घात/(नाश) किया।

अनंत चतुष्टय प्राप्त करके समवसरण में दिव्य उपदेश दिया।।

सत्य-समता-अहिंसा-अपरिग्रह का दिव्य संदेश दिया।

आत्म शांति से ही विश्व शांति संभव है ऐसा प्रवचन किया।।

**मंत्र– ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णचतुर्थ्यां ज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।**

**5. मोक्ष कल्याणक–**

शेष अघाती को भी निःशेष करके आपने शाश्वतिक पद पाया।

शुद्ध-बुद्ध-अमूर्तिक ज्ञानानंदमय अजर-अमर पद पाया।।

दग्ध बीज यथा न होता (पुनः) अंकुरण, तथा आपका न होगा पुनः जन्म।

अक्षय अनंत काल प्रमाण आप करोगे स्वरूप में रमण।।

**मंत्र– ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लासप्तम्यां मोक्षकल्याणकप्राप्ताय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।**

## जयमाला

### (आध्यात्मिक विजय के लिए पूज्य पार्श्वनाथ प्रभु के गुणानुस्मरण, गुणानुवाद–गुणानुकरण)

**(चाल : जय हनुमान ज्ञान....., चाँद सी मेहबूबा....., आत्मशक्ति.....)**

पार्श्वप्रभु हे ! दयासिंधु हे ! क्षमासिंधु हे ! ज्ञानसिंधु !

अक्षय अनंत (अविनाशी) गुणधारी सच्चिदानंद हे ! आत्मविहारी।।

आपने जाना है आत्म स्वभाव जिससे बने आप क्षमाधारी।

मोह-क्षोभ ही संसार कारक अतएव बने समताधारी।।

स्वयं में आपने प्रयोग किया क्षमा की शक्ति को पहचाना।

समता द्वारा साधना करके कर्मशत्रु को निर्मूल किया।।

जिससे आप बने आत्म विजयी जिससे (आप) बने विश्वविजयी।
आत्म वैभव को प्राप्त कर आप बन गये हो त्रैलोक्य स्वामी।।
लोकालोक के ज्ञाता प्रभुवर तो भी स्वयं के कर्त्ता-भोक्ता।
लोकालोक प्रकाशक आप तो भी स्वयं में ही निवासकर्त्ता।।
ज्ञाता-दृष्टा स्वयं के होकर भी विश्व के आप ज्ञाता-दृष्टा।
अनंत शक्ति संपन्न तो भी स्व-स्वरूप में ही निवासकर्त्ता।।
द्रव्यदृष्टि से आप एक हो गुण पर्याय से आप अनंतानंत।
संसार भ्रमण से मुक्त-ध्रौव्य हो तो भी उत्पाद व्यय संयुक्त।।
कृतकृत्य हो वीतरागी हो राग द्वेष से भी हो विमुक्त।
तथापि जो तव आश्रय लेते, वे भी हो जाते विमुक्त।।
आपके गुण-द्रव्य-पर्याय द्वारा, जो करते है स्व-श्रद्धान/(दर्शन)।
वे भी तव गुण स्मरण-अनुकरण से बन जाते है आपके सम।।
इसलिए आपकी पूजा-प्रार्थना-वंदना-आराधना श्रेयकर।
यथा प्रज्ज्वलित दीपक संगति से बुझे दीपक हो ज्योतिकर/(ज्योतिधर)।।
इसलिए मैं भी तव पूजा करूँ तव सम गुण प्राप्ति हेतु।
संसार शरीर भोग आकांक्षा त्यागकर 'कनक' वंदे तव गुण हेतु।।
**ॐ ह्रीं श्रीं पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय! आध्यात्मिक विजय हेतु जयमाला पूर्ण अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।**

# भगवान् महावीर की पूजा

## (पूजा के आध्यात्मिक वैज्ञानिक सकारण)

-आचार्य कनकनन्दी

**(चाल : चाँद सी महबूबा हो.....)**

**आह्वान : (भावनात्मक रूप से पूज्यों का सान्निध्य प्राप्त करना)**

हुण्डावसर्पणी (काल में) चतुर्थ काल के, अंतिम तीर्थंकर महावीर।
जिनके संप्रति शासनकाल, प्रवर्तमान धरती पर।।
बाल ब्रह्मचारी महावीर्यधारी युवावय में श्रमण बने।
घातिया कर्मरूपी शत्रु नाशकर सर्वज्ञ महावीर बने।।

**मंत्र-** ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवोषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

**1. उदक-(आत्मिक विशुद्धि व जन्म जरा मृत्यु विनाश के प्रतीक)**

उदक प्रासुक सुगंधितमय, शरीरताप-मलहारी।
आत्मिक ताप मल नाश हेतु, उदक से अर्चना तेरी।।
आपके समान निर्मल बनूँ, कर्मकलंक नाश से।
जन्म-जरा-मृत्यु नाशन हेतु, आपकी पूजा भाव से।।

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय! जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।**

**2. चंदन-(संक्लेश ताप विनाश व भाव आह्लाद के प्रतीक)**

जन्म से ही आपके सुगंधित तन, केवलज्ञान से दिव्य शरीर।
घाती नाश से भाव सुनिर्मल, तथाहि परम औदारिक शरीर।।
समवसरण में बहता शीतल पवन, ऐसे हो आप महामहिम।
संसार ताप नाशन हेतु, चंदन से आपका करूँ पूजन।।

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय! भवताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।**

**3. अक्षत-(संसार उत्पादक कर्मनाशक व अक्षयपद के प्रतीक)**

अक्षय अनंत ज्ञानधारी, तथाहि सुख वीर्य संपन्न।
उपसर्ग-परीषह रहित आप, अठारह दोष से हो शून्य।।
इसलिए आप निर्दोष देव, विश्व हितकारी आपका संदेश।
अक्षत से आपका अर्चन करके मैं भी चाहूँ अक्षय सुख।।

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय! अक्षयपदप्राप्ताय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।**

**4. सुमन (पुष्प)-(ब्रह्मभाव विकास व ज्ञानानंद रस के प्रतीक)**

पुष्प सुगंधित कमलादिक से, आपका करूँ मैं अर्चन।
कमल पुष्प सम (मैं) निर्लिप्त बनूँ, सुवासित हो मेरा मन।।
कमल सम मम विकसित हो, अनंतानंत मेरे आत्मिक गुण।
जिससे मैं सर्व कर्मनाश कर, अंत में पाऊँ पद निर्वाण।।

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय! कामबाणविध्वंसनाय सुमन (पुष्प) निर्वपामीति स्वाहा।**

**5. नैवेद्य-(क्षुधा रोग विनाश के प्रतीक)**

आत्मोत्थ सुख अनंत अनुभव में, सदा ही लीन आप भगवान्।
जन्म-जरा-मृत्यु-रोग-शोक क्षुधा से रहित आप स्वयं में लीन।।
हानि-लाभ व सुख-दुःख रहित, आप सच्चिदानंद कंद।
आपके पूजन नैवेद्य से करके, मैं भी बनूँ आपके सम।।

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय! क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।**

**6. दीपक-(अज्ञान मोहान्धकार विनाश के प्रतीक)**

लोकालोक प्रकाशी आप अनंत, अक्षय चिज्जोतिवान्।

तीन लोक तीन कालवर्ती समस्त ज्ञेय के ज्ञाता आप भगवान्।।
आप तो अनंत सूर्य से भी अधिक, चैतन्य ज्योति से प्रकाशमान्।
आपके पूजन दीप से करके, मैं भी आप सम बनूँ ज्ञानवान्।।

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय! मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।**

**7. धूप-(अष्टकर्म नाश व अष्टगुण प्राप्ति के प्रतीक)**

परम शुक्लध्यान रूपी अग्नि से, आपने जलाया घाती कर्म।
जिससे अनंत चतुष्टय प्राप्ति से, आप बन गये साक्षात् धर्म।।
आपके सम स्व-अनंत चतुष्टय, प्राप्त हेतु आपका करूँ (मैं) पूजन।
धूप सुगंधित खेकर अग्नि से, आपका करूँ मैं पूजन।।

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय! अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।**

**8. फल-(मोक्षफल प्राप्ति के प्रतीक)**

धर्म का फल स्व-उपलब्धि है, स्वयं के द्वारा स्वयं में।
व्यवहार-निश्चय रत्नत्रय आराधना से, स्वयं की उपलब्धि स्वयं में।।
बीज ही अंकुर से लेकर बनता है, फल बाह्य सुयोग्य कारणों से।
तथाहि मैं भी स्व-उपलब्धि हेतु, पूजन करूँ रसाल फलों से।।

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय! महामोक्षफलप्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।**

**9. अर्घ्य-(अनर्घ्य गुण समूह प्राप्ति के प्रतीक)**

दुष्टाष्ट कर्मनाश करके, आप बन गये परम शुद्ध-बुद्ध।
पर अष्ट मूलगुण सहित आपमें, अनंतानंत गुण पर्याय।।
अष्ट अनर्घ्य गुण प्राप्ति हेतु मैं भी, अष्ट द्रव्यमय अर्घ्य से पूजूँ।
आत्म उपलब्धि सम महान् संपत्ति, समस्त विश्व में कहाँ न देखूँ।।

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय! अनर्घ्यपदप्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।**

# पंचकल्याणक अर्घ्य

**1. गर्भकल्याणक-**

जन्म-जरा-मृत्यु विनाश हेतु आपका अंतिम जन्म है।
इसलिए तो आपका जन्म, हो गया जन्मकल्याणक है।।
ऐसे जन्म हेतु गर्भ में आये, माता त्रिशला देवी के।
आपके सम मेरा हो अंतिम गर्भ, पूजूँ आपको भाव से।।

**मंत्र- ॐ ह्रीं आषाढ़शुक्लाषष्ठम्यां गर्भमंगलमंडिताय श्री महावीर जिनेन्द्राय! अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।**

**2. जन्मकल्याणक-**

स्व-पर विश्व मंगलकारी आपका हुआ जन्मकल्याणक।
स्वर्ग से आकर देवता तक मनाये महोत्सव जन्मकल्याणक।।
सुमेरु ऊपर आपका हुआ, जन्माभिषेक मंगलकारी।
आपके सम मेरा भी जन्म हो, पूजूँ आपको मंगलकारी।।

**मंत्र- ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लत्रयोदश्यां जन्ममंगल प्राप्ताय श्री महावीर जिनेन्द्राय! अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।**

**3. तप कल्याणक-**

संसार-शरीर-भोगों से विरक्त, आपका हुआ तपकल्याणक।
पंचमुष्ठी से केश लोंचकर सिद्धस्मरण से बने श्रमण।।
अंतरंग तप साधना हेतु, बहिरंग तप तपा आपने।
आपके सम मैं भी तप आचरूँ, इस हेतु भजूँ आपको।।

**मंत्र- ॐ ह्रीं मार्गशीर्षकृष्णदशम्यां तपोमंगलमंडिताय श्री महावीर जिनेन्द्राय! अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।**

**4. ज्ञान कल्याणक-**

आत्मविशुद्धि की साधना द्वारा, आपने पाया केवलज्ञान।

त्रिकालवर्ती समस्त द्रव्य-गुण-पर्यायों को जानने वाला अनंतज्ञान।।
दिव्य ध्वनि द्वारा समवसरण में विश्व को सम्बोधा आप श्रीमान्।
आपके गुणस्मरण-अनुकरण से मैं भी (पाऊँ केवलज्ञान)/बनूँ श्रीमान्।।

**मंत्र- ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लदशम्यां केवलज्ञानप्राप्ताय श्री महावीर जिनेन्द्राय! अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।**

**5. मोक्ष कल्याणक-**

परम शुक्लध्यान द्वारा योग निरोध द्वारा बने शैलेश।
अघाती कर्म भी नाश करके, आप बन गये परम शुद्ध-बुद्ध।।
लोकाग्रशिखरे विराजमान होकर, भोग रहे हो आत्मानंद।
आपके सम मोक्ष प्राप्ति हेतु, मैं भी पूजूँ हे! ज्ञानानंद।।

**मंत्र- ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णामावस्यायां मोक्षमंगलमंडिताय श्री महावीर जिनेन्द्राय! अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।**

# जयमाला

## महावीर भगवान् की महानता

### (महान्तम वैज्ञानिक व समाज सुधारक भगवान् महावीर)

**(चाल : चाँद सी मेहबूबा हो.....)**

त्रिशला नंदन हे! महावीर सन्मति वर्द्धमान अति वीर।
बाल ब्रह्मचारी करुणाधारी दिगम्बर वेशधारी वनविहारी।।
सत्य अहिंसा अपरिग्रहधारी अचौर्य व्रतधारी समताधारी।
उत्तम क्षमा मार्दव आर्जवधारी, संयम तप त्याग धैर्यधारी।।
गंभीर शांत व सौम्यताधारी भेदविज्ञानी व विवेकधारी।
निस्पृह निराडम्बर व आत्मविहारी सुख-दुःख में समताधारी।।
दासी चंदना से आहार लिया, दास प्रथा का विरोध किया।

राजकुमारी थी चंदना दासी (तो भी) दास प्रथा से बनी थी बंदी।।
केवलज्ञान जब हुआ आपको, समवसरण में दिव्य ध्वनि खीरी।
चंदना सुंदरी भी बनी आर्यिका, पतित पावन है बाना/(काम) आपका।।
चंदना साध्वी बनी प्रमुख आर्यिका, अबला उद्धारक रूप आपका।
पशु-पक्षी भी बने आपके भक्त, राजा महाराजा चक्री से देव तक।।
सात सौ अठारह भाषा में आपकी वाणी, जनभाषा से ले पशु-पक्षी की वाणी।
विश्व हितकारी आपकी वाणी, अंत्योदय से लेकर सर्वोदय वाणी।।
अणु सिद्धांत से ले विश्व विज्ञान, कर्म सिद्धांत से ले आध्यात्मिक विज्ञान।
अनेकांत से ले पर्यावरण सुरक्षा विश्व शांति मैत्री से ले जीव विज्ञान।।
आधुनिक विज्ञान के जन्म से पूर्व, प्रायः द्विसहस्र वर्ष से पूर्व।
अभी भी जो अज्ञात भौतिक ज्ञानी को, वे सभी विज्ञान ज्ञात था आपको।।
इससे सिद्ध होता आप थे सर्वज्ञ, महान् वैज्ञानिक व दार्शनिक।
समाज सुधारक अबला उद्धारक, विश्व शांति के प्रचार-प्रसारक।।
इससे सिद्ध होता पूर्व के मानव समाज, न थे अज्ञानी व बर्बर असभ्य।
वे थे सभ्य से अधिक सांस्कृतिक, भौतिक ज्ञान परे भी थे आध्यात्मिक।।
ये सभी ज्ञात होता आगम ग्रंथों से, लिपिबद्ध है द्विसहस्र वर्ष पूर्व से।
अतएव आप हो मेरे आदर्श, आपके अनुकरण से (बनूँ) आप सदृश्य।।
आपके गुणगुण है अनंतानंत, गणधर तक आपका न पाते अंत।
मैं तो अल्पज्ञ किन्तु श्रद्धा संपन्न आपके गुण चाहे भक्त 'कनक'।।

सीपुर, दिनांक 27.02.2017, प्रातः 6.58

# आचार्य विमलसागर गुरुदेव की पूजा
## (पूजा के आध्यात्मिक वैज्ञानिक सकारण)

**-आचार्य कनकनन्दी**

**(चाल : चाँद सी मेहबूबा....., क्या मिलिये....., आत्मशक्ति.....)**

**आह्वान : (भावनात्मक रूप से पूज्यों का सान्निध्य प्राप्त करना)**

हे ! विमलसिंधु दयासिंधु, वात्सल्य रत्नाकर गुरु।
हे ! करुणाधारी परोपकारी, शिक्षा-दीक्षा दाता गुरु।।
आपके गुण प्राप्ति हेतु, आपका करूँ मैं आह्वाननम्।
मम हृदयकमल में निवास करो, इस हेतु करूँ तव पूजनम्।। (ध्रुव)

**मंत्र-** ॐ ह्रीं श्री आचार्य विमलसागर जी गुरुदेव! अत्र अवतर अवतर संवोषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्री आचार्य विमलसागर जी गुरुदेव! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री आचार्य विमलसागर जी गुरुदेव! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

**1. उदक-(आत्मिक विशुद्धि व जन्म जरा मृत्यु विनाश के प्रतीक)**

आम सम शीतल व स्वच्छ होने, हेतु आपको यजूँ जल से।
मेरे भी जन्म-जरा-मरण नाश हो, इस हेतु पूजूँ भाव से।।...आपके

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री आचार्य विमलसागर गुरुदेवाय! आत्म/(भाव) विशुद्धि करणाय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।**

**2. चंदन-(संक्लेश ताप विनाश व भाव आह्लाद के प्रतीक)**

मलयगिरी चंदन सुगंधित से, पूजूँ आपके पदयुगल।
संसार ताप मेरा नाश हो गुरु !, इस हेतु पूजन तव पदकमल।।...आपके

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री आचार्य विमलसागर गुरुदेवाय! संक्लेश ताप विनाशनाय भाव आह्लादित करणाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।**

**3. तंदुल-(संसार उत्पादक कर्मनाशक व अक्षयपद के प्रतीक)**

अक्षत मनोहर वासमति से, पूजन करूँ आपका हे ! गुरुवर।
मेरे संसार बंधन नाश हो गुरु !, पाऊँ अक्षयपद मोक्षपुर।।...आपके

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री आचार्य विमलसागर गुरुदेवाय! संसार उत्पादक कर्म विनाशनाय एवं अक्षय ज्ञानानंद पद प्राप्ताय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।**

**4. पुष्प (सुमन)-(ब्रह्मभाव विकास व ज्ञानानंद रस के प्रतीक)**

पुष्प मनोहर जुही-जाही कमल-गुलाब से करूँ तव पूजन।
मेरे कामशर भी नाश हो गुरु !, इस हेतु तव स्मरण-पूजन।।...आपके

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री आचार्य विमलसागर गुरुदेवाय! ब्रह्मभाव विकासनाय ज्ञानानंद रस प्राप्ताय सुमन (पुष्प) निर्वपामीति स्वाहा।**

**5. चरु-(क्षुधा रोग विनाश के प्रतीक)**

प्रासुक मधुर लाडू-पेड़ादि से, आपका पूजन हे ! गुरुवर।
मेरा क्षुधारोग क्षय होवे अक्षयपद हेतु पूजन हे ! ऋषिवर।।...आपके

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री आचार्य विमलसागर गुरुदेवाय! मोह-वेदनीय-अंतराय नाश सहित तृष्णा क्षुधा विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।**

**6. दीपक-(अज्ञान मोहान्धकार विनाश के प्रतीक)**

दीपक तमहर से तव पूजन कर, मैं भावना भाता हूँ।
अज्ञान मोहतम मम नाश हो गुरु !, आपके आत्मगुण मैं चाहता हूँ।।...आपके

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री आचार्य विमलसागर गुरुदेवाय! ध्यान-अध्ययन-ज्ञानेन अज्ञान मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।**

**7. धूप-(अष्टकर्म नाश व अष्टगुण प्राप्ति के प्रतीक)**

अगुरु-तगर-मलय चंदन, धूप से आपका यजन करूँ।
मेरे दुष्टाष्ट कर्मकाष्ट जले, इस हेतु आपका पूजन करूँ।।...आपके

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री आचार्य विमलसागर गुरुदेवाय! अष्टकर्म विनाशनाय**

**आध्यात्मिक गुण प्राप्ताय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।**

**8. फल-(मोक्षफल प्राप्ति के प्रतीक)**

आम्र नारिकेल कदली अँगूर अनार आदि से मैं पूजन करूँ।

मोक्षफल प्राप्ति हेतु गुरु !, आपका पूजन भाव से करूँ।।...आपके

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री आचार्य विमलसागर गुरुदेवाय! ज्ञानानंद रस भरित मोक्ष फल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।**

**9. अर्घ्य-(अनर्घ्य गुण समूह प्राप्ति के प्रतीक)**

अष्ट द्रव्यों का अर्घ्यं चढ़ाकर, आपका मैं पूजन करूँ।

अनर्घ्यं पद है मोक्षपद उस हेतु, मैं आपका यजन करूँ।।...आपके

**मंत्र- ॐ ह्रीं श्री आचार्य विमलसागर गुरुदेवाय! अनंत अनर्घ्यगुणप्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।**

## जयमाला

**(आध्यात्मिक विजय के लिए पूज्य विमलसागर आचार्यश्री के गुणानुस्मरण, गुणानुवाद-गुणानुकरण)**

**(चाल : हर देश में तू....., भातुकली....., चाँद सी मेहबूबा.....)**

हे! महावीर कीर्ति शिष्य महान्, हे! निमित्तज्ञानी संत महान्।

हे! दीक्षा-शिक्षा दाता गुरु महान्, हे! वात्सल्यरत्नाकर शांत महान्।।

कोसमा ग्राम में आपका हुआ जन्म, कटोरी देवी के सुत महान्।

हे! बाल ब्रह्मचारी कृपा निधान, सोनागिरी क्षेत्र में दीक्षा ग्रहण।।

**आचार्य भरतसागर व अरहसागर, बाहुबलीसागर व चैत्यसागर।**

**अनेक साधु-साध्वी के दीक्षादातार, सूरी 'कनक' के आद्य गुरुवर।।**

**गणिनी विजयमती तव जेष्ठ शिष्या, कुंथुसागर के सूरीपद दाता।**

**इनके पास आपने मुझे (कनकनंदी) भेजा, ज्ञानार्जन हेतु मार्गदर्शन कर्त्ता।।**

**आपकी प्रेरणा व आशीर्वाद से, अनेक ग्रंथ लेखन मुझसे हुआ।**
**आपके आशीर्वाद से मम मुनि दीक्षा, हुई श्रवणबेलगोला क्षेत्र में।।**
सहस्राब्दि महोत्सव के अवसर पर, शताधिक साधु-साध्वी (के) समक्ष।
धर्मस्थल के पंचकल्याणक में, सान्निध्य मिला दोनों संघों का।।
सोनागिरी में पुनः हुआ मिलन, स्वाध्याय हेतु आप दिया आदेश।
आपकी आज्ञा पालन करने हेतु, समयसार व द्रव्यसंग्रह पढ़ाया।।
आपकी सरलता व महानता, मैंने प्रत्यक्ष में देखा उदारता।
शांति समता सहिष्णुता मैत्री, अनुकरणीय आपकी प्रवृत्ति।।
आपके कारण ग्रंथ हुए प्रकाशन, वात्सल्यरत्नाकर त्रय भाग।
आपसे महान् कार्य हुए अनेक, आपको ध्याये आचार्य 'कनक'।।
**ॐ ह्रीं श्रीं विमलसागर गुरुदेवाय! आध्यात्मिक विजय हेतु जयमाला पूर्ण अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।**

सीपुर, दिनांक 13.04.2017, अपराह्न 6.22

## समुच्चय महार्घ

मैं देव श्री अरिहंत पूजूँ, सिद्ध पूजूँ चाव सों।
आचार्यश्री उवज्झाय पूजूँ साधु पूजूँ भाव सों।।1।।
अर्हन्त भाषित वैन पूजूँ, द्वादशांग रचे गनी।
पूजूँ दिगम्बर गुरुचरण, शिव हेतु सब आशा हनी।।2।।
सर्वज्ञ भाषित धर्मदश विधि, दयामय पूजूँ सदा।
जजूँ भावना षोडश रत्नत्रय, जा बिना शिव नहीं कदा।।3।।
त्रैलोक्य के कृत्रिम अकृत्रिम, चैत्य चैत्यालय जजूँ।
पंचमेरु नन्दीश्वर जिनालय, खचर सुर पूजित भजूँ।।4।।
कैलाश श्रीसम्मेद श्रीगिरनार, गिरि पूजूँ सदा।
चम्पापुरी पावापुरी पुनि, और तीरथ सर्वदा।।5।।

चौबीस श्रीजिनराज पूजूँ, बीस क्षेत्र विदेह के।
नामावली इक सहस वसुजपि होय पति शिवगेह के।।6।।

**दोहा– जल गंधाक्षत पुष्प चरु, दीप धूप फल लाय।**
**सर्व पूज्य पद पूजहूँ, बहु विधि भक्ति बढ़ाय।।7।।**

ॐ ह्रीं भावपूजा-भाववंदना, त्रिकालपूजा, त्रिकालवंदना, करे-करावे, भावना भावे, श्री अरिहन्तजी, सिद्धजी, आचार्यजी, उपाध्यायजी, सर्व साधुजी, पंचपरमेष्ठिभ्यो नमः, प्रथमानुयोग, करणानुयोग, चरणानुयोग, द्रव्यानुयोगेभ्यो नमः। दर्शनविशुद्धयादि षोडषकारणेभ्यो नमः, उत्तमक्षमादि दशलक्षणधर्मेभ्यो नमः, सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रेभ्यो नमः, जल के विषें, थल के विषें, नभ के विषें, गुफा के विषें, पहाड़ के विषें, नगर-नगरी विषें, ऊर्ध्वलोक, मध्यलोक, पाताललोक विषें, कृत्रिम-अकृत्रिम जिन बिम्बेभ्यो नमः, विदेहक्षेत्रस्थितविद्यमानबीसतीर्थंकरेभ्यो नमः, पाँच भरत, पाँच ऐरावत, दश क्षेत्र संबंधी तीस चौबीसी के सात सौ बीस तीर्थंकरेभ्यो नमः। नन्दीश्वरद्वीप स्थित बावनजिनचैत्यालयेभ्यो नमः पंचमेरुसंबंधी अस्सी जिनचैत्यालयेभ्यो नमः। श्री गुणावा, राजगृही, उदयगिरि, खण्डगिरि, पटना, गुलजार बाग, मथुरा, चौरासी, सोनागिरि, नैनागिरि, द्रोणगिरि, कुण्डलपुर, मुक्तागिरि, सिद्धवरकूट, पावागिरि, बावनगजा, पावागढ़, मांगीतुंगी, गजपंथा, शत्रुन्जय, तारंगा, पोदनपुर, कुंथुलगिरि, सौरीपुर आदि सिद्धक्षेत्रेभ्यो नमः।

ॐ ह्रीं श्रीमंतं भगवतं कृपालसन्तं वृषभादिमहावीर पर्यंत चतुर्विंशति तीर्थंकर परम देवं आद्यानां आद्ये मध्य लोके जम्बूद्वीपे भरत क्षेत्रे आर्यखण्डे एशिया महाद्वीपे भारत देशे.....प्रदेश.....नगरे.....मासे.....पक्षे.....तिथि.....वासरे मुनि आर्यिकानां श्रावक श्राविकानां क्षुल्लक-क्षुल्लिकानां सकल कर्मक्षयार्थं अनर्घ पद प्राप्तये महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

# शांतिपाठ (भाषा)

## (शांतिपाठ बोलते समय पुष्प क्षेपण करते रहना चाहिए)

शांतिनाथ मुख शशि उनहारी, शील गुणव्रत संयमधारी।
लखन एकसो आठ बिराजे, निरखत नयन कमलदल लाजै।।1।।

पंचम चक्रवर्ती पदधारी, सोलम तीर्थंकर सुखकारी।
इन्द्र नरेन्द्र पूज्य जिननायक, नमो शांतिहित शांतिविधायक।।2।।

दिव्य विटप पहुपन की वरषा, दुन्दुभि आसन वाणी सरसा।
छत्र चमर भामंडल भारी, ये तव प्रातिहार्य मनहारी।।3।।

शांति जिनेश शांति सुखदाई, जगत पूज्य पूजों शिरनाई।
परम शांति दीजै हम सबको, पढ़ें तिन्हें पुनि चार संघको।।4।।

### वसंत तिलका

पूजे जिन्हें मुकुट हार किरीट लाके, इन्द्रादि देव अरु पूज्य पदाब्ज जाके।
सो शांतिनाथ वरवंश जगत्प्रदीप, मेरे लिये करहि शांति सदा अनूप।।5।।

### इन्द्रवज्रा

संपूजकों को प्रतिपालकों को, यतीनकों को यतिनायकों को।
राजा-प्रजा राष्ट्रसुदेश को ले, कीजे सुखी हे जिन शांति को दे।।6।।

### स्त्रग्धरा छन्द

होवे सारी प्रजा को सुखबल युत धर्मधारी नरेशा।
होवे वर्षा समय पे तिलभर न रहे व्याधियों का अन्देशा।।

होवे चोरी न जारी सुसमय वरते हो न दुष्काल मारी।
सारे ही देश धारैं जिनवर वृषको जो सदा सौख्यकारी।।7।।

**दोहा–** घातिकर्म जिन नाश करि, पायो केवलराज।
शांति करो सब जगत में वृषभादिक जिनराज।।8।।

## अथेष्ट प्रार्थना

**(मन्दाक्रान्ता)**

शास्त्रों का हो पठन सुखदा, लाभ सत्संगती का।
सद्वृत्तों का सुजस कहके, दोष ढांकूँ सभी का।।
बोलूँ प्यारे वचन हितके, आपका रूप ध्याऊँ।
तोलों सेऊँ चरण जिनके मोक्ष जौलों न पाऊँ।।9।।

**आर्य्या**

तब पद मेरे हिय में, मम हिय तेरे पुनीत चरणों में।
तबलों लीन रहों प्रभु, जबलों पाया न मुक्ति पद मैंने।।10।।
अक्षर पद मात्रा से, दूषित जो कछु कहा गया मुझसे।
क्षमा करो प्रभु सो सब, करुणा करि पुनि छुडाहु भवदुःख से।।11।।
हे जगबन्धु जिनेश्वर, पाऊँ तव चरण शरण बलिहारी।
मरण समाधि सुदुर्लभ कर्मों का क्षय सुबोध सुखकारी।।12।।

**(परिपुष्पांजलिं क्षेपण)**

**(यहाँ पर नौ बार णमोकार मंत्र जपना चाहिए)**

# अर्घ्यावली

**(चाल : है अपना दिल तो आवारा.....)**

1. **अरिहंत अर्घ्य–**

अरिहंत गुण बहुत प्यारा भव सिंधु तारणहारा।
अनंत ज्ञान दर्श सुख पूरा राग द्वेष मोह से न्यारा।।
**ॐ ह्रीं वृषभादि वीरान्त चौबीस तीर्थंकरेभ्यो नमः अर्घ्यं...**

2. **जिनवाणी अर्घ्य–**

जिनवाणी ज्ञान बहुत न्यारा आत्मा-परमात्मा बताने वाला।

द्रव्य गुण पर्याय वाला अंग पूर्व पच्चीस वाला।।

**ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भव सरस्वती देवीभ्यो नमः अर्घ्यं...**

3. **गुरुदेव अर्घ्य–**

गुरुदेव गुण अलौकिक वाला ज्ञान ध्यान तप त्याग वाला।
समता शांति निस्पृह वाला आत्मिक गुणगण वाला।।

**ॐ ह्रीं तीन कम नौ करोड़ मुनिश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं...**

4. **जैन धर्म अर्घ्य–**

जैन धर्म वैश्विक वाला, वस्तु स्वरूप बताने वाला।
सर्वोदय को करने वाला आत्मिक सुख देने वाला।।

**ॐ ह्रीं अनेकांतमय अहिंसाधर्मेभ्यो नमः अर्घ्यं...**

5. **अर्घ्य**

**गणाधिपति गणधराचार्य श्री कुंथुसागर जी गुरुदेव।**

जल चंदन आदि द्रव्य चढ़ा यतिवर को नित उठ ध्याऊँगा।
सम्यक् भक्ति तव करके गुरु मैं मुक्ति श्री वर लाऊँगा।
वात्सल्य निधि गुण रत्नाकर कुंथुसिंधु को है वंदन।
रत्नत्रय निधि पा जाऊँ गुरु अतएव करूँ मैं तव अर्चन।।

**ॐ ह्रीं श्री गणधराचार्य कुन्थुसागर गुरुदेव चरणेभ्यो अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामिते स्वाहा।**

# वैश्विक विचारक वैज्ञानिक धर्माचार्य
# आचार्य कनकनन्दी जी गुरुदेव का पूजन

**गुरु पद प्रक्षाल हेतु दोहे–(जल)**

निर्मल जल की झारी से करता पद प्रक्षाल।
निर्मल तव मन सम गुरु मम मन हो खुशहाल।।

**–जलेन पादप्रक्षालनम् करोमि...**

**(चंदन)**

चंदन सुरभित चरण चढ़ा दूर करे संताप।
शीतल वाणी पा नशे भविजन के सब पाप।।

**–चंदनेन पादप्रक्षालनम् करोमि...**

पवित्र दूध की धारा से यजे चरण सुखकार।
क्षीर-नीर विवेक धरे भवदधि तारणहार।।

**–दुग्धेन पादप्रक्षालनम् करोमि...**

## पूजा

**(तर्ज : नरेन्द्र छन्द.....)**

वैश्विक विचारक जग उद्धारक परम गुरु का अभिवंदन।
सब रंग-बिरंगे पुष्पों से करते गुरुवर का आह्वाननम्।।
हर हृदयासन पर बुला रहे करने गुरु गुण का शुभ अर्चन।
सान्निध्य आपका सदा रहे इन भावों से सन्निधिकरण।।

**ॐ ह्रीं परमपूज्य आचार्यश्री कनकनन्दी गुरुदेव अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।**

**अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।**

पावन जलझारी भरभरकर गुरुवर के चरण चढ़ायेंगे।
वात्सल्य समतामयी शीतल छाया में ममता को दूर भगायेंगे।।
अभीक्ष्ण ज्ञान उपयोगी बन अध्यात्म रस का पान करे।
ऐसे गुरु का अर्चन करके नरजन्म सफल अभियान करें।।

**ॐ ह्रीं परमपूज्य आचार्यश्री कनकनन्दी गुरुदेव चरणेभ्यो जन्मजरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।**

चंदन केशर कर्पूर मिला सुरभित चंदन घिस लाते हैं।
समताधारी निष्पृहवृत्ति पथगामी चरण लगाते हैं।। अभीक्ष्ण...

**ॐ ह्रीं परमपूज्य आचार्यश्री कनकनन्दी गुरुदेव चरणेभ्यो संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।**

मुक्तामणि या धवलाक्षत के शुभ पुँज चरणों में चढ़ाते हैं।
अक्षय पद के अभिलाषी गुरु अक्षयपथ दर्शाते हैं।। अभीक्ष्ण...

**ॐ ह्रीं परमपूज्य आचार्यश्री कनकनन्दी गुरुदेव चरणेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।**

सुन्दर सुरभित पुष्पों को चुन ताजे बगिया से लाये हैं।
आत्मबिहारी गुरु चरणों में रोज चढ़ाये हैं।। अभीक्ष्ण...

**ॐ ह्रीं परमपूज्य आचार्यश्री कनकनन्दी गुरुदेव चरणेभ्यो कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।**

तत्त्व गवेषक निज अन्वेषक क्षुधा परिषह भी सहते।
हम क्षुधा से मुक्ति पाने को नैवेद्य थाल अर्पण करते।। अभीक्ष्ण...

**ॐ ह्रीं परमपूज्य आचार्यश्री कनकनन्दी गुरुदेव चरणेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।**

हे ज्ञानी ! अनुभव के धारी नव चिंतन जोत जलाते हैं।
मिथ्यात्व दूर करने हेतु हम गुरु को दीप चढ़ाते हैं।। अभीक्ष्ण...

**ॐ ह्रीं परमपूज्य आचार्यश्री कनकनन्दी गुरुदेव चरणेभ्यो मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।**

प्रज्ज्वलित अग्नि में धूप खिरा कर्मों का धूम नशायेंगे।
गुरु के शोधमयी अनुभव से नयी क्रांति लायेंगे।। अभीक्ष्ण...

**ॐ ह्रीं परमपूज्य आचार्यश्री कनकनन्दी गुरुदेव चरणेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।**

हम आम, अनार, अंगूर लिये गुरु चरणों को नित ध्याते हैं।
मुक्ति पथिक अनुगामी का हम सत्संग पाने आते हैं।। अभीक्ष्ण...

**ॐ ह्रीं परमपूज्य आचार्यश्री कनकनन्दी गुरुदेव चरणेभ्यो महामोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।**

एकांतवास के विश्वासी हो मौन तपस्वी दृढ़ त्यागी।
चिंतन मनन में रत गुरु को हम अर्घ चढ़ा बने वैरागी।। अभीक्ष्ण...

**ॐ ह्रीं परमपूज्य आचार्यश्री कनकनन्दी गुरुदेव चरणेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।**

अध्यात्म गुरु के चरण में नमन करूँ त्रयबार।
शांतिधारा धार दे पुष्पांजली मनहार।।

**शांतिधारा, परिपुष्पांजली क्षिपेत**

## जयमाला

**दोहा– ज्ञान भानु गुरु के चरण भक्त यजे त्रयकाल।**
**गुरु गुण पाने हम पढ़े गुणमाला जयमाल।।**

**चौपाई–** सूरी कनकनन्दी जी निराले, बचपन से हैं प्रतिभा वाले।
गुरु का व्यक्तित्व सबमें आला, विश्व में ध्वज फहराने वाला।।

विद्यार्थी जीवन से जिज्ञासु, सत्य धर्म के आप पिपासु।
अध्यात्म प्रेम के बन अनुरागी, विश्व ज्ञान प्रतीति जागी।।

सर्वोच्च विकास का ध्येय बनाऊँ, अपना आतम सुखी बनाऊँ।
उत्तम लक्ष्य गुरु मन भाया, साधु बनना लक्ष्य बनाया।।

व्यापक दृष्टिकोण बनाये, पठन पाठन में समय बिताये।
देश-विदेश का धर्म समन्वय, करते गुरुवर बिन धन अपव्यय।।

विदेशों में भी अलख जगाये, अपने शिष्यों को पहुँचाये।
हिन्दू-मुस्लिम-सिक्ख-ईसाई, दिगम्बर-श्वेताम्बर सब भाई।।

कोई प्रोफेसर कोई कुलपति, कोई वैज्ञानिक कोई धनपति।
राष्ट्रीय अंतरराष्ट्रीय शिक्षाएँ, शिविर संगोष्ठी से सब पाये।।

अढ़ाई सौ ग्रंथ शोधार्थ लिखे हैं, जिससे शोधार्थी शोध करे हैं।
चौदह प्रदेश के शत विद्यालय, साहित्य केन्द्र के बन गये आलय।।

यू.जी.सी. से मान्यता पाये, शोधार्थी सब लाभ उठाये।
अपने शिष्यों को ज्ञान कराये, भारत विश्व गुरु बन जाये।।

देश-विदेश के भक्त मिले हैं, श्रम-शक्ति धन खर्च करे हैं।
स्व प्रेरणा से भाव जगाये, समय साधन सभी लुटाये।।

शिष्य आपका प्रतिनिधित्व निभाये, विश्व धर्म संसद में जाये।
गुरुवर विश्व सदस्य कहाये, पीस नेक्स्ट संस्था कहलाये।।

दृष्टिकोण गुरु का हितकारी, युगीन सामयिक विश्व विहारी।
चौदह भाषा के गुरु ज्ञाता, सभी विषयों के हैं विख्याता।।

फिर भी सत्य अनुभव के पुजारी, निस्पृह वृत्ति है अविकारी।
इतने कार्य स्वयं हो जाये, अयाचकवृत्ति गौरव पाये।।

श्री गुरुवर के गुण नित गाये, भाव सुमन की माल बनाये।।

**ॐ ह्रीं परमपूज्य आचार्यश्री कनकनन्दी गुरुदेव चरणेभ्यो पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।**

**दोहा– जय–जय श्री गुरुदेव के गुण हैं अपरम्पार।**
**'क्षमा' अल्पमति है गुरु कर न सके विस्तार।।**

**इत्याशीर्वाद, परिपुष्पाजंलि क्षिपेत्**

**रचनाकार–आर्यिका क्षमाश्री**

# स्वाध्याय तपस्वी कनकनन्दी गुरुदेव का पूजन

**(चाल : नवदेवता पूजन.....)**

**रचनाकार : विजयलक्ष्मी जैन**
**सहायक : आर्यिका सुवत्सलमती**

सूरी कनकनन्दी गुरुवर, तीन लोक में श्रेष्ठ है।
गुरुदेव ने आगम को विश्व में पहुँचाया है।।

स्वाध्याय तपस्वी मान्य जग में हम सदा पूजन करे।
आह्वान कर उनके गुणों को, मन में चिन्तन करे।।

**(ॐ ह्रूँ आचार्यश्री कनकनन्दी गुरुदेव अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं)**

**ॐ ह्रूँ आचार्यश्री कनकनन्दी गुरुदेव अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापन**

**ॐ ह्रूँ आचार्यश्री कनकनन्दी गुरुदेव अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।**

**जल-** शुद्ध भावों का उदक ले कर्म मल धोवे सदा।
अन्तःकरण को शुद्ध करके गुरु गुणों को पावे सदा।।

कनकनन्दी गुरुवर की भक्ति से पूजा करे।
ज्ञान का भण्डार भरके अज्ञान मिथ्यात्व हरे।।

**ॐ ह्रूँ आचार्यश्री कनकनन्दी गुरुदेव चरणकमलेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।**

**चंदन-** चंदन सम मन को घिसकर मन सुगन्धित हम करे।
कनकनन्दी गुरुवर सम समता भाव धरे।। कनकनन्दी ...... हरे।।

**ॐ ह्रूँ आचार्यश्री कनकनन्दी गुरुदेव चरणकमलेभ्यो भवताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।**

**अक्षत-** अखण्ड अक्षत के समान अखण्ड पद प्राप्त करे।
आत्मा के अविनश्वर रूप का चिन्तन करे।। कनकनन्दी ...... हरे।।

**ॐ ह्रूँ आचार्यश्री कनकनन्दी गुरुदेव चरणकमलेभ्यो अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।**

**पुष्प–** सुरभित कमल लेकर मन को भी हम मृदु करे।
आत्मविशुद्धि करके गुरुसम आत्म अनुभव हम करे।।
कनकनन्दी गुरुवर की भक्ति से पूजा करे।
ज्ञान का भण्डार भरके अज्ञान मिथ्यात्व हरे।।

**ॐ ह्रूँ आचार्यश्री कनकनन्दी गुरुदेव चरणकमलेभ्यो कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।**

**नैवेद्य–** रसगुल्ला सम अन्तर बाहर मन (को) सुरस करे।
खीर पेड़ा जलेबी सम आत्म रस पान करे।। कनकनन्दी...

**ॐ ह्रूँ आचार्यश्री कनकनन्दी गुरुदेव चरणकमलेभ्यो क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।**

**दीप–** आगम ज्ञान के द्वारा कर्मों को जर-जर करे।
/(ज्ञान का दीप जलाकर स्वयं प्रकाशी हम बने।।)
मोहान्धकार को नाशकर, निष्कलंक हम बने। कनकनन्दी...

**ॐ ह्रूँ आचार्यश्री कनकनन्दी गुरुदेव चरणकमलेभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।**

**धूप–** अष्ट कर्म धूप लेकर ज्ञानाग्नि में खेऊँ सदा।
अष्ट कर्म नष्ट करके मोक्ष सुख पाऊँ मुदा/(सदा)।। कनकनन्दी...

**ॐ ह्रूँ आचार्यश्री कनकनन्दी गुरुदेव चरणकमलेभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।**

**फल–** आम केला लीची अमरूद फल से पूजन करें (आहार दें)।
फल रसों सम मधुर बनकर आत्म रसिक हम बनें।। कनकनन्दी...

**ॐ ह्रूँ आचार्यश्री कनकनन्दी गुरुदेव चरणकमलेभ्यो मोक्षफल**

**प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।**

**अर्घ्यं-** अष्ट द्रव्यों को चढ़ाकर सिद्ध गुण चिन्तन करे।
आत्म गुणों को बढ़ाकर स्वातमा में स्थिर बने। कनकनन्दी...

**ॐ ह्रूँ आचार्यश्री कनकनन्दी गुरुदेव चरणकमलेभ्यो अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।**

## शान्ति धारा-पाद प्रक्षालन

साम्य जल का कलश ले गुरु चरणों को पखारूँ।
यही भावना विजया की समतामयी बनूँ।।
कमल गुलाब के सुमन सम कोमल भाव धरूँ।
आत्मा को परमात्मा बना आत्म सुख को वरूँ।।

## जयमाला

**(चाल : जय जय श्री अरिहंत....., नवदेवता जयमाला.....)**

जय-जय श्री कनकनन्दी गुरुदेव हमारे। भव्यों को स्वातमा का सुबोध करावे।।
उनके गुणों की मैं सदा आराधना करूँ। शान्ति व समता से मोक्ष को वरूँ।।

आत्म अनुभवी गुरुदेव हमारे। प्रत्येक विषय को आत्मा से ही जोड़े।।
गुरुदेव से 'मैं' का मैं अनुभव पाऊँ। उस अनुभव से आत्मशक्ति पाऊँ।।

प्रकृति प्रेमी है आचार्य हमारे। प्रकृति प्रेमी हमको भी बनावे।।
मिथ्यादृष्टि (पापी) से भी ये शिक्षा ही गहे। किसी भी जीव से घृणा न करे।।

आगमवेत्ता है गुरुदेव हमारे। आगमानुसार ही आचरण करे।।
स्वयं का स्वयं में अनुभव मैं करूँ।।

गुरु की आज्ञा ही शिरोधार्य मैं करूँ। मैं ही शुद्ध-बुद्ध (हूँ) सच्चिदानंद हूँ।।
ज्ञानानंदमय सुख स्वरूपी हूँ। दया करुणा से ओत-प्रोत गुरु हैं।।

छत्तीस मूलगुण युक्त सुरीवर है। क्षणमात्र में जिज्ञासा का समाधान करे हैं।।

विद्या वाचस्पति व वाग्मी गुरुवर हैं। आगम चक्षुधारी हैं गुरुदेव हमारे।।
सूक्ष्म दृष्टि दे हम भव्यों को तारे। मैं दोषों से दूर रह निन्दा से बचूँगी।।
गुरुदेशना को प्राप्त कर मोक्ष पथिक बनूँगी। अव्याबाध अगुरुलघु गुण युक्त हूँ।।
अठारह दोष से मुक्त निष्कलंक हूँ। तीर्थंकर सम गुरुदेव का समवसरण है।।
सभी भव्य जीव आत्मकल्याण (को) करे है।

**ॐ ह्रूँ आचार्य कनकनन्दी गुरुदेव चरणेभ्यों जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।**

**दोहा- आगम रहस्यों को खोले आगम ज्ञान भण्डार।**
**उनकी दिव्य देशना से सभी पावे निर्वाण।।**

**।।इत्याशीर्वाद पुष्पांजली क्षिपेत्।।**

# स्वाध्याय तपस्वी आचार्यश्री कनकनन्दी गुरुदेव पूजन

**-बा.ब्र. पल्लवी**

**(चाल : प्रभु की पूजा करना है.....)**

निस्पृही गुरु की जय, आध्यात्मिक गुरु की जय।
सिद्धांत चक्री की जय, श्री आचार्य रत्न की जय।।
आह्वान करते हैं, स्थापनम् करते है।
पूजन वंदन गुरु का करके पुण्य कमाते हैं।।

ॐ ह्रूँ आचार्य श्री कनकनन्दी गुरुदेव अत्र अवतर-अवतर संवौषट् अह्वाननं।

ॐ ह्रूँ आचार्य श्री कनकनन्दी गुरुदेव अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्

ॐ ह्रूँ आचार्य श्री कनकनन्दी गुरुदेव अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

**जल- शुद्ध शुचि निर्मल नीर कलशा भर ले आया।**
**जन्म जरा मृत्यु नाशने गुरु चरणे में आया।।**

**निस्पृह गुरु की जय, आध्यात्मिक गुरु की जय।**
**सिद्धांत चक्री की जय, आचार्य रत्न की जय।।**

ॐ ह्रूँ आचार्य श्री कनकनन्दी गुरुदेव चरणकमलेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।।

**चंदन- कर्पूर मिश्रित चंदन केशर, भाव भक्ति से लाया।**
**भव-भव के ताप मिटाने को, सूरिवर पद में आया।। निस्पृह...**

ॐ ह्रूँ आचार्य श्री कनकनन्दी गुरुदेव चरणकमलेभ्यो अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।।

**अक्षत- शुभ्र अखंडित रायभोरी, तंदुल थाली ले आया।**
**अक्षय पद की अभिलाषा से यतिवर पद में आया।। निस्पृह...**

ॐ ह्रूँ आचार्य श्री कनकनन्दी गुरुदेव चरणकमलेभ्यो अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।।

**पुष्प- चंपा चमेली मोगरा, गुलाब केतकी लाया।**
**ब्रह्म भाव हो विकसित (हेतु) ऋषिवर चरणे (में) आया।। निस्पृह...**

ॐ ह्रूँ आचार्य श्री कनकनन्दी गुरुदेव चरणकमलेभ्यो कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।।

**नैवेद्य- नाना मनमोहक व्यंजन, थाली भर ले आया।**
**क्षुधा रोग नाश करने का, भाव ले मैं आया।। निस्पृह...**

ॐ ह्रूँ आचार्य श्री कनकनन्दी गुरुदेव चरणकमलेभ्यो क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

**दीप- दीपक रत्न माणिक्य का, घृत भरके ले आया।**
**अज्ञान तिमिर खो जाए, गुरुवर के चरणे आया।। निस्पृह...**

ॐ ह्रूँ आचार्य श्री कनकनन्दी गुरुदेव चरणकमलेभ्यो मोहन्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।।

**धूप- शुद्ध धूप दशांग ले, मुनिवर चरणे में आया।**
**कर्मों का धूम उड़ाऊँ, सूरिवर चरणे आया।। निस्पृह...**

ॐ हूँ आचार्य श्री कनकनन्दी गुरुदेव चरणकमलेभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।।

**फल-  उत्तम रस पूरित फल का, थाल सजाके लाया।**
**महा-मोक्ष फल की चाहत से, गुरु चरणे में आया।। निस्पृह...**

ॐ हूँ आचार्य श्री कनकनन्दी गुरुदेव चरणकमलेभ्यो महा मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।।

**अर्घ्य-  अष्ट द्रव्य का थाल सजाकर, भक्ति भाव से मैं आया।**
**गुण अनंत को पाने, गुरुवर चरणे में आया।। निस्पृह...**

ॐ हूँ आचार्य श्री कनकनन्दी गुरुदेव चरणकमलेभ्यो अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

**शांतिधारा-क्षीर सागर के जल ले, गुरुवर चरणे में आया।**
**आत्म शांति करने हेतु, आपके शरण में आया।। निस्पृह...**

**पुष्पांजली-थाली भर-भर के पुष्पों के लेकर आज मैं आया।**
**गुरुवर के चरणे, पुष्पवृष्टि करने आया।।**

**जाप-  ॐ हूँ आचार्य श्री कनकनन्दी गुरुवे नमः।**

## जयमाला

**(चाल : लेते रहेंगे तेरा नाम.....)**

निस्पृह गुरु की भक्ति करो हे ! भव्य जीवों।
गुरु पूजन करो हे भव्य जीवों।
भक्ति से ही मुक्ति मिलेगी, मुक्ति में ही अनंत सुख है।। निस्पृह...
कनकनन्दी गुरुवर महाज्ञानी, कलिकाल के अकलंक स्वामी।
सरस्वती पुत्र की महिमा भारी, कलिकाल के समंतभद्र सूरी।
पूजन करलो, गुरुगुण गाओ।
गुरुवर की भक्ति से भव पार करलो।। निस्पृह...
ख्याति, पूजा, लाभ त्यागी का संयम जीवन धन्य है।

निराडम्बर, निस्पृह संत की, आत्म साधना ही श्रेष्ठ है।
अर्चन करलो, गुरुगुण गाओ।
गुरु पूजा करके बहु पुण्य कमालो।। निस्पृह...
वैज्ञानिक आचार्य के गुणगण अगाध, अनुशासन प्रेमी की शासन निगूढ
देश-विदेशों के भक्त आते गुरु चरणों में, ध्यान-अध्ययन मैं को पाने को
पूजन करलो, गुरु भक्ति करलो
गुरु आराधना, करके स्व (आत्मा, मैं) को पाओ।। निस्पृह...

# आचार्य गुरुवर कनकनन्दी की आरती

**-बा.ब्र. पल्लवी**

**(चाल : शायद मेरी....., नाम तिहारा....., कुहू-कुहू....., कोगिले.....(कन्नड़ राग).....)**

ॐ श्री कनकनन्दी जी...आरती करूँ तव चरणी...2
मंगल भाव से...करूँ तव गुण कीर्तन...2
स्वर्ण थाल में, घृत भर दीपक, लेकर आया तुम्हारे द्वार।
श्रद्धा भक्ति, भाव जगा के, आरती करूँ तुम्हारे पद।
कनकनन्दी जी, आध्यात्मिक संत, निस्पृह वृत्ति, जग विख्यात।
आरती करके, तव गुण गाके, हो जाऊँ मैं भव पार...2।।ॐ...(1)
बहुभाषी, सिद्धांत चक्री, आचार्य रत्न की करूँ आरती।
स्वाध्याय तपस्वी, अध्ययन प्रेमी, वात्सल्य मूर्ति कनक गुरु।
सरल स्वभावी, समताधारी, बहुगुणों के हो भंडारी।
आगम पारगामी की, आरती करके, हो जाऊँ मैं भव पार।।ॐ...(2)
कुंथुगुरु के हीरा शिष्य हो, इस वसुधा में अद्वितीय।
ज्ञानी-विज्ञानी, सत्य शोध के खान (है) जग में प्रसिद्ध।
प्रतिक्षण स्व का, अनुभव ज्ञान, सर्व जीव में जिन दर्शन।
आध्यात्म प्रिय, आत्मिक संत की आज उतारूँ आरती।।ॐ...(3)
जब तक सूरज चाँद रहेगा, कनक गुरु का नाम रहेगा।

गंगा यमुना में पानी रहेगा, मेरे गुरु का नाम रहेगा।
कनक गुरु की सन्निधि पाके, मेरा जीवन पल्लवित।
आरती करके तव गुण गाके, हो जाऊँ मैं भव पार।।ॐ...(4)

सीपुर, दिनांक 11.02.2017, सुबह 10.10 व मध्याह्न 2.00

# अर्घ्य-श्री कनकनंदी जी गुरुदेव

**(चाल : फूलों सा चेहरा तेरा.....)**

1. तेजस्वी चेहरा तेरा, निश्चल तेरी हँसी है।
'मैं' का ज्ञान पाकर, शोध-बोध सुनकर दुनिया भी हैरान हैऽऽऽ
जल-गंध-अक्षत-पुष्प-चरुवर दीप-धूप-फल अर्घ्य बनाया
'मैं' को पाने का, मुक्त बनने का मेरा प्रयास सतत शुरू है
स्वाध्याय तपस्वी होऽऽऽ वैज्ञानिक/(आध्यात्मिक) गुरु होऽऽऽ
तेरे चरणों में मेरा नमन होऽऽऽ
कनकनंदी वैश्विक गुरु सभी विधा के ज्ञाता हैऽऽऽ
'मैं' का ज्ञान पाकर, शोध-बोध सुनकर दुनिया भी हैरान है।

**ॐ हूँ स्वाध्याय तपस्वी आचार्यश्री कनकनंदी जी गुरुदेवेभ्यो अर्घ्यं...**

2. **(चाल : ये बंधन तो प्यार.....)**
ये बंधन तो, श्रद्धा का बंधन है।
चरणों में अभिवंदन है।।
जल गंधादिक द्रव्य ले, सुंदर थाल सजाया है।
महा मोक्षफल पाने को, पूजन मैंने रचाया है।।
तेरे पावन चरणों में, त्रय योग से मेरा नमन है।
दर्शन व वंदन से दुःखों का होता शमन है।।
ये बंधन तो भक्ति का बंधन हैऽऽऽ
चरणों में अभिवंदन हैऽऽऽ

गुरुवर का अभिनंदन हैऽऽऽ
स्वाध्याय तपस्वी को वंदन हैऽऽऽ

**ॐ ह्रूँ स्वाध्याय तपस्वी ज्ञानसूर्यश्री कनकनंदी जी गुरुदेवेभ्यो अर्घ्यं...**

3. **(चाल : चंदन सा बदन.....)**

बहु अवधानी हे ! विज्ञानी हे विविध विधा के अधिज्ञानी।
सर्व विद्या पारगामी युगनायक हो पुरोगामीऽऽऽ
हे ! विविध विधा के अधिनायक हे ! वैज्ञानिक हे यतिपति
स्वमत-परमत के ज्ञाता हो तात्कालिक ज्ञानी विज्ञानी
आधुनिक विज्ञान परे हो सत्य-तथ्य पारगामी...।। बहु...

4. **(चाल-नरेन्द्र छंद.....)**

एकांतवास के विश्वासी हो मौन तपस्वी दृढ़ त्यागी।
चिंतन मनन में रत गुरु को हम अर्घ चढ़ा बने वैरागी।।
अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी बन अध्यातम रस का पान करे।
ऐसे गुरु का अर्चन करके नर जन्म सफल अभियान करे।।

5. अष्ट द्रव्य का थाल सजाकर, भक्ति भाव से मैं आया।
गुण अनंत को पाने गुरुवर चरणे मैं आया।।
निस्पृह गुरु की जय, आध्यात्मिक गुरु की जय।
सिद्धांत चक्री की जय, आचार्य रत्न की जय।।

6. अष्ट द्रव्यों को चढ़ाकर सिद्ध गुण चिंतन करे।
आत्म गुणों को बढ़ाकर स्वात्मा में स्थिर बने।।
कनकनंदी गुरुवर की भक्ति से पूजा करे।
ज्ञान का भंडार भर के अज्ञान मिथ्यात्व हरे।।

7. आप जीवन में मेरे मुस्कान हो गुरुवर।
आप जीवन में मेरे सम्मान हो गुरुवर।
आप जीवन में मेरे अभिमान हो गुरुवर।
सच कहूँ तो आप मेरे प्राण हो गुरुवर।

तीनों योगों से अर्घ्य तुम्हें है अर्पण।
तेरे चरणों में मेरा शत-शत वंदन।।

# आरती सिद्ध प्रभु की

**-आचार्य कनकनन्दी**

**(चाल : ॐ जय शिव ओमकारा.....)**

ॐ जयश्री सिद्ध प्रभु स्वामी/(देवा)ऽऽऽ...2
अनंत ज्ञान दर्श सुख वीर्यमयऽऽऽ त्रिभुवन विभु स्वामीऽऽऽ...(ध्रुव)
अनंत संसार मर्दन कर्त्ताऽऽ आत्मशक्ति द्वारा...प्रभु आत्मशक्ति द्वाराऽऽ
आत्म विजयी से विश्व विजयीऽऽ आत्मशुद्धि द्वारा...ॐजय...(1)
जन्म-जरा-मृत्यु विनाश कर्त्ताऽऽ आप हो कालजयी...प्रभु...2
लोकालोक त्रिकाल ज्ञाताऽऽ आप अनंतज्ञानी...ॐजय...(2)
अनंतानंत गुण संपन्नऽऽ हे! अनंत धर्मीऽऽ प्रभु...2
ज्ञान शक्ति से सर्वत्र व्याप्तऽऽ तथापि स्व-निवासी...ॐजय...(3)
ज्ञाता-दृष्टा स्वयं के कर्त्ताऽऽ कृतकृत्य अविकारी...तो भी कृतकृत्य अविकारीऽऽ!
तव पावन गुण स्मरण हेतुऽऽ आरती करूँ तोरी...ॐजय...(4)
तव गुण स्मरण/(ध्यान, आरती) अनुसरण सेऽऽ
प्राप्त हो तव गुणगण...प्रभु...2
'कनक' करे तव गुण स्मरणऽऽ प्राप्त हो मोक्षधाम...ॐजय...(5)

सीपुर, दिनांक 24.02.2017, रात्रि 10.10

# आरती जैन धर्म की

**(चाल : आरती करो शंकर की करो.....)**

आरती करूँ.जिनधर्म की करूँ..आत्मधर्म/(रत्नत्रय) व जीवधर्म/(पञ्च व्रतों) की...
आरती करूँ दशधर्म/(पञ्चगुरु) की...(ध्रुव)...
आत्मधर्म है जैनधर्म...श्रद्धान ज्ञान चारित्र धर्म...
इसके भेद हैं दशधा धर्म...पञ्चव्रत समन्वय की...(1)...आरती...

तत्त्वार्थ श्रद्धान सम्यग्दर्शन...देव-शास्त्र-गुरु में श्रद्धान...
द्रव्य-तत्त्व-पदार्थ श्रद्धान...स्व-आत्म श्रद्धा युत की...(2)...आरती...

सम्यग्ज्ञान है पञ्च विधज्ञान...मति श्रुतावधि मनःपर्यय केवल...
सम्यक् चारित्र पञ्चव्रतमय...अशुभ परे शुभ-शुद्धाचरण की...(3)...आरती...

क्षमा मार्दव आर्जव शौच...सत्य संयम तप त्यागमय...
ब्रह्मचर्य आकिञ्चन्यमय...संवर-निर्जरा-मोक्ष की...(4)...आरती...

जिनधर्ममय पञ्च परमेष्ठी...चैत्य-चैत्यालय-श्रुत व धर्म...
समता-शांति-आत्मविशुद्धि...स्वर्ग-मोक्षदायक धर्म की...(5)...आरती...

श्रद्धा-प्रज्ञा से जो आरती करे...पापतम हरे पुण्य को वरे...
सर्वोदय/(अभ्युदय) से ले मोक्ष सुख वरे..'कनक' आरती भावमयी करे..(6)...आरती...

सीपुर, दिनांक 15.01.2017, रात्रि 8.35

# आरती मोक्षमार्ग-मोक्षमार्गी-मोक्ष

**(चाल : आरती करूँ शंकर की.....)**

आरती (करूँ) मोक्षमार्ग की करूँ...रत्नत्रय की श्रेयमार्ग की...
आरती (करूँ) सौख्यमार्ग की...(ध्रुव)...

सर्वज्ञ द्वारा प्रतिपादित मार्ग...भावमोक्ष भोक्ता सर्वज्ञ आप्त...
सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्र मार्ग...व्यवहार-निश्चय मोक्षमार्ग की...(1)...आरती...

देवशास्त्र गुरु श्रद्धान सहित...द्रव्य-तत्त्व-पदार्थ युक्त...
स्व-आत्म तत्त्व (का) श्रद्धान युक्त...अनेकांत-नय-प्रमाण युक्त की...(2)...आरती...

दर्शन युक्त होता सम्यग्ज्ञान...मति श्रुतावधिमनः पर्यय केवल...
ग्यारह अंग चौदह पूर्व (ज्ञान)...चारों अनुयोग में संपादित की...(3)...आरती...

अशुभ से निवृत्ति शुभ में प्रवृत्ति...शुभ से शुद्ध प्राप्त की वृत्ति...
श्रावक व श्रमण चारित्र...अणुव्रत व महाव्रत सहित की...(4)...आरती...

सुदृष्टि श्रावक श्रमण पाठक...मोक्षमार्गी होते आचार्य...

भाव मोक्षमय होते अरिहंत...सिद्ध होते साक्षात् मोक्ष...(5)...आरती...

निकट भव्य बनते सुदृष्टि...सुदृष्टि बनते श्रावक-श्रमण...
श्रमण बनते उपाध्याय सूरी...भाव आरती करे 'कनक' सूरी...(6)...आरती...

सीपुर, दिनांक 16.01.2017, प्रातः 8.57

# सीपुर वासिनी-जिनवाणी-सरस्वती की स्तुति

## (मूर्तिक प्रतीक में अमूर्तिक स्वरूप)

**(चाल : बंगला-उड़िया....., हाँ तुम बिल्कुल.....)**

जननी ! जननी ! जननीऽऽऽ वंदे श्री जिनवाणीऽऽऽ
कमलासना हँसवाहिनीऽऽऽ सीपुर समता क्षेत्र वासिनीऽऽऽ...(ध्रुव)...

पुस्तक धारिणी वीणावादिनी...जपमाला से आप शोभिनी...
माला मुकुट कुण्डल धारिणी...नुपूर श्वेत वस्त्र धारिणी...(1)...

स्मित वदना चारु हास्यमयी...दिव्यलोचना सुज्ञानमयी...
प्रतीक रूपे आप मूर्तमयी...अमूर्त रूपे विज्ञानमयी...(2)...

सर्वज्ञ सुता आप जिनवाणी...भव्य जीवों की ज्ञानदायिनी...
निर्लिप्तमय कमलासन...हँस प्रतीकमय भेद-विज्ञान...(3)...

श्रुतज्ञानमय पुस्तक रूप...अनेकांतमय वीणा रूप...
ज्ञानध्यानमयी जपमाला...सर्वश्रेष्ठमय मुकुट तव/(भाल)...(4)...

बुद्धि ऋद्धिमय कुण्डल तेरा...स्याद्वाद ध्वनिमय नुपूर तेरा...
सत्य समतामय श्वेत वसन...ज्ञानानंदमय स्मित वदन...(5)...

निष्कलंकमय चारु हास्य तव...केवलज्ञानमय दिव्य लोचन...
मूर्तिक रूप में अमूर्तिकमयी...तव उपासक 'कनक' सूरी...(6)...

सीपुर, दिनांक 31.10.2016, मध्याह्न 2.53

# सरस्वती वंदना

**(चाल : ओमकार स्वरूपा....., भातुकली....., हाँ तुम बिलकुल ऐसी हो....., क्या मिलिये....., सायोनारा....., तुम दिल की धड़कन.....)**

अज्ञान-नाशिनी ज्ञान-प्रदायिनी...सरस्वती मात को सदा नमन...
केवल बोधि की परोक्ष भूता...भवभय भञ्जनी तुम्हें नमन...
तुम्हें नमन...सदा नमन...(1)

मोहतम हारिणी सत्य प्रकाशिनी...द्रव्य-तत्त्व की सुबोधिनी...
आत्म/(तत्त्व) बोधिनी मोक्ष प्रदर्शिनी...भव्य कमल की विकासिनी...(2)

भेद-ज्ञान दात्री विश्व तत्त्व बोधिनी...अनेकांतमय दिव्यवाणी...
सुदृष्टि दायिनी समता प्रदायिनी...सहिष्णु क्षमा की प्रबोधिनी...(3)

गुणस्थान मार्गणा स्थान बोधिनी...ध्यान-वैराग्य की संबोधिनी...
भावश्रुतमय आत्म स्वरूपिणी...'कनक' की ज्ञान प्रदायिनी...(4)

# आरती दशधर्म की

आरती करूँ दशधर्म की करूँ आत्मधर्म व मुनिधर्म की...
आरती करूँ विश्व धर्म की...(स्थायी)
उत्तमक्षमामार्दव आर्जव...शौच सत्य संयम तप त्याग।
आकिञ्चन्य ब्रह्मचर्य धर्म...मोह क्षोभ विवर्जित रूप की...(1)...आरती
आत्मविश्वासज्ञान चारित्र युक्त...आत्मा के निर्मल परिणाम युक्त...
सत्य-समता-शांति सहित...क्रोध मान माया लोभ रिक्त की...(2)...आरती
ईर्ष्या घृणा तृष्णा रहित...वैर-विरोध-द्वंद्व रहित...
आत्मिक गुण-गुणी विनय युक्त...(पर) निन्दा-अपमान-हानि रिक्त की...(3)...आरती
स्व-पर-विश्व कल्याण युक्त...ज्ञान-ध्यान-वैराग्य सहित...
ख्याति पूजा लाभ आकांक्षा रहित...स्व-अनंत वैभव गरिमा की...(4)...आरती
संवर-निर्जरा-मोक्षदायक...अनंत- चतुष्टय स्वभाव युक्त...
सच्चिदानंद ध्रुव स्वरूप...'कनक' शुद्धात्म स्वरूप की...(5)...आरती

# उत्तम क्षमादि दशों धर्म की आरती

**(राग : इह विधि मंगल आरती....., बाजे छम-छम....., बाजे घुंघरूँ.....)**

बाजे छम छम छम छमाछम बाजे घुंघरूँ
हाथों में दीपक लेके आरती करूँ। बाजे छम छम-2...

1. दश धर्मों की आरती उतारूँ, उत्तम वाचक रत्नत्रय की।
स्वर्ग-मोक्षदायक विश्वधर्म की, मोह क्षोभ शून्य आत्म धर्म की।।
दशलक्षण धर्म तेरी आरती करूँ, हाथों में दीपक लेके आरती करूँ...

2. क्रोध विवर्जित क्षमा[1] धर्म की, मान रहित मृदु[2] धर्म की।
माया रिक्त आर्जव[3] धर्म की, लोभ शून्य शौच[4] धर्म की।।
दशलक्षण धर्म तेरी आरती करूँ, हाथों में दीपक लेके आरती करूँ...

3. परम तत्त्वरूपी सत्य[5] धर्म की, इन्द्रिय मन जय संयम[6] धर्म की।
इच्छा निरोधमय तप[7] धर्म की, परिग्रह वर्जित त्याग[8] धर्म की।।
दशलक्षण धर्म तेरी आरती करूँ, हाथों में दीपक लेके आरती करूँ...

4. सर्व कर्म मुक्त आकिंचन्य[9] की, ब्रह्म आचरण ब्रह्मचर्य[10] की।
इहविधि आचरण जो करे हैं, 'कनक' शुद्धात्मा सुख वरे है।।
दशलक्षण धर्म तेरी आरती करूँ, हाथों में दीपक लेके आरती करूँ...

5. इहविधि आचरण पापनाशक है, मंगल उत्तम शरण भूत है।
श्रावक आंशिक पालन करे, श्रमण पूर्णतः पालन करे।।
दशलक्षण धर्म तेरी आरती करूँ, हाथों में दीपक लेके आरती करूँ...

बाजे छम छम...

# महावीर स्तुति

**(तर्ज : नगरी-नगरी द्वारे-द्वारे....., कन्नड़निष्ठ राग : बिन गुरु ज्ञान नहीं है.....)**

त्रिशला नंदन महावीरा, कर्म विनाशक महावीरा।
सन्मति वीरा अतिवीरा, वर्द्धमान प्रभु तीर्थेश्वरा।। (टेक)
पंचकल्याणक यतुवीरा, रत्नत्रयधारी शूरवीरा।

उपसर्गजयी महावीरा, घातिकर्मजयी ध्यानवीरा।। (1) त्रिशला...
लोकालोक ज्ञाता अतिवीरा, विश्व हितंकरा गुरुवरा।
समवसरण के अधीश्वरा, जिनों के भी हो जिनवरा।। (2) त्रिशला...
पशु-पक्षी नर सुरवरा, सभी के गुरु हो शिवंकरा।
सर्वभाषामयी दिव्यगिरा, दोष विरहित सुशरीरा।। (3) त्रिशला...
सुकाल, सुभिक्ष, रोगहरा, तुम्हारे सान्निध्ये पुण्यवरा/(पुण्यकरा)।
बारह गण के अधीश्वरा, गणधर ऋषिवर यतिवरा।। (4) त्रिशला...
त्रिकालदर्शी हो ज्ञानेश्वरा, सच्चिदानंद हो अघहरा।
योग निरोधक शीलधरा, अघाती नाशक सिद्धेश्वरा।। (5) त्रिशला...
अक्षय अव्यय मोक्षवरा, लोकाग्र निवासी सुखकरा।
सत्य शिव सुंदर ध्रुवधरा, आत्मानंद लीन ज्ञानवरा।। (6) त्रिशला...

**सत्य शिव सुंदर...**

# विश्व शान्ति हेतु प्रार्थना

## विश्व शान्ति पाठ

**-आचार्य कनकनन्दी**

**(चाल : तुम दिल की धड़कन.....)**

नीले गगन के तले सर्वत्र (सर्वथा) शान्ति फैले
मानव हो या प्रकृति भी हो सदा ही शान्ति पाले...स्थायी...

मानव मिलकर राष्ट्र में रहकर वैश्विक भाव धरे
मानव पशु पक्षी कीट या पतंग सबसे प्यार पले

कोई न अपना कोई न पराया वैश्विक कुटुम्ब पले
काहूँ न राग काहूँ न द्वेष सर्वत्र साम्य पले

जाति व पंथ राष्ट्र के कारण काहूँ न बैर पले
अनीति अनादर पाप व अत्याचार कोई न ऐसा करे

हिंसा व भ्रष्टाचार शोषण दुराचार ऐसा न कोई करे
प्रजा हो राजा नेता हो नागरिक सबमें मैत्री पले

प्राणी व प्रकृति सभ्यता संस्कृति सबमें शान्ति झरे
शोषक शोषित मजदूर मालिक वैषम्य भाव टले

प्रकृति शोषण सञ्चय प्रदूषण कोई कभी न करे
ग्लोबल वार्मिंग भूकम्प अतिवृष्टि कहीं भी कभी न पले

सुनामी हीन वृष्टि ओजोन छेद भी विश्व से सभी टले
सदा हो सदाचार भाव में शुद्धाचार वचन हित ही बोले

शरीर मन में वचन आत्मा में सदा ही शान्ति झरे
पर्यावरण की सुरक्षा हेतु सब संकल्प करे

धर्म व विज्ञान परस्पर मिलकर विश्व कल्याण करे
मेरा लक्ष्य है सत्य साम्यमय सुखामृत झरे

'कनकनन्दी' का आह्वान विश्व को उदार भाव धरे
वैश्विक समता शांति के हेतु है सभी प्रयास करे

## आरती देव-शास्त्र-गुरु-धर्म-भाव भी

**-आचार्य कनकनन्दी**

**(तर्ज : इह विधि मंगल....., प्रथम तुला वंदिता कृपाला-मराठी राग.....)**

जय-जय आरती शुभ आरती, जय मंगलमय दिव्य आरती।।2 (टेक)

जय आरती केवलज्ञान के धारी, जय घातीनाशक भवभयहारी।
जय आरती ज्ञानघन शरीरी, जय सच्चिदानंद आत्मविहारी।। जय...

जय आरती आचार्य गुरु की, जय संघनायक यतीवरों की।
जय आरती उपाध्याय गुरु की, जय ज्ञानदायक मुनीश्वरों की।। जय...

जय आरती साम्यधारी मुनि की, जय आत्मसाधक गुरुवरों की।
आरती जिनवाणी ज्ञानदात्री की, केवलज्ञानी सुता सरस्वती की।। जय...

आरती रत्नत्रय दशधर्म की, स्व-पर-विश्व शांति धर्मों की।
आरती शुभ शुद्ध भाव कर्म की, स्वर्ग मोक्ष दायक भावों की।। जय...

## सिद्ध परमेष्ठी (शुद्ध परमात्मा) की आरती

**-आचार्य कनकनन्दी**

**(तर्ज : आरती पंचगुरु जी....., यह विधि मंगल.....)**

आरती शुद्ध-बुद्ध प्रभु की, अष्ट कर्म से रहित विभु की।
जय सिद्धेश्वर सिद्ध प्रभु की...

अष्ट गुणों से सहित ईश की, अष्टम वसुधा स्थित महेश की। जय...
अनंतज्ञान दर्शन वीर्य की, सूक्ष्मत्व अव्याबाध सौख्य की।। जय...

अगुरुलघुत्व गुण विशेष की, अवगाहन सहित आत्मा की। जय...
सच्चिदानंद ज्ञानघन की, उत्पाद व्यय ध्रौव्य युक्त की।। जय...

अमूर्तिक चिन्मूर्ति निराकार, जन्ममरण से रहित (शिवंकर) ज्ञानाकार। जय...
परिवर्तन पंच विगत जीव की, पंचम गतिप्राप्त अपवर्ग की।। जय...

परम अहिंसा सत्य रूप की, ब्रह्मस्वरूप नित्यानंद की। जय...
उत्तम क्षमा मार्दव रूप की, आर्जव शौच आकिंचन्य की।। जय...

आत्मवैभव युक्त परमेश्वर की, लोकालोक व्याप्त ज्ञानरश्मि की। जय...
भव्य जीवों के परम लक्ष्य की, हर जीव के शुद्ध दशा की।। जय...

कनकनन्दी के परम लक्ष्य की, परमेष्ठी में श्रेष्ठतम की। जय...

## जिनवाणी सरस्वती आरती

**-आचार्य कनकनन्दी**

**(तर्ज : मैं तो आरती.....)**

मैं तो आरती उतारूँ रे जिनवाणी माता की-2
जय-जय जिनवाणी माता जय-जय हो-2 (टेक)

तीर्थंकर सुता दिव्यवाणी गणधर माता की...गणधर माता की

सप्तभंगमई प्रभुवाणी सत्य भाषिनी की...सत्य भाषिनी की

भक्ति करूँ, भाव धरूँ झुक-झुक प्रणाम करूँ आरती उतारूँ रे
आरती उतारूँ रे सर्वज्ञवाणी आरती...मैं...(1)

तत्त्व कथनी ज्ञानदायिनी मोक्षमार्ग दात्री की 2
निश्चय व्यवहार नय दायिनी षटद्रव्य बखानी की 2
स्वाध्याय करूँ, मनन करूँ, ध्यान धरूँ, श्रवण करूँ आरती...(2)

विश्व के सर्व सत्य तथ्य के ज्ञात्री की-2
पंचव्रत दशधर्म सप्त तत्त्व बखानी की-2
पूजन करूँ, अर्चन करूँ, स्मरण करूँ, चिंतन करूँ आरती...(3)

जो भव्य शरण में आये कर्मबंध दूर करे-2
पवित्र होते, कर्म नशाते, शिवपद को वरे-2
मिथ्यात्व हनूँ, सम्यकत्व धरूँ, कषाय तजूँ, साम्य वरूँ आरती...(4)

''कनकनन्दी'' है भक्त तुम्हारे, निशिदिन ह्रदय धरे 2
कृपा चाहूँ प्रसाद पाऊँ, ज्ञानामृत पाऊँ रे-2
पृच्छना करूँ, सुज्ञान करूँ, चारित्र धारूँ, मोक्ष वरूँ आरती...(5)

# देव शास्त्र गुरु एवं धर्म की आरती

**-आचार्य कनकनन्दी**

**(राग : आरती करो शंकर की.....)**

आरती करूँ जिनवर की करूँ, सच्चे देव जिनवर की...आरती...(ध्रुव)

घाति कर्म को नाशने वाले, सर्वज्ञपद को पाने वाले,
वीतरागी अरिहंत (प्रभु) की...आरती करूँ जिनवर की...

दिव्य उपदेश करने वाले, मोक्षमार्ग को बताने वाले,
विश्वगुरु आप्त देव की...आरती करूँ...

जिनवाणी है सर्वज्ञ वाणी, अनेकांतमयी स्याद्वाद वाणी

द्वादशांगमयी गीरा की...आरती करूँ...

विश्वहितकारी सरस्वती माता, सत्य अहिंसा से आप पवित्रा
सच्चे सर्व ज्ञानदायिनी की...आरती करूँ...

रत्नत्रयधारी वीतरागी गुरु, मोक्षपथगामी आध्यात्म गुरु
पंच महाव्रत धारी की...आरती करूँ...

ध्यान अध्ययन समता धारी, उदार सहिष्णु क्षमा के धारी
वैश्विक मंगलकारी की...आरती करूँ...

सम्यक् दर्शन ज्ञान चारित्रमय, उत्तम क्षमादि दश धर्ममय
पंच व्रतमय धर्म की...आरती करूँ...

सर्व दुःखनाशक मोक्षप्रदायक, विश्व शांतिकर मंगलदायक
'कनक' के आत्मधर्म की...आरती करूँ...

## आरती श्री कनकनन्दी जी की

**प्रस्तुति-मुनि सुविज्ञसागर**

**(चाल : इह विधि मंगल..., आरती कीजै हनुमान लला..., बाजे छम-छम...)**

आरती करूँ गुरुदेव चरण की...सर्वजीव हितकारी शरण की
कनकनन्दी जी वैश्विक सूरी...ज्ञान-विज्ञान दिवाकर सूरी...आरती...

तव उपकारी **विमल सिन्धुजी**...मार्गदर्शक अनुमोदक की...
**विजयमती जी शिक्षा दात्री**...जिनकी शिक्षा बनी हितकारी...

युवावय में दीक्षा धारी...**कुंथु गुरु की कृपा निराली**...
**शिक्षा-दीक्षा में भरतसागर जी**...**विद्यानंद जी सूरी सहायी**...

**उपाध्याय पदवी हासन नगरी**...कुंथुसागर वरद हस्ती...
आचार्य पदवी संस्कार दायी...**अभिनन्दन सूरी उपकारी**...

**सिद्धान्त चक्री** पदवी पाई...**देशभूषण गुरु** अतिशयकारी...
शताधिक साधु-साध्वी विज्ञानी...आपसे शिक्षित बने हैं ज्ञानी...

**विश्व धर्म प्रभाकर** बनकर...जिन धर्म की ध्वज फहराई...
धर्म-दर्शन-विज्ञान समन्वित...'सुविज्ञ' चाहे प्रभावना भारी...

## कनकनन्दी गुरु ऐसा वर दो

**–सौ. रंजना जैन**

**(तर्ज : झिलमिल सितारों.....)**

कनकनन्दी गुरु ऐसा वर दो, अवगुण हर कर सद्गुण भर दो।
ज्ञानामृत सम गुरुवर मेरा जीवन कर दो। कनकनन्दी.....

मैं का बोध गुरुवर हमने आप से ही पाया।
भ्रम हुआ दूर गुरुवर आतम को है पाया।
रग-रग में गुरुवर शुद्ध-बुद्ध भर दो। अवगुण.....कनकनन्दी.....

पंथवाद से हटकर, सत्य धर्म बतलाया है।
निन्दा राग द्वेष तजकर, साम्य भाव सिखलाया है।
ईर्ष्या भाव हरकर, समता भर दो। अवगुण.....कनकनन्दी.....

गुरुवर आप है, ज्ञान रतन भण्डारी।
आपको न समझ सके, हम मूरख अनाड़ी।
तेरी चर्या से, तुझको समझ ले। अवगुण.....कनकनन्दी.....

तुम सम गुरुवर हमने जग में न देखा।
ख्याति लाभ पूजा से दूर करो आतम लेखा।
स्व-स्वरूप पाना लक्ष्य है ये आपका। अवगुण.....कनकनन्दी.....

## नवकोटि से पाप करने वाले सच्चे धार्मिक से घृणा करते

**–आचार्य कनकनन्दी**

**(तर्ज : छोटी-छोटी गैया.....)**

पापी जो (ही) होते पाप ही करते, पाप-पापी की ही प्रशंसा करते।

धर्म व धर्मी की वे निंदा ही करते, उनका समर्थन भी पापी ही करते।। (1)

शादी भी करते व शादी भी कराते, भोग भी भोगते अनुमोदना करते।
शादी के लिए उत्सव भी मनाते, ज्ञानी-वैरागी की वे निंदा (ही) करते।। (2)

धनी भी बनते व धनी को मानते, धन के लिए बहु पाप ही करते।
परिग्रह हेतु आनंद भी मनाते, निस्पृह साधु की भी निंदा करते।। (3)

निंद्य भी होते निंदा भी करते, गुण व गुणी से विद्वेष करते।
अहंकारी होते दंभ का प्रदर्शन करते, स्वाभिमानी ''सोऽहं''
अहं को दंभ मानते।। (4)

सेठ साहूकार राजा-महाराजा को, आदर सत्कार बहुमान भी देते।
वे ही जब विरक्त वैरागी साधु बनते, निंदा-अपमान व उन्हें कष्ट भी देते।। (5)

रूढ़ी को मानते व प्रतीक को पूजते, स्वयं को ज्येष्ठ-श्रेष्ठ धार्मिक दिखाते।
जीवन्त धर्ममय साधु-सज्जनों को, ढोंगी पाखण्डी व अधर्मी मानते।। (6)

बगुला व जौंक मच्छर सम वे होते, मंथरा शकुनी सम व्यवहार करते।
इनसे भिन्न आध्यात्मिक संत होते, गाय व मधुप सम वे व्यवहार करते।। (7)

राग द्वेष मोह युक्त होते दुर्जन, सत्य-समता युक्त होते श्रमण।
दुर्जनता त्यागो सत्य-समता वरो, 'कनकनन्दी' चाहे आत्म सुधार करो।। (8)

ग.पु.कॉ., सागवाड़ा, दिनांक 17.06.2016, मध्याह्न 12.38

## क्या आगमोक्त पूजादि पापकारक है?

-आचार्य कनकनन्दी

प्रत्येक जीव सुख चाहता है एवम् दुःख से दूर भागता है क्योंकि जीव का स्वाभाविक भाव सच्चिदानंदमय है। संसारी जीव भी सत्स्वरूप है, अविकसित चैतन्य स्वरूप भी है परन्तु आनंदमय अभी नहीं बना है। वह पूर्ण चैतन्य स्वरूप एवम् आनंद स्वरूप बनने के लिए ऐन-केन प्रकार से

अनादि काल से प्रयत्नरत है परन्तु यह प्रयत्न तब तक सम्यक् नहीं होता है जब तक सम्यक्दर्शन/सत्यप्रतीति/आगमनिष्ठ/समताभावी नहीं हो जाता है। जब जीव योग्य द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव तथा गुरु उपदेश आदि को प्राप्त करके सम्यग्दृष्टि बनता है तब वह सत्यग्राही भी बन जाता है। तब उसे ज्ञान होता है, भान होता है कि सर्वज्ञ हितोपदेशी द्वारा प्रतिपादित एवं परम्परा दिगम्बर जैन आचार्य द्वारा आगत सिद्धांत ही परोपकारी सत्य सिद्धांत है। वह अपनी शक्ति, भक्ति, परिस्थिति के अनुसार जैनागम का अनुकरण करता है। जिस सत्य, तथ्य एवम् आदर्श का अनुकरण एवं उसे आत्मसात नहीं कर पाता है उसको वह अपनी कमी मानकर श्रद्धा रूप में जानता है एवं मानता है किन्तु नकारता नहीं है। जिस प्रकार सम्यग्दृष्टि जानता है एवं मानता है कि यथाजात निर्ग्रंथ रूप अर्थात् मुनि/श्रमण बने बिना मोक्ष की उपलब्धि नहीं हो सकती है तथापि चारित्र मोहनीय के तीव्रोदय से तथा और भी कुछ कारणों से मुनि दीक्षा स्वीकार नहीं कर पाता है तो भी मुनि धर्म या मुनिचर्या की निंदा नहीं करता है और मुनिचर्या को खोटा भी नहीं मानता है। इसी प्रकार जिनेन्द्र भगवान् के अभिषेक-पूजन, गुरुओं को आहारदान आदि को किन्हीं अनिवार्य कारणों से नहीं कर पाने पर भी जो उन क्रियाओं को करता है उसकी अनुमोदना करता है, प्रशंसा करता है परन्तु उसकी निंदा नहीं करता है और उन क्रियाओं को खोटा भी नहीं मानता है तथा करने वालों को किसी प्रकार की बाधा नहीं पहुँचाता बल्कि यथायोग्य सहायता करता है। जैसे दयालु व्यक्ति असमर्थ-भूखे-भिखारियों को भोजन देता है। यदि भोजन देने में समर्थ नहीं है तो अन्य प्रकार से सहायता करता है, जो देता है उसकी सराहना करता है परन्तु वह उस भिखारी को न गाली देता है न अपमानित करता है, न विष देता है। इसी प्रकार जो भिखारी की सहायता करता है उसको भी न गाली देता है, न अपमान करता है, न ही किसी प्रकार का कष्ट देता है। वैसे ही सम्यग्दृष्टि की हर क्रियाओं में प्रवृत्ति होती है। परन्तु वर्तमान काल में अधिकांश व्यक्तियों में

उपरोक्त क्रियाओं से विपरीत क्रियाएँ ही परिलक्षित होती हैं। कुछ व्यक्ति तो स्वयं अपना कर्त्तव्य नहीं करेंगे परन्तु जो कर्त्तव्य करते हैं उनकी निंदा करेंगे, उनको अपमानित करेंगे, उनको विभिन्न प्रकार की यातनाएँ भी देंगे। पापोदय से यदि स्वयं अच्छे भोजन नहीं कर पाते हो, दूसरों को भोजन नहीं दे पाते हो, तो जो स्वयं अच्छे भोजन करते है या दूसरों को करवाते है, उनसे ईर्ष्या क्यों करते हो? घृणा क्यों करते हो? उन्हें विष क्यों पिलाते हो?

कुछ लोग स्वयं को आगमनिष्ठ बताते हुए भी जो आगमानुसार अभिषेक पूजादि करते है उन्हें वे धर्मबाह्या, रूढ़िवादी, हिंसक, शिथिलाचारी, काष्ठसंघी, भट्टारक-परंपरावादी, मिथ्यादृष्टि कहते भी हैं और मानते भी हैं। वे कहते फिरते हैं कि आगम को नहीं मानना मिथ्यात्व है तो फिर वे स्वयं कौन हो जो आगम की दुहाई देते हुए भी स्वयं आगम को नहीं मानते, तदनुकूल आचरण नहीं करते और यहाँ तक कि आगमानुसार आचरण करने वाले की निंदा करते हैं एवं विरोध भी करते हैं। यदि स्वयं आगमानुसार आचरण नहीं करते हो तो कम से कम आगमोनुसार आचरण करने वालों से समता/माध्यस्थ भाव रखना चाहिए।

मैंने जो अभी तक विभिन्न प्रदेशों के महानगर से लेकर छोटे ग्रामों का परीक्षण किया उससे मेरा अनुभव हुआ है कि दिगम्बर जैन धर्मावलंबी बहुशः अभिषेक एवं पूजा को ही लेकर परस्पर में अधिक कलह, वाद-विवाद, मनमुटाव करते हैं जिससे परस्पर में समाज में फूट पड़ती है एवं धर्म की हँसी होती है, शक्ति का ह्रास होता है। इसके कारण ही धर्म की या समाज की प्रगति नहीं होती है। इतना ही नहीं जैनेतर लोग उपरोक्त कारणों से जैन धर्मावलंबियों को येन-केन प्रकारेण से दबाने के लिए कोशिश करते हैं। आँख बंद कर दूध पीने वाली बिल्ली के समान कुछ जैनी सोचते हैं कि हमारी कमियों को गलतियों को कोई नहीं देखते हैं और न ही जानते हैं। बिल्ली को मार पड़ने पर उसे नानी की याद आती है परन्तु जैन धर्मावलंबियों को मार पड़ने पर भी वे

अपनी गलतियों को न जानते हैं न मानते हैं न ही दूर करते हैं और न ही प्रमार्जित करते हैं। इस सब कमियों के कारण अनेक दिगम्बर जैन मंदिर, क्षेत्र संस्थाओं को अन्य लोग अपने अधिकार में कर लेते हैं। उपरोक्त कारणों के निरसन करने के लिए मैंने 'संगठन के सूत्र' नामक पुस्तक लिखी है-जिज्ञासु उसे पढ़ें।

जैन धर्म रत्नत्रयात्मक, अनेकांतमय, अहिंसामय, परम उदार धर्म है। इस जैन धर्म में हर विषय को सापेक्ष रूप से उदार भावना से देखा गया है। संपूर्ण आरंभ-परिग्रह तथा कर्मों से विरत होना सम्यग्दृष्टि का परम लक्ष्य है। तथापि सम्यग्दृष्टि श्रावक चारित्र मोहनीय कर्म के उदय से सर्व विरत रूप मुनि धर्म को धारण नहीं कर पाता है। इसलिये वे विषय वासनाओं से बचने के लिए विभिन्न आवलंबनों से शुभोपयोग में मन लगाता है। इसलिये वह चार प्रकार के दान देता है, मंदिर निर्माण करता है, तीर्थक्षेत्र की यात्रा करता है, देव, शास्त्र गुरु की पूजा करता है। इन उपरोक्त कारणों में स्वयंमेव आनुषंगिक रूप से स्थावर के साथ त्रस जीवों की हिंसा हो जाती है परन्तु यह आनुषंगिक हिंसा उसके लिए अधिक दोषावह नहीं है। जैनाचार्यों ने श्रावक के धर्म को एक प्रकार का व्यापार कहा है। जिस प्रकार व्यापार करने के लिए पहले धन-पूँजी लगाते हैं फिर पूँजी प्राप्त करते हैं। यदि वे पहले पूँजी विनिमय नहीं करेगा, तो लाभ भी प्राप्त नहीं कर सकता है। किसान खेत में अनेक क्विंटल बीज पहले डालता है जिससे वह उससे भी अधिक बीज को प्राप्त करता है। यदि किसान विचार करे कि मैं खेत में बीज डालकर क्यों बर्बाद करूँ तो वह आगे के अधिक लाभ से वंचित रह जायेगा। इसी ही प्रकार जैन गृहस्थ श्रावक यदि दान, पूजादि से हिंसा होती है ऐसा विचार करके दान-पूजादि नहीं करेगा तो वह उस संबंधी शुभोपयोग, पुण्य संपादन एवं पाप निर्जरा से वंचित हो जायेगा। यदि विवेक पूर्व शुद्ध आगमोक्त पंचामृत अभिषेक, पुष्प, फलादि से पूजा करने से एकेन्द्रिय स्थावर जीवों की हिंसा होती है, मानकर यदि त्याग

किया जावे तो जल से भी अभिषेक, अष्ट द्रव्य से पूजा, मूर्ति निर्माण, मंदिर निर्माण, तीर्थ यात्रा, आहार-दानादि से भी त्रस, स्थावरों की हिंसा होने से यह भी वर्जनीय हो जायेगा क्योंकि जल में विज्ञान की अपेक्षा 36450 त्रस जीव रहते हैं और जैन धर्म के अनुसार इससे भी अधिक त्रस जीव भी रहते है। यह तो हुई त्रस जीवों की संख्या परन्तु एकेन्द्रिय जलकायिक स्थावर जीव तो एक बिन्दु में असंख्यात होते है। जब अभिषेक के लिए, आहारदान के लिए, मंदिर निर्माण के लिए जल का प्रयोग करते हैं तब इसमें स्थित कुछ त्रस जीव तो मरते ही है और उसमें स्थित असंख्यात स्थावर भी मरते ही हैं। यदि कोई कहे कि हम जब जल को प्रासुक करके प्रयोग करते हैं तब हिंसा किस प्रकार हुई? वो नहीं जानते हैं कि प्रासुक का क्या अर्थ होता है? प्रासुक का अर्थ होता है जल को गर्म करके व इलायची आदि तीक्ष्ण वस्तुओं को डालकर संपूर्ण जीवों से रहित करना है। इसका अर्थ है जलकायिक जीवों का मरण। कोई कहे कि हमारी भावना तो जीवों को मारने की नहीं रहती है किन्तु हमारी भावना तो पूजा करने की रहती है। तो जो पुष्प, फलादि से पूजा पंचामृताभिषेक करता है उनकी भावना क्या जीवों को मारने की रहती है? शुद्ध दूध, दही, घी आदि में न तो त्रस जीव रहते है और न ही स्थावर जीव रहते हैं। पुष्प फलादि स्थावर जीव का एक छोटा-सा अवयव है। जब पुष्प या फल परिपक्व अवस्था में आ जाता है तब उनमें से कुछ स्वयंमेव ही वृक्ष से अलग हो जाते है तो कुछ को अलग किया जाता है। अलग होने के बाद उस पुष्प फलादि में अधिक से अधिक आत्मप्रदेश अंतमुर्हूत तक रह सके है ऐसा विद्वानों का मत है। उसके बाद वह अचित हो ही जाता है। कहा भी है-

**सुक्कं पक्कं तत्तं अंविललवणेण मिस्सियं दव्वं।**
**जं जंतेण य छिण्णं तं सव्वं फासुगं भणियं।।**

सूखने से, पकने से, आग पर गर्म करने पर, अम्ल, लवण को मिलाने से, यंत्र से छिन्न-भिन्न करने से प्रत्येक एकेन्द्रिय सचित्त फलादि प्रासुक हो जाते हैं।

सचित्त विरत प्रतिमा पाँचवीं प्रतिमा है। इस प्रतिमा में श्रावक सचित्त भोजन नहीं करता है परन्तु इसके पहले-पहले के प्रतिमा धारी भी सचित्त भोजन कर सकते हैं। यह सचित्त विरत प्रतिमा धारी फलादि को अचित्त करके भोजन करता है यथा-

**भक्षणेऽत्र सचितस्य नियमो न तु स्पर्शने।**

**तत्स्वहस्तादिना कृत्वा प्रासुकं चात्र भोजयेत्।। (17)** लां.सां.

सचित्त प्रतिमा में सचित्त के भक्षण न करने का नियम है, सचित्त को स्पर्शन करने का नियम नहीं है। इसीलिये अपने हाथ से उसे प्रासुक करके भोजन में ले सकता है।

यदि पहली प्रतिमा से चौथी प्रतिमा तक पंचम गुणस्थानवर्ती श्रावक भी सचित्त भोजन कर सकता है और पंचम प्रतिमाधारी सचित्त को अचित्त करके भोजन कर सकता है तब क्या वह धार्मिक कार्यों में आनुषंगिक रूप में जो स्थावर जीवों की हिंसा हो जाती है उसके भय से उन धार्मिक क्रियाओं को छोड़ सकता है? यदि केवल फल-पुष्पों के लिए हठग्राहिता है तो अभिषेक के लिए आहारदान के लिए जल को अचित्त करके प्रयोग में भी नहीं ले सकता है क्योंकि इनमें भी तो सचित्त जल को अचित्त किया जाता है।

श्रावक संकल्पपूर्वक त्रस जीवों की हिंसा का त्यागी है। अप्रयोजनभूत अनावश्यक एकेन्द्रिय जीव की भी विराधना नहीं करता है परन्तु गृहस्थ कार्यों से स्थावर जीवों के साथ आरंभी उद्योगी विरोधी रूप त्रस जीवों की भी हिंसा हो जाती है। यदि गृहस्थ कार्यों के लिए त्रस तथा स्थावर जीवों की हिंसा तक हो जाती है तब धर्म के लिए आनुषंगिक स्थावर हिंसा अतिग्रर्हीत नहीं है। जो कुछ हिंसा होती है वह हिंसा भी संकल्पपूर्वक या दूषित भाव से नहीं की जाती है। इसीलिये तो समंतभद्र स्वामी ने कहा है कि-

दही, दूध, गंध, पुष्प मालादि से पूजा करने पर जो पाप होता है वह पाप पुण्य के अनुपात से बहुत ही कम होने पर सावद्य/पापकारक नहीं है।

**यथा**–ननु दधिदुग्धगन्धमाल्यादिना भगवतः पूजाभिधाने पापमप्युपार्ज्यते लेशतः सावद्य सद्भावादित्याशंक्कयाहः।

**पूज्यं जिनं त्वार्चयतो जनस्य सावद्यलेशो बहुपुण्यराशौ।**
**दोषाय नालं कणिका विषस्य न दूषिका शीतशिवाम्बुराशे। (3)**

(स्वयंभूस्तोत्र पृ. 71)

पूज्यमित्यादि-पूज्यमाराध्यं जिनमर्हन्तं त्वा त्वां वासुपूज्यं अर्चयतः पूजयतः जनस्य भव्यप्राणिगणस्य सावद्यलेशः अवद्यं पापं सह अवद्येन वर्तते इति सावद्यं कर्मः। तस्य लेशो लवः पूजां कुर्वतो यः संपन्नः स दोषाय पुण्योपार्जन प्रवृत्तदोषः पापोपार्जन तस्मै न अलं न समर्थो भवति, कस्मिन्? बहुपुण्यराशौ प्रचुरपुण्यपुञ्जे तेनोपहतशक्तित्वास्तस्य। केवेत्याहकणिका मात्रालवो विषस्य न दूषिका न मारणात्मकविषधर्म संपादिका। क्व? शीतशिवाम्बुराशे शीतं च शीतलं च स्पर्शनेन्द्रिय प्रह्लादकरं तश्च तदम्बु च जलं तस्य राशिः संधातो यत्रासौ शीतशिबाम्बुराशिः समुद्रस्तस्मिन्।

हे नाथ! पूजा की सामग्री जुटाते समय आरंभादि के कारण पूजा करने वाले मनुष्य के जो अल्पतम द्रव्य हिंसा होती है तथा सराग परिणति के कारण अल्पतम भाव हिंसा होती है उससे पूजा करने वाले का कुछ अहित नहीं होता क्योंकि वीतराग जिनेन्द्र की पूजा करने से जो विशाल पुण्य उत्पन्न होता है उसके समक्ष वह अल्पतम हिंसा नगण्य हाती है ठीक उसी तरह जिस तरह कि शीतल और आनंददायी जल के समुद्र में विष की एक कणिका।

जिस प्रकार आहारदान करने में पानी छानना, गर्म करना, आग जलाना, फल बनाना, बर्तन साफ करना, चौका साफ करना, वस्त्र धोना, स्नान करना आदि से त्रस स्थावरों की भी हिंसा हो जाती है तथापि यह पाप उद्देश्यपूर्वक नहीं किया जाता है परन्तु उद्देश्य महान् एवं पवित्र होने के कारण आहारदान में जो पाप होता है वह दोषकारक नहीं है, क्योंकि आहारदान में गुरु के प्रति अनुराग होता है, पुण्यबंध होता है पाप की निर्जरा होती है, परम्परा से स्वर्ग

और मोक्ष की प्राप्ति होती है इसी प्रकार अभिषेक पूजा तीर्थयात्रा आदि से जानना चाहिए।

चावल में यदि पुष्प फलादि की स्थापना करके ही काम लिया जाय तब उसमें भी उपरोक्त गुणों के साथ-साथ दोष भी है। जहाँ पर जिस स्थान में पुष्प-फलादि नहीं है, वहाँ पर उसकी स्थापना तंदुल में करके पूजा में प्रयोग करना चाहिए। जहाँ पर और जब आगमोक्त शुद्ध पुष्प-फलादि है तो उसका भी प्रयोग विवेकपूर्वक करना चाहिए, ऐसा आगम में वर्णन पाया जाता है। यदि पुष्पादि में दोष है तो स्थापित पुष्पादि में भी दोष लगेगा। जिस प्रकार यशोधर के द्वारा आटे के मुर्गे की बलि चढ़ाने से उसको उसके पाप से अनेक भव तक अनेक यातनाएँ सहन करनी पड़ी। इसी प्रकार पुष्प, फलादि चढ़ाने में दोष मानने पर स्थापित पुष्प फलादि के चढ़ाने में भी उतना ही दोष लगेगा और एक विचारणीय विषय है कि साक्षात् अर्हंत भगवान् है उनकी तो पूजा नहीं करते और मूर्ति में स्थापित अर्हंत भगवान् की ही पूजा करते हैं तो यह उचित एवं विवेकपूर्ण कार्य नहीं है। इसी प्रकार यथार्थ आगमोक्त प्रासुक शुद्ध अष्ट द्रव्य है उससे श्रावक पूजा न करके स्थापित अष्ट द्रव्य से पूजा करता है तो यह भी असम्यक् है। शक्ति एवं उपलब्धि होते हुए भी यदि चावल में स्थापित पुष्पगिरी में स्थापित दीपक एवं नैवेद्य से पूजा करते है तो इससे मायाचारी एवं झूठ का भी दोष लगता है। इतना ही नहीं आगम को नहीं मानने पर आगम का भी अपलाप होता है, आज्ञा सम्यक्त्व में भी दोष लगता है।

कुछ लोग आगम को जानते हैं और मानते भी हैं तथापि स्थानीय परंपरा या मंदिर परंपरा के कारण आगमोक्त पद्धति से अभिषेक, पूजा आदि नहीं कर पाते हैं। कुछ व्यक्ति अपने ग्राम में परंपरा के कारण आगमोक्त पूजा आदि नहीं कर पाते हैं परन्तु बाहर कहीं जाकर यदि आगमोक्त पद्धति से पूजादि होती है तो वहाँ जाकर कर लेते हैं। परन्तु कुछ ऐसे व्यक्ति है जो स्थानीय परंपरा के कारण अपने ग्राम में, नगर में, जो आगमोक्त पद्धति से पूजा आदि होती है,

उसका विरोध तो करेंगे परन्तु श्रवण बेलगोला, महावीर जी आदि में जाकर स्त्री, परिवार सहित लाखों रुपये देकर पंचामृत अभिषेक करेंगे व फल आदि चढ़ायेंगे। जो स्वनगर में तो विरोध करते हैं और दूसरे स्थान पर जाकर आगमोक्त पूजा आदि करते है उन्हें विचार करना चाहिए कि यदि स्थानीय परंपरा के कारण स्वयं नहीं कर पाते है तो जो आगमोक्त रीति से करते है कम से कम उनका तो विरोध नहीं करे।

आचार्य, उपाध्याय, साधु, आर्यिका, ऐलक, क्षुल्लक, क्षुल्लिका, ब्रह्मचारी, ब्रह्मचारिणी, पंडित, सम्यग्दृष्टिश्रावक, अविरत सम्यग्दृष्टि आदि की दृष्टि आगम दृष्टि होती है। विशेष करके आचार्य, उपाध्याय, साधु की दृष्टि एवम् क्रिया आगमोक्त होती है। इसलिए आचार्य कुंदकुंद देव ने कहा है ''**आगम चक्खु साहु**'' अर्थात् वे आगम के अनुसार देखते हैं, जानते हैं, मानते हैं। आवश्यकता होने पर धर्म की रक्षा, समृद्धि के लिए वे आगम के अनुकूल ही उपदेश देते है, आगम का एक भी शब्द न वे विपर्यास करते है न विपरीत बोलते है। परन्तु अभी कुछ आचार्य, उपाध्याय, साधु, पंडित आदि आगमोक्त अभिषेक, पूजा आदि का न उपदेश करते हैं, न पूछने पर आगमोक्त पद्धति से उत्तर देते हैं। कुछ तो स्थानीय रूढ़ि, परंपरा के अनुसार उपदेश करते है एवम् उसका हठ भी पकड़ते हैं। यहाँ तक कि जिस शास्त्र में पंचामृत अभिषेक, पुष्प, फल आदि चढ़ाने का स्पष्ट निर्देश है उस शास्त्र के प्रणेता महान् आचार्यों तक को दिगम्बर मूल परंपरा से बाह्य यथा-काष्ठा संघी, यापनीय संघी मानते है और कुछ बोलते है यह परंपरा अजैनों से ली गई है या भट्टारक-परंपरा है। कुछ शास्त्र ऐसे भी है जिसमें पंचामृत आदि का वर्णन है जिसकी रचना के समय काष्ठा संघ, भट्टारक परंपरा आदि का उद्गम ही नहीं हुआ था और एक विचारणीय विषय यह है कि यदि जिस शास्त्र में पंचामृत आदि का वर्णन है तो वह मूल परंपरा से बाह्य है तो उसके अन्य सिद्धांत मूल परंपरा के कैसे हो सकते है? इतना ही नहीं जिस आचार्य ने एवं जिस शास्त्र में काष्ठा संघ आदि

का खंडन है, उसी शास्त्र में पंचामृत अभिषेक आदि का वर्णन है। उदाहरण के तौर पर ''देवसेन आचार्य का भाव संग्रह एवम् सोमदेव सूरी के यशस्तिलक चंपू आदि। जो मानते हैं अजैन परंपरा से हमारे आचार्यों ने ये सब ग्रहण किया है तो, क्य हमारे आचार्य मिथ्या परंपरा को स्वीकार करके स्वयं मिथ्यादृष्टि बने एवं अन्य को मिथ्यादृष्टि बनाना चाहे? और क्या जैन परंपरा या जैन आचार्य इतने दीन, हीन, गरीब है जो कि अन्य परंपरा से मिथ्या परंपरा को स्वीकार किये? जो पंचामृत अभिषेक आदि को नहीं मानते है वे भी तो जैन धर्म को अनादि अनिधन मानते है तो ऐसे अनादि अनिधन, शुद्ध, समृद्ध जैन धर्म आचार्य दीन, हीन, भिखारी, परोपजीवी कैसे हो सकते है?''

कुछ आचार्य आदि आगमोक्त पूजा आदि को जानते भी है मानते भी हैं परन्तु लोक संग्रह के लोभ से या लोक का कोप भाजन न बनना पड़े इसलिये पूजादि के लिए जिज्ञासा करने पर भी स्पष्ट उत्तर नहीं देते हैं, दूसरों को गुमराह करते है या अंधकार में रखते है? वे ऐसा करके क्या आगम का अपलाप नहीं करते है? सत्य को नहीं छिपाते है? हाँ, केवल कोई कुतर्की खोटे भावों से झगड़ा करने के लिए प्रश्न करता है तो उस समय में मौन रहना अलग विषय है।

यदि पंचामृत अभिषेक आदि से हिंसा होती है इसलिये नहीं करना चाहिए, तो मंदिर बनाने में, यात्रा करने में, आहारदान देने में इससे भी अधिक हिंसा होती है, तो ये भी अकरणीय हो जायेगा। तब तो श्रावकों के अनेक कर्त्तव्य लोप हो जायेंगे। तीर्थंकर धर्म-तीर्थ के प्रवर्तक है तो श्रावक आहारदान रूपी व्यवहारतीर्थ के प्रवर्तक है। आहरदान रूपी व्यवहार तीर्थ के लोप से धर्मतीर्थ का भी लोप हो जायेगा।

कुछ गृहस्थ ऐसे भी होते हैं जो धन के लिए, निहित स्वार्थ के लिए, बहुत बड़ी-बड़ी त्रस-स्थावर की हिंसा कर लेते हैं। निषिद्य व्यापार, चर्म-व्यापार, जमीकंद का व्यापार, तेल की मिल, ईंट की भट्टी, शराब की फैक्ट्री एवम् दुकान, तम्बाकू, बीड़ी, सिगरेट आदि बनाते है एवं विक्रय करते हैं।

यही व्यक्ति धर्म क्षेत्र में जाकर शुद्ध धार्मिक परंपराओं का अहिंसा के नाम पर विरोध करते हैं। इसका विशेष वर्णन मैंने मेरी किताब ''ये कैसे धार्मिक, निर्व्यसनी, राष्ट्रसेवी?'' में किया है। विशेष जिज्ञासुओं को वहाँ अवलोकनीय है।

कुछ गृहस्थ घर में एवं विवाह आदि में अनछना पानी जमींकंद, शराब आदि का प्रयोग करते हैं एवं लाखों त्रस जीवों से सहित पुष्पों की मालाएँ पहनते हैं, सजावट में प्रयोग लाते हैं, गाड़ी सजाते हैं, नीचे बिछाकर उन पर चलते हैं, उन पर सोते है तो क्या इससे पापबंध नहीं होता? क्या यह सब विवेक से होता है? क्या इससे जीवों को कष्ट नहीं होता है? क्या ये शुभ धार्मिक क्रियाएँ हैं? भोग के लिए, धन के लिए, निहित स्वार्थ के लिए तो जानबूझकर पाप करते रहेंगे परन्तु धार्मिक क्षेत्र में अपनी अवस्थानुसार विवेकपूर्ण आगमानुसार धार्मिक क्रिया करते हुए जो थोड़ी सी आनुषंगिक द्रव्य हिंसा हो जाती है उसको लेकर ईर्ष्या, द्वेष, घृणा, फूट आदि करके अधिक भाव हिंसा करेंगे।

कुछ लोग कहते हैं हम तो पेट-पोषण करने के लिए, धन कमाने के लिए सांसारिक कार्यों में पाप कमाते ही है परंतु मंदिर में आकर पंचामृत अभिषेक आदि करके धार्मिक क्षेत्र में पाप क्यों कमायेंगे? उनका यह कुतर्क आगम-विरुद्ध एवं कुटिल भावों से युक्त है। जैसे कोई कहेगा कि हम भोजन बनाने के लिए जो पानी लाते हैं, आग जलाते हैं, फल सुधारते हैं, उससे तो पापबंध होता ही है, परन्तु आहारदान रूपी धार्मिक क्रियाओं के लिए पानी क्यों लायेंगे? आग क्यों जलायेंगे? फल क्यों सुधारेंगे? क्योंकि इसमें हिंसा होती है, पापबंध होता है, तो क्या उनके ये तर्क विवेक सहित, आगम सम्मत एवम् भाव विशुद्धि सहित है? नहीं कदापि नहीं।

कुछ लोग बादाम आदि को पूर्ण अचित्त मानते हैं परन्तु इसमें भी योनिभूत जीव है। क्योंकि इसमें भी जीव-उत्पत्ति की शक्ति रहती है क्योंकि

उसको बोने से अंकुर की उत्पत्ति होती है। कोई कहे कि पंचामृत अभिषेक के बाद उसमें जीव की उत्पत्ति हो जाती है। इसलिये पंचामृत अभिषेक वर्जनीय है, तो क्या जलाभिषेक में मर्यादा के बाद एवं अष्ट द्रव्य में भी जीवों की उत्पत्ति नहीं होती है? और एक विचारणीय विषय है यह है कि साधु को जो आहार देते हैं उससे मल भी बनता है और साधु उस मल को विसर्जन करते है जिसमें अनेक जीव उत्पन्न होते है ऐसा विचार करके क्या साधु को आहार देना पाप है? वर्जनीय है? जब मूर्ति या मंदिर बनाते है तब असंख्यात पृथ्वीकायिक जीवों की हिंसा होती है और मूर्ति के लाने ले जाने में अनंत त्रस, स्थावर जीवों की मृत्यु होती है। तब क्या यह कार्य भी वर्जनीय है? क्षपकश्रेणी आरोहण करने वाले मुनि के शरीर में स्थित अनंत त्रस स्थावर जीवों की हिंसा होती है तो क्या क्षपकश्रेणी आरोहण करना पापात्मक है? नहीं, कदापि नहीं क्योंकि उपरोक्त कार्य में उद्देश्य एवं भावना पवित्र एवं अहिंसात्मक रहती है इसलिये उपरोक्त कार्य पापकारी नहीं है। इसी प्रकार पूजा, अभिषेक आदि में जानना चाहिए। विशेष जिज्ञासु मेरी ''जिनार्चना'' नामक पुस्तक अवलोकन करें।

पूर्व आचार्य एवं पंडितकृत साठ-पैंसठ प्राचीन ग्रंथों के आधार पर मैंने ''जिनार्चना भाग 1 एवं 2'' को लिखा था एवं उनका प्रकाशन 1990 में हुआ था और उस समय से ही उनकी अधिक माँग होने के कारण उनकी प्रतियाँ समाप्त हो गई हैं एवं वर्तमान में इसकी महत्ती आवश्यकता है इसलिये अभी दोनों भाग संयुक्त रूप में द्वितीय संस्करण के रूप में प्रकाशित हो रहे हैं। सत्य जिज्ञासु, आगमनिष्ठ व्यक्ति तो इस आगमोक्त पद्धति को स्वीकार करते ही हैं परन्तु जो आगमोक्त पद्धति को नहीं जानते हैं, नहीं मानते हैं या नहीं करते हैं, वे भी इस आगमोक्त रीति को जाने, माने और तद्योग्य आचरण करके सातिशय पुण्य को प्राप्त करें। यदि किसी कारणवशतः कर नहीं पाते हैं तथापि जानने के साथ-साथ अवश्य मानें और जो आगमोक्त रीति से पूजा, अभिषेक आदि

करता है उनकी अनुमोदना करे एवं यदि स्पष्ट वाचनिक रूप से अनुमोदना भी नहीं कर पाते हो तो मानसिक अनुमोदना करे और करने वालोंा का किसी भी प्रकार विरोध करके पाप के भागी कदापि ना बने। जिज्ञासु सज्जन इस पुस्तक में दिये गये श्लोकादि की प्रमाणिकता जानने के लिए संदर्भ एवं ग्रंथ सूची की मदद से उन-उन मूल ग्रंथों का अवलोकन अवश्य करें। आचार्य श्री महावीर कीर्ति गुरुदेव, आचार्यश्री विमलसागर गुरुदेव, आचार्यश्री सन्मतिसागर गुरुदेव, आचार्यश्री अजिसागर गुरुदेव, मुनिश्री पद्मनन्दी, मुनिश्री देवनन्दी, मुनिश्री अमितसागर, मुनिश्री गुप्तिनन्दी, आर्यिका श्री विशुद्धमति (संघस्था आचार्यश्री धर्मसागर गुरुदेव), आर्यिका श्रीज्ञानमति, आर्यिका राजश्री, आर्यिका करुणाश्री पंडित वर्य सुमेरचन्द्र दिवाकर आदि पहले पंचामृत अभिषेक आदि आगमोक्त पद्धति को नहीं मानते थे परन्तु जब उन्होंने आगम का अध्ययन किया तब से अपना मत परिवर्तित कर आगमानुसार विचार एवं आचार में परिवर्तन किया है। ठीक ही है सम्यग्दृष्टि जीव अल्पज्ञानी गुरु से शिक्षा प्राप्त करके असत्य को भी सत्य मान लेता है परन्तु वही विशेष ज्ञानी गुरु के उपदेश से या शास्त्र से सुनकर अथवा उनका अध्ययन कर असत्य को त्याग देता है और सत्य को ग्रहण कर लेता है। उसी प्रकार हर भव्य जीव सत्य को जाने, माने, स्वीकारे करे एवं शाश्वतिक मोक्षपद को प्राप्त करें।

**ऐसी शुभ महती भावनाओं के साथ-**
**आगमोपासक**
**(आचार्य) उपाध्याय श्री कनकनंदी**
**विजुलियाँ-1994 (प्रथम संस्करण से)**

# भगवान् महावीर विश्वगुरु क्यों? कैसे? क्या किया?

**-आचार्य कनकनन्दी**

अरावली की सुरम्य गोद के एकांत जंगल में स्थित समता तीर्थधाम, अतिशय क्षेत्र सीपुर ग्राम के देवागम गुरु जिनालय में विराजित वैश्विक संत वैज्ञानिक श्रमणाचार्य श्री कनकनन्दी गुरुवर ससंघ सान्निध्य में अनूठी महावीर जयंती मनी। आचार्यश्री सृजित त्रय गीताञ्जली के विमोचन अनंतर उपस्थित श्रोताओं को संबोधित करते हुए गुरुदेव ने आधुनिक संदर्भ में भगवान् महावीर की सार्वभौमिक-सार्वकालिक व्यापकता व उपादेयता पर प्रश्नात्मक शैली में उद्बोधन देते हुए कहा कि भगवान् महावीर विश्वगुरु क्यों? कैसे? क्या किया? आदि के माध्यम से श्रोताओं से पूछा कि अभी पूर्व वक्ता नितिन ने भगवान् महावीर को विश्वगुरु कहा, ऐसा क्यों? जबकि भगवान् महावीर किसी स्कूल, कॉलेज में पढ़ने नहीं गये, उन्होंने मोबाईल, इंटरनेट, टी.वी. आदि गेजट्स का प्रयोग नहीं किया, नग्न अवस्था में वनों में साधना की। व्याजात्मक शैली में कहा कि वे तो अँगूठा छाप थे। आचार्यश्री ने कहा भगवान् महावीर इन्द्रिय-मन विजयी के साथ आत्म विजयी बनकर विश्व विजयी बने। ''**उदार पुरुषाणां वसुधैव स्व कुटुम्बकम्**'' आदि सूक्तियों द्वारा गुरुदेव ने महान् आध्यात्मिक पुरुषों तीर्थंकर आदि को यथार्थ हीरो बताया।

साधु-संत केवल राष्ट्रसंत नहीं होते क्योंकि यह साधु की गरिमा से विपरीत साधु को संकीर्णता में बाँधना है। गुरुदेव ने आत्मगौरव के साथ यह भी कहा कि मैं विश्वसंत हूँ एवं हर उदारभावी साधु-संत विश्वसंत है। गुरुदेव ने कहा कि मैं अधिकतर ग्राम जंगलों में रहता हूँ तो भी देश-विदेश के जैन-अजैन शिक्षाविद्, कुलपति, जज, वैज्ञानिक जैसे प्रगतिशील जन मेरे पास पढ़ने आते है एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर विश्व धर्म संसद तक आध्यात्मिक ज्ञान-विज्ञान की महती प्रभावना करते है। मुझे मेरे भक्त-शिष्य इसीलिए विश्वसंत लिखते बोलते है किन्तु मैं इन उपाधियों से परे अकिञ्चित्कर हूँ, क्योंकि सच्चे

साधु-संत विश्व के एकेन्द्रिय से लेकर मनुष्य तक सर्वजीवों के हित चिंतन करते हैं। गुरुदेव ने इस सब विषयों को आधुनिक विज्ञान के परिप्रेक्ष्य में प्राचीन युग के ज्ञान-विज्ञान के उत्कर्ष से जोड़ते हुए कहा कि भगवान् महावीर के केवलज्ञान के समक्ष आज के जज, दार्शनिक, वैज्ञानिक आदि अनंतवाँ भाग भी नहीं जानते। महान् गुरुभक्त नितिन जैन व ब्र. खुशपाल शाह ने भी गुरुदेव के गुण ज्ञान-भावों के प्रायोगिक अतिशय पर भी प्रकाश डाला। अंत में गुरुदेव ने कहा कि सीपुर जैसे जंगल में जो आनंद व शांति है वह दिल्ली आदि महानगरों में नहीं है। आगंतुकजन सातिशय पुण्यशाली है।

**–श्रमण मुनि सुविज्ञसागर**

## वात्सल्य पुण्य प्रन्यास, सीपुर समता तीर्थ धाम अतिशय क्षेत्र, सीपुर, तह.–सराड़ा, जिला–उदयपुर (राज.)

| संस्था अध्यक्ष | आर्किटेक्ट एवं डिजाईनर | संयोजक |
|---|---|---|
| मणिलाल वजेचन्द जी गोटी | नमन एन. जैन | अजबलाल जैन |
| मुंबई | इंदौर | आनंदपुरी, लोहारिया |
| 09322665743 | 9993806695 | 9414364428 |

## समस्त कार्यकारिणी

| | |
|---|---|
| श्री महावीर जोधावत, कल्याणपुर (मुम्बई) | 09821408177 |
| श्री भुपेश शाह, चितरी | 09982555703 |
| श्री कमल चाँदमल जी जैन, उदयपुर | 09928166097 |
| श्री प्रदीप जैन, सागवाड़ा कॉलोनी | 09828132417 |
| श्री मदनलाल मुण्डफोड़ा, सराड़ा | 09001007001 |
| श्री प्रवीण कन्हैयालाल जी जैन, सवीना | 09414385646 |
| श्री मीठालाल जैन, बड़ावली | 09772543122 |

| | |
|---|---|
| श्री सुरेश जुसोत (पटवारी) से. 3, उदयपुर | 09414757598 |
| श्री नीलम सागरमल जी सेठ, कामर्शियल कॉलोनी, बाँसवाड़ा | 09414101516 |
| श्री बाबुलाल वक्तावत, से. 3, उदयपुर | 09783907527 |
| श्री संजय रमणलाल जी जैन, अरथुना | 09828087385 |
| श्री निखिल कन्हैयालाल जी जैन, तलवाड़ा | 09829202638 |
| श्री नरेन्द्र जैन, रठौड़ा (इंटाली खेड़ा) | 09928453209 |
| श्री जितेश खोड़निया, कामर्शियल कॉलोनी, बाँसवाड़ा | 09462939476 |
| श्री विमल जैन, लकड़वास, उदयपुर | 09784389166 |
| श्री देवेन्द्र जैन, लकड़वास, उदयपुर | 09414759029 |
| श्री मनोज जैन, सलुम्बर (बाबा मेडिकल) | 09828116154 |
| श्री अंबालाल जैन, सुरखण्ड खेड़ा | 09602545171 |
| श्री प्रतीक खुशपाल जी शाह, सागवाड़ा कॉलोनी | 09610819489 |
| श्री कन्हैयालाल अणदावत, धरियावद | 09783598080 |
| श्री पवन नाथुलाल जी जैन, बड़ावली | 09982651983 |
| श्री भँवरलाल जैन (चित्तौड़ा) पलोदड़ा | 09413094302 |
| श्री दिलीप गनोड़िया, कल्याणपुर | 09928551136 |
| सुश्री जिनेन्द्रा जैन, सीपुर | 09001330915 |
| श्री खुशपाल जी जैन, सीपुर | 09001281210 |
| श्री अशोक जैन, रामगढ़ | 09928723020 |
| श्री रमेश जैन, डूँगरपुर | 09414105146 |
| श्री शरद जैन, अहमदाबाद | 09724333323 |
| श्री ऋषभ जैन, अहमदाबाद | 09998881891 |
| श्री लोकेश जैन, चितरी | 07665599555 |

| | |
|---|---|
| श्री सोपेक्स आदेश्वर जी वक्तावत, धरियावद | 09950517887 |
| श्री वीरेन्द्र जैन, लोहारिया (मुंबई) | 09892535496 |
| श्री नरेन्द्र भोरावत, सेमारी | 09829451698 |
| श्री राजु झमकलाल जी जैन, चावण्ड | 09414471950 |
| श्री कमलेश भंवरा, केशरियाजी | 09680456333 |
| श्री विनोद वाग्वर, सागवाड़ा | 09649978981 |
| श्री मनीष जैन, सागवाड़ा कॉलोनी | 09784680347 |
| श्री गौरव कुमार वीरेन्द्र जैन, खांदु कॉलोनी | 09983060269 |
| श्री रत्नेश जैन, खांदु कॉलोनी | 09460233640 |
| श्री आशीष जैन नश्नावत, बाँसवाड़ा | 09413851228 |
| श्री पीयुष जैन नश्नावत, बाँसवाड़ा | 09461577151 |
| श्री धर्मेन्द्र अजबलाल जी बोहरा, आनंदपुरी | 09602718013 |
| श्री महावीर जैन, चंदु जी का गड़ा | 09413528035 |
| श्री अनिल जैन, सागवाड़ा कॉलोनी | 07689899749 |
| श्री जयदीप गोवाड़िया, सागवाड़ा कॉलोनी | 09414463232 |
| श्री जितेन्द्र जैन, साबला | 09414868832 |
| श्री महिपाल जैन, पारसोला | 09660896487 |
| श्री विशाल जैन, साकीनाका, मुंबई | 09819916104 |
| श्री अल्पेश जांगड़ा, कुराबड़ | 09784763691 |